प्राथमिक शाला में
शिक्षण के अनुभव

मेरी स्कूल डायरी

रेखा चमोली

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का प्रकाशन

भाषा

एक खास भाषा ने रोक रखा है

एक बहुत बड़ी दुनिया

तक पहुंचने का रास्ता

पता नहीं कितनी जरूरी या गैर जरूरी हैं

इस दुनिया में पाई जाने वाली चीज़ें

कहते हैं जिनके बिना

अधूरा-अधूराहै आजकल का जीवन

वहां जाना चाहते हैं मेरे बच्चे

अपने होने को पूरा करना चाहते हैं

मेरे और मेरे बच्चें के बीच आ जाती है

एक खास भाषा

जो कभी-कभी

बेहद अपरिचित बना देती है उन्हें

तो कभी मुझे

किसी अपरिचित बस्तु की तरह

अप्रसांगिक !

– रेखा चमोली

मेरी स्कूल डायरी

रेखा चमोली

अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का प्रकाशन

मेरी स्कूल डायरी
रेखा चमोली
Meri School Diary
Rekha Chamoli

संपादन: गुरबचन सिंह

© रेखा चमोली

Designed and Published by :

Azim Premji University

Azim Premji University
Pixel B, PES Campus
Hosur Road, Electronics City
Bengaluru - 560100
Web: www.azimpremjiuniversity.edu.in

आकल्पनः
ज़िंक एंड ब्रोकली, बेंगलुरु

पुस्तक में व्यक्त विचार और मत लेखिका के अपने हैं। अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

क्रम

1. अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय द्वारा इस डायरी का प्रकाशन क्यों i

2. सम्पादक कि कलम से iv

3. भूमिका ix

4. वृत्तान्त: एक
प्राथमिक शाला में रचनात्मक लेखन का आशय 3

5. वृत्तान्त: दो
अवलोकन, खोजबीन और अभिव्यक्ति 93

6. वृत्तान्त: तीन
प्राथमिक शाला में शिक्षिका/शिक्षक होने का अर्थ 179

7. मैंने जो सीखा 323

अज़ीम प्रेमजी विशवविद्यालय द्वारा इस डायरी का प्रकाशन क्यों ?

अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन पिछले पन्द्रह सालों से सार्वजनिक स्कूली व्यवस्था में गुणवत्तापूर्ण और समतामूलक शिक्षा के लिए काम कर रहा है। इसके काम का फैलाव देश के पाँच राज्यों व इनके तक़रीबन चवालीस जिलों में है। फाउण्डेशन का मानना है कि समाज में अच्छी और समता मूलक शिक्षा के उद्देश्य को तभी हासिल किया जा सकता है जब देश की सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था समृद्ध और सक्षम बने और विपुल समाज का इस पर भरोसा बढ़े। इसीलिए अपने तमाम प्रयासों में फाउण्डेशन का कुछ मसलों पर विशेष जोर है। इनमें से एक तो है- शिक्षकों का क्षमतावर्धन, क्योंकि इसके मूल में यह विश्वास है कि अच्छी नीतियों और संसाधनों की उपलब्धता के साथ ही गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने में शिक्षकों की योग्यता और प्रोफेशनल विकास की भूमिका निर्णायक होती है। दूसरा है- सरकारी स्कूली शिक्षा के प्रति समाज के सभी वर्ग के लोगों में भरोसा और सकारात्मक नज़रिया पैदा करना। क्योंकि इस समझ पर आम सहमति है कि सबके लिए समान सरकारी स्कूली शिक्षा ही समतामूलक शिक्षा की बुनियाद है।

इन मसलों पर कार्य करने लिए फाउण्डेशन द्वारा कई अनुभवजन्य तौर-तरीके अपनाए जा रहे हैं जो संगठन के पिछले डेढ़ दशक के कार्यों की सीख से निकले हैं। इन तरीकों की बुनियाद में यह समझ है कि विविध विषयों पर स्वाध्याय, लेखन, एक-दूसरे से बातचीत और गहन सामूहिक विमर्श, दक्षता संवर्धन के मुख्य तौर तरीकों में शामिल हैं।

1. अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय द्वारा शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों और इस प्रोफेशन से जुड़े व्यक्तियों के लिए शिक्षा के विभिन्न विषयों पर केन्द्रित पत्रिकाओं के प्रकाशन और वितरण के जरिए स्वाध्याय और शैक्षिक विमर्श के अवसर बनाये जा रहे हैं। लर्निंग कर्व, एट राईट एंगल, आई वंडर जैसी पत्रिकाओं का प्रकाशन इसी पहल का नतीजा है।

2. ऐसे विषयों पर शोध अध्ययन आयोजित, प्रोत्साहित और प्रकाशित करने की पहल की जा रही है, जो सरकारी शिक्षा प्रणाली के विभिन्न अवयवों के बारे में स्थापित भ्रामक मान्यताओं के बारे में तथ्यपरक विश्लेषण प्रस्तुत करते हों अथवा शिक्षकों के सतत दक्षता संवर्धन की आजमाई हुई मजबूत प्रक्रियाओं

के विश्लेषणपरक अनुभव रखते हों। **'अध्यापक अनुपस्थिति प्रवृत्ति, एक अध्ययन' 'स्वैच्छिक शिक्षक मंचों की शुरुआत और इन्हें निरंतर बनाये रखना: टोंक, राजस्थान का अनुभव'** और **'टीचर लर्निंग सेंटर: छत्तीसगढ़, कर्नाटक और राजस्थान के कुछ जिलों के अनुभव'** आदि शोध अध्ययन और उनका प्रकाशन इसी सोच का प्रतिफल हैं।

3. सार्वजनिक शिक्षा में नवाचारी, प्रगतिशील, विषयसम्मत आधुनिक विचारों व विधियों को अपनाने वाले प्रतिबद्ध शिक्षकों के काम के बारे में विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में लेख लिखने और इन्हें विमर्श का हिस्सा बनाने की सतत कोशिश की जा रही है। जिसके तहत फाउण्डेशन और विश्वविद्यालय के कई स्थापित और नए लेखक ऐसे शिक्षकों के शैक्षिक कार्यों के बारे में देश के प्रतिष्ठित अखबारों व पत्रिकाओं में निरंतर स्थाई कॉलम और लेख लिखते रहते हैं।

4. बेहतर शिक्षा के काम में जुटे शिक्षक-शिक्षिकाओं को अपने ज़मीनी अनुभवों को विभिन्न विधाओं में लिखने के लिए प्रेरित करना और इन्हें विभिन्न रूपों में प्रकाशित कर बृहत शिक्षक समुदाय के बीच बातचीत का हिस्सा बनाने की पहल करना जारी है। 'प्रवाह' और 'बयालु' जैसी पत्रिकाओं और 'कोशिश जारी है' जैसे शिक्षकों के शैक्षिक अनुभवों के संकलनों का प्रकाशन इसी ध्येय को पाने के उपक्रम हैं। और हेमराज भट्ट द्वारा लिखित 'एक अध्यापक की डायरी के कुछ पन्ने' अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय द्वारा प्रकाशित एक ऐसी ही चर्चित पुस्तक है।

उपर्युक्त उद्देश्यों और प्रक्रियाओं की रोशनी में उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी जिले के सरकारी प्राथमिक विद्यालय, गणेशपुर की शिक्षिका रेखा चमोली द्वारा लिखी गई 'मेरी स्कूल डायरी' विश्वविद्यालय प्रकाशन श्रृंखला की अगली कड़ी है, जो कि 'शिक्षक डायरी लेखन' का उम्दा नमूना प्रस्तुत करती है।

यह डायरी एक सामान्य सरकारी प्राथमिक विद्यालय व कक्षाओं की अभावग्रस्त परिस्थितियों व वातावरण में अध्यापिकाओं के शिक्षा कर्म का स्वाभाविक विवरण प्रस्तुत करती है, जिसका फोकस ग्रामीण किस्म के परिवेश में रहने वाले गरीब बच्चों की शुरुआती शिक्षा पर है।

यह डायरी उदाहरण प्रस्तुत करती है कि एक हुनरमंद शिक्षिका और पचास बच्चों की शैक्षिक साझेदारी से कैसे शिक्षा की जड़ता को तोड़ने की पहल की जा सकती है। यह हमें एक शिक्षिका की अपने कर्म में दक्ष बनने की यात्रा पर ले जाती है।

एक गुणवान शिक्षक कैसा होना चाहिए, इसके कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं के उदाहरण हम इस डायरी में पाते है। इसे पढ़ने के दौरान महसूस करते हैं कि शिक्षिका द्वारा किये जाने वाले विविध सुचिंतित क्रियाकलाप उसे पारम्परिक शिक्षकों से खास बनाते हैं व उसे नयी मानवीय और माहिर शिक्षक बनने की पहचान देते हैं।

कुल मिलाकर यह डायरी हमें सरकारी स्कूली व्यवस्था और यहाँ पढ़ाने वाले शिक्षक-शिक्षिकाओं के बारे में अटूट भरोसा देती है और उन्हें काबिल शिक्षक बनाने की तैयारियों से जुड़ी स्वाभाविक प्रक्रियाओं को जानने-समझने का नज़रिया देती है।

और यही इस डायरी के प्रकाशन का मकसद है।

सम्पादक कि कलम से

हमारे देश की सार्वजनिक स्कूली शिक्षा प्रणाली को अच्छी शिक्षा न दे पाने के लिए अक्सर कोसा जाता है। देश में यह चलन विषमता के वाहक निजी स्कूलों की संख्या के बढ़ने के साथ ही तेजी से बढ़ा है और बढ़ता ही जा रहा है। हालाँकि इसके पीछे कोई शोधजन्य तथ्यात्मक आधार या ठोस प्रमाण प्रस्तुत नहीं किये जाते हैं। इसलिए यह एक मिथ्या धारणा ही है जो बृहत समाज में सरकारी स्कूलों की गुणवत्ता के बारे भ्रम फैलाने का काम कर रही है। और इस भ्रामक धारणा के फैलाव से सरकारी शिक्षा को गहरी क्षति पहुँच रही है।

ऐसी मुश्किल परिस्थितियों में, देश के सरकारी स्कूलों में बच्चों की अच्छी शिक्षा के लिए समर्पित और प्रतिबद्ध लाखों शिक्षक-शिक्षिकाओं के शिक्षा कर्म को याद करना बहुत जरूरी है। उन्हीं में से एक, उत्तराखण्ड के पहाड़ की गोदी में बसे एक छोटे-से गाँव गणेशपुर के साधारण सरकारी स्कूल की शिक्षिका रेखा चमोली द्वारा अपने स्कूली जीवन पर लिखी यह डायरी सार्वजनिक शिक्षा व्यवस्था के प्रति भरोसे को मजबूत करती है।

रेखा चमोली उत्तरकाशी जिले के गणेशपुर प्राथमिक शाला में बीते आठ सालों से पहली से पाँचवीं के बच्चों को पढ़ा रही है। लेकिन यह डायरी अगस्त-2011से सितम्बर-2014 यानी तीन सालों की अध्यापन यात्रा का विवरण प्रस्तुत करती है।

जाहिर है, यह किसी ख़ास या साधन सम्पन्न विद्यालय की डायरी नहीं है वरन् यह एक ऐसे ठेठ भारतीय सरकारी प्राथमिक शाला की शिक्षिका के शिक्षा कर्म का वर्णन प्रस्तुत करती है, जिसका फोकस ग्रामीण किस्म के परिवेश में रहने वाले गरीब बच्चों की शुरुआती शिक्षा पर है। इस स्कूल में शैक्षिक संसाधनों व पर्याप्त जगह का अभाव है। यहाँ पाँच कक्षाओं में हर साल तक़रीबन पचास बच्चों को पाँच महत्वपूर्ण विषय पढ़ाने के लिए सिर्फ दो शिक्षिकाएँ है, जिनमें एक प्रधान अध्यापिका का दायित्व भी सँभाल रही है। इतना ही नहीं, शिक्षा की जड़ता व सामाजिक-आर्थिक और व्यवस्थागत समस्याएँ अन्य सरकारी विद्यालय की तरह यहाँ भी मौजूद हैं।

यह डायरी किसी शिक्षिका की सफलताओं का वृतांत नहीं है वरन् यह एक विचारशील शिक्षिका की निर्मिति की यात्रा पर ले जाती है। आदर्श की अतिरंजनाओं से कोसों दूर यह सामान्य सरकारी स्कूल व कक्षाओं की अभावग्रस्त परिस्थितियों व वातावरण में अध्यापिका के अध्यापन कार्य का स्वाभाविक विवरण प्रस्तुत करती है।

इस सफ़र के एक छोर पर शिक्षिका के प्रयासों से बच्चों को स्वाभाविक रूप से सीखने पर मिलने वाली खुशियाँ है, नयी-नयी विधियाँ आजमाने का जोखिम व उत्साह है, बच्चों के साथ काम करने का धैर्य और संयम है, दूसरे विद्यालय से अनदेखी व अस्वीकार की चोटें और घाव लेकर आये बच्चों के इन ज़ख्मों को, उनके अस्तित्व के स्वीकार से सहलाने व वात्सल्य की मरहमपट्टी का जज़्बा है। असामान्य व्यवहार वाले बच्चों के प्रति विशेष सजगता और स्नेह है। तो दूसरी तरफ अकेली शिक्षिका होने की व्यस्तता और रोज पाँच कक्षाओं में विविध विषय पढ़ाने की थकान व हताशा है। शैक्षिक व भौतिक संसाधनों के अभाव की बेचारगी है। सामुदायिक और व्यवस्थागत अनदेखी, दखलंदाजी व असहयोग से उपजा गुस्सा है। समुदाय में गरीबी व जातीय असमानता के प्रति व्यथा है। और पाठ्यक्रम को समय पर पूरा करने व शिक्षा इतर कार्यों का दबाव है..... और इन परिस्थितियों में असफल बनाये जाने का डर है।

इन तमाम खुशियों और दुश्वारियों के बीच हम डायरी में एक चिंतनशील शिक्षिका के शैक्षिक सरोकार, बच्चों की शिक्षा के प्रति जवाबदेही, इसे निभाने के लिए खुद की अच्छी तैयारी व बच्चों के साथ किए जा रहे विषय अनुकूल अध्यापन के सार्थक प्रयासों को बहुत पास से देख-समझ पाते हैं।

भाषा की पढ़ाई में बच्चों को ध्यान से सुनने, सार्थक बातचीत करने, तर्कसंगत संवाद बोलने, अपने अनुभव लिखने, पढ़ने और कल्पनाशीलता के भरपूर मौके मिलते हैं। इसी तरह खोज विधि पर केन्द्रित बाल शोध मेलों में भागीदारी से बच्चे समूह में कार्य करना, अवलोकन करना, व्यक्तियों से बातचीत करना, जानकारी जुटाना, उनका वर्गीकरण, विश्लेषण और व्याख्या करना और अपने अर्थ व अनुभव शामिल करना आदि सीखते हैं। ये चेष्टाएँ सभी विषयों में रचनाशील शिक्षण के लिए संगत वातावरण बनाती हैं।

जाहिर है, अध्यापन कर्म की केंद्रीय ऊर्जा शिक्षक ही होता है, जो बच्चों को वैसे ही गढ़ता है, जैसे लेखक किताब लिखता है। डायरी-वृतांत में हम देख पाते हैं कि वह कैसे बच्चों के अनुभवों का लगातार जायजा लेती है और इस काम के लिए बच्चों व अध्यापिका के बीच घटने वाली संवाद प्रक्रियाओं का सूक्ष्म अवलोकन व विश्लेषण करती है।

यह डायरी उदाहरण प्रस्तुत करती है कि शिक्षिका और पचास बच्चों की शैक्षिक जुगलबन्दी कैसे शिक्षा में पसरे हर तरह को सन्नाटे को तोड़ने की पहल कर सकती है।

इस तालीमी-सफर में शिक्षिका, शिक्षण की पारम्परिक विधियों को महज़ इसलिये नहीं त्यागती है कि वे पुरानी हैं और नयी को सिर्फ इसलिए नहीं आज़माती कि वे आधुनिक या प्रगतिशील है। उसके प्रयासों में दोनों तरह के शैक्षिक क्रियाकलापों का अनुभवजन्य, सजग व विवेक सम्मत तालमेल दिखायी देता है।

ज़ाहिर है, एक चिंतनशील शिक्षिका बनने की कोई तयशुदा कसौटियाँ नहीं हो सकतीं। लेकिन मनीषी शिक्षक कैसा होना चाहिए- इसके कुछ महत्वपूर्ण पहलुओं की बानगी हम इस डायरी में पाते है। इसे पढ़ने के दौरान महसूस करते हैं कि शिक्षिका द्वारा किये जाने वाले नीचे अंकित क्रियाकलाप उसे पारम्परिक शिक्षकों से खास बनाते हैं व उसे नयी मानवीय और काबिल शिक्षक बनने की पहचान देते हैं:

1. बच्चों को पढ़ाने के लिए लम्बे समय की व रोजाना की सुचिंतित कार्य योजना बनाती है और इसके लिए जरूरी शैक्षिक तैयारी करती है।

2. किसी अवधारणा, समझ या कौशल के विकास के लिए गतिविधियों अथवा क्रियाकलापों का चयन व आयोजन विषयों की प्रकृति व व्यापक उद्देश्यों के आलोक में करती है।

3. शिक्षण की कार्ययोजना और क्रियाकलापों को अपनाने में बच्चों की सुविचारित सक्रिय भागीदारी पुख़्ता करती है।

4. अध्यापन क्रियाकलापों में बच्चों के पूर्व अनुभवों व उनसे सार्थक बातचीत को प्रमुखता से स्थान देती है।

5. क्रियाकलापों का आयोजन इस तरह से करती हैं कि बच्चों में पढ़ाई-लिखाई के इर्द गिर्द ज्यादा से ज्यादा सोचने, विचार करने, चिंतन करने, तर्क-वितर्क करने के अवसर बन सकें।

6. तयशुदा प्रौजेक्ट और असाइंमेंट की रूपरेखा इस तरह बनाती है कि बच्चे मिलजुल कर घटनाओं व सन्दर्भों का व्यवस्थित विश्लेषण व व्याख्या कर सकें व उन्हें अवलोकन व स्वतंत्र अभिव्यक्ति के पर्याप्त मौके मिलें।

7. शिक्षा के इस सफ़र में 'लगातार पढ़ना-लिखना' व 'स्वतंत्र रूप से अपने कार्यों पर चिंतन-मनन करना' और मुड़-मुड़कर पीछे देखना उसके स्वाभाविक सहयात्री होते हैं।

8. नयी विधियाँ आजमाने का जोखिम लेती है और असफलताओं को स्वीकारने का साहस दिखाती है।

9. समृद्ध बाल साहित्य, पुस्तकालय, आसपास का परिवेश व सामग्री उसके अध्यापन क्रियाकलापों का जरूरी हिस्सा होते हैं।

10. शिक्षिका गहरा विश्वास जताती है कि बच्चे समूह में एक-दूसरे की मदद से बेहतर सीखते हैं।

11. बच्चों को पढ़ाने में ख़ुशी व आनन्द महसूस करती है और उनके साथ वात्सल्यपूर्ण व्यवहार करती है।

12. उसे बच्चों के साथ रहना बहुत अच्छा लगता है व उनकी भावनात्मक जरूरतों का ख़्याल रखती है।

13. कुछ विषयों के अध्यापन में अपनी कमजोरियों को स्वीकार करती है व उसमें निरन्तर सुधार का प्रयास करती है और सदैव नया सीखने को आतुर रहती है।

14. अपने अध्यापन प्रयासों में इस समझ के प्रति सजग रहती है कि 'बचपन विविधताओं से भरा है और प्रत्येक बच्चा अपनी रफ्तार व तरीके से सीखता है'

15. अपनी समझ व पहलकदमियों पर संशय करती है और संशयों पर सवाल उठाती है।

रेखा ने डायरी में कुछ ऐसे प्रसंगों का जिक्र किया है जिनमें हम सामाजिक,लैंगिक, जातीय और आर्थिक विषमता से उपजी पीड़ा को महसूस कर पाते है। साथ ही बच्चों व महिलाओं के बारे में पहले से बनी मान्यताओं का असर समाज और शिक्षकों की सोच व कार्य-व्यवहार पर साफ़ तौर पर देख पाते हैं। इन धारणाओं के पीछे स्त्री-पुरुष दोनों को भूमिका बद्ध और रूढ़ छवियों के चश्मे से देखने का गहरा आग्रह है।

ये अप्रिय प्रसंग स्कूल का वह कड़वा यथार्थ प्रस्तुत करते हैं जिसे पढ़कर हम आश्चर्य जताते हैं तो इसलिए, क्योंकि बाहरी संसार को इस चारदीवारी के भीतर झाँककर देखने का बहुत ज्यादा अभ्यास नहीं है। और जिन्हें अवसर बनते हैं उनकी आँखों में स्कूली समाजीकरण व वयस्कता के जाले इस कदर पड़े होते हैं कि वे उन घटनाओं की सूक्ष्मता को शिक्षा के समाज विज्ञानी चश्मे से देख पाने में असमर्थ रहते हैं।

उम्मीद है, शिक्षिका की डायरी में निरूपित ये चुनिन्दा प्रसंग सुधी पाठकों को स्कूल व कक्षाओं के कटु यथार्थ को सूक्ष्मता से देखने और इनमें गुथे हुए अच्छी शिक्षा के अवरोधी तत्वों को पहचानने की समाज विज्ञानी दृष्टि देंगे। यह भी आशा की जानी चाहिए उपर्युक्त प्रसंगों के वृतांत शिक्षा विमर्श का हिस्सा बनेंगे।

सुखद है कि, स्कूली जीवन के इस कटु यथार्थ के बीच शिक्षिका, बच्चों के लिए शब्द, ध्वनि, अभिनय व रंगों के अनुभव मौके जुटाकर उनमें संवेदना, सृजन और सौन्दर्य बोध के उन पुलों को जोड़ने का काम करती है, जिन्हें वर्तमान दौर की शिक्षा में जबरदस्त दबाव, तनाव चिन्ताओं व उत्पीड़न से उत्पन्न निराशा ने क्षतिग्रस्त कर दिया है। स्कूल में सृजनात्मक गतिविधियों के लिए बना 'बालसखा कक्ष'इसकी उम्दा मिसाल है।

लेखिका के व्यक्तित्व व शिक्षण विचार प्रक्रियाओं पर एनसीएफ-2005 और तोत्तोचान, बच्चे की भाषा और अध्यापक, बच्चे असफल कैसे होते है ?, पढ़ने की समझ, पढ़ने की दहलीज़ पर, उत्पीड़ितों का शिक्षा शास्त्र और दिवास्वप्न व कथा-कहानी का शास्त्र जैसी शिक्षा की उम्दा किताबों का प्रभाव साफ़ दिखाई देता है।

शिक्षिका की यह स्वीकारोक्ति कि डायरी लिखने से मिले अनुभवों ने उनके सीखने को समृद्ध किया है, गौर करने लायक है। शिक्षा की बगिया में अच्छी शिक्षा के पौधे रोपने, उन्हें खाद-पानी देने का उपक्रम इस डायरी में जगह-जगह दिखाई देता है। इतना ही नहीं यह डायरी, शिक्षक डायरी लेखन विधा की एक ऐसी अंतर्दृष्टि व सलीका देती है जो इस लेखन के पारम्परिक, यांत्रिक तथा रूढ़ तौर-तरीकों से सर्वथा भिन्न है।

इस डायरी की सार्थकता इसी में है कि इसे बृहत शिक्षक समुदाय, जिसमें शिक्षा से सरोकार रखने वाले सभी सुधीजन शामिल है, के बीच पढ़ा-गुना जाए।

गुरबचन सिंह

भूमिका

शिक्षण का पेशा काफी चुनौती भरा है। इस पेशे में यदि आनन्द की अनुभूति को कायम रखना है, तो बहुत ज़रूरी है कि शिक्षक अपने सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में खुद से निरन्तर सवाल-जवाब करें और अपने अनुभवों के आधार पर अपनी चुनौतियों से निकलने के रास्ते तलाशे। आमतौर पर शिक्षक अपने अनुभवों के आधार पर ही अपने सीखने-सिखाने के तरीकों को निखारते रहते हैं, लेकिन कई बार अपने अनुभवों को दर्ज़ नहीं कर पाते हैं। परिणाम स्वरूप उनकी खुशी और परेशानियों के ढेर सारे पल समय के साथ कहीं खो जाते हैं।

अपने शिक्षण के दौरान एक ज़रूरी बात मेरी समझ में आयी कि पीछे मुड़कर अपने अनुभवों को टटोलना सीखने का एक अच्छा माध्यम हो सकता है। कक्षा में या स्कूल में घटित हो रही प्रक्रियाओं को लिखित रूप में दर्ज़ करने से खुद की शिक्षण प्रक्रियाओं को जानना-समझना आसान होता है। साथ ही ज़रूरत पड़ने पर इन अनुभवों को आगे भी पढ़ा-समझा जा सकता है।

राजकीय प्राथमिक विद्यालय गणेशपुर में वर्ष 2011 से 2014 के दौरान अध्यापन करते हुए मैंने अपने दैनिक अध्यापन अनुभवों को दर्ज़ करने का प्रयास किया है। गणेशपुर, हिमालयी राज्य उत्तराखण्ड के उत्तरकाशी जिले के उत्तर में स्थित एक छोटा-सा गाँव है। इन तीन वर्षों के दौरान लगभग एक वर्ष ऐसा भी रहा, जब मैं विद्यालय में एकल अध्यापिका थी। मेरे विद्यालय में इस दौरान पहली से पाँचवीं कक्षा तक 50 से अधिक बच्चे हमेशा ही बने रहे।

बच्चों को सीखने में मदद करने की अपनी ज़िम्मेदारी को असरदार बनाने के लिए बहुत ज़रूरी था कि मैं अपनी कक्षा में इस तरह से काम करूँ कि बच्चे सीखने में रुचि ले पायें और स्कूल उनके लिए बोझिल जगह न बने।

मैंने भाषा शिक्षण में सीधे किताब से पढ़कर भाषा सिखाने की प्रक्रिया को समझने की कोशिश की है। साथ ही भाषा शिक्षण में बातचीत और बाल साहित्य के महत्व को भी समझने का प्रयास किया है। स्थानीय ज्ञान को पाठ्य पुस्तकीय ज्ञान और पुस्तकीय ज्ञान को बाहरी जीवन के ज्ञान से जोड़कर देखना भी मेरे प्रयासों में शामिल रहा है।

विद्यालय में बहुत सी चीज़ें समानान्तर चल रही थीं। मैं अपनी कक्षा में पाठ्यक्रम व विषयवार कार्य कर रही थी। पर मैंने अपनी डायरी में उन्हीं पक्षों को लिखा है जिन पर मैं गहराई से काम कर पायी। जिन पर मेरा निरन्तर सोचना-समझना, पढ़ना-लिखना और संवाद करना बना रहा।

बचपन विविधताओं से भरा है और प्रत्येक बच्चा अपनी रफ़्तार से सीखता है, यह बात मुझे रोजाना कुछ न कुछ लिखने के लिए प्रेरित करती रही है। सतत और व्यापक आकलन सीखने-सिखाने का ही एक हिस्सा है, इसे भी मैंने अपने शिक्षण के दौरान लगातार समझने का प्रयास किया है।

मेरी शिक्षण डायरी कुछ इसी तरह के अनुभवों को अपने में समेटे हुए है। अपने स्कूल के अनुभवों को लिखने के पीछे मेरा उद्देश्य था कि यह देख पाऊँ कि मैं बच्चों के साथ किस तरह काम कर रही हूँ। इस दौरान बच्चों की क्या प्रतिक्रियाएँ रही हैं। वे शैक्षिक संबोधों को किस हद तक सीख पा रहे हैं ? उनके नहीं सीख पाने की वजहें क्या हैं। मैं जानना चाहती थी कि बच्चे सीखते कैसे हैं। इन अनुभवों में एक तरफ़ सन्तोष, खुशी और उमंग के पल थे, तो दूसरी तरफ़ हताशा, तनाव और खीझ के अवसर थे।

जब कभी मैं इन पन्नों को पढ़ती, तो कुछ न कुछ ज़रूर सीखती। मैं देखती कि मैंने पिछली बार कहाँ पर गलती की थी; मुझे आगे क्या करना चाहिए या मेरी कौन-सी गतिविधियाँ दोहराने से बच्चों को मदद मिलेगी व किन गतिविधियों पर मुझे पुनर्विचार करने की ज़रूरत है। मुझे एक साथ कई कक्षाएँ देखनी होती थीं, इसलिए मेरा प्रयास रहता कि मैं इस तरह की गतिविधियाँ खोज सकूँ जिनसे अलग-अलग अधिगम स्तर के बच्चों के साथ काम कर पाऊँ व प्रत्येक बच्चा कुछ न कुछ सीख पाये। मेरा गलतियाँ करना, सुधारना और आगे बढ़ना साथ-साथ चल रहा था। एक शिक्षिका के तौर पर बच्चों के साथ काम करना व सीखना अभी भी जारी है। परन्तु आज मैं खुद को अपने शुरुआती दौर से थोड़ा बेहतर देख पाती हूँ।

स्कूल में पढ़ाई-लिखाई और डायरी लिखने के साथ-साथ कुछ और चीज़ें भी चल रही थीं, जिनमें शैक्षिक कार्यशालाओं में प्रतिभाग करना, शिक्षा में काम करने वाले अपने कुछ साथियों से बातचीत करना, शिक्षा पर लिखी पुस्तकें, लेख व पत्रिकाएँ आदि पढ़ना शामिल था। इन सबने मिलकर शिक्षा पर एक स्तर की समझ बनाने में मेरी मदद की। जब मैं शिक्षा की किताब पढ़ रही थी, तो पता चला कि अपनी सहज बुद्धि के हिसाब से जो काम अपने स्कूल में कर रही हूँ, उनके कुछ शिक्षाशास्त्रीय, समाजशास्त्रीय व मनोवैज्ञानिक आधार भी हैं। यह जानकर स्वयं पर विश्वास बढ़ा। अपने स्कूली अनुभवों को लिखने के क्रम में भी मुझमें अपने शिक्षण कार्य को लेकर एक नयी समझ विकसित हुई। अपने काम से लगाव बढ़ा। बच्चों को समझने, उनके साथ काम करने व सीखने-सिखाने को लेकर कुछ मान्यताएँ टूटीं, तो कुछ नयी बनीं भी।

ये डायरी एक शिक्षिका की डायरी है और तमाम व्यस्तताओं और ज़िम्मेदारियों के बीच लिखी गयी है, तो इसमें भाषाई कच्चापन दिखने पर आश्चर्य नहीं होना चाहिए। जब मैंने डायरी लिखनी शुरू की थी, तो उन तमाम चीज़ों को लिखा जिन्होंने मेरे शिक्षण कार्य व सोच को किसी न किसी तरह प्रभावित किया। लेकिन जल्दी ही मुझे यह समझ आया कि बहुत-सी मुश्किल बातों के हल मेरे पास नहीं हैं। इसलिए उन पर ध्यान देना अपनी सीमित ऊर्जा को बेवजह खत्म करना है। इसलिए इस डायरी में मुख्य रूप से वे ही बातें व सन्दर्भ शामिल हैं जिनका सम्बन्ध बच्चों के सीखने-सिखाने से है। मैंने यह भी प्रयास किया कि किसी भी तरह की नकारात्मक सोच का प्रभाव खुद पर न पड़ने दूँ। हालाँकि ऐसा करना कभी-कभी बहुत कठिन हो जाता था। ऐसी स्थिति में शिक्षा व साहित्य पर पढ़ी किताबों व शिक्षक साथी महेश चन्द्र पुनेठा की प्रेरणा ने बहुत साथ दिया। जगमोहन चोपता से हुई बातचीत ने विभिन्न सन्दर्भों पर मेरी समझ को गहराई और विस्तार देने में मदद की।

मैं जानती हूँ, मैंने अपने स्कूल में कुछ भी नया या अनोखा काम नहीं किया है। मेरा यह भी आग्रह नहीं है कि मेरे अपनाये तरीके ही सर्वोत्तम हैं। मुझे जब, जो सही लगा वो किया। अपने स्कूली अनुभवों को लिखना, उन्हें पलटकर पढ़ना और उनसे सीखना मेरी कक्षा में सदा ही मददगार रहे हैं। डायरी लिखने से मिले अनुभवों ने मेरा सीखना समृद्ध किया है। डायरी प्रकाशित करवाने का आग्रह कुछ मित्रों का रहा, जिनका इस बात पर दृढ़ विश्वास है कि हम शिक्षक समुदाय के रूप में एक-दूसरे के शैक्षिक अनुभवों से बहुत कुछ सीख सकते हैं। मैंने यह डायरी यह सोचकर प्रकाशित करवायी है कि इसको पढ़ने पर शिक्षा में काम करने वाले साथी मुझे अपनी बहुमूल्य राय दे सकें और मुझे अपने काम को सही दिशा देने में मदद मिल सके। यदि यह डायरी किसी भी शिक्षक या शिक्षा में काम कर रहे किसी साथी की किसी प्रकार की कोई मदद कर पाती है, तो इसकी सार्थकता बढ़ जाएगी। हम शिक्षक साथी एक दूसरे के शैक्षिक अनुभवों से सीखें और बच्चों के साथ बेहतर तरीकों से काम कर पायें, इसी विश्वास के साथ।

रेखा चमोली
04 मार्च 2017, उत्तरकाशी

आभार

- शिक्षा विभाग उत्तराखण्ड का, जिसने मुझे शिक्षिका की भूमिका में काम करने का मौका दिया।
- उन सभी बच्चों का, जिनके साथ काम करते हुए मैंने वो सब सीखा जो किसी भी किताब या प्रशिक्षण से सम्भव नहीं था।
- उन सभी शिक्षकों, शिक्षा अधिकारियों व शिक्षा में काम कर रहे साथियों का, जिनके साथ हुए सार्थक संवाद ने मुझे अपने शिक्षण कार्य के विभिन्न सन्दर्भों को समझने में मदद की।
- मेरे सभी सहयोगी शिक्षक-शिक्षिकाओं का मुझ पर विश्वास बनाए रखने के लिए, खासतौर पर प्रधान अध्यापिका श्रीमती रजनी बलूनी का, जिनके प्यार व सकारात्मक व्यवहार ने मेरी ऊर्जा को कम नहीं होने दिया।
- उन सभी रचनाकारों का,जो बच्चों के लिए लिखते हैं और जिनकी रचनाओं का उपयोग मैं अपनी कक्षा में करती रही हूँ।
- रूम टू रीड व श्री भुवनेश्वरी महिला आश्रम का, हमारे विद्यालय में एक समृद्ध पुस्तकालय बनाने में मदद के लिए।
- अज़ीम प्रेमजी फाउण्डेशन के साथियों का, उन कार्यक्रमों के लिए जिनमें सहभागिता कर मुझे शिक्षा पर अपनी समझ को निखारने का अवसर मिला और साथ ही मेरे इस छोटे-से प्रयास को डायरी रूप में प्रकाशित करने के लिए।
- जितेन्द्र शर्मा जी व नवनीत बेदार जी का, जिन्होंने डायरी को सम्पादक की नज़र से पढ़ा व अपने महत्वपूर्ण सुझाव दिये।
- गुरबचन सिंह जी का, जिन्होंने इस डायरी का सम्पादन करना स्वीकार किया, अपने समृद्ध अनुभवों से परखकर इसे सुगठित व पठनीय स्वरूप देने में मदद की।
- मेरे परिवार और दोस्तों का हर तरह की परिस्थितियों में मेरा साथ देने के लिए।

वृतान्त
एक

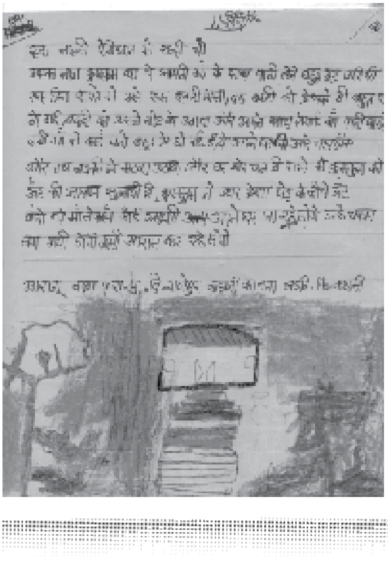

मेरी स्कूल डायरी

प्राथमिक शाला में रचनात्मक लेखन का आशय

३.८.११

आज से प्रधानाध्यापिका दीदी श्रीमती रजनी बलूनी10 दिनों के सेवारत प्रशिक्षण के लिये ब्लॉक संसाधन केन्द्र मनेरी जा रही हैं इसलिए विद्यालय की ज़िम्मेदारी पूरी तरह से मुझ पर आ गयी है। सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में आमतौर पर दो शिक्षक नियुक्त होते हैं और कई बार प्रशिक्षणों, विभागीय बैठकों या फिर निजी अवकाश के चलते एक ही अध्यापिका बच्चों के शिक्षण के लिए उपलब्ध होती है। आमतौर पर यह परिस्थिति माह में दो से तीन दिन बन ही जाती है और साल में 10 दिन के प्रशिक्षण के दौरान भी एक ही शिक्षिका विद्यालय में उपस्थित रहती है।

मैं आज सुबह 7:10 पर विद्यालय पहुँची। अभी दो-तीन बच्चे ही आये थे। हमने मिलकर विद्यालय खोला। धीरे-धीरे बाकी बच्चे भी आने लगे। मैंने बच्चों के साथ मिलकर विद्यालय की सफ़ाई की। लगभग सभी बच्चों के आने के बाद प्रार्थना सभा प्रारम्भ की। प्रार्थना के बीच में ही ग्राम प्रधान व पेंटर विद्यालय आये। बच्चों ने प्रार्थना के बाद प्रतिज्ञा व राष्ट्रगान के अलावा गाँव के समाचार और सामान्य ज्ञान के बारे में जानकारी दी। कुछ बच्चों ने कविताएँ आदि सुनायीं। यह सब देख-सुनकर हमारे अतिथि खुश हुए। मैंने बच्चों को अपनी-अपनी कक्षा में जाने को कहा और स्वयं प्रधान जी से बातें करने लगी।

दरअसल विद्यालय में एक और शौचालय का निर्माण होना है और पेंट का काम भी करवाना है। यह बात प्रधान जी के साथ कुछ दिनों पहले हो गयी थी। उस समय यह बात भी हुई थी कि जब प्रधानाध्यापिका प्रशिक्षण से वापस आ जाएँगी तब यह कार्य होगा। लेकिन आज प्रधान जी ने कहा, "वे आज या कल से काम प्रारम्भ करवाना चाहते हैं।" मैंने उनसे कहा, "वे शौचालय का काम तो करवा लें पर रंग-रोगन का काम कुछ दिनों बाद करवाएँ। क्योंकि एक तो इन दिनों खूब बारिश हो रही है दूसरा दीदी के न होने से बच्चों के साथ अकेले काम करने और सामान इधर-उधर रखने में दिक्कत होगी।" वे इसके लिए राज़ी हो जाते पर पेंटर ने कहा, "फिर उनके पास समय नहीं है इसलिए वो कल से ही काम करेंगे।" तो यह तय हुआ कि आज पेंटर यह देखकर कि कहाँ-कहाँ, क्या-क्या रंग होना है, पेंट खरीदने उत्तरकाशी बाज़ार जाएगा व कल से रंग-रोगन का काम शुरू होगा।

ग्रामीण क्षेत्रों में पेंटर या किसी दूसरे काम करने के लिए किसी कुशल व्यक्ति का मिलना कठिन होता है। आमतौर पर श्रमिक शहरों में या इनके आसपास ही काम करते हैं। वहाँ काम की पर्याप्तता होती है। उन्हें आने जाने में सुविधा रहती है। उनका कमरा भी वहीं होता है। ये पेंटर हमारे स्कूल में इसलिए काम करने को राज़ी हुए हैं क्योंकि इन दिनों इन्हें अन्य जगह काम नहीं है। हमारी मज़बूरी है कि हम आजकल में काम कराएँ क्योंकि बाद में ये मिलेंगे नहीं, फिर चाहे हमें अभी सुविधा हो या न हो।

अकेली शिक्षिका होने के कारण मुझे विद्यालय के समस्त क्रियाकलापों व शिक्षण कार्य को स्वयं देखना है, तो मुझे एक ऐसी कार्ययोजना बनानी होगी जिससे कक्षा तीसरी, चौथी और पाँचवीं के बच्चों का पाठ्यक्रम सुचारु रूप से चलता रहे। वे अपने सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में व्यस्त रहें व मुझे भी पहली व दूसरी कक्षा के साथ शिक्षण कार्य में दिक्कत न हो।

मैंने तीसरी, चौथी और पाँचवीं कक्षा के बच्चों के साथ हिन्दी में एक साथ काम करने का निर्णय लिया और इसके लिए कार्ययोजना तैयार की। इस योजना का उद्देश्य बच्चों में समझकर पढ़ने-लिखने की आदत का विकास करना, उनको स्वयं पढ़ने-लिखने के लिए प्रेरित करना, किसी विषय विशेष पर व्यवस्थित तरीके से अपनी राय व्यक्त कर पाना, सृजनात्मकता बढ़ाना व उनमें मौलिक लेखन कर पाने का कौशल विकसित करना आदि रखा। मध्यान्तर से पहले का समय इस काम के लिए निर्धारित किया। मध्यान्तर के बाद का समय गणित व अन्य विषयों के लिए रखा। प्रयास यह भी किया कि "हमारे आसपास" पुस्तक के सम्बोध भी इस कार्ययोजना में शामिल हों। इसके लिए मैंने नीचे अंकित

गतिविधियाँ तय कीं:

1. अपनी खुद की तैयारी के बाद बच्चों से किसी सन्दर्भ/विषय पर बातचीत करना
2. शब्दों से कहानी बनाना (इस गतिविधि के लिए दो दिन तय किये)
3. कविता पर बातचीत व स्वयं की कविताएँ लिखना
4. अधूरी कविता पूरी करना
5. एक दिन की बात है (अनुभव लेखन करना)
6. चित्र देखकर कहानी लिखना
7. संवाद लेखन
8. "काश/अगर तुम होते" विषय पर कविता लेखन

हालाँकि इनमें से किसी भी गतिविधि के लिए एक दिन का समय अपर्याप्त ही होता है लेकिन मैं अपनी हिन्दी की कक्षा में समय-समय पर इसी तरह की गतिविधियाँ बच्चों के साथ करती रहती हूँ। इसलिए मुझे विश्वास है कि ये कार्ययोजना सफल होगी। मेरा इरादा इस दौरान किये गये कार्य का दस्तावेज़ीकरण करना भी था ताकि बच्चे अपने लिए पढ़ने की सहायक सामग्री बनाएँ और उन्हें ये काम अच्छा लगे।

आमतौर पर सरकारी विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चे वंचित समुदाय से आते हैं। उनके पास पढ़ने-लिखने की सामग्री का अभाव होता है। पाठ्य पुस्तकों की छपाई और विषयवस्तु कई बार बच्चों को पढ़ने के लिए आकर्षित नहीं कर पाती। जबकि शिक्षा में सतत रूप से काम करने वाले लोगों का मानना है कि पढ़ना, लगातार पढ़ने से आता है और इसके लिए बच्चों को पढ़ने के पर्याप्त अवसर दिये जाना ज़रूरी है। मेरा अनुभव है कि जब बच्चे स्वयं के अनुभवों से कुछ लिखते हैं, उसको अपने साथियों के साथ साझा करते हैं, तो यह उनमें पढ़ने- लिखने के प्रति उत्साह और रुचि पैदा करता है। बड़े बच्चों को एकाग्रचित्त होकर कार्य करता देखकर स्कूल आने वाले नये बच्चों में भी दिलचस्पी पैदा होती है। पूरा मसला विद्यालय में एक ऐसी संस्कृति के निर्माण से जुड़ा है जो बच्चों में अन्य किताबों के प्रति उत्साह पैदा करे और उन्हें अपनी बात कहने व दूसरों की बात सुनने व समझने की दिशा में ले जाए।

कक्षा तीसरी, चौथी व पाँचवीं के साथ इस तरह का कार्य करने के पीछे मेरा एक उद्देश्य यह भी है कि अभी तक के अपने शिक्षण की प्रभावशीलता देख पाऊँ। कक्षा-तीन को शामिल

करने का उद्देश्य यह है कि वे बड़े बच्चों को काम करते हुए देखें, उनकी बातचीत सुनें व उसमें शामिल हों, जिससे उनमें स्वतन्त्र लेखन की शुरुआत हो सके।

मैंने बच्चों से इस सम्बन्ध में बात की। उन्हें बताया कि अगले कुछ दिन हम 'बालसखा कक्ष' में काम करेंगे। ये हमारा सृजनात्मक कक्ष है, जहाँ हम विभिन्न रचनात्मक कार्य करते रहते हैं, जैसे: चित्रकारी, मिट्टी का कार्य, कागज़, पत्थर और लकड़ी के गुटकों से चीज़ें बनाना आदि। ये कक्ष हमारा पुस्तकालय भी है, जहाँ बच्चे अपने मन से पढ़ते, लिखते और खेलते हैं। सीधे-सीधे अपनी पाठ्य पुस्तकें न पढ़ने व किसी भी प्रकार का अभ्यास कार्य न करने के कारण वे यहाँ ज़्यादा सहज होते हैं। कुल मिलाकर इस कक्ष में कार्य करने का अर्थ होता है कि हम सामान्य दिनों से कुछ अलग कार्य करने वाले हैं।

जब मैंने बच्चों को बताया कि हम अपनी खुद की किताब बनाएँगे तो वे बहुत उत्साहित हुए। जब हम शिक्षण कार्य योजनाबद्ध तरीके से करते हैं तो यह सब आसान लगने लगता है। बच्चों और शिक्षक के सामने छोटे-छोटे लक्ष्य होते हैं जिससे ध्यान केन्द्रित करने में मदद मिलती है। योजना निर्माण के दौरान मेरा ध्यान इस बात पर रहता है कि बच्चों को शिक्षण प्रक्रियाओं में किस तरह की समझ, दक्षताओं व कौशलों के विकास के अवसर देना है।

आज मैंने शब्दों से वाक्य बनाने की गतिविधि की।

जैसे: मैंने 'रास्ता' व 'पेड़' शब्द से वाक्य बनाने के लिए बच्चों से बातचीत की और चुनकर दो वाक्य ब्लैकबोर्ड पर लिखे।

1. रास्ता- यह रास्ता गाँव की ओर जाता है।
2. पेड़- पेड़ पर चिड़िया का घोंसला है।

शब्दों का वाक्य में प्रयोग करते हुए बच्चे उन शब्दों के बारे में सोचते हैं और उन शब्दों को अपने अनुभवों में खोजते हुए उनके बारे में लिखते हैं।

जब बच्चों से इस बारे में बात की कि, "दोनों शब्दों का उपयोग कर एक नया वाक्य बनाना है तो कैसे बनाएँगे?" तो बच्चों ने इस तरह के नये वाक्य बनाने की कोशिश की:

यह रास्ता गाँव की ओर जाता है और पेड़ पर चिड़िया का घोंसला है।

इस दौरान बच्चे अलग-अलग तरीकों से शब्दों के साथ खेल रहे थे व इस प्रक्रिया में आनन्द ले रहे थे।

बातचीत का क्रम आगे बढ़ाने पर नीचे अंकित वाक्य उभर कर आये:

1. गाँव के रास्ते में एक पेड़ है जिस पर चिड़िया का घोंसला है,
2. गाँव के रास्ते में अमरूद के पेड़ पर चिड़िया का घोंसला है,
3. गाँव की ओर जाने वाले रास्ते में सेमल का बड़ा पेड़ है, आदि।

आज हमने ढेर सारे शब्दों से अलग-अलग व मिलाकर वाक्य बनाये।

इस तरह से काम करते हुए मुझे बच्चों के साथ बातचीत के महत्त्व को समझने में मदद मिली। जब हम शब्दों एवं वाक्यों का अलग-अलग सन्दर्भों में उपयोग करते हैं तो बच्चों को भाषा के ढाँचे को समझने में मदद मिलती है।

मैंने बच्चों को गृहकार्य में कुछ और 'शब्द वाक्य' बनाने को दिये।

मेरी अगले दिन की योजना कुछ चुनिन्दा शब्दों का उपयोग करते हुए कहानी लेखन की है।

४.८.११

शब्दों से कहानी बनाना

स्कूल में कोई इतना बड़ा कमरा नहीं है कि कक्षा एक से पाँच के सभी 53 बच्चे उस में एक साथ बैठ पायें और उनके साथ अलग-अलग स्तर के अनुरूप शिक्षण कार्य हो पाये। आज मैं घर से स्कूल आते हुए पुराने अखबार और अपने बच्चों की आधी भरी हुई पुरानी कापियाँ साथ ले आयी थी ताकि प्रथम वादन (पीरियड) में पहली और दूसरी कक्षा के बच्चों को व्यस्त रख पाऊँ और इसी बीच कक्षा-3, 4 और 5 के बच्चों को उनका काम समझा सकूँ। कक्षा एक व दो के बच्चों को आँगन में एक गोला बनाकर कविताएँ गाने को कहा और स्वयं कक्षा-3, 4 और 5 के बच्चों के पास गयी। आज हमें शब्दों के साथ कहानी बनाने की गतिविधि करनी थी।

कहानी लिखने पर बच्चों से पिछले दिनों विस्तार से बात हुई थी, जिसकी शुरुआत कहानियाँ सुनाने से हुई थी। पिछली कक्षाओं में हमने मिलजुल कर कहानियाँ सुनने, पढ़ने और कहने की कुछ गतिविधियाँ की थीं। इससे हमने यह जानने का प्रयास किया था कि कहानी क्या होती है।

आज मैंने बच्चों का ध्यान पुनः कहानी के घटकों की ओर दिलाने की कोशिश की। जैसे: कोई नयी पुरानी बात, घटना या अनुभव को बताना, कुछ लोगों के बारे में बात या किसी व्यक्ति या जीव-जन्तु की बात, बाकी दिनों से अलग बात, किसी परेशानी में पड़ना और उससे बाहर निकलना, समय का गुज़रना, संवाद होना आदि। इस आरम्भिक बातचीत के बाद मैंने ब्लैकबोर्ड पर कुछ शब्द लिखे, जैसे- बस, भीड़, सड़क, ड्राइवर, तेज़ शोर, रास्ता, पेड़, लोग आदि। फिर बच्चों को इन शब्दों से कहानी लिखने को कहा।

मैं पहली और दूसरी कक्षा के साथ काम करने लगी। इन कक्षाओं में कुल मिलाकर 23 बच्चे हैं। मैंने ब्लैकबोर्ड पर कुछ शब्द लिखे जैसे नमक, कान, नाक, जाना, जानवर आदि। फिर कुछ बच्चों को बुलाकर शब्दों में 'न' अक्षर पर गोला बनाने की गतिविधि की। इसके बाद सभी बच्चों को अखबार का एक-एक पेज देकर कहा कि वे इसमें 'न' और 'क' पर गोला लगाएँ व उन्हें गिनें कि ये अक्षर शब्दों में कितनी बार आये हैं। दरअसल बच्चे हमारी अनुपस्थिति में अपनी कापियों को बहुत खराब कर देते हैं। कक्षा-एक के बच्चे कॉपी के पेज बहुत फाड़ते हैं इसलिए मैंने उन्हें ये काम अखबार में करने को दिया। जिससे वे कमरे और बरामदे में दूर-दूर भी बैठे और उन्हें कुछ नया करने को भी मिला। अखबार में छपे अक्षर बहुत बारीक होते हैं। फिर भी मैंने देखा बच्चे 'न' अक्षर पर गोला बना रहे थे और "ऐसे करना है जी" बोलने लगे थे। जो नहीं कर पा रहे थे वे दूसरों से पूछ रहे थे और अखबार में बने चित्र देख रहे थे।

इसी बीच कक्षा चार और पाँच के बच्चे अपना काम कर चुके थे। मैंने बच्चों को उनकी कहानियों के शीर्षक लिखने के लिए कहा। करीब सवा नौ बजे बच्चे एक बड़ा-सा गोला बनाकर अपनी-अपनी कहानियाँ सुनाने को तैयार थे। तीनों कक्षाओं को मिलाकर आज कुल 27 बच्चे उपस्थित थे।

1. सबसे पहले कक्षा-तीन के शुभम् ने अपनी कहानी सुनायी: "एक बस थी, जिसे चला रहा था ड्राइवर। अचानक एक आदमी बोला, "बस रोको, आगे सड़क टूटी हुई है। ड्राइवर ने बस रोकी। सड़क पर पत्थर व पेड़ गिरे थे। लोगों ने मिलकर बस के लिए रास्ता बनाया और बस आगे चली। सब लोग अपने गाँव पहुँचे।"
2. तीसरी कक्षा की दीक्षा ने अपनी कहानी में लिखा: एक पेड़ के गिरने से सड़क बन्द हो गयी। जब ड्राइवर पेड़ हटाने लगा, तो जंगल से पेड़ काटने वालों की आवाज़ आयी "ये हमारा पेड़ है, अपनी बस वापस ले जाओ।" जंगल से पेड़ काटने वाले

आये ,सब ने मिलकर पेड़ को हटाया। फिर लोग वापस अपने गाँव गये। दीक्षा ने अपनी बस का नाम रखा 'मुनमुन' और ड्राइवर का 'राहुल'।

3. कक्षा पाँचवीं के दीपक ने लिखा: एक गाँव से बाज़ार जाने का एक ही रास्ता था। बाज़ार जाने वालों की बहुत भीड़ हो गयी थी। बस बहुत भर गयी। ड्राइवर ने बहुत तेज़ बस चलायी। बस दुर्घटनाग्रस्त हो गयी। सड़क भी टूट गयी। लोगों को चोट लग गयी। लोगों का शोर सुनकर आसपास से लोग बचाव करने आये और घायलों को अस्पताल ले गये। लोगों ने ड्राइवर से कहा, "इतनी तेज़ गाड़ी नहीं चलानी चाहिए।" दीपक ने अपने ड्राइवर का नाम रखा 'राज'।
4. दिव्या (कक्षा-चार) ने लिखा: प्रदीप की बस जिसे वह बहुत तेज़ चला रहा था, रास्ते में पेड़ गिरा था जिसमें बस टकरा गयी और लोगों को चोट लगी, आदि।
5. अनिल (कक्षा-पाँच) ने अपनी कहानी में रेलगाड़ी को भी जोड़ा जो बस से तेज़ चल रही थी। रास्ते में गिरे पेड़ को लोग जंगल में वापस रख रहे थे।
6. अंजली (कक्षा-चार) ने अपनी कहानी में बहुत से संवाद भी लिखे। अंजली बहुत अच्छी रचनाकार है। अंजली की बस में बहुत भीड़ थी। ड्राइवर ने लोगों से कहा, "जरा आराम से बैठना।" लोग उसकी बात को सुनकर हँसे। लोगों ने कहा, "क्या तुम्हारी बस कच्ची है जो टूट जाएगी?" ड्राइवर ने कहा, "तुम मेरी बात पर हँसोगे तो मैं बस तेज़ चलाऊँगा।"

   लोग: "नहीं-नहीं बस गिर जाएगी।"

   ड्राइवर: "तुम मुझ पर भले ही हँस लो पर मेरी बस पर नहीं हँसना।"

   लोग: "हमें उतार दो हम वापस चले जाएँगे।"

   ड्राइवर बस को धीरे चलाने लगा। अंजली ने यह भी लिखा कि ड्राइवर बारहवीं पास था उसे अपनी गाड़ी से बहुत प्यार था।

7. जयेन्द्री (कक्षा-पाँच) ने बहुत लम्बी कहानी लिखी थी: "एक बुढ़िया थी। उसका नाम रानी था। उसकी बेटी का नाम निक्कू था। वह अपनी ससुराल में जाती है। एक दिन रानी बस में बैठकर अपनी बेटी से मिलने जाती है। रास्ते में सड़क टूटी होती है। लोग लकड़ी का पुल बनाकर सड़क पार करते है। आगे जाकर बस पेड़ से टकरा जाती है। वहाँ भीड़ हो जाती हैं। ड्राइवर तेजी से बस चलाने लगता है, रात हो जाती है। रानी को निक्कू की याद आती है। वह उसके घर जाती है। रात

में बाहर शोर सुनकर निक्कू बाहर आती है। वो कहती है, "ये मेरी अम्मा है।" माँ-बेटी मिलती हैं, आदि।

8. साधना (कक्षा-पाँच) की कहानी में रमेश नौकरी की तलाश में शहर जाता है। वहाँ उसे ड्राइवर की नौकरी मिलती हैं। वह पहली बार बस चलाता है। रास्ते में बहुत सारे पेड़ थे। बस रुक जाती है, बस खराब हो जाती हैं। लोग डर जाते हैं कि हम कहाँ फँस गये। बाद में बस ठीक हो जाती है। रमेश सोचता है, मैं बस ठीक से चलाना सीखूँगा। बाद में वह ठीक से बस चलाना सीखता है। पैसे कमाता है, शादी करता है। घर बनाता है, उसके बच्चे होते हैं।
9. प्रीति (कक्षा-तीन): सुमन ड्राइवर अपने घर जा रहा था। रास्ते में उसे एक साँप व चिड़िया भी मिली। ड्राइवर लड़की को अपनी गाड़ी में बिठाकर घर छोड़ने गया।
10. कक्षा-तीन की भवानी ने भी अपनी कहानी में संवाद लिखने का प्रयास किया: "एक बस जा रही थी अचानक बहुत ज़ोर की आवाज़ हुई। एक बहुत बड़ा पेड़ गिरा। ड्राइवर बोला, 'अरे ये क्या हुआ? इतनी ज़ोर की आवाज़ कहाँ से आयी'?"

    उसने बस रोक दी।

    लोग बोले, "बस क्यों रुक गयी?"

    ड्राइवर: "पेड़ गिरा है, सच में पेड़ गिरा है।"

    फिर सब मिलकर पेड़ हटाते है। बस आगे बढ़ती है।
11. आरजू (कक्षा-चार) ने अपनी बस में ड्राइवर को होशियार कहा। और अपनी बस में कंडक्टर भी रखा।
12. प्रिंयका (कक्षा-तीन) ने अपनी कहानी इस तरह से शुरू की: "एक बार की बात है एक बहुत सुन्दर बस थी.... ।"
13. गजेन्द्री (कक्षा-तीन) की कहानी में सब कुछ बहुत सुन्दर था। सुन्दर बस, अच्छा रास्ता, हरे-भरे पेड़ और मज़े की यात्रा।
14. प्रवीन (कक्षा-पाँच) ने न जाने क्यों बस को सड़क से नीचे ही गिरा दिया।

    रोहित, निधि, मनीष, शोभा, मनीषा, आईशा, शिवानी, मनोज, विशाल, अरविन्द, सरस्वती इन सभी बच्चों की कहानी में कुछ चीज़ें एक जैसी थीं - बस का चलना, किसी कारण बस का रुकना आदि। एक और बात यह भी महत्त्वपूर्ण थी कि

ज़्यादातर बच्चों ने समस्या का समाधान निकालने के लिए मिलजुल कर प्रयास किया था। सड़क व बस को लेकर अधिकांश बच्चों के अनुभव एक जैसे हैं।

बरसात का मौसम है और इस मौसम में पहाड़ी सड़कें जगह-जगह टूट जाती हैं। यातायात कुछ घण्टों के लिए बाधित हो जाता है और जीवन एक तरह से रुक जाता है। शायद इसीलिए ज़्यादातर बच्चों की कहानियाँ मिलती-जुलती थीं। मैंने नोट किया कि सभी बच्चों ने अपनी कहानी को आत्मविश्वास से सुनाया, वे बीच में कहीं रुके नहीं, न ही किसी शब्द को पढ़ने में अटके। बच्चे अपना लिखा हुआ सही व धाराप्रवाह पढ़ते हैं, चाहे वे शब्द मात्रात्मक रूप से अशुद्ध क्यों न लिखे हों। शायद ऐसा उस शब्द को महसूस करके लिखने के कारण होता हो।

खुद सोच विचार कर कुछ लिखने से बच्चों के दिमाग में कोई शब्द या वाक्य अपने पूरे अर्थ व सन्दर्भ से आकार लेता है। उनके लिए वो शब्द या वाक्य सिर्फ़ एक शब्द या वाक्य न होकर जीवन्त अनुभव होता है। बच्चे उसे जी रहे होते हैं, उसे महसूस कर रहे होते हैं। उसकी कल्पना करते हुए पूरा दृश्य उनके सम्मुख उपस्थित हो जाता है। ठीक ऐसा ही तब होता है जब बच्चे अपनी मनपसन्द बात कह रहे होते हैं। तब वे धाराप्रवाह अपनी बात कह पाते हैं। मुझे कभी-कभी यह महसूस होता है कि मेरी समझ कई बार कम पड़ जाती है और मैं इन अवसरों का भरपूर उपयोग नहीं कर पाती हूँ।

मध्यान्तर के बाद छोटे बच्चों का काम देखा।

कक्षा-दो के सारे बच्चों ने अखबार में ‘न’ और ‘क’ अक्षरों पर गोले बनाये थे। कक्षा-एक के भी कुछ बच्चों ने अक्षरों की पहचान की थी। कुछ बच्चों के अखबार का बुरा हाल था। पर कोई बात नहीं, अखबार का जितना प्रयोग होना था हो चुका था। मैंने कक्षा-एक और दो के बच्चों को उनकी कॉपी में गिनती व सरल जोड़ के सवाल हल करने को दिये। जैसे: एक पेड़ पर 25 पत्तियाँ बनानी हैं या आसमान में 15 तारे बनाने हैं। छोटे बच्चे हर समय कुछ न कुछ करने को उत्साहित रहते हैं इसलिए इनमें से कुछ अपने आप बाहर चले गये और वहाँ एकत्रित पत्थरों की पंक्तियाँ बनाने लगे। एक-दो बच्चे चाक ले गये और जैसी आकृतियाँ मैं बनाती हूँ उसी तरह की आकृतियाँ बनाकर उन पर पत्थर जमाने लगे। मैंने तीसरी, चौथी और पाँचवीं के बच्चों को ब्लैकबोर्ड पर गणित के अलग-अलग सवाल हल करने को दिये।

जब सारे बच्चे कुछ न कुछ करने लगे तो मैं बच्चों का सुबह वाला काम देखने लगी। बच्चों ने तो अपना काम कर दिया था। अब मुझे अपना काम करना था। पहला काम तो बच्चों की मात्रात्मक गलतियाँ सुधारना था। शुद्ध लिखना, भाषा कौशल का एक हिस्सा है परन्तु हमारे परिवेश में ज़्यादा ज़ोर इसी बात पर रहता है। जिन अभिभावकों को पढ़ना आता है वे भी यही देखते हैं कि क्या शिक्षक उनके बच्चों को शुद्ध लिखवा रहा है। भाषा की हमारी शैक्षिक समझ यहीं तक पहुँची है। प्रशिक्षणों में आधे-अधूरे तरीके से भले ही यह बात होती है कि शुद्ध लिखना लिखते-लिखते ही आता है और यदि लिखने के भरपूर अवसर दिये जाएँ तो बच्चे खुद ही शुद्ध लिखने लगते हैं। फिर भी कई बार यही कौशल मूल्यांकन का एकमात्र आधार बन जाता है। मुझे स्वयं को इससे बचाना है। मुझे लगता है प्रतिदिन के काम के साथ बच्चों का ध्यान इस ओर दिलाना चाहिए कि शुद्ध लिखने से क्या फ़ायदे हैं।

कक्षा-तीन के कुछ बच्चे बहुत गलतियाँ करते हैं। चौथी और पाँचवीं में भी एक-दो बच्चे ऐसे हैं। मैंने बच्चों की कॉपी में उनकी गलतियाँ ठीक कीं। फिर काम को फ़ेयर करने के लिए एक चार्ट पेपर के चार बराबर भाग किये, उनमें पेंसिल से लाइनें खींची। इन्हीं चार्ट पेपर से हम अपनी किताबें बनाने वाले हैं। बच्चों को एक-एक चार्ट पेपर दिया जिसमें वे घर से अपनी-अपनी कहानी लिखकर और बची जगह में कहानी से सम्बन्धित चित्र बनाकर आयेंगे।

इस तरह आज के दिन का काम पूरा हुआ। मैं बच्चों के काम को देखकर बहुत खुश हूँ।

५.८.११

कविता लिखना

प्रार्थना सभा में रोहित और दिव्या ने अपनी कल लिखी कहानी सबको सुनायी, अन्य बच्चे भी अपनी कहानी सुनाना चाहते थे पर समय की कमी के कारण ये सम्भव न था। ये बच्चे अपनी बारी आने पर किसी और दिन कहानी सुनाएँगे। कक्षा-एक से रितिका, सलोनी व राजेश ने आगे आकर कविता सुनायी जिसे सारे बच्चों ने दोहराया। प्रातःकालीन सभा का उपयोग रचनात्मक तरीके से होना चाहिए। यदि बच्चों को यह अहसास हो कि उन्हें प्रातःकालीन सभा में अपनी बात रखनी है तो वे पढ़ने-लिखने में अधिक रुचि लेने लगते हैं। उनके सामने एक लक्ष्य होता है। मुझे लगता है कि हमारी व्यवस्था में प्रातःकालीन सभा एक तरह का कर्मकाण्ड है। हम इसके महत्त्व को समझ नहीं पाये हैं।

जब तक तीसरी, चौथी और पाँचवीं के बच्चे बालसखा कक्ष में गोले में बैठे और अपना कल का काम निकाला तब तक मैंने पहली व दूसरी कक्षा के बच्चों को एक-एक पेज देकर उसमें चित्र बनाने व उसका नाम लिखने का काम दिया। मैंने ब्लैकबोर्ड पर कुछ चित्र बनाये व उनके नाम लिखे और बच्चों से कहा वे इन चित्रों को भी बनाएँ व अपनी मरज़ी से अन्य चित्र भी बनाएँ। बच्चों को एक बार बता दो क्या करना है फिर भी वे बार-बार पूछते हैं। ''सारे चित्र बनाने हैं जी?,'' ''सबके नाम लिखने हैं?,'' ''मुझे इसका नाम लिखना नहीं आता।'' ''रंग भी भरना है क्या?'' वगैरह-वगैरह। इन बच्चों को अपने काम की तैयारी में ही बहुत समय लग जाता है। पेंसिल नहीं हैं या छिली हुई नहीं हैं। टॉयलेट जाना है, पानी पीने जाना है, इसने मेरा पेज ले लिया, इसने नाम बिगाड़ कर पुकारा। लेकिन जब काम शुरू होता है तो थोड़ी देर सिर्फ़ काम होता है। मैंने बच्चों को उनका काम फिर से बताया और ''मैं थोड़ी देर में आती हूँ'' कहकर बालसखा कक्ष में गयी।

एकल अध्यापिका को बहुत सारे पक्षों पर एक साथ सोचना पड़ता है। उसके पास कोई माफ़ी नहीं होती। मामला बच्चों का है और विद्यालय में उनकी जवाबदेही अध्यापक की है। 40-50 बच्चों की कक्षा में एक शिक्षक और उस पर पर्याप्त संसाधनों का न होना, अध्यापक से अधिक चिन्तन की माँग करता है। मैं सोचती हूँ कि क्या हमारा राज्य व व्यवस्था इसे महसूस करती है। यदि हाँ, तो फिर उनके पास कोई हल क्यों नहीं है या फिर समस्या ही ऐसी है जिसका हल सम्भव नहीं है। वास्तव में अभावग्रस्त व वंचित समुदायों के पास अपनी आवाज़ उठाने का ना तो समय है और न ही उनका ध्यान इस दिशा में जाता है। मैं भी सिर्फ़ सवाल ही उठा रही हूँ। हालाँकि कोशिश भी करती हूँ कि अपनी भूमिका का निर्वाह सही तरीके से करूँ, पर क्या मेरे प्रयास बदलाव के लिए काफ़ी हैं?

जब मैं 'बालसखा कक्ष' में पहुँची तो बच्चे अपना-अपना पेज एक दूसरे को दिखा रहे थे, पढ़ रहे थे, चित्र देख रहे थे व अपना छूटा हुआ काम करे रहे थे। मैंने उनसे पेज इकट्ठा कर लिये। कुछ बच्चों के पेज फट गये थे, कुछ ने अच्छा लिखने के प्रयास में या जल्दबाज़ी के कारण काटा-पीटी कर दी थी। मैंने बच्चों से इस बारे में बात की। लिखने का काम इतना अधिक नहीं था कि थकान लग जाए। हमें ये पेज सँजोकर रखने हैं। इन्हें अन्य बच्चे भी पढ़ेंगे। इसलिए मैंने सोचा आज से चार्ट पेपर पर लिखने का काम भी विद्यालय में ही करना होगा।

आज कविता पर काम करना था। मैंने पिछले दिनों कक्षा में कहानी और कविता के स्वरूप को लेकर बच्चों से बात की थी। बच्चे कविता व कहानी में अन्तर पहचानते हैं पर अभी उनके लिखने में ये ठीक से नहीं आ पाया है। कविता के शुरुआती लेखन के लिए मैंने बच्चों का ध्यान लय, तुकान्त शब्द, कम शब्दों का उपयोग व बिम्बों की ओर दिलाने का प्रयास किया। मैं जानती हूँ कविता एक संवेदनशील हृदय की अभिव्यक्ति है। एक अच्छी कविता हमारे मन को छू लेती है। हमें ऊर्जा से भर देती है या कुछ कर गुज़रने को प्रेरित करती है। हर व्यक्ति कविता नहीं लिख पाता है। यहाँ अपनी कक्षा में कविता को मैं इस तरह देखती हूँ कि बच्चे किसी चीज के प्रति अपने भावों को व्यक्त करना सीखें। उन्हें तुकान्त के रूप में कुछ मज़ेदार शब्द या वाक्य सूझें और वे कम शब्दों में अपनी बात कह-लिख पायें। अपने लिखे को मन से पढ़ पायें। कक्षा-चार व पाँच के बच्चे अपनी कक्षा में कुछ विषयों पर कविता लिखने का प्रयास कर चुके हैं। कुछ ने छोटी-छोटी कविताएँ लिखी हैं। ये बहुत-सी कविताओं को सुन-पढ़ चुके हैं।

मैंने कविता लिखने के लिए विषय चुना 'पानी'। बच्चों से पानी को लेकर बातचीत की। प्रत्येक बच्चे ने पानी को लेकर कुछ न कुछ बात कही।

जैसे:

पानी नल से आता है।

पानी को हम पीते है।

पानी नदी, धारे-पनियारे, बारिश से भी आता है।

पानी कहाँ से आता है? उससे क्या- क्या करते हैं? यदि पानी न हो तो क्या होगा? पानी हमारे किन-किन काम आता है? आदि सवालों के आसपास ही बच्चों की ज़्यादातर बातें रहीं। कक्षा में बातों का दोहराव होता देख मैंने बच्चों से कहा, "मैं ब्लैकबोर्ड पर पानी शब्द लिखूँगी, तुम्हारे मन में पानी को लेकर जो भी बातें आती हैं उसे एक शब्द में बताना है। जो शब्द एक बार आ जाएगा उसे दुबारा नहीं बोलना है।" बच्चे शब्द बोलते गये, मैं उन्हें लिखती गयी।

इस तरह 50-60 शब्द हो गये।

उदाहरण: पानी-पीना, खाना बनाना, मुँह धोना, नहाना, प्यास, मरना, मीठा, गन्दा, गरम, ठण्डा, चाय, स्वच्छ निर्मल, बादल, इन्द्रधनुष, पहाड़, झरने, गोमुख, नदी, भागीरथी, गंगा,

गाड, पनियारा, टंकी, बाल्टी, कोहरा, बुखार, भीगना, सिंचाई, बिजली, बाँध, जानवर, खेती, रोपाई, बहना, भाप निकलना, जीवन, मछली, साँप, मेढक, आकाश, भरना, ज़रूरत, होली ,सफ़ाई आदि।

अब मैंने बच्चों से तुकान्त शब्दों पर बात की। हमने पानी, काम, बादल, जल, भीगना, गीला आदि शब्दों पर तुकान्त शब्द बनाये। फिर मैंने ब्लैकबोर्ड पर ये पंक्तियाँ लिखीं:

ठण्डा-ठण्डा निर्मल पानी।

पानी से मुँह धोती नानी।

इन पंक्तियों को बच्चों को आगे बढ़ाने को कहा, बच्चों ने मिलजुल कर कविता को आगे बढ़ाया।

पानी आता बहुत काम।

इसके बिना न आता आराम।

हमको जीवन देता पानी।

बताती हमको प्यारी नानी।

इसके बाद मैंने बच्चों को एक और कविता 'पानी' पर ही लिखने को दी।

स्कूल में रखरखाव का काम भी समानान्तर चल रहा है। खच्चर वाले भइया ने सुबह ही आँगन में बजरी डाल दी थी। प्रधान जी का बेटा अन्य सामान व सीमेंट वगैरह लेकर आ गया। मैंने बच्चों की मदद से कल छुट्टी के बाद एक कमरा खाली किया था। आज पेंटर को इसमें रंग-रोगन की शुरूआत करने को कहा। विद्यालय में अन्य लोगों को देख कक्षा-एक और दो के बच्चे बाहर आ गये। इधर-उधर दौड़ने लगे। कुछ बच्चे बजरी में खेलना चाहते थे। जब खच्चर वाले भाई दुबारा बजरी लेकर आये तो मैंने उन्हें विद्यालय के पिछले हिस्से में बजरी डालने को कहा। लेकिन जगह कम होने के कारण खच्चर ने वहाँ जाने से मना कर दिया और खुद ही अपनी पीठ का भार गिरा दिया। अब एक काम बच्चों को इन पत्थर बजरी से भी दूर रखना था। साथ ही ये भी ध्यान रखना था कि खच्चर हमारे फूलों की क्यारी से दोस्ती न कर पायें। हालाँकि यह सब सामग्री अपने आप में टीएलएम है और अध्यापक के पास बातचीत के लिए उपलब्ध है। हमारे आसपास मौजूद वस्तुएँ व घटनाएँ एक प्रकार की शिक्षण-अधिगम सामग्री होती हैं। मसला है कि अध्यापक का चिन्तन और विचार इन

वस्तुओं के शैक्षिक उपयोग तक पहुँच पाता है या नहीं। कभी-कभी सोचती हूँ कि मैं इन संसाधनों का कितना कम उपयोग कर पाती हूँ।

अब तक बच्चे अपनी-अपनी कविताएँ लिख चुके थे। बच्चों ने अपनी कविताएँ सुनानी शुरू कीं। सरस्वती (कक्षा-5) ने अपनी कविता में मीठा, पर्वत व कहानी शब्द लिखे थे।

अनिल (कक्षा-5) ने मछली का जीवन व इसका उपयोग बताया था।

दीपक (कक्षा-5) ने ठण्डे पानी का धरती से निकलना और पानी का कोई रंग न होना बताया था। पहले की बातचीत में पानी के रंग पर कोई बात नहीं आयी थी।

अंबिका (कक्षा-5) ने धारे, नदी व जीवन की बात कही थी। कुछ बच्चों ने बहुत सुन्दर कविता लिखी थी। जैसे कक्षा पाँचवीं के अरविंद ने लिखा:

इस पानी की सुनो कहानी।

इसे सुनाती मेरी नानी।

पानी में है तन-मन।

पानी में है जीवन।

कहती थी जो वह बह जाता।

कही ठोस से द्रव बन जाता।

मुझे प्रवीण की कविता में पहले पढ़ी किसी कविता का प्रभाव दिखा। जबकि इससे पहले पढ़ी कविताओं में सधापन कम था पर उनमें मौलिकता अधिक थी। कुछ बच्चों ने पूरे-पूरे वाक्य लिख दिये थे। कुछ की पहली पंक्ति का दूसरी से सामंजस्य नहीं था। शब्दों में दोहराव अधिक था।

मेरी स्वयं भी कविता के विषय में समझ कम है पर मैं ये चाहती थी कि बच्चे अपनी बात को इस तरह लिखें कि कम शब्दों में ज़्यादा बात कह पायें और अगर उस में लय भी हो तो मज़ा ही आ जाए।

बात आगे बढ़ाते हुए मैंने ब्लैकबोर्ड पर एक वाक्य लिखा।

पानी के बिना हमारा जीवन अधूरा है।

अब इसी पंक्ति को थोड़ा अलग तरीके से लिखा।

1 - पानी बिन जीवन अधूरा

2 - बिन पानी अधूरा जीवन

3 - पानी बिन अधूरा जीवन

जब इन पंक्तियों में बच्चों से अन्तर जानना चाहा तो उन्होंने बताया पहली पंक्ति कहानी या पाठ की है, जबकि बाद की पंक्तियाँ कविता की हैं। कारण पूछने पर बच्चों ने बताया कि कविता छोटी होती है। शब्द कम होते हैं, उनका ज़्यादा अर्थ निकालना पड़ता है।

अब मैंने मनीषा से अपनी कविता पढ़ने को कहा व उसे ब्लैकबोर्ड पर लिख दिया।

मनीषा ने लिखा था:

पानी आता है गोमुख से

पानी आता पहाड़ों से

पानी आता है नल से

पानी को हम पेड़ पौधों को देते हैं।

पानी का कोई रंग नहीं होता है।

मैंने बच्चों से पूछा, "क्या इन पंक्तियों को किसी और तरीके से भी लिख सकते हैं?"

"हाँ जी," शिवानी ने कहा, "पहाड़ों से निकलता पानी"

अरविन्द ने दूसरी पंक्ति जोड़ी:

"गोमुख का ठण्डा स्वच्छ पानी"

इसी प्रकार पंक्तियाँ जुड़ती गयीं:

नल से आता है स्वच्छ पानी

पेड़ पौधे भी पीते पानी

बिना रंग का होता पानी

फिर हमने इस पर बात की कि पहली लिखी पंक्तियों व बाद की पंक्तियों में क्या अन्तर है ?

कौन कविता के ज़्यादा नजदीक है?

बच्चों के जबाव आये- "दुबारा लिखी पंक्तियाँ।"

क्यों?

क्योंकि कम शब्दों में ज़्यादा बात कह रही है। अन्त के शब्द मिलते-जुलते हैं। मैंने बच्चों से कहा, "ज़रूरी नहीं कि हर पंक्ति के अन्त में तुकान्त शब्द आये पर हमें कोशिश करनी चाहिए कि हमारी कविता में एक लय हो, कोई बात निकल कर आ रही हो। मैंने बच्चों से अपनी-अपनी अभी लिखी हुई कविता को एक बार और ठीक करके लिखने को कहा।

इस बार बच्चों ने अपनी पंक्तियों को और परिष्कृत करके लिखा।

उदाहरण: कक्षा-3 के बच्चों ने लिखा- (कुछ पंक्तियाँ)

प्रियंका-

नदिया बहती कल-कल-कल

पानी करता छल-छल-छल

प्रीति-

कैसे पानी पीते हम

पानी से जीते हम

शुभम्-

जब मछली पानी से बाहर आती

इक पल भी वो जी न पाती।

दिव्या-

ठण्डा-ठण्डा निर्मल पानी

कहानी सुनाती मेरी नानी

पानी बहुत दूर से आता

बर्फ से पानी जम जाता

पर्वत से आता पानी

धरती ने निकलता पानी

निधि (कक्षा-5)-

पानी होता बहुत अच्छा

इसके बिना न चलता काम

पानी से हम सबका जीवन

इसके बिना सब परेशान

दीपक (कक्षा-5):

झरने से सब पानी पीते

झरने से बाढ़ भी आती

झरने बहुत सुन्दर दिखते

इसके नीचे हम नहाते

झरने बहुत तेजी से आते

झरने पत्थरों से टकराते

इस तरह सभी बच्चों ने अपनी-अपनी कविताएँ ठीक कीं। ज़्यादातर बच्चों ने 12-15 पंक्तियाँ लिखीं।

आज मध्यान्तर थोड़ी देर से किया क्योंकि हमारी बातचीत देर तक चली थी। बच्चे अपने काम में तल्लीन थे। जब बच्चों को कोई सार्थक और मजेदार काम मिलता है तो फिर उन्हें समय का ध्यान नहीं रहता। मध्यान्तर के बाद तीसरी, चौथी और पाँचवीं के बच्चों ने अपना काम फ़ेयर करना चाहा क्योंकि सुबह ही यह बात हो गयी थी कि हमें स्कूल में ही यह काम करना है। बच्चे आज खेले नहीं। वे काम करने के लिए पेज माँगने लगे। मैंने अंजली, सरस्वती, प्रवीन की मदद से फटाफट चार्ट पेपर पर पेंसिल से लाइनें खींचीं ताकि बच्चे सीधा-सीधा लिख पायें। बच्चे अपना काम करने लगे। जिन बच्चों की मात्रात्मक गलतियाँ न के बराबर थीं उन्होंने फटाफट अपना पेज तैयार कर लिया। मैंने उन्हें कक्षा पहली व दूसरी के साथ काम करने को कहा।

खुद बच्चों की कापियाँ चैक करने लगी व पेज में किस तरह काम करना है आदि बातें बच्चों को बताने लगी। आज गणित में काम कुछ कम हो पाया। कक्षा-तीन को श्यामपट पर घटाने

के उत्तर से मिलान वाले सवाल दिये। कक्षा चौथी व पाँचवीं के बच्चों को क्षेत्रफल के सवाल उनकी किताब से करने को दिये। आज भी बच्चों ने अपने समूह में काम किया व बीच-बीच में मुझे दिखाते रहे। मैंने कल पेंट करने के लिए जगह बनायी व आज का काम देखा। आज बच्चों को घर के लिए यह काम दिया कि वे अपने मनपसन्द विषय पर कविता लिखकर आयें।

६.८.११

अधूरी कविता पूरी करना

आज की प्रार्थना सभा में 5-6 बच्चों ने अपनी कल की लिखी कविता सुनायी। जब मैंने कहा, "अब हम आज का काम शुरू करते हैं" तो वे रुके, वरना सब के सब अपनी कविता सुनाना चाहते थे। मज़े की बात यह थी कि इन्होंने अपनी लिखी कविता बहुत अच्छे से याद भी कर ली थी।

कल जो कमरा खाली किया था आज उसकी दीवारों पर पेंट होना था। उसका सारा सामान दूसरे कमरे में रखा होने के कारण आज हमने कक्षा पहली व दूसरी के बच्चों के लिए बाहर बेंच व मेज़ लगाये, वे बाहर बैठे। हमारे विद्यालय का मुख्य भवन 1991 के भूकम्प में पूरी तरह टूट गया था। ये भवन टाटा रिलीफ़ फ़ण्ड द्वारा बनाया गया है। इसकी दीवारें व छत, प्लाई व टिन की बनी हैं और बहुत नीची भी हैं। इसमें डबलकोट में पेंट करवा रहे हैं, जो सूखने में बहुत समय ले रहा है, पर अच्छा लग रहा है। बालसखा कक्ष अतिरिक्त कक्ष के रूप में है जो सीमेंट से बना है। इसकी छत बरसात में टपकती है और दीवारों पर बहुत सीलन रहती है, जिस कारण हमारा बहुत-सा काम खराब हो जाता है। इसलिए ठीक से काम हो यह देखना बहुत ज़रूरी है वरना समस्या का हल नहीं हो पायेगा।

मैंने कक्षा-दो को ब्लैकबोर्ड पर कुछ वाक्य लिखकर दिये व उन्हें एक-एक कर पढ़ने व अपनी कॉपी में लिखकर दिखाने को कहा। कक्षा-एक के बच्चों को एक-एक पेज देकर अपने मनपसन्द चित्र बनाने के लिये कहा। कुछ बच्चे अखबार माँग रहे थे। वे अक्षरों पर गोला बनाने की गतिविधि करना चाहते थे, इसलिए मैंने उन्हें एक-एक अखबार भी दिया और उसमें च, प और ह अक्षरों को ढूँढ़कर गोला बनाने को कहा। कक्षा-3, 4 और 5 के बच्चे 'बालसखा कक्ष' में गोला बनाकर बैठ गये थे। वे व्यवस्थित तरीके से अपनी कॉपी

पेंसिल लेकर काम करने को तैयार थे। मुझे ये देखकर अच्छा लगा। सबसे पहले बच्चों ने अपनी घर पर लिखी कविता सुनायी। अभी भी कुछ बच्चे जैसे रोहित, मनीषा, शुभम, अपने भाव गद्य रूप में लिख रहे थे। मैंने तय किया कि आज प्रत्येक बच्चे से उसकी कविता की पंक्तियों पर अलग-अलग बात करूँगी। कल यह चर्चा पूरी कक्षा में हुई थी फिर भी बच्चों का इस तरह से लिखना यह बताता है कि मेरी बात अच्छी तरह से उन तक नहीं पहुँची है।

आज हमें कविता की अधूरी पंक्तियों को पूरा करने की गतिविधि करनी थी।

मैंने श्यामपट पर दो पंक्तियाँ लिखीं:

आसमान से टपकी बूँदें टप-टप-टप

गप्पू ने खाए रसगुल्ले गप-गप-गप

बगैर इन पंक्तियों पर बात किये मैंने बातचीत की शुरुआत ध्वन्यात्मक शब्दों के बारे में की।

मैंने कहा, "मैं कोई आवाज़, करूँगी तुम बताना किसकी है।"

जैसे टन टन - घण्टी की

फटाक- पटाखे की

चर्रर- दरवाज़े की

"अच्छा अब तुम कुछ आवाज़ें करके बताओ।"

बच्चों ने बहुत-सी आवाज़ों की नकल की, पशु-पक्षियों की, पत्थर या बर्तन गिरने की, अपने-गिरने की, बादल टकराने की, सीटी की, वगैरह-वगैरह। पूरा कमरा आवाज़ों से भर गया।

अब मैंने बच्चों से कहा, "श्यामपट पर क्या लिखा है, पढ़ो तो।"

बच्चों ने खूब ज़ोर से पढ़ा:

आसमान से टपकी बूँदें टप-टप-टप

गप्पू ने खाए रसगुल्ले गप-गप-गप

आज हम इन पंक्तियों में कुछ और पंक्तियाँ जोड़कर एक कविता लिखेंगे। मैंने बच्चों को समझाया कि क्या करना है।

कक्षा पहली व दूसरी के बच्चे शोर कर रहे थे।

बाहर गयी तो देखा कोई बेंच पर खड़ा है, कोई इधर-उधर दौड़ रहा है। बेंचों का क्रम बदल गया है। कुछ बच्चे पेंटर को पेंट करते देखने के लिए कमरे में चले गये हैं।

वास्तव में छोटे बच्चों का एक गतिविधि में ज़्यादा देर तक ध्यान नहीं बना रहता। प्रत्येक 15-20 मिनट में उन्हें कुछ नया करने को चाहिए। पेंट का काम उनका ध्यान अपनी ओर खींच रहा है। बच्चे अपने इर्द गिर्द हो रहे घटनाक्रम का बारीकी से अवलोकन करते हैं और उसे अपने सीखने से जोड़ पाते हैं। सवाल यह है कि क्या वयस्क अध्यापक बच्चों के इन सब क्रियाकलापों का अवलोकन कर पाता है। कक्षा-एक को अखबार में अक्षर छाँटने का जो काम दिया गया था वह पूरा हो चुका था। अखबार फट गये थे, पेज इधर-उधर उड़ रहे थे। अब शिकायतों का ज़ोर चला- इसने मेरा पेज ले लिया या अखबार फाड़ दिया आदि। छोटे बच्चे बहुत पेज फाड़ते हैं। कभी असावधानीवश पेज फट जाते हैं तो कभी एक दूसरे का काम बिगाड़ते हुए। कभी उन्हें अपना काम पसन्द नहीं आता, तो कभी शिक्षक की डाँट से बचने के लिए भी पेज फाड़ते हैं। कई बार सोचती हूँ बच्चों के आसपास की दुनिया और उनका सामान बड़ों को अस्तव्यस्त क्यों जान पड़ता है? जबकि उस सामान का उपयोग बच्चे अपने खेल या सीखने में कर रहे होते हैं। काम करने के बाद चीज़ों को व्यवस्थित करने की आदत धीरे-धीरे ही आती है। खैर, मैंने "मोटा हाथी" कविता का हवाला देते हुए सब बच्चों को फिर से ध्यान देने के लिए इकट्ठा किया। कविता कराने के बाद उन्हें नये अखबार काम करने को दिये।

कुछ बच्चों ने अपनी कविताएँ लिख दी थीं। मैंने कहा, "वे यहीं आकर अपना काम दिखाएँ और फिर उसे शुद्ध करें।" बच्चे बारी-बारी आते रहे। मैं उन्हें सुझाव देती, उनकी मात्राओं की गलतियाँ सुधारती, उनसे उनकी कल लिखी कविता के बारे में बात करती और उन्हें पेज देती। इस तरह काम चलता रहा। बच्चों को अपना काम इतना अच्छा लगा कि वे भोजन करने भी बहुत बार बुलाने पर आये और तुरन्त वापस जाकर अपना काम करने लगे। छोटे बच्चे इन्हें काम करते देख दरवाजे से झाँकते, हँसते-खिलखिलाते कुछ सोच रहे थे। मैडम इधर-उधर जातीं तो वे बजरी पर चढ़ते उससे खेलते। आज खच्चर वाले भईया ईंट पत्थर लेकर आये। अब आधा आँगन इन चीज़ों से ही भर गया।

मध्यान्तर के बाद भी बच्चों को उनके काम पर फीडबैक देने का क्रम चलता रहा। चूँकि कक्षा-3, 4 और 5 में कुल 30 बच्चे हैं, अतः उनका काम देखने और उनसे बात करने में बहुत समय लग रहा था। जिन बच्चों ने अपना काम पूरा कर लिया था उन्हें गणित में काम

करने को दिया। मैंने बच्चों के लिए कुछ और चार्ट पेपर काटे और उनमें लाइनें खींची। अंजली और साधना ने कक्षा एक व दो को श्यामपट से कुछ शब्द पढ़वाये व उनकी कॉपी में सवाल हल करने को दिये। आज बच्चे बड़े समूह में अपनी कविता पढ़ नहीं पाये क्योंकि मैं सब बच्चों की कॉपियाँ एक साथ नहीं देख पायी थी। मैंने बच्चों की कविताएँ पढ़ी।

बच्चों ने कुछ इस तरह से लिखा था:

अंजली (कक्षा-4):

चूहे ने जूते काटे कुर्र-कुर्र-कुर्र।

मेंढक ने छलाँग लगाई टर्र-टर्र-टर्र।।

आरजू (कक्षा-4):

झरने से आया पानी झर-झर-झर।

राजू ने पतंग उड़ाई फर-फर-फर।।

दिव्या (कक्षा-4):

झरने बहते झर-झर-झर।

उड़ी हवाएँ फर-फर-फर।।

जयेन्द्री (कक्षा-5):

नाव चली कल-कल-कल।

फिर नाव बही तल-तल-तल।।

साधना (कक्षा-5):

नदिया आयी कल-कल-कल।

रमेश भी आया कल-कल-कल।।

शिवानी (कक्षा-4):

झरने बहते झर-झर-झर,

दरवाजा बोला चर्र-चर्र-चर्र,

पतंग ने कहा उड़ फर-फर-फर,

नानी खाती सेब कर्र-कर-कर्र,

दीपक (कक्षा-4):

बादल गरजे गड़-गड़गड़,

आसमान से बारिश छत पर गिरी,

छड़-छड़-छड़-छड़,

आँवले गिरे तड़-तड़-तड़,

सरस्वती (कक्षा-5):

मीनू ने पानी पिया गट-गट-गट,

माँ ने बुलाया झट-झट-झट,

आसमान में बिजली चमकती चम-चम-चम।

बादल बरसे झम -झम -झम।

रोहित (कक्षा-5):

कपड़े उड़े फर-फर-फर।

झरना आया झर-झर-झर।

बिल्ली बोली म्याऊँ-म्याऊँ-म्याऊँ

दूध पीने आऊँ-आऊँ-आऊँ।

कुत्ता बोला भूं-भूं-भूं।

दरवाजा खोला चूं-चूं-चूं।

बच्चों ने बहुत-से ध्वनि शब्दों का उपयोग किया था। तरह-तरह की ध्वनियों की तुकान्त ध्वनि खोजी थी। बच्चों के पास प्रकृति में मौजूद ध्वनियों के कुछ अनुभव पहले से हैं। बच्चे अकसर अपने आसपास की आवाज़ों के प्रति आकर्षित होते हैं और उनके स्रोतों तक पहुँचने का प्रयास करते हैं। अपनी बातचीत व खेल के दौरान वे बहुत-सी ध्वनियों का उपयोग करते

हैं, जिसमें उन्हें मज़ा आता है। मुझे लगता है इस गतिविधि के बाद वे ध्वनियों और लय के प्रति और ज़्यादा आकर्षित होंगे व सूक्ष्म अवलोकनों के प्रति प्रेरित होंगे।

पता नहीं सिर्फ़ ध्वनियों को कहना-लिखना कविता है या नहीं पर बच्चों ने अच्छे प्रयास किये थे।

अगली बार कक्षा में कुछ नयी पंक्तियाँ दूँगी।

८.८.११

सुबह जब विद्यालय पहुँची तो मन बहुत खराब हो गया। शनिवार को मैंने घर जाने से पहले कक्षा-4 व 5 वाले कमरे से सारे 'दीवार चार्ट' व छत के ऊपर से बच्चों का बनाया सामान निकालकर इसे मेज़ पर पुराने मेजपोश, अखबार आदि से ढँककर रख दिया था। इन्हें बहुत सावधानी से निकालकर रखा था क्योंकि ये चीज़ें टेप से चिपकायी हुई थीं। ये ध्यान रखना था कि एक साथ रखने पर ये आपस में चिपकें नहीं। दूसरे कमरे को खाली नहीं किया था क्योंकि पेंटर ने कहा था कि वे इसी कमरे में और बाहर बरामदे में रंग-रोगन करेंगे। लेकिन आज विद्यालय आकर देखती हूँ कि इन्होंने दूसरे कमरे में काम शुरू कर दिया है। दीवारों व छत से सारे चार्ट, पोस्टर, वाल हैंगिंग, बच्चों के बनाए चित्र, तोरण, कविताएँ चार्ट आदि बहुत ही लापरवाही से निकाल कर नीचे फ़र्श पर रखे हैं। बहुत-सी चीज़ें फट गयी हैं। टेप से लगी होने के कारण चार्ट, पोस्टर आपस में चिपक गये हैं। तोरण फट गये हैं , उनकी डोर यहाँ-वहाँ अटकी है। वाल हैंगिंग नीचे टूटे पड़े हैं। मेरा मन हताशा व गुस्से से भर उठा। अगर पेंटर को दूसरे कमरे में भी पेंट करना था, तो परसों ही बता देते मैं सारा सामान उतार देती। इन्हें क्या पता हमारे लिए ये चीज़ें कितने महत्त्व की हैं। मैं कितनी मेहनत से ये चित्र कहाँ-कहाँ से ढूँढ़ कर लायी थी।

सब खुले चित्र थे जो बच्चों से बातचीत के लिए काम आते थे। कविताओं के चार्ट बनाये थे। एक पूरी दीवार पर हमारे शोध कार्य **'गणेशपुर भूकम्प के पहले व बाद'** के चार्ट लगे थे। हमने कितनी मेहनत से ये कमरा तैयार किया था। मेरा मन रोने को हो रहा था। जब मैं बड़-बड़ कर रही थी, बच्चे भी मेरे पीछे आकर खाली कमरे को देखने लगे। छोटे बच्चे मज़े से चीज़ें उलटने-पलटने लगे। जल्दी ही मैंने खुद को सँभाला और बाहर आकर प्रार्थना सभा प्रारम्भ करायी।

अभी हम 'गाँव के आजकल के समाचार' पर ही पहुँचे थे कि हमारी प्रधानाध्यापिका मैडम दो अन्य शिक्षिकाओं के साथ आयीं। उन्होंने बताया कि रात तेज़ बारिश होने के कारण गणेशपुर से आगे सड़क टूट गयी है। सारी गाड़ियाँ रुकी हैं। प्रशिक्षण में मनेरी जाने वाले सभी शिक्षक सड़क पर खड़े हैं। सम्भवतः आज का प्रशिक्षण हमारे विद्यालय में हो। ये बताकर वे वापस चली गयीं।

विद्यालय में अजीब हालात थे। आधे आँगन में बजरी, पत्थर आदि समान पड़ा था पर काम शुरू ही नहीं हो रहा था। ऑफिस का सामान भी दूसरे कमरे में रखा था। मैंने बच्चों की मदद से बेंच बाहर निकाले। ऑफिस में कुर्सियाँ-मेज़ रखीं। उसे बैठने लायक बनाया। पहले कमरे का सामान एक किनारे करके कक्षा पहली व दूसरी के बच्चों को उसमें बिठाया दूसरे कमरे की दीवारों का पेंट अभी गीला था तो उसे बन्द कर दिया। बरसात के कारण हवा में नमी थी इसलिए पेंट सूखने में देर हो रही थी। शुक्र है, अभी बारिश नहीं हो रही थी। अभी हम यह सब कर ही रहे थे कि ब्लॉक शिक्षा अधिकारी साहब कुछ शिक्षकों के साथ विद्यालय में आये। उनके साथ प्रधानाध्यापिका मैडम भी थीं। मैंने उन्हें वस्तुस्थिति से परिचित कराया, ऑफ़िस में बिठाया। प्रधानाध्यापिका दीदी ने ऑफ़िस व्यवस्थित किया, पानी आदि दिया।

ब्लॉक शिक्षा अधिकारी ने कहा, आप आराम से अपना कार्य करें। हमारे कारण असुविधा तो होगी पर आज प्रशिक्षण यहीं होगा। आप शिक्षकों की व्यवस्था देखें। हमारे विद्यालय के साथ ही संकुल संसाधन केन्द्र के भी दो कमरे हैं। अतः आज प्रशिक्षण संकुल संसाधन केन्द्र में होगा। 90-100 लोग हमारे विद्यालय में जमा हो गये। कुछ लोग 'बालसखा कक्ष' में बैठ गये, कुछ बरामदे में, कुछ सीढ़ियों पर, कुछ यहाँ-वहाँ खड़े रहे।

बच्चों ने स्थिति को समझा और बहुत ही आराम से बेंचों पर बैठ गये। वे आपस में मिलजुल कर बैठे और बची बेंचें कुछ शिक्षकों को बैठने को दीं। मेरे बिना कहे बड़े बच्चों ने अपना काम शुरू कर दिया जिसे देख छोटे बच्चे भी अपनी कापियों में कुछ-कुछ करने लगे।

कुछ बच्चे किताब पढ़ने लगे। मैं भी उन्हीं के साथ बैठ गयी। पता नहीं आज हमारा काम आगे बढ़ पायेगा या नहीं। फिर भी मैंने कक्षा-3, 4 और 5 को श्यामपट पर शब्दों से कहानी लिखने को कहा व स्वयं शिक्षकों की बैठक व्यवस्था करने लगी।

मध्यान्तर तक यही सब चलता रहा। इतने में संकुल संसाधन केन्द्र की मैडम आ गयीं। उन्होंने संकुल संसाधन केन्द्र के दोनों कमरे खोले और बाकी शिक्षक इन कमरों में बैठ गये।

बच्चे कहानी लिख चुके थे। मैंने कहा, "इस पर कल बात करेंगे।" मध्यान्तर में बच्चों ने भोजन किया और थोड़ा खेला। बाहर धूप आ गयी थी। आजकल बहुत तेज़ धूप आती है। बच्चे यहाँ-वहाँ बरामदे में सिमट गये।

मध्यान्तर के बाद कक्षा-तीन को श्यामपट पर जोड़ व घटाने के सवाल हल करने को दिये। कक्षा-5 को उनकी किताब में रिक्त स्थान भरने वाले सवाल हल करने को कहा और खुद कक्षा-4 के सा थ मापन के सवाल हल किये। कक्षा एक और दो के बच्चे अन्दर कमरे में कंकड़ों व गुटकों से खेलने में व्यस्त रहे।

कक्षा-1 और 2 की छुट्टी के बाद कक्षा-5 को अन्दर बुला लिया व उनसे "हमारे आसपास" की किताब में एक पाठ पर बात की। तीन-चार शिक्षक साथी भी इसी कमरे में बैठे रहे। चौथी के बच्चों से कहा वे तीसरी के बच्चों की कॉपियाँ देखें और उन्हें और सवाल हल करने को दें। इस तरह आज दिन भर काम चलता रहा। बीच-बीच में मास्टर ट्रेनर महोदय सामान लेने आते-जाते रहे। लोग बातचीत करते रहे।

आज मैंने यह महत्त्वपूर्ण बात नोट की बच्चे इतने सारे लोगों के बीच सहजता से काम करते रहे। न तो शोर किया, न कोई हड़बड़ी मचायी, न फालतू इधर-उधर दौड़े-भागे।

बच्चों ने शिक्षकों से बात की, उन्हें अपनी कापियाँ दिखायीं। ये सब देख कर मेरा मन गर्व से भर उठा। छुट्टी के समय पर कुछ बड़े बच्चों के अलावा सभी की छुट्टी कर दी। हमने सामान व्यवस्थित किया।

आज पेंटर नहीं आये। बाद में पता चला उन्हें सड़क से ही कुछ शिक्षकों ने यह कहकर लौटा दिया था कि आज पेंट नहीं होगा। आज निर्माण कार्य वाले भी नहीं आये।

९.८.११

अनुभव लेखन:

कक्षा-चार व पाँच के बच्चों के साथ बातचीत करने का स्पष्ट प्रभाव कक्षा-तीन पर दिख रहा है। इस बीच नवीन, जो विद्यालय अनियमित आता है, सक्रिय दिख रहा था। उसका व्यावहारिक ज्ञान व कल्पनाशीलता बेजोड़ है। कक्षा-तीन में आये बच्चे कक्षा-एक से ही

मेरे साथ हैं। इसलिए पूर्व में किये कार्यों का प्रभाव इनके रचनात्मक लेखन को सहज व रोचक बना रहा है। लेकिन कक्षा-तीन, चार और पाँच के बच्चों के साथ एक ही गतिविधि को आधार बनाकर कोई खास काम करना थोड़ा कठिन है। कक्षा-तीन के बच्चों के पढ़ने व लिखने के कौशल कक्षा-चार व पाँच के मुकाबले कमतर हैं।

इस काम में तुरन्त कापियाँ देखनी पड़ती हैं, प्रतिदिन काम शुद्ध करना पड़ता है ताकि हम समय पर अपनी किताबें बना पायें। इसलिए आज से कक्षा-चार व पाँच के साथ ही ये काम करना तय किया। कक्षा-तीन के बच्चे अन्य कार्य करेंगे।

सबसे पहले हमने बड़े गोले में बैठकर अपनी पिछले दिन लिखी कहानियाँ साझा कीं।

इसके बाद मैंने बच्चों से कहा, "वे अपने किसी एक दिन की कोई ऐसी बात बतायें जिसमें उन्हें खूब मज़ा आया हो या घर में किसी बात पर डाँट पड़ी हो या स्कूल में कुछ खास हुआ हो या दोस्त की कोई मदद की हो या घूमने गये हों आदि। कोई एक ऐसा दिन जो बार-बार याद आता है, भुलाए से नहीं भूलता है आदि।" मैंने बच्चों को अपनी बचपन की एक घटना सुनायी जिसमें मैं अमरूद तोड़ने की कोशिश में नाले में गिर पड़ी थी। बच्चों ने कुछ देर सोचा फिर अपने अनुभव सुनाने लगे। मैं एक किनारे पर बैठी सब सुनती रही।

बच्चों के पास ढेरों अनुभव होते हैं जिन्हें वे मौका मिलते ही दूसरों से साझा करना चाहते हैं। अपनी बात बताते हुए वे वाक्यों को क्रम से लगा रहे होते हैं। कई बार वे इसमें नयी बातें भी जोड़ते हैं। जब वे अपनी बात को लिखते हैं तो समझ के साथ लिखना सीखते हैं। उन्हें अपने लिखे हुए से लगाव होता है। उनमें दूसरों की बात सुनने का कौशल भी विकसित होता है। सबसे बड़ी बात यह कि उन्हें अपनी कक्षा बेगानी नहीं लगती। जब हम बच्चों के निजी अनुभवों को कक्षा में जगह दे रहे होते हैं तो हम उनके अस्तित्व को स्वीकार कर रहे होते हैं। उनके आगे बढ़ने में जाने-अनजाने ही उनकी सीखी चीज़ों की मदद ले रहे होते हैं। यह मनुष्य के सीखने के सबसे पुराने व पारम्परिक तरीकों में से एक है।

बच्चों के कुछ अनुभव इस तरह से थे:

***1. रोहित (कक्षा-5):* बाघ की बात:** एक दिन रात में जब मैं सो रहा था अचानक मुझे सीटी की आवाज़ सुनायी दी। दूर जंगल में कोई सीटी बजा रहा था। मैं उठ गया और अपने पापा के साथ बाहर आया। कुछ लोग जंगल की तरफ़ दौड़ रहे थे। पापा ने बताया जंगल में

कोई मुसीबत में है। पापा ने मुझे अन्दर जाने को कहा। पापा अन्य लोगों के साथ जंगल की तरफ़ दौड़ पड़े। पापा बहुत देर बाद वापस आये। मैं इतनी देर सो नहीं सका। पापा बहुत देर में आये। उन्होंने बताया जंगल में किशन चाचा की भेड़ पर बाघ ने हमला कर दिया था। इसीलिए उन्होंने सीटी बजाकर लोगों को मदद के लिए बुलाया। जब सब लोग वहाँ पहुँचे, तो बाघ डरकर भाग गया फिर भी उसने एक भेड़ मार डाली। लेकिन बाकी भेड़ें बच गयीं।

***2. शोभा (कक्षा-5):* गाड में नहाने की बात**: एक बार मैं गाड (छोटी नदी) में नहाने गयी। मेरे साथ मेरी एक दोस्त भी थी। मैं नहाने गयी। मैं थोड़ा बीच में चली गयी। मैं वहाँ पर डूबने लगी। फिर मैं किनारे पर नहाने लगी। मैंने छलाँग मारी ओर मैं आधी गाड तक बह गयी। मैंने अपने भैया को आवाज़ दी। भैया ने मुझे पकड़ लिया। मुझे बीच गाड में जाने से मना किया। फिर मैंने कपड़े पहने और घर चली गयी।

***3. दिव्या (कक्षा-4):* एक दिन की बात:** मैं एक दिन सुबह उठी। मैंने हाथ मुँह धोया और नाश्ता खाया। फिर मैं स्कूल आयी। स्कूल में मैंने पढ़ाई की। जब हमारी छुट्टी हुई, तो मैं घर आयी। मैंने खाना खाया फिर मैं सो गयी, थोड़ी देर में मैं उठ गयी। फिर मेरी माँ नौगाँव गयी, मैंने अपने भाई को अपने साथ रखा। थोड़ी देर में मैंने उसे खेलने को छोड़ दिया। वह अकेले नौगाँव चला गया। मेरी माँ उसे अकेले नौगाँव में देखकर हैरान हो गयी। फिर मेरी माँ उसे नौगाँव से अपने साथ वापस लायी। मेरी माँ ने मुझे बहुत मारा। मैं रोने लगी। मेरी दीदी ने मुझे बचाया, फिर मैं चुप हो गयी। थोड़ी देर में, मैं दूध देने चली गयी। फिर घर आयी। मैंने हाथ मुँह धुला देवता की पूजा की और पढ़ाई करने लगी। खाना खाने के बाद मैं सो गयी।

***4. निधि (कक्षा-5):* गोशाला टूट गयी:** एक दिन बहुत ज़ोर से बारिश हुई। एक गोशाला टूट गयी। गोशाला के दरवाजे तक मिट्टी आ गयी। सुबह जब गाय की मालकिन दूध निकालने गयी तब उसको यह बात पता चली। सबने मिलकर मलबा उठाया और गाय को बाहर निकाला। गाय को दूसरी गोशाला में ले गये। बारिश से बहुत सारी गोशालाएँ टूट गयी थीं।

***5. अनिल (कक्षा-5):* जब मैं जंगल गया:** हमारे गाँव के जंगल में बहुत सारे पेड़ और जानवर हैं। वह बहुत घना जंगल है। लोग जब उसमें घास और लकड़ी लेने जाते हैं तो झाड़ियों में अटक जाते हैं। जंगल के रास्ते ऊबड़-खाबड़ और पेड़ों से घिरे हैं। एक दिन मैं अपनी माँ के साथ जंगल में घास लेने गया। माँ ने घास काटी, मैंने घास एक जगह पर इकट्ठी की। मुझे जंगल में तरह-तरह की आवाजें सुनायी दीं। मैं डरने लगा। माँ ने कहा, "डरने की

कोई बात नहीं है।” फिर हम घास लेकर घर वापस आ गये। जंगल में मैंने आँवले भी खाये। हमें घर आने में देर हो गयी थी। आधे रास्ते तक मेरा भाई मुझे लेने लाया।

6. साधना (कक्षा-5): मेरी कहानी: एक दिन की बात है, मैं स्कूल आ रही थी। अचानक बहुत तेज़ बारिश हो गयी, मैं भीग गयी। मैडम भी भीग गयी थीं। मैडम ने पूछा, “साधना तुम इतना कहाँ भीगी।” मैंने कहा, “मैं स्कूल आने में भीग गयी।” तब मिथलेश ने आग जलायी और हमने आग से अपने कपड़े सुखाये। फिर हम अन्दर गये और पढ़ाई की, फिर खाना खाया। खेले, फिर गणित पढ़ा। उसके बाद हमारी छुट्टी हुई। रास्ते में मुझे एक घायल चिड़िया मिली। उसका पंख टूटा हुआ था। मैं उसे अपने घर ले आयी। उसे पानी पिलाया। थोड़ी देर बाद वह उड़ गयी।

7. मनीष (कक्षा-4): एक दिन मैं अपने चाचा के साथ जंगल गया। माँ ने चाचा से कहा, “इसे अकेला मत छोड़ना।” मैंने अपने चाचा के साथ लकड़ी जमा की। वहाँ मुझे दूर पत्थर पर एक आदमी दिखाई दिया। फिर हम लकड़ी लेकर घर आ गये। हमें भूख लगी थी, माँ ने हमें खाना दिया, फिर मैं सो गया।

***8. अंबिका (कक्षा-5)* एक दिन मैं खेत में गयी:** एक दिन मैं अपनी माँ के साथ खेत में गयी थी। हम खेत में पहुँचे, वहाँ बहुत से बन्दर आ रखे थे। माँ ने बंदरों को भगाने के लिए पत्थर फेंके। बन्दर जोर से खों-खों करके हमें डराने लगे। तब माँ ने खेत के पास पड़ा एक बड़ा डण्डा उठाकर उन्हें डराया। बन्दर पेड़ पर चढ़ गये। वह दूर से हमें डरा रहे थे। माँ ने कहा, “अब वे वापस नहीं आयेंगे।” माँ दिन भर खेत में गुड़ाई करती रही। मैं माँ के लिए पेड़ की जड़ के पास से ठण्डा पानी लाया। थोड़ी देर बाद हमने रोटी खायी। अंबिका ने घर वापस आने तक की बात लिखी।

9. दीपक (कक्षा-5): एक रात की बात है, गाँव के कुत्ते जोर-जोर से भौंक रहे थे। लोगों ने बाहर आकर देखा अचानक जंगल से बाघ आया था। एक आदमी किनारे था, बाघ उसे खाने को आगे बढ़ा। वह आदमी भागा, वह पेड़ से टकराया और गिर गया। वह फिर भागा और एक पेड़ पर चढ़ गया। पेड़ पर बहुत सारे कीड़े थे। उन्होंने उसे काटा उसके पैर में काँटा भी चुभ गया। जब बाघ चला गया वो पेड़ से उतरा और अपने घर गया।

बच्चों के अनुभव पढ़कर मुझे लगा इनकी दुनिया कितनी बड़ी है। कितनी सारी चीज़ें हैं जो बच्चों के मन पर अपनी अमिट छाप छोड़ देती हैं। वे अपने व्यावहारिक जीवन से कितना

कुछ सीखते हैं। वे अपनी बात कहने को कितने उत्सुक होते हैं। अपनी बात कहने के दौरान वे किसी घटना का सूक्ष्मता से वर्णन करते हैं और उस घटना के सभी पहलुओं पर विस्तार से बातचीत करना चाहते हैं। साथ ही अपनी बात का कोई न कोई निष्कर्ष भी निकालना चाहते हैं। बच्चों ने जितना लिखा वो उनकी कही बात से कम था। इसका अर्थ यह था कि बच्चे अपनी बात को सुगठित रूप से लिखने का प्रयास कर रहे थे।

आज विद्यालय में जगमोहन चोपता भी आये थे। उन्होंने हमारी रचनात्मक कक्षा की गतिविधियाँ देखीं। बच्चों से बातचीत की। बच्चों ने अपनी किताब के तैयार पेज उन्हें दिखाए और अपने काम के बारे में बताया। उन्होंने बाल पत्रिका बनाने को लेकर कुछ सुझाव भी दिये। कई बार लगता है कि एक जैसी समझ रखने वाले लोगों का आपस में बात करना काम को थोड़ा व्यवस्थित बना देता है। साथ ही अपने काम को आलोचनात्मक तरीके से देखने में भी मदद मिलती है

१०.८.११

आज हमने चित्र पठन/चित्र लेखन पर कार्य किया। चित्र पठन, पढ़ने की शुरुआत करने के लिए एक अच्छी गतिविधि है। भाषाई कौशलों के विकास खासतौर पर चिंतन, सोचने-विचारने के कौशल को बढ़ावा देने में चित्र पढ़ना व चित्रों को आधार बनाकर अपनी बात लिखना उपयोगी पाया गया है। चित्रों का चुनाव इस प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण है। बच्चों के साथ काम करते हुए मुझे लगता है कि चित्र ऐसे होने चाहिए जिनमें घटनाओं का विस्तार से चित्रण हो, जिनमें कुछ लोग और बहुत-सी चीज़ें दिख रही हों। एक बोलता चित्र, कुछ बताता हुआ चित्र, चीज़ों का सह-सम्बन्ध बताता चित्र। बच्चों को उनके परिवेश से अलग सोचने के लिए प्रेरित करता चित्र।

मेरे पास चित्रों के दो पोस्टर थे। पहला चित्र बच्चों के परिवेश से मिलता-जुलता था। पहले इस पर बात शुरू की।

जिस परिवेश में ये बच्चे रहते हैं, वो हरा-भरा भागीरथी नदी के किनारे बसा, जंगल से घिरा, तरह-तरह के पेड़-पौधों के बीच बसा एक सुन्दर पहाड़ी गाँव है। जहाँ पानी, घास, स्थानीय फसलें, सब्ज़ियाँ, फल आदि के साथ ही सड़क व अन्य ज़रूरी सेवाएँ कुछ हद तक उपलब्ध हैं।

मेरे द्वारा चयनित चित्र भी कुछ-कुछ ऐसा ही था। बच्चों ने बहुत आसानी से इस चित्र को पढ़ लिया। चित्र को पढ़ने से मेरा तात्पर्य है कि चित्र में क्या-क्या दिखाई दे रहा है। चित्र में क्या हो रहा होगा? यह किस समय या मौसम का चित्र है? आदि। पर बच्चे ढेरों बातें कर रहे थे। चित्र में कुछ घर भी बने थे। उनके आसपास बने लोगों की भाव-भंगिमा से भी काफ़ी कुछ दिखाई-सुनायी दे रहा था।

फिर मैंने बच्चों को दूसरा चित्र दिखाया। यही चित्र आज के लेखन कार्य के लिए चुना था। यह एक रेगिस्तान का चित्र था। रेगिस्तान के एक गाँव का चित्र। इसमें तीन ऊँट, उल्लू, पेड़, घर, पानी लाती लड़की व महिला, बकरी, कैक्टस, रेत, आदमी, हुक्का, चारपाई और साँप आदि बहुत-सी चीज़ें दिखाई दे रही थीं। दूसरे चित्र का चयन एक योजना के अन्तर्गत किया था। मेरा उद्देश्य था कि बच्चे ऐसे किसी चित्र पर बात करें और लिखें जो उनके परिवेश से अलग हो। असल में बाहर की दुनिया के बारे में बच्चों को अवगत करवाना भी एक बड़ी ज़िम्मेदारी है। अकसर मैंने किताबों में बच्चों की पढ़ाई को ज्ञात से अज्ञात की ओर ले जाने के बारे में पढ़ा है। आज के अपने संवाद को मैं कुछ इसी तरह देखती हूँ। पहले उनके परिवेश पर आधारित चित्र को आधार बनाकर चित्र पढ़ने की बात की और फिर दूसरे चित्र पर ले गयी जिस पर उन्हें विचार करना था।

इस चित्र की एक खासियत यह थी कि यह स्पष्ट रूप से दो भागों में बँटा था। आधा दृश्य रात का था जिसमें चाँद तारे भी दिखाई दे रहे थे जबकि दूसरे आधे हिस्से में सुबह होती दिखाई दे रही थी। इस चित्र को चुनने का मेरा मकसद बच्चों का ध्यान अपने भौगोलिक परिवेश से बिल्कुल उलट परिवेश पर केन्द्रित करना था। ये बच्चे इस तरह के परिवेश से परिचित नहीं थे। ये बच्चे क्या जाने मीलों चलकर पानी लाना, सोच समझकर पानी खर्चना, यातायात के लिए ऊँट पर निर्भर होना, दूर-दूर तक हरियाली न होना या दिन में बहुत गर्म व रात में बहुत ठण्ड हो जाना। मैं चाहती थी बच्चे इस चित्र को देखकर कुछ अनुमान लगा पायें।

मैंने चित्र सामने टाँग दिया। बच्चे चित्र को देखने लगे। मैंने कहा, "इस चित्र को लेकर जो भी बात तुम्हारे मन में आ रही है, बताओ।"

बच्चों ने बताया यह रेगिस्तान का चित्र है। बच्चों के आसपास की या हिन्दी की किताब में तो रेगिस्तान का कोई चित्र नहीं है, मगर कक्षा-5 की अँग्रेज़ी में बहुत छोटा-सा रेगिस्तान का

एक चित्र है। क्या बच्चों ने टीवी में रेगिस्तान के बारे में देखा है ? इन्हें कैसे पता चला? “इस चित्र में तुम्हें क्या-क्या दिखाई दे रहा है?” पूछने पर बच्चे चीज़ों के नाम गिनाने लगे:

ऊँट, पेड़, लड़की, बकरी, तम्बाखू पीते आदमी, घर जाते हुए ऊँट आदि।

‘‘इस चित्र में क्या-क्या हो रहा है?’’ के नीचे अंकित जवाब आये:

“तीन ऊँट कहीं जा रहे हैं।”

“चार ऊँट पेड़ के नीचे बैठे हैं।”

“एक लड़की अपनी माँ के साथ पानी लेने जा रही है” आदि।

मैंने रेत पर हाथ लगाकर बच्चों से पूछा “यह क्या है?”

“मिट्टी।”

“इतनी सारी मिट्टी। इस पर कोई घास या पेड़-पौधा क्यों नहीं उगा है?”

बच्चों के जवाब इस तरह से आये:

“वहाँ किसी ने कुछ बोया नहीं होगा।”

“वहाँ के बीज सड़ गये होंगे।”

“वहाँ आग लग गयी होगी जिससे सारे पेड़-पौधे जल गये होंगे।”

“वहाँ किसी के गाय-बैलों ने उजाड़ खा लिया होगा (सारी घास चर ली होगी)। अभी वहाँ पौधे उगे नहीं होंगे”, आदि।

“क्या ये मिट्टी की बजाए कुछ और चीज़ हो सकती है?”

“ये बहुत सारी धूल हो सकती है। पत्थर वाली मिट्टी हो सकती है। बजरी, बालू, रेत होगी।” मैंने बच्चों को बताया, “ये बहुत सारी रेत है। इसलिए इस जगह को रेगिस्तान कहते हैं।”

“अगर तुम्हारे चारों ओर रेत ही रेत हो तो क्या होगा?”

“हवा होने से धूल उड़ने लगेगी। हमारे पैरों से रेत घर के अन्दर चली जाएगी। अगर किसी को घर बनाना होगा तो उसे बजरी लाने दूर नहीं जाना होगा।”

“जहाँ लोगों के घरों के चारों तरफ़ रेत ही रेत होगी और पेड़-पौधे बहुत कम होंगे, बारिश बहुत कम होगी या बहुत दिनों तक नहीं होगी, तो वहाँ के लोगों को क्या-क्या परेशानियाँ होंगी?”

“क्या तुमने नदी के किनारे बजरी में पेड़-पौधे लगे देखे हैं?”

इस प्रकार बच्चों से मेरी बातचीत चलती रही। मैंने बच्चों से कहा, “वे इस चित्र पर कोई वाक्य कहें।”

बच्चों ने नीचे अंकित वाक्य बनाये:

एक पेड़ पर उल्लू बैठा है। पेड़ के नीचे साँप बैठा है जिसका फन फैला हुआ है। एक जगह पर बैठकर चार आदमी तमाखू पी रहे हैं। तीन ऊँट कहीं जा रहे हैं।

जब हम इस चित्र पर खूब बातचीत कर चुके तो मैंने बच्चों से कहा, “वे इस चित्र में से अपने मनपसन्द पात्र चुन लें और इस चित्र को आधार बनाकर एक कहानी लिखें। बच्चों ने इस चित्र पर बहुत सुन्दर-सुन्दर कहानियाँ लिखीं।

1. अनिल (कक्षा-5): रेगिस्तान की कहानी: रेगिस्तान में एक ऊँट रहता था। वह बहुत बड़ा था। उस पर लोग सवारी करते थे। उस पर सामान ले जाते थे। एक दिन ऊँट को बहुत प्यास लगी, उस के गले में रस्सी बँधी थी। उसने बहुत ज़ोर मारा और रस्सी तोड़ दी, वो दौड़-दौड़ कर जंगल पहुँच गया। उसे वहाँ पानी नहीं मिला। उसने सोचा थोड़ी दूर और जाता हूँ। उसे थोड़ी दूर और जाकर एक तालाब दिखा। उसने वहाँ बहुत सारा पानी पिया और वापस घर आ गया।

2. आरजू (कक्षा-4): रेगिस्तान में रहने वाली लड़की की कहानी: एक लड़की रेगिस्तान में रहती थी। उसका नाम कुमकुम था। वो अपनी माँ के साथ पानी लाने बहुत दूर जाती थी। एक दिन रास्ते में उसे एक बकरी मिली। वह बकरी को देखते ही खुश हो गयी। बकरी को उसने गोद में उठाया और अपने साथ ले गयी। माँ पानी भरने लगी। माँ ने कहा, “चलो देर हो रही है।” तब लड़की ने मटका उठाया और घर की ओर चल दी। रास्ते में कुमकुम को कुछ ऊँटों की आवाज़ सुनायी दी। कुमकुम ने उधर देखा, पेड़ के नीचे कुछ ऊँट बंधे थे। माँ ने कहा, “वे आदमी अपने घर जा रहे होंगे। उन्हें थकान लग गयी होगी। तभी आराम कर रहे होंगे।”

3. दीपक (कक्षा-5): रेगिस्तान का गाँव: एक रेगिस्तान में बहुत सारे गाँव थे। एक दिन जब रात हुई और आसमान में चाँद-तारे आये, सब लोग आराम कर रहे थे। तभी अचानक सारे ऊँट भागने लगे। उन ऊँटों के पीछे बहुत सारे आदमी भी भागे। उन्होंने ऊँटों को बाँध लिया। फिर उन्होंने एक साँप देखा। वे उस साँप को मारने लगे। एक आदमी ने कहा साँप को क्यों मारते हो, यह तो हमारा दोस्त है। यह चूहों को खाता है। चूहे हमारे पेड़-पौधों के लिए ठीक नहीं हैं। उन आदमियों ने साँप को छोड़ दिया।

4. अंजली (कक्षा-4): यह रेगिस्तान की कहानी है: एक लड़की अपनी माँ के साथ पानी की तलाश में जा रही थी। तभी अचानक हवा, आँधी से बारिश होने लगी। सब भीगने लगे। उसकी माँ घबरा गयी। उसने अपनी बेटी से कहा, "बेटी हमें पानी की तलाश में बहुत दूर जाना है। अभी हम कहीं पर बैठ जाते हैं। और बारिश रुकने का इन्तज़ार करते हैं।"वे एक घर में रुक गये। जब बारिश आँधी रुक गयी तब माँ ने कहा, "बेटी चलो अब जल्दी से पानी लेने जाना है।" दोनों पानी लेने चली गयीं। वह बहुत देर में लौटीं और पानी अन्दर रखा। तीन आदमी बाहर बैठे बातचीत कर रहे थे। पेड़ पर एक उल्लू बैठा था। वह नीचे बैठे आदमी को देख रहा था। एक साँप भी पेड़ के नीचे लेटा था। उन आदमियों ने लड़की रीना से पानी माँगा। उसकी माँ ने उन्हें पानी दिया।

(अंजली की खास शैली में यह कहानी काफी लम्बी लिखी गयी थी।)

5. दिव्या (कक्षा-4): एक बार की बात है। रेगिस्तान में एक लड़की रहती थी। एक दिन वह अपनी माँ के साथ पानी लेने गयी। रास्ते में उन्हें एक साँप दिखाई दिया। साँप बहुत मोटा और लम्बा था। मीनू ने उसको देखा तो डरने लगी। माँ ने कहा, "मीनू डरो मत साँप कुछ नहीं करेगा।" माँ और मीनू डरने लगे। वे डरते-डरते घर आये। उनके घर के आगे तीन आदमी आग सेंक रहे थे। एक आदमी तम्बाखू खा रहा था। उनके ऊँट पेड़ से बँधे थे।

(चित्र में दिखाई दे रही ज़्यादातर चीज़ों का वर्णन करने की कोशिश) अन्य कहानियों में कुछ वर्णनात्मक कहानियाँ भी थीं, जैसे-

6. मनीष (कक्षा-4): यह रेगिस्तान की कहानी है इसमें रेत ही रेत होती है। यहाँ दिन में बहुत गर्म और रात में बहुत ठण्ड होती है।

आज लिखी ज़्यादातर कहानियाँ चित्रों का वर्णन कर रही थीं। वे चित्र में चीज़ों के होने का कारण तलाशती नज़र आयीं। बच्चों ने अपने-अपने तरीके से चित्र का वर्णन करने का

प्रयास किया था। उन्होंने अलग-अलग चित्रों में सम्बन्ध स्थापित करने का भी प्रयास किया था। वे चित्र को अपनी कल्पना के अनुसार किसी घटना के सन्दर्भ में देख पा रहे थे।

यदि मैं बच्चों की लिखी बात को थोड़ा और गहराई से देखूँ तो पाती हूँ कि लड़कियों ने माँ के साथ पानी लाने की बात को सन्दर्भ बनाया है जबकि लड़कों ने ऐसा नहीं किया। कई बार हम बच्चों की लिखी व कही गयी बात से उनके सामाजिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ को समझ सकते हैं। विभिन्न प्रकार के चित्रों पर बच्चों को लिखने के लिए कहना और उनके लिखे को पढ़ना बच्चों को गहराई से समझने का अच्छा जरिया हो सकता है।

११.८.११

संवाद लेखन:

जब तक मैंने कक्षा-एक, दो और तीन को काम दिया तब तक कक्षा चार व पाँच के बच्चों ने अपनी कल लिखी कहानियाँ फ़ेयर कीं।

आज मुझे बच्चों के साथ 'संवाद लेखन' पर काम करना था। मैंने बच्चों से कहा, "आज हम दो लोगों की आपस की बात को लिखेंगे। मैं एक बच्चे से बातें करती हूँ। तुम सुनना और बताना हमने क्या-क्या बातें कीं।" 'एक बच्चा आ जाओ' कहने पर मिथलेश आया। मैंने और मिथलेश ने बात शुरू की:

"आपका नाम क्या है?"

"आप कहाँ रहते है?"

"आप क्या करते है?"

ये बातचीत संवाद की बजाए सवाल-जवाब लगी। दूसरी बारी में अंजली आयी।

मैंने बातचीत की शुरुआत इस वाक्य से की, "दिव्या बता रही थी इस बार तुमने रोपाई में घर में खूब मदद की।"

"हाँ जी।"

"कैसे? जरा बताओ तो।"

अंजली ने विस्तार से बताया कि वह किस तरह चाय नाश्ता खेत में ले गयी। इस बात का ध्यान रखा कि कुत्ता खाने का घीडा (रिंगाल से बनी कंडी) न छू दे। पीने का पानी धूप से गरम न हो जाए, वगैरह।

ऐसा बताने के बीच-बीच में, मैं उससे कुछ पूछती भी रही। मैंने भी उसे बताया कि बचपन में, मैं गर्मियों में जब अपनी नानी के घर जाती थी तो वहाँ किस तरह अपनी नानी की रोपाई में मदद करती थी। इस बातचीत के बाद मैंने बच्चों से उनकी पहले सुनी कहानियों पर बात शुरू की। उदाहरण के लिए खरगोश और कछुआ की कहानी, चालाक बन्दर, खरगोश और शेर की कहानी और दो बिल्लियाँ आदि।

कहानी पर बात करते हुए मैंने पूछा, "जब खरगोश बहुत देर बाद शेर के पास पहुँचा होगा तो उनमें क्या बातें हुई होगी?"

शेर ने पूछा होगा, "तू इतनी देर से क्यों आया? इतनी देर तक कहाँ था?"

"फिर खरगोश क्या बोला होगा?" बच्चों ने इस तरह जवाब दिये:

"महाराज मैं धीरे-धीरे चल रहा था। मेरे पाँव में चोट लग गयी थी। मैं यहाँ आने का रास्ता भूल गया था। मुझे रास्ते में दूसरा शेर मिला जो आपसे भी बड़ा और बलवान है।"

"ठीक है तुम में से एक बच्चा शेर बन जाओ, एक खरगोश और आपस में बातें करो।"

हम जी। हम जी। कक्षा, जी हम जी के शोर से भर गयी।

इस प्रकार बच्चों ने अपने लिए स्वयं पात्र चयन कर बातचीत की।

1. मिथलेश व रोहित - शेर और खरगोश
2. सरस्वती व मनीषा - कछुआ और खरगोश
3. दिव्या व बच्चे - पाँच पूँछ का चूहा
4. आरजू व अंजली - चूहा व नाई

बच्चों ने अपने मन से पात्र गढ़कर भी बातें की, जैसे:

प्रवीन व रोहित ने ग्राम प्रधान व पत्रकार बनकर संवाद कहे।

प्रवीन पत्रकार बना व रोहित ग्राम प्रधान।

पत्रकार प्रवीन - "आपके गाँव में नहर टूट गयी है। खेतों में पानी नहीं जा पा रहा है। आप कब नहर ठीक करवाएँगे।"

रोहित प्रधान - "जब टाइम होगा तब करवा देंगे।"

प्रवीन - "नल में पानी भी नहीं आ रहा है।"

रोहित - "तो मैं क्या करूँ?"

प्रवीन - "श्यामू की छान टूट गयी है उसकी भैंस उसमें दब गयी है।"

रोहित - "मैं क्या श्यामू की भैंस निकालने जाऊँ। मुझे बहुत से काम करने हैं।"

प्रवीन - "अरे ! कैसे प्रधान है आप?"

रोहित - (कुछ देर चुप रहकर) "ठीक है, चलो कुछ लोगों को साथ लेकर चलते हैं। श्यामू की भैंस को निकालते हैं। नहर और पानी की पाइप भी ठीक करवाते हैं।"

मिथलेश और अनिल ने क्रमशः पत्रकार और बूढ़ा आदमी बनकर बातें की।

मिथलेश पत्रकार - "पहले आप के गाँव में कैसे घर थे?" (पहले से तात्पर्य पुराने समय से था)

अनिल बूढ़ा व्यक्ति - "पहले हमारे गाँव में लकड़ी, पत्थर और मिट्टी के बने घर थे। उन पर पटाल लगी होती थी। घर में बड़े-बड़े कोठार होते थे।"

मिथलेश - "अच्छा-अच्छा, क्या आपके गाँव में बिजली और टीवी थी।"

अनिल - "नहीं लाइट बहुत बाद में आयी।"

मिथलेश - "तब आपको समाचार कैसे मिलते थे?"

अनिल - "हमको अखबार से समाचार मिलते थे। जब लोग एक गाँव से दूसरे गाँव जाते थे तब वो हमें समाचार बताते थे।"

मिथलेश - "जब आप छोटे थे तब जूते चप्पल होते थे?"

अनिल - "नहीं तब लोग नंगे पैर चलते थे।"

मिथलेश - "क्या उनके पैर में दर्द नहीं होता था?"

अनिल - "उनके पैर में कभी-कभी दर्द होता था। कभी-कभी काँटे भी चुभ जाते थे।"

मिथलेश - "पुराना जमाना बहुत परेशानी वाला था।"

अनिल - "हाँ , पुराना जमाना परेशानी वाला था पर बहुत अच्छा था।"

कुछ और बच्चों ने भी कहा कि वे भी किसी की एक्टिंग उतार कर बातें करेंगे। मैंने बच्चों को समझाया कि अगर अभी हम बातें ही करते रहे तो अपना काम समय पर पूरा नहीं कर पायेंगे इसलिए पहले कुछ लिख लेते है फिर बातें करेंगे। बच्चे मान गये।

बच्चों को इस तरह से बातें करने में मज़ा आ रहा था। मन तो मेरा भी कर रहा था बच्चों की बातचीत सुनने का, पर अगर ये बातचीत यूँ ही होती रहती तो हमारा लिखने का काम रह जाता। मैंने बच्चों को कुछ पात्रों के नाम दिये और कहा, "वे इनमें से किन्हीं भी पात्रों को चुनकर उनके बीच क्या बातचीत हुई होगी ये अनुमान लगाकर लिखें?"

1. चिड़िया और पेड़
2. माँ और दादी
3. ग्राहक और दुकानदार
4. गाय और चिड़िया
5. कुत्ता और बिल्ली
6. अपने मनचाहे दो पात्र

जब बच्चे संवाद बोल रहे थे तो कक्षा-दो व तीन के कुछ बच्चे काम दिखाने आये और वहीं बैठ गये थे। जब मैं बड़े बच्चों को काम करने को कहकर इनकी कक्षा में आयी तो ये बोले, "हम भी एक्टिंग करेंगे, जैसे बड़े बच्चे कर रहे थे।"

तो कक्षा-दो व तीन के कुछ बच्चों से भी कुछ कहानियों पर बातचीत की। बच्चे एक दो वाक्य बोलते फिर चुप हो जाते। इतने में कोई और बच्चा वाक्य बोलता जिसे ये बच्चे दोहराते। लगभग सभी बच्चे ये गतिविधि करना चाहते थे।

मैंने पाया है कि जब भी मैं बड़े बच्चों के साथ उनके परिवेश से जुड़े मुद्दों पर बातचीत करती हूँ और उन्हें अपनी बात रखने के भरपूर मौके देती हूँ, तब कक्षा-एक के बच्चे भी बातचीत

में शामिल होना चाहते हैं। ऐसे समय में कक्षाओं की परिधियाँ टूटने लगती हैं। एकल अध्यापक विद्यालय के शिक्षक के लिए यह बात उसके काम को थोड़ा और व्यवस्थित कर सकती है।

कक्षा पहली, दूसरी व तीसरी के साथ कुछ संवाद करने के बाद बड़ी कक्षा के बच्चों की तरफ़ वापस लौटी। बच्चे अपना-अपना काम दिखाना चाहते थे।

कक्षा चार व पाँच के बच्चे आने लगे। उन्होंने कहा, "मैं जल्दी उनकी कॉपियाँ जाँच लूँ, ताकि वे अपना काम फ़ेयर कर सकें।" आज ये बच्चे मध्यान्तर में भी काम करते रहे। इन्होंने अपना काम फ़ेयर किया, चित्र बनाये व अपने पेज इकट्ठे करके अब तक किया काम देखा।

बच्चों को अपने मनचाहे पात्र चुनकर उनकी बातचीत को संवाद के रूप में लिखना था। आमतौर पर यह कार्य बच्चों के लिए बहुत कठिन माना जाता है। लेकिन अकसर हम बच्चों की कल्पना शक्ति को नहीं जान पाते और इसे उनके सीखने का आधार नहीं बना पाते। बच्चों ने अपने पूर्व अनुभवों के आधार पर कुछ इस तरह के संवाद लिखे:

अनिल (कक्षा-5) : चिड़िया और गाय की बातचीत:

गाय - "मेरी पीठ पर कौन बैठा है?"

चिड़िया - "मैं चिड़िया हूँ।"

गाय - "तुम मेरी पीठ पर क्यों बैठी हो?"

चिड़िया - "मैं तुम्हारी पीठ से कीड़े खा रही हूँ ताकि तुम्हें खुजली न हो।"

गाय - "तुम कितनी अच्छी हो!"

चिड़िया - "वो तो मैं हूँ ही।"

गाय - "ठीक है, अब तुम उड़ जाओ मुझे जंगल जाना है।"

रोहित (कक्षा-5): चिड़िया और पेड़ की बातचीत

चिड़िया - "पेड़ भाई तुम इतने हरे-भरे कैसे हो?"

पेड़ -"मैं अपनी हरी-हरी पत्तियों के कारण हरा भरा हूँ।"

चिड़िया - "पेड़ भाई, तुम इतने हरे भरे हो इसीलिए मैं तुम्हारे पास आयी हूँ।"

पेड़ - "अरे चिड़िया तुम तो कहीं भी आ जा सकती हो।"

चिड़िया - "तुम तो सबको घास और फल देते हो इसीलिए सबके मनपसन्द हो।"

मिथलेश (कक्षा-5) : चिड़िया व पेड़ की बातचीत

चिड़िया - "पेड़ तुम इतने बड़े कैसे हो?"

पेड़ -"मैं बहुत बहुत खाता-पीता हूँ और मुझमें ताकत होती है।"

चिड़िया - "तुम हरे भरे कैसे होते हो?"

पेड़ - "मैं अपनी पत्तियों के कारण हरा भरा हूँ।"

चिड़िया - "तुम पर चिड़िया घोसला क्यों बनाती है?"

पेड़ -"क्योंकि मैं उन्हें बारिश से बचाता हूँ।"

चिड़िया - "तुम उन्हें बारिश से कैसे बचाते हो?"

पेड़ - "मैं उन्हें अपने पत्तों से ढक लेता हूँ।"

आरजू (कक्षा-4) - बिल्ली और चिड़िया की बातचीत

बिल्ली - "बचाओ, कोई मेरी मदद करो।"

चिड़िया - "कौन है , क्या हुआ?"

बिल्ली - "अरे चिड़िया, मैं बिल्ली हूँ मेरी पूँछ पेड़ के छेद में अटक गयी है।

चिड़िया ने जल्दी-जल्दी बिल्ली की पूँछ अपनी चोंच से निकाल दी।

बिल्ली - "तुम्हारा बहुत धन्यवाद।"

चिड़िया - "ठीक है।"

बिल्ली - "चलो हमारे घर तुम्हें कुछ फल देती हूँ।"

चिड़िया- "नहीं मुझे बहुत काम है।"

बिल्ली - "हम दोस्ती करते हैं।"

चिड़िया -"मैं क्यों तुमसे दोस्ती करूँ तुम मुझे खा न लोगी?"

बिल्ली -"जो अपनी मदद करता है क्या उसे कोई खाता है।"

चिड़िया -“मुझे तुम पर भरोसा नहीं है।”

बिल्ली - “मुझ पे भरोसा करो।”

चिड़िया - “वादा करो तुम मुझे नहीं खाओगी।”

बिल्ली - “मैं वादा करती हूँ।”

चिड़िया बहुत खुश हो गयी, दोनों की दोस्ती हो गयी।

दिव्या (कक्षा-4) - माँ और दादी की बातचीत

बहू - “सास जी मैं खेत में जा रही हूँ।”

सास - “कौन से खेत में।”

बहू - “ गदेरे के पास वाले खेत में।”

सास - “गदेरे के पास वाले खेत में आराम से जाना, आजकल बहुत फिसलन है।”

बहू - “ठीक है सास जी।”

सास - “बहू जल्दी आना, आजकल बहुत धूप भी है और साँप भी हैं। रास्ते में देख देखकर जाना।”

बहू -“अच्छा।”

सास - “बहू जल्दी आना, शाम को मैं छानि (गोशाला) जाऊँगी।”

बहू - “अच्छा मैं जल्दी आ जाऊँगी।”

बहू खेत चली गयी। फिर सास भी दूसरे खेत चली गयी।

साधना (कक्षा-5) - दुकानदार और राजू की बातचीत

दुकानदार - “आजकल मेरी दुकान में बहुत कम ग्राहक आते हैं।”

राजू - “क्यों?”

दुकानदार - “पता नहीं शायद यहाँ बहुत सारी दुकानें खुल गयी हैं।”

राजू - “हाँ, यहाँ बहुत सारी दुकानें खुल गयी हैं इसीलिए आपकी दुकान में कम ग्राहक आते हैं।”

दुकानदार - “अब मेरा सामान कैसे बिकेगा?”

राजू - “आप सेल लगा लो तब आपकी दुकान का सामान बिक जाएगा।”

दुकानदार ने सेल लगायी, यह बात सारे गाँव में फैल गयी। तब दुकानदार की दुकान का सारा सामान बिक गया।

दुकानदार - “थैंक्यू राजू।”

राजू - “वैलकम।”

जयेन्द्री (कक्षा-5)- चिड़िया और पेड़ की बातचीत

चिड़िया - “पेड़, मैं तुम पर एक घोंसला बनाना चाहती हूँ।”

पेड़ - “तुम यहाँ घोंसला बना सकती हो।”

चिड़िया - “तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद।”

पेड़ - “एक बात बताओ तुम नीचे ज़मीन पर घोंसला क्यों नहीं बनाती?”

चिड़िया - “नीचे शिकारी मेरे अण्डे चुरा कर ले जाएगा।”

पेड़ - “शिकारी अण्डे क्यों ले जाएगा ? ”

चिड़िया - “वो मेरे अण्डे बाजार में बेच देगा।”

पेड़ - “ठीक है, तो तुम मेरी किसी ऊँची शाखा पर ही घोंसला बनाओ।”

चिड़िया - “ठीक है।”

यदि मैं इस गतिविधि में बच्चों के संवादों पर विचार करूँ तो पाती हूँ कि बच्चों ने बहुत से संवाद अपने परिवेश से उठाये हैं। रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में जिन बातों से उनका सामना होता है वह उनके सोचने के फलक पर पहले उभरता है। बच्चे उन सवालों को भी संवाद में लाये जिनके वे उत्तर चाहते हैं जबकि उनके पास अनुमानित उत्तर पहले से होते हैं।

१२.८.११

आज की योजना ऐसे विषय पर काम करना है जो बच्चों की सोचने एवं कल्पना करने की क्षमता को और अधिक उड़ान दे।'यदि (काश) ऐसा होता तो?' या 'अगर तुम होते तो क्या करते?' जैसे विषय बच्चों को सोचने व कल्पना करने की भरपूर छूट देते हैं।

मैंने महसूस किया है कि प्राथमिक स्तर के बच्चों में रचनात्मकता एक प्रमुख गुण होता है। इस उम्र में बच्चे प्रकृति व कल्पना के बीच सह-सम्बन्ध स्थापित करना सीखते हैं। एक ओर वे चीज़ों के होने के कारणों को जानने समझने की दिशा में बढ़ रहे होते हैं और दूसरी ओर अपनी कल्पनाओं की उड़ानें भर रहे होते हैं। आमतौर पर बच्चों की काल्पनिक बातों को बहुत हल्के में लिया जाता है। बहुत बार तो इन्हें सिर्फ़ मनोरंजन का साधन मान लिया जाता है। मुझे लगता है कक्षा में बच्चों को ऐसे विषयों पर बोलने व लिखने के भरपूर अवसर दिये जाने चाहिए जहाँ उन्हें कल्पना करने के अवसर मिलते हों। शैक्षिक दक्षताओं को ध्यान में रखकर देखें तो कल्पनाशीलता भाषाई कौशलों को निखारती है।

अगर भाषा की कक्षा में कल्पनाशीलता के भरपूर मौके मिले हों तो गणित की कक्षा में भी बच्चों को आसानी होती है। जब बच्चों को इबारती प्रश्न हल करने होते हैं तो उस समय वे उन प्रश्नों को भलीभाँति समझ पाते हैं व गणितीय भाषा में उसके हल निकाल पाते हैं। कई बार बच्चों की लिखी पंक्तियाँ अति साधारण लग सकती हैं, पर उस वक्त हम भूल जाते हैं कि ये पंक्तियाँ उन बच्चों द्वारा लिखी गयी हैं जिन्हें कई बार लिखे हुए को ठीक-ठीक उतारने के योग्य भी नहीं माना जाता। भले ही इनमें भाषाई तौर पर कमियाँ हो पर विचार के तौर पर ये अपनी पूरी यात्रा कर चुकी होती हैं।

आज हम इसी विषय पर काम करने वाले थे। बच्चों से बातचीत कर तय हुआ कि आज हम 'काश' पर कविता लिखेंगे। मुझे लगता है ये बच्चों की सबसे मनपसन्द बात है। अकसर वे सोचते रहते हैं 'काश ये होता तो ये होता'। अभी तक अबूझ चीज़ों को जानने के लिए वे कल्पना का सहारा लेते हैं। कक्षा पहली व दूसरी के बच्चे तो अपने से ही खूब बोलते हैं। अपने पालतू पशु या डिब्बे या किताब को भी अपनी बात सुनाते हैं। बच्चों ने इस विषय पर खूब कविताएँ लिखीं। मैंने बच्चों की कॉपियाँ देखते हुए ध्यान दिया कि इस बार बच्चों ने अपनी कविताएँ लिखने में तुकान्त शब्दों का पहले से बेहतर प्रयोग किया है। कविताएँ भी पन्द्रह-बीस पंक्तियों की लिखी हैं।

कुछ कविताएँ:

दिव्या-

मैं भी होती काश तितली
मज़े उड़ाती दिन भर उड़ती
फूलों का रस मैं चूस जाती।
फूलों पर मँडराती रहती
दूर-दूर आसमान में उड़ती
दिन भर मस्तियाँ करती
शाम-सबेरे गाना गाती
रात को मैं सो जाती

मनीषा-

काश मैं होती तितली
उड़ती दूर आसमान तक
बैठ जाती फूलों के पास
मेरे होते पंख सुन्दर
रात को आती दिन को भी आती
सबको लगती मैं प्यारी

दीपक (कक्षा- 4):

हम भी होते काश बन्दर
छलांग लगाते इधर से उधर
फल खाते मौज मनाते

हाथ किसी के भी न आते
जब हम पेड़ों पर भागते
कभी-कभी उनकी टहनी टूट जाती
टूट भी जाती तो हम नहीं घबराते
हम भी होते काश बन्दर

दीपक (कक्षा 5):
मैं भी होता काश छाता
बारिश से सबको बचाता
लोग मुझे बाज़ार ले जाते
हवा आती तो मैं उड़ जाता
मैं भी होता काश छाता
सबके साथ यहाँ-वहाँ जाता
बच्चे मुझको स्कूल ले जाते
कभी-कभी चूहे काट देते
फिर माँ मुझको सिल देती
मैं भी होता काश छाता।

मिथलेश-
हम भी होते काश बन्दर
मजे उड़ाते दिनभर कूदकर
पेड़ों से हम खाते आम
मीठे-मीठे, पीले-पीले आम

गाँव में जाकर अखरोट चुराते
दिनभर करते खूब मज़े
एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर जाते
खेत में जाकर आलू खाते
हम भी होते काश बन्दर
बच्चों को हम खूब डराते

रोहित-

हम भी होते काश मछली
दूर-दूर सागर में जाते
कभी-कभी झरनों में गिरते
खुशी-खुशी पानी में तैरते
धरती पर हम कभी न जाते।
दूर नदी में घूमकर आते
जो भी हमें पकड़ने आता
उसके हाथों से फिसल जाते।

अनिल-

अगर मैं होता ड्राइवर
तो मैं गाड़ी चलाता
मैं भी इधर-उधर जाता
इधर-उधर मैं सबको घुमाता

अम्बिका-

काश मैं होती चिड़िया
आकाश में घूमती जी भर
कभी यहाँ, तो कभी वहाँ
पेड़ पर गुजारती रातें
चीं-चीं चूँ-चूँ करती इधर-उधर
नहीं सिलता मेरे कपड़े दर्जी
मुझपर न चलती किसी की मर्जी
काश मैं भी होती चिड़िया।

अंजली-

अगर कहीं मैं कोयल होती
मीठे-मीठे गीत सुनाती
खाती-पीती मौज उड़ाती
उड़ती जाती उड़ती जाती
मैं कहीं दूर उड़ना चाहती
दूर-दूर घूम के मैं अपने घर आ जाती
अगर कही मैं कोयल होती।

आरजू-

काश, मैं भी होती पेड़
ऊँचा-ऊँचा विशाल पेड़
पक्षी मुझ पर बनाते घोंसले

बादल मुझ पर जल बरसाते
बच्चे मुझ पर झूला झूलते
दूर-दूर तक सबको देखती
सबको मीठे-मीठे फल देती
काश, मैं भी होती पेड़

जयेन्द्री-

काश, मैं भी होती बादल
टिप-टिप-टिप बूँदें बरसाती
सारे तालाब पानी से भर देती
बच्चे बारिश में मौज मनाते
खूब खेलते, खूब भीगते
बिजली चमक-चमक जाती
जब बारिश शुरू हो जाती
काश, मैं भी होती बादल
आसमान में छायी रहती

जब हम किसी बात या सन्दर्भ को समझ लेते हैं तो वह हमारे व्यवहार का हिस्सा बनने लगता है और हम अपने जीवन में उसका उपयोग करने लगते हैं। बच्चों की कविताएँ पढ़कर भी ऐसा ही लगा।

मेरा सवाल यह है कि क्या विषय की परिधि में काम करते हुए भावनात्मक पक्षों को समझा जा सकता है? आजकल सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की खूब चर्चा है। अधिकारियों से लेकर शिक्षा क्षेत्र में काम कर रहे अन्य लोग इस पर बात करते हैं हालाँकि उनकी बातों से सन्दर्भ गायब दिखाई देते हैं। सतत एवं व्यापक मूल्यांकन के तहत संवेदनशीलता, सहयोग की भावना, आदि मानवीय गुणों पर भी बातें होती हैं।

यदि मैं बच्चों की इन रचनाओं को गौर से देखूँ तो मैं बच्चों के भावनात्मक पक्षों के बारे में कुछ अनुमान लगा सकती हूँ। दीपक की 'छाता होने की चाहत' में दूसरों की मदद का भाव दिखाई देता है। आरज़ू का मन भी 'दूसरों को खुशी देने में' रमता दिखाई देता है। वास्तव में आकलन से पूर्व तो शिक्षक की ही बात आती है और शिक्षक को सोचना होता है कि वह जो काम बच्चों के साथ कर रहा है वह क्यों कर रहा है? सम्भवतः इस क्यों के जबाव में ही आकलन के सूत्र छिपे हैं। अकसर शिक्षण के दौरान हमारा क्यों का सवाल ही कोई ठोस आकार नहीं ले पाता या बहुत सीमित होता है तो ऐसे में हम सतत और व्यापक आकलन पर कितनी ही बातें कर लें यह केवल प्रारूप भरने तक ही सीमित होगा।

१३.८.११

आज हमारे लिए एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण दिन था। आज हमने विद्यालय की पहली 'बाल पत्रिकाएँ' बनायी। पहले मेरे मन में ये बात थी कि प्रत्येक बच्चे की अपनी पत्रिका होगी। परन्तु इस दौरान मैंने पाया कि बच्चों के कामों के अलग-अलग स्तर हैं। कुछ बच्चों ने बहुत अच्छी तरह काम किया है लेकिन कुछ बच्चों का काम उतना अच्छा नहीं हो पाया है। यदि प्रत्येक बच्चे की अलग पुस्तक बनती है तो सम्भव है कि कुछ बच्चे पाठकों का अतिरिक्त ध्यान पा रहे हों। ऐसे में दूसरे बच्चों को बुरा लग सकता है इसलिए मुझे लगा प्रत्येक बच्चे की व्यक्तिगत पत्रिका बनाने से ज़्यादा अच्छा रहेगा कि हम स्कूल की पत्रिकाएँ बनाएँ। ऐसे में पत्रिकाओं में सामूहिक दिलचस्पी बनेगी और बच्चों में मिलजुल कर काम करने की भावना का भी विकास हो सकता है।

पिछले दिनों किये गये काम से मेरी यह समझ पुख़्ता हुई कि पढ़ने-लिखने में रुचि विकसित करने के लिए बच्चों से किताबों में आये सन्दर्भों पर ढेर सारी बात करने का सीधा फ़ायदा उनके पढ़ने एवं लिखने की दक्षताओं पर पड़ता है।

मैंने बच्चों के पेजों को इकट्ठा किया। उन्हें वर्गीकृत किया और बच्चों के साथ मिलकर पत्रिकाओं के आवरण पृष्ठ तैयार किये। कुछ बच्चों ने इसमें मेरी मदद की। कुछ बच्चों ने अपनी पत्रिकाओं के कवर पेज बनाये। हमने मिलजुल कर पत्रिकाओं के नाम कुछ इस तरह से रखे- गुनगुन, रिमझिम, गुलदस्ता, बच्चों की बगिया, इन्द्रधनुष आदि। इस तरह हमारी पत्रिकाएँ तैयार हुईं। हमने इन पर प्लास्टिक की कवर भी चढ़ायी ताकि ये सीलन से बची रहें।

आज हम सब बहुत खुश थे। बच्चों ने अपनी पत्रिकाओं को समूह में पढ़ा। कक्षा दो व तीन के बच्चों को दिखाया। उनसे कहा कि जब वे पुस्तकालय में आयें तो इन को भी पढ़ें। इस तरह हमारी रचनात्मक भाषा कक्षा का सृजनात्मक उत्पाद तैयार हुआ।

स्वतन्त्र अभिव्यक्ति व बातचीत के पर्याप्त अवसर देने व नियमित कार्य करने का प्रभाव बच्चों पर दिख रहा था। उनमें आत्मविश्वास की ज़बरदस्त वृद्धि हुई थी। इस पूरी प्रक्रिया के दौरान कोई भी बच्चा निष्क्रिय नहीं था। सभी बच्चे अपने-अपने स्तर पर काम कर रहे थे। उनमें मिलजुल कर काम करने की भावना भी मजबूत हुई थी। मेरा मन तो अपने इन नन्हे रचनाकारों को देखकर खुशी से भर उठा था। बच्चों का सारा लेखन मौलिक था। मुझे उम्मीद है इन दिनों किये गये काम से बच्चों की खुद पढ़ने-लिखने यानी 'स्वाध्याय' की प्रवृति बढ़ेगी। वे अपनी पुस्तकों को ज़्यादा समझ के साथ पढ़ेंगे। बच्चों ने अपनी किताबें पुस्तकालय की रेक पर अन्य पुस्तकों के साथ रख दीं। ऐसा करते हुए उनके चेहरों की चमक के आगे सूर्य की चमक भी फीकी थी।

शिक्षकों के मुख्य दायित्वों में से एक है बच्चों को चिन्तन करने, विचार करने के लिए प्रेरित कर पाना। चिन्तन करने के लिए ज़रूरी है कि हम मुद्दों का चुनाव करके उन पर बात करें। ये मुद्दे बच्चों के परिवेश से ही होने चाहिए। इस तरह की प्रक्रिया में बच्चे समस्याएँ उठाते हैं और उनके समाधान की दिशा में बढ़ते हैं। समस्या पहचानना और समाधान के लिए अनुमान लगाना सम्भवतः हमारी स्कूली शिक्षा के लक्ष्यों का हिस्सा है। हालाँकि स्कूलों में ऐसा कम होता है। जब मैं स्कूल में थी तो मेरे साथ तो ऐसा नहीं हुआ, न ही मेरे स्वयं के बच्चों के साथ उनका स्कूल ऐसा कुछ कर पाता है। मेरे कुछ शिक्षक मित्र भी मेरी बात से इत्तिफ़ाक रखते हैं।

यदि मैं पिछले दस दिनों में किये गये काम पर नज़र दौड़ाऊँ तो पाती हूँ कि मैंने भाषा शिक्षण में एक साथ सुनने, बोलने, पढ़ने व लिखने पर कार्य किया। भाषा शिक्षण में बातचीत के महत्त्व को समझा। इस दौरान मुझे अहसास हुआ कि व्यवस्थित बातचीत करने के लिए अध्यापक की विषयवस्तु पर व्यापक समझ होनी चाहिए वरना बातचीत एक स्तर से आगे नहीं बढ़ पाती। इतना ही नहीं सीमित समझ के चलते यह कृत्रिम भी होने लगती है। किसी विषय पर बातचीत करते हुए पढ़ने-लिखने की दिशा में बढ़ना बच्चों के लिए रुचिकर होता है।

एक और महत्त्वपूर्ण बात की ओर मेरा ध्यान गया। वह यह कि कक्षा में नियमित काम करने व पिछले दिनों किये काम में, भले ही बच्चों के लिखने के स्तर से जुड़ी दो बातों - एक तो

उनका लेखन व दूसरा वर्तनी सम्बन्धी गलतियाँ- में बहुत ज़्यादा अन्तर न रहा हो, लेकिन उनके काम करने के उत्साह, मुझसे अपने काम के बारे में पूछताछ, अपने साथियों को अपने काम के बारे में बताना व सबके सामने अपनी बात कहने का आत्मविश्वास, ये कुछ पक्ष हैं जिनमें मैंने बच्चों में बहुत से सकारात्मक अन्तर नोट किये। आमतौर पर अपने कक्षा कार्य में टालमटोल करने वाले, अपनी कॉपी में बहुत ही लापरवाही से काम करने वाले बच्चों ने भी इन दिनों अपना काम अच्छी तरह करने का प्रयास किया।

शायद ऐसा इसलिए हो पाया कि आजकल बच्चे सामान्यतः कक्षा में होने वाले मूल्यांकन से भी खुद को आज़ाद महसूस कर रहे थे। वे जो भी लिखित या मौखिक काम कर रहे थे उसका किसी दूसरे के काम या किसी किताबी अभ्यास से कोई सीधा सम्बन्ध नहीं था। वे अपने मन से लिख-पढ़ रहे थे। उनके सामने तुलना करने के लिए कोई नहीं था। वे अगर कोई तनाव महसूस भी कर रहे थे तो वो किसी से तुलना या मूल्यांकन होने का नहीं बल्कि काम को समय पर पूरा करने का था।

२५.८.११

कई दिनों के बाद अनुभव लिखने के लिए कलम उठा पायी। व्यक्तिगत जीवन में रोज़मर्रा की उठापठक कई बार उत्साह और साहस को कम कर देती है। परन्तु अपने उत्साह को खुद समेटने के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं है। दूसरे, कई बार सोच-विचार करने के लिए खुद को थोड़ा समय भी देना पड़ता है। प्राथमिक विद्यालय में शिक्षक होने के मायने वो लोग ही बेहतर समझ सकते हैं जो इस स्थिति से किसी न किसी रूप में रूबरू हुए हों। और उन्होंने प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षकों को काम करते हुए देखा हो।

आज कक्षा-तीन की हिन्दी में 'जड़ और फूल' पाठ को पढ़ते हुए बरसात, बादल आदि शब्द आये।

बादल पर बात करते हुए मैंने बच्चों से पूछा,"बादल कैसे बनते होंगे?"

शुभम् ने कहा, "बादल धुएँ से बनते हैं।" ज़्यादातर बच्चों का यही मानना है कि बादल धुएँ से बनते हैं।

मैंने पूछा, "उनमें पानी कहाँ से आता है? धुँएँ में तो पानी नहीं होता।"

प्रियंका - "वे खूब पानी पीते हैं।"

"कहाँ से?"

"जहाँ ज़्यादा पानी होता है, जैसे नदी से।"

दीक्षा - "इन्द्रधनुष बादलों पर पानी डालता है वो अपने धनुष से पानी खींचकर बादलों को भरता है।"

"इतना सारा धुआँ कहाँ से आता होगा?"

"जब जंगल में आग लगती है तो बहुत सारा धुआँ निकलता है। उससे बादल बनता है।"

शुभम - "चूल्हा जलाने से भी बहुत सारा धुआँ आता है।"

मनीषा - "खेतों में कबाड़ जलाने से भी बहुत धुआँ आता है।"

इतने में भवानी बोली, "बादल बर्फ़ से बनते हैं।"

"बर्फ़ कहाँ से आती होगी?"

आईशा- "बर्फ़ आसमान से आती है जो बादलों में जमा हो जाती है।"

भवानी - (आईशा की ओर देखकर) "बादल ही बर्फ़ होते हैं।"

बच्चे अपनी कल्पना से बादल का बनना, उसमें पानी आना व पानी का बरसना आदि बता रहे थे। इतने में मुझे सूझा - 'क्यों न इन्हें रसोईघर में ले जाकर भाप का बनना, ठण्डा होकर पानी का बूँदों में बदल जाना, बूँदों का भारी होकर टपक जाना दिखाऊँ और इसी बहाने बादलों पर बात करूँ। हम सब रसोईघर में गये। अभी भात का पानी उबालने रखा था। भोजनमाता ने चावल धोकर रखे थे।

मैंने बच्चों को दिखाया किस तरह पानी उबल रहा है। उसकी भाप उठ रही है, वो भाप ढक्कन पर इकट्ठी हो रही है और जब हम ढक्कन को थोड़ी देर अलग रख रहे हैं तो भाप की नन्ही बूँदें पानी बन कर टपक रही हैं। इस प्रकिया से बातचीत शुरू कर मैंने उन्हें 'बादलों का बनना व बारिश का होना' प्रक्रिया को समझाने का प्रयास किया।

मैंने बच्चों से कहा, "वे घर में चाय बनाते हुए अपनी माँ या बड़े भाई-बहन की मदद से भी भाप का बनना व ठण्डा होना देख सकते हैं।" चाय बनाने में, नहाने का पानी गरम होने में, कुछ बच्चों ने बताया उन्होंने ऐसा होते देखा है।

बात आगे बढ़ाते हुए मैंने बच्चों से पूछा, "नदी और बादल आपस में क्या बातें करते होंगे?"

गजेन्द्री - "नदी सोचती होगी 'काश मैं भी आसमान में जा पाती'।"

शुभम - "अगर मैं आसमान में जाती तो खूब बारिश करती।"

प्रियंका - "बादल नदी से कहते 'तुम तो पानी हो हम तो भाप से बनते हैं। जब तुम भाप बनोगी तब तुम भी आसमान में आ जाना'।"

शुभम - "धूप से पानी गरम होता है। नदी सूरज से कहती है,'सूरज तुम तेज चमको हमको गरम करो हमारी भाप बनाओ'।"

भवानी - "बादल नदी से कहता 'तुम तो धरती पर हो, हम आसमान में हैं, हमारी दोस्ती कैसे होगी'?"

अरविन्द - "नदी कहती 'हम भी आसमान में आना चाहते हैं'।"

भवानी - "बादल नदी से कहते 'जब तुम्हें कोई अपने घर ले जाएगा तुम्हारा पानी गरम करेगा तब तुम्हारी भाप बनेगी तब तुम हमारे पास आ जाना'।"

मनीषा - "बादल नदी से कहते 'तुम धूप से बोलो वो तुम्हें जल्दी से गरम कर देगी तब तुम आसमान में आ जाओगी'।"

प्रिंयका - "नदी को सूरज से बात करनी चाहिए।"

विशाल - "सूरज से बात करके नदी जल्दी भाप बन जाएगी।"

मनोज - "तब बारिश होने लगेगी।"

गजेन्द्री ने पूरी बातचीत के अन्त में यह जोड़ा कि बारिश होने के लिए नदी को हवा से भी बात करनी होगी। यह पूछने पर कि "क्यों?" वो बोली, "हवा भाप को जल्दी उड़ा ले जाएगी और जल्दी ठण्डा कर देगी तब बारिश भी फटाफट होगी।"

शुभम लिखने का काम बहुत धीमे करता है। लेकिन इसकी सोचने-विचारने की क्षमता बहुत अच्छी है। मैं यह सोच रही थी क्या ये ज़रूरी है कि हम सभी बच्चों की लेखन दक्षता को ही मूल्यांकन का आधार मानें? अगर किसी बच्चे की समझ अच्छी है, वो अपनी बात दूसरे को कहकर समझा पा रहा है, तो भी उसका मूल्यांकन उसके लिखे हुए से ही क्यों हो? क्यों न हर बच्चे की दक्षताओं के मूल्यांकन के तरीके इस प्रकार हों कि वे बच्चे के सीखने की गति व सीखे हुए को व्यक्त करने के उसके तरीके के अनुसार हों? जब प्रत्येक बच्चा अद्वितीय है तो उनके सीखने व मूल्यांकन के तरीके एक जैसे कैसे हो सकते हैं? आमतौर पर स्कूल में बच्चों के मूल्यांकन का तरीका लिखित परीक्षा ही है। शिक्षक चाहते हैं उन्होंने कक्षा में जो पढ़ाया-लिखाया है या जो बच्चों की पाठ्य पुस्तक में लिखा है, बच्चा उसे ही परीक्षा में लिखे।

कोई ज़रूरी नहीं कि इस बातचीत के बाद बच्चे वाष्पीकरण या संघनन जैसी अवधारणा के बारे में जान लें। कक्षा तीन के स्तर पर ये कतई आवश्यक भी नहीं। मुझे हमेशा लगता है कि बच्चों के मन में किसी घटना को देखकर प्रश्न उठने चाहिए और वे उस प्रश्न का उत्तर खोजने की दिशा में आगे बढ़ने चाहिए। उन्हें उत्तर की ओर ले जाने के कई रोचक तरीके हो सकते हैं। नीरस और जबरन तरीकों से सिखाने पर बच्चों में अरुचि पैदा होती है। भारी-भरकम शब्दों को पढ़ना व लिखना उन्हें सीखने से दूर ही ले जाता है, उनमें उत्सुकता नहीं जगाता।

इस प्रकार कक्षा में संवाद करने से प्रत्येक बच्चा स्वयं को कक्षा से जुड़ा महसूस कर पाता है। ये बातचीत रोचक तो होती ही है, विषय को समझने में भी बच्चों की मदद करती है। बातचीत के दौरान बच्चे एक दूसरे की बात को आगे बढ़ाते हैं। अपनी बात कहते हुए वे एक दूसरे की बात को नकारते हैं या समर्थन देते हैं।

बच्चों की बातचीत से परिवेश को समझने-समझाने के कई सूत्र हाथ लगते हैं। कई बार लगता है कि यदि विषयवस्तु पर मेरी पकड़ और मजबूत हो तो सम्भव है कि परिवेशीय घटनाओं या अवधारणाओं को थोड़ा और खोल पाऊँ। खैर, भाषा शिक्षण के लक्ष्यों के हिसाब से तो बच्चों की यह बातचीत सार्थक ही जान पड़ती है।

नोट - इस बातचीत के बाद कई बच्चों ने मुझे बताया कि उन्होंने घर में कब और किस बर्तन पर पानी की बूँदें देखीं और उससे बारिश बनायी। साथ ही यह भी बताया कि कभी-कभी माँ सब्ज़ी का ढक्कन खुला रख देती है जिससे कि ये पानी वापस सब्ज़ी में न चला जाए और वो खराब न बन जाए।

३०.८.११

कक्षा दो व तीन के साथ पढ़ने व लिखने पर आरम्भ में थोड़ा योजनाबद्ध तरीके से आगे बढ़ने की ज़रूरत होती है। मैं बच्चों के साथ कविता गाती हूँ, बातचीत करती हूँ और उन्हें कविता लिखने के लिए कहती हूँ। आज पहले मैंने श्यामपट पर एक कविता लिखी। इसी कविता को कक्षा दो व तीन के बच्चों ने बिना देखे लिखा। वे स्वयं की लिखी कविता मुझे दिखाते रहे और फिर श्यामपट से देखकर अपनी कविता ठीक करते रहे। कक्षा-तीन में चार बच्चों के साथ हिन्दी लिखने पर अलग से काम करती हूँ पर उसमें निरन्तरता नहीं हो पाती। इन बच्चों के साथ लिखने पर रोज़ काम करने की ज़रूरत है। कक्षा दो का योगेश बहुत बढ़िया काम करता है। इसका लेख पढ़ना-लिखना सब कुछ कक्षा-तीन या चार के स्तर का है। मुझे पूरा विश्वास है कि यह आगे की कक्षाओं में हिन्दी में बहुत अच्छा काम करेगा। मैं कक्षा-एक व दो में व्याकरण की शुद्धता पर बहुत ध्यान नहीं देती हूँ। जब बच्चे कक्षा-3 में आते हैं तो पहली प्राथमिकता यह होती है कि बच्चे अब शब्दों की सही बनावट व मात्राओं के सही प्रयोग की ओर आगे बढ़ें। मैं बच्चों के साथ नियमित व बहुत से अभ्यास कार्य करना चाहती हूँ ताकि वे जल्दी से अपनी कक्षा की दक्षताएँ प्राप्त करें। लेकिन बहुत से कारणों से ऐसा नहीं हो पाता है। ऐसे में कभी-कभी घोर निराशा हो जाती है। प्रत्येक कार्य को करने का आनन्द तब आता है जब नतीजे अपेक्षा के अनुरूप हों। जब कुछ बच्चे मेरे अनुमानित लक्ष्यों से कम स्तर प्रदर्शित करते हैं तो कई बार मुझे अपनी शिक्षण शैली पर शंका होने लगती है पर जब उन्हीं शिक्षण शैलियों के बहुत बेहतर परिणाम अन्य बच्चों के साथ मिलते हैं तो खुशी भी होती है।

प्रत्येक बच्चे की सीखने की क्षमता अलग-अलग होती है। ज़रूरी नहीं कि जो तरीका एक बच्चे के लिए कारगर रहा हो वो ही सबके लिए उपयोगी हो। पर कुछ तरीके ऐसे होते हैं जो किसी भी अवधारणा की समझ बनाने में ज़्यादा कारगर होते हैं। जैसे कि, समग्र भाषा पद्धति का उपयोग कर भाषा सिखाना। मैं अपनी भाषा की कक्षा में समग्र भाषा शिक्षण के साथ पारम्परिक तरीकों का उपयोग करती हूँ।

कई बार मुझे लगता है अगर इन बच्चों के साथ घर पर भी थोड़ा काम हो पाता, ये थोड़ा अभ्यास कर पाते, तो इनके सीखने को गति मिल पाती। स्कूल में हुए काम को घर पर देखने से इनका ध्यान कक्षा में हुई गतिविधियों की ओर जाता। ये स्कूल में किये काम को घर के लिए दिये काम से जोड़ पाते, पर ऐसा न के बराबर हो पाता है।

संयोग से शैक्षिक दक्षताओं में पीछे रहने वाले बच्चे वे ही हैं जिन्हें घर पर कोई खास मदद नहीं मिल पाती। अपने अभी तक के शिक्षण अनुभवों व एक माँ होने के नाते मुझे ये भी अहसास होता है कि कुछ बच्चे लिखने में नीरसता महसूस करते हैं। उन्हें शब्दों से खेलने में मज़ा नहीं आता। शायद वे इसकी कोई उपयोगिता भी नहीं देखते न ही शब्दों से जुड़ाव महसूस करते हैं। उन्हें स्थूल व क्रियाशील चीज़ें ज़्यादा भाती हैं पर स्कूल उन्हें शब्दों में उलझाना चाहता है। शायद मुझे अभी सभी तरह के बच्चों के साथ ठीक से काम करना नहीं आ पाया है। शायद आगे और काम करके इस बारे में कुछ जान पाऊँ व बच्चों की ज़्यादा मदद कर पाऊँ।

घर पर हिन्दी लिखते हुए अकसर मेरा बेटा मुझसे उन शब्दों के सरल समानार्थी या पर्यायवाची शब्द पूछता है जिनकी वर्तनी उसे कठिन लगती है। हालाँकि उसका स्कूल उसे अपनी बात अपने शब्दों में लिखने की अनुमति नहीं देता है। वो बच्चों से सिर्फ़ किताबी जवाब चाहता है। ऐसे में मेरी उलझन और बढ़ जाती है, कई बार मुझे लगता है, मैं अपने बच्चे के साथ क्या कर रही हूँ। मैं उसके सीखने के तरीकों में बदलाव करना चाहती हूँ लेकिन मेरे तरीके उसके स्कूल के हिसाब से फिट नहीं बैठते। मैं उसे घर पर ही पढ़ाना चाहती हूँ पर यह अव्यावहारिक लगता है। मैं उसके बारे में एकतरफ़ा निर्णय नहीं ले सकती। इन सबके बीच मुझे लगता है कि वह उस तरह से बड़ा नहीं हो रहा जैसा मैं सोचती हूँ। यही सब मेरे स्कूल के बच्चों के साथ की समस्या है। मैं चाहती हूँ कि वह मेरे सिखाये तरीकों से आगे बढ़े पर संसाधनों की कमी और माहौल आड़े आ जाते हैं। मैं इन्हीं सब से जूझती रहती हूँ और अपेक्षित परिणामों के लिए प्रयास करती रहती हूँ, खैर।

आज ये पता चला कि कक्षा-तीन के बच्चों के साथ मात्राओं पर काम करने की आवश्यकता है। जल्दी ही मैं इस पर नयी कार्य योजना बनाती हूँ।

मध्यान्तर के बाद कक्षा-1, 2 व 3 के बच्चों की छुट्टी हो गयी। विद्यालय में पेंटिंग का काम पूरा हो गया है। तो आज मैंने प्रधानाध्यापिका दीदी व बच्चों के साथ मिलकर पूरे विद्यालय की सफ़ाई की। हमारी कक्षाओं में लगे पुराने चार्ट पेंटिंग के दौरान खराब हो गये थे, तो आज मन में ये विचार आया कि क्यों न पुस्तकालय के चार्ट का उपयोग कक्षा में करूँ। ये चार्ट भाषा शिक्षण के लिए उपयोगी विषयवस्तु का कार्य भी करेंगे। इनसे कमरा रचनात्मक व बालमन को आकर्षित करने वाला बनेगा।

बच्चों के साथ इन कविताओं पर मैं वैसे भी कार्य शुरू कर चुकी हूँ। जब बच्चे अपनी गायी कविताओं को सुन्दर चित्रों के साथ देखेंगे तो उन्हें और भी अच्छा लगेगा। मैंने बड़े बच्चों के साथ मिलकर पुराने सभी चार्ट को फ़िलहाल पुस्तकालय में रख दिया। इन्हें दूसरे दिन कैंची से काट- छाँट कर विषय अनुसार वर्गीकृत करूँगी व सँभालूँगी जिससे ये आगे कभी हमारे काम आ पायें।

विद्यालय में पेंटिंग का कार्य नये सिरे से हुआ है तो सारा विद्यालय बहुत सुन्दर लग रहा है। प्रधानाध्यापिका दीदी भी बहुत उत्साहित हैं। अब हम अपने विद्यालय को नये सिरे से सजाएँगे-सँवारेंगे। मैं अपने स्कूल की दीवारों का बच्चों के सीखने में अधिकाधिक उपयोग करना चाहती हूँ।

दीदी से अनुमति लेकर मैंने पुस्तकालय के कविता चार्टों को बच्चों की मदद से कक्षा की दीवारों पर इस ऊँचाई पर लगाया कि वे बच्चों को आसानी से दिखाई दें और पढ़े जा सकें। बच्चे उन्हें फाड़ें ना। साथ ही उनके नीचे छूटे खाली स्थान में बच्चों द्वारा किये जाने वाले अन्य रचनात्मक कार्यों के लिए पर्याप्त स्थान मिल सके। ये चार्ट बहुत ही रोचक हैं। ये हमें रूम टू रीड के पुस्तकालय कार्यक्रम के रूप में मिले हैं जिसमें 1000 से अधिक पुस्तकें भी हैं। ये पुस्तकें हमारे लिए बहुमूल्य संसाधन हैं। आज दो कमरों में करीब 30 चार्ट लगाये। रजिस्टर पर बच्चों के नाम लिखे व फिर 1.9.11 से 15.9.11 की कार्य योजना तैयार की। अभी इसमें कुछ और गतिविधियाँ जोड़नी बाकी हैं। छुट्टी के समय राजकीय इंटर कॉलेज गंगोरी से पुराने बच्चे भी मिलने आये। उन्होंने कक्षा की दीवारों पर लगे चार्ट देखकर खुशी ज़ाहिर की। उन्हें पढ़ा और आपस में हँसी-ठिठोली की। ये बच्चे देर तक यहाँ रहना चाहते हैं। हर नयी चीज़ पर पूछताछ करते हैं। साथ ही ये छोटे बच्चों पर अपनी बड़ी कक्षा का रौब भी जमाना चाहते हैं। यह जानना चाहते हैं कि उनके जाने के बाद स्कूल में क्या-क्या नया हो रहा है? ये अपने नये स्कूल के बारे में बात करना चाहते हैं। वास्तव में ये वो पल हैं जब मुझे अपने शिक्षक होने पर गर्व महसूस होता है। बच्चों की आँखों में प्रेम, अपनापन उन सब चुनौतियों को कम कर देता है जो रोज़मर्रा के शिक्षण में महसूस होती है।

१.९.११

स्कूल में बहुत सुन्दर-सुन्दर फूल खिले हैं। सारा स्कूल बगीचा लग रहा है। फूलों के बीच फूल जैसे हँसते-खिलखिलाते बच्चे... मन कितनी खुशी से भर उठता है। हमारी प्रधानाध्यापिका दीदी रजनी बलूनी का व्यक्तित्व भी इतना सकारात्मक है कि उन्हें देखते ही मन खुश हो जाता है, ऊर्जा से भर उठता है। एक अच्छा काम करने वाला साथी कितना ज़रूरी है जो हम पर विश्वास करता हो।

सलोनी 5 साल की नन्ही बच्ची जो कक्षा-एक की विद्यार्थी है, पिछले दो माह से विद्यालय आ रही है। अभी इसके साथ लिखित कार्य (अ,आ जैसा) करने की स्थिति नहीं बनी है, पर इसके घरवाले चाहते हैं कि इसे घर में करने के लिए ढेर सारा कार्य दिया जाए। वे बार-बार इसकी नोटबुक पर लिख भी देते हैं। मैंने इसकी माँ व बुआ को विद्यालय बुलाया पर वे नहीं आयीं। आज फिर इसकी कॉपी पर नोट लिखूँगी कि वे विद्यालय में आकर अपनी बात कहें ताकि मैं उन्हें अपनी बात समझा सकूँ। या फिर मैं ही किसी दिन इनसे मिलने जाऊँगी।

आज कक्षा-4 का छात्र नवीन वैसे ही विद्यालय आया जैसे मैंने उसे कल प्रार्थना सभा में बताया था। कितना प्यारा लग रहा था। हम सबने उसकी खूब तारीफ़ की। उसने गणित में दिया काम भी पूरा किया है। वो धीरे-धीरे विद्यालय में नियमित हो रहा है। मैं और दीदी उसके साथ बहुत प्यार व सम्मान से व्यवहार करते हैं। उसको नियमित विद्यालय आने को प्रेरित करते हैं। जब मैं इस विद्यालय में आयी थी तो उस समय नवीन कक्षा 3 में था। कक्षा 3 के स्तर से उसकी उम्र ज़्यादा थी। उसका विद्यालय आना बहुत अनियमित था। वह बार-बार बुलाने पर ही विद्यालय आता था। उसके आने का दृश्य कुछ इस तरह का होता 'उसकी माँ उसे डाँटते धमकाते हुए और कभी-कभी तो मारते हुए या गालियाँ देते हुए अपने साथ लेकर आती'। प्रधान अध्यापिका महोदया से कहती, "क्या करूँ मैडम जी, ये मेरी बात मानता ही नहीं। आज बड़ी मुश्किल से इसे पकड़कर लायी हूँ, आप इसकी खूब पिटाई करना।" फिर वो कुछ देर अपनी कहानी सुनाती जिसका सार ये होता कि वो बहुत परेशान है और नवीन ने भी उसे बहुत परेशान कर रखा है। वो उसका कहना नहीं मानता, अपनी मनमर्ज़ी करता है। एक ये ही तो उसके जीने का सहारा है, ये भी बिगड़ गया तो उसका क्या होगा, वगैरह। इसके बाद प्रधान अध्यापिका भी उसे डाँटती व कल से रोजाना स्कूल आने को कहकर उसे कक्षा में व उसकी माँ को घर भेजती। नवीन अपनी कक्षा में जाता और थोड़ी

ही देर में बच्चे उसकी तमाम शिकायतें करना शुरू कर देते। नवीन बार-बार डाँट खाता और दूसरे दिन फिर गायब। अचानक फिर किसी दिन वो स्कूल आता, अपने अजीबोगरीब कपड़ों व हेयर स्टाइल में।

नवीन अकसर देर से स्कूल आता। उसके आते ही कक्षा अस्त-व्यस्त हो जाती। उसके बैग में कोई न कोई ऐसी चीज़ ज़रूर होती जो सभी बच्चों के लिए उत्सुकता की वजह होती। जैसे कि चुम्बक या कोई पुर्ज़ा या फ़ोन वाला खिलौना आदि। उसकी बातचीत के विषय भी नये और अलग होते। जिस दिन भी वह स्कूल आता प्रधान अध्यापिका सबके सामने उसे खूब डाँटती, समझाती पर उस पर उनकी किसी बात का कोई असर नहीं दिखता। वो वही करता जो उसका मन करता।

जब मैंने नवीन के बारे में जानने का प्रयास किया तो पता चला कि हाल में ही उसके पिता की मृत्यु हुई थी। उसकी पारिवारिक परिस्थिति बहुत ही उलझी हुई व आर्थिक रूप से कमज़ोर थी। इन सब कारणों से उस पर जो ध्यान व स्नेह दिया जाना था वो लगातार उपेक्षा व शिकायतों में बदल गया था। परिणामस्वरूप नवीन गलत आदतों में पड़ गया और स्कूल में भी अनियमित हो गया। स्कूल व घर में मिली निरन्तर प्रताड़ना से उसमें ढीठता व लापरवाही आ गयी। ये सब जानकर मुझे लगा अगर मैंने इस बच्चे की मदद नहीं की तो मेरा शिक्षक होना निरर्थक है। मुझे अफ़सोस हुआ कि मैंने पहले इस बारे में क्यों नहीं सोचा? मैं भी इसे क्यों गलत समझती रही? मैंने प्रधान अध्यापिका, भोजनमाता व बच्चों से बात की और उन्हें इस बात के लिए राज़ी किया कि हम नवीन को कुछ भी नकारात्मक नहीं कहेंगे ना ही उसे यह महसूस करवाएँगे कि वह पढ़ाई में कमज़ोर है। हम सब उसकी यथा सम्भव मदद करेंगे। धीरे-धीरे हमारे प्रयास रंग लाये और नवीन ने स्कूल आना व काम करना प्रारम्भ किया। इस बीच मैंने उसे स्कूल की कुछ ज़िम्मेदारी भी सौंपी और उसे अहसास कराया कि वह हमारे लिए कितना महत्त्वपूर्ण है।

अपने घर की विकट परिस्थितियों के कारण और कोई ठोस सामाजिक मदद न मिल पाने के कारण नवीन का लोगों पर से विश्वास कम हो गया है। जिस कारण उसका व्यवहार सामान्य बच्चे से इतर हो गया है। लेकिन अब वो धीरे-धीरे अपना आत्मविश्वास वापस पा रहा है जिसमें विद्यालय की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है।

किसी समस्या के हल तक पहुँचने के हर बच्चे के अपने तरीके होते हैं। गणित की कक्षा में आज जोड़ के इबारती प्रश्न हल करते हुए रोहित ने रुपये-पैसे का प्रश्न कुछ इस तरह से हल

किया: रमेश 100 रुपए लेकर बाज़ार गया, उसने 50 रुपये की चीनी खरीदी, बचे 50 रुपये। उसने 30 रुपये का कद्दू खरीदा, बचे 20 रुपये। फिर उसने 10 रुपये के आलू खरीदे, बचे 10 रुपये। फिर उसने 10 रुपये की नमकीन खरीदी, फिर उसके बाद उसके पास कोई रुपये नहीं बचे। मैंने उससे पूछा, "क्या वह इस सवाल को किसी दूसरे तरीके से भी हल कर सकता है? तो वह है बोला, "हाँ" और थोड़ी देर में सवाल हल कर दिया। जब मैंने उससे पूछा, "उसने पहले इस तरह से सवाल हल क्यों नहीं किया" तो वह बोला, "इस तरीके से सवाल जल्दी हल होता है।"

आजकल ज़्यादातर बच्चों को बुखार हो रहा है। विद्यालय में कुछ दवाइयाँ हैं, वे बच्चों को दीं। अंजली (कक्षा-4) बुखार में भी स्कूल आ गयी। बहुत कहने पर भी घर नहीं गयी। कल अंजली विद्यालय नहीं आयी थी इसके बिना स्कूल अधूरा-अधूरा लगता है। यूँ तो एक अध्यापक के लिए सभी बच्चे एक समान व प्रिय होते हैं पर कुछ बच्चे अपने गुणों से अपनी खास जगह बना लेते है। अंजली बहुत प्यारी व संवेदनशील बच्ची है। छोटे बच्चों के प्रति इसमें प्रेम व आत्मीयता का भाव है, वह उनकी मदद करती है। मध्यान्तर में जहाँ अन्य बच्चे खेलते हैं अंजली अकसर छोटे बच्चों की समस्याओं का समाधान करती दिखती है। उसकी कक्षा के कई बच्चे पढ़ने-लिखने में अंजली से ज़बरदस्त प्रतियोगिता रखते है पर अंजली को इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ता, वो अपना बेहतर कार्य करती रहती है। अंजली एक अच्छी कहानीकार भी है और उसका लेखन भी बहुत परिपक्व है।

आज बच्चों ने डिस्पले बोर्ड पर लगाने के लिए कुछ नये चित्र बनाये। गजेन्द्री (कक्षा-3) बहुत सुन्दर चित्र बनाती है। आज उसने खेतों का एक सुन्दर चित्र बनाया।

१३.९.११

आज सुबह जब मैं विद्यालय आयी, बच्चे आ चुके थे। कक्षा 6 में पहुँचा अवतार सुबह ही विद्यालय आ गया था। इण्टर कॉलेज का समय 10 बजे हो गया है इसलिए अवतार सुबह थोड़ी देर के लिए ज़रूर विद्यालय आता है। अवतार के साथ मैं दो साल रही हूँ। अवतार को अपने इस स्कूल से बहुत लगाव है, साथ ही मैं उसका अपने प्रति भी लगाव महसूस करती हूँ। वो जब भी मौका मिलता है यहाँ आता है, हालाँकि बाकी बच्चे भी स्कूल में मिलने आते हैं पर वे ज़्यादा देर नहीं रुकते। जबकि अवतार दिनभर स्कूल में रहता है व मेरी

मदद भी करता है। वो मेरे काम करने के तरीके से इतना परिचित है कि मुझे उसे कुछ भी कहना-समझाना नहीं पड़ता। बच्चे जहाँ खेलने या सिर्फ़ बात करने के लिए स्कूल में आना चाहते हैं वहीं अवतार कुछ सीखने के उद्देश्य से भी आता है। इसके पिता भी स्कूल से लगाव रखते हैं और वे भी चाहते हैं कि जब भी इसकी छुट्टी हो ये स्कूल में ही रहे। जब भी मौका मिलता है अवतार विद्यालय आता है, बच्चों के साथ काम करता है।

हमने आज के दिन की शुरुआत “मैं तुमको विश्वास दूँ” गीत गाकर की। आज रोहित ने एक कहानी सुनायी। कहानी एक शेर और लोमड़ी की थी जिसमें अन्त में लोमड़ी शेर से जीत जाती है। चाहे चालाकी से ही सही कमज़ोर की ताकतवर पर जीत की कहानी थी वह। फिर आरज़ू व मनोज ने कविता सुनायी। मनीषा ने सबसे सामान्य ज्ञान के सवाल पूछे। धीरे-धीरे मनीषा का आत्मविश्वास बढ़ रहा है। आज हमने डिस्कवरी चैनल पर दिखाये गये एक प्रोग्राम के बारे में बातचीत की जिसमें एक आदमी जंगल की विषम परिस्थितियों में खुद को बचाये रखता है। चूँकि आज दीदी छुट्टी पर है तो कक्षा-एक अलग कमरे में और कक्षा-दो, तीन, चार व पाँच एक साथ बैठे। कक्षा-एक के साथ कुछ चित्रों व ‘आ’ की मात्रा वाले शब्दों पर काम करना है। मैंने उन्हें दीवार पर लगे चार्ट से मनचाहे चित्र बनाने को कहा और खुद दूसरी कक्षा में आ गयी।

श्यामपट पर सुरेश स्वप्निल द्वारा रचित कविता लिखी:

पोशम्पा भई पोशम्पा, बगिया में फूला चम्पा।

दूर-दूर खुशबू छायी , भीड़ देखने को आयी।

अगले दिन अँधियारे में, चोर घुसे चौबारे में

फूल चुराने आये थे, चार टोकरी लाये थे।

हम जल्दी से जाग गये, चोर दौड़कर भाग गये।

बड़ी टोकरी छोड़ गये ,छोटा गमला तोड़ गये।

मैंने सारे बच्चों को यह कविता लिखने को कहा और खुद कक्षा-एक के पास आ गयी। उन्हें श्यामपट पर कुछ शब्द लिखने को दिये। वापसी तक बच्चे कविता लिख चुके थे। हमने कविता पर बातचीत शुरू की। हालाँकि यह कविता कक्षा 5 के स्तर से सरल कविता है, पर सबको अलग-अलग काम करवाना कठिन है। पर्याप्त बातचीत के बाद मैंने कविता से कुछ

प्रश्न बनाये। जैसे-

1. बगिया में कौन से फूल खिले हैं?
2. कैसे पता चला कि बगिया में फूल खिले हैं?
3. चोर अँधियारे में फूल चुराने क्यों आये?
4. चोर क्यों भाग गये होंगे?
5. अगर तुम्हारे घर में चोर घुस जाए तो तुम क्या करोगे?
6. अँधेरा होने से हमें क्या-क्या कठिनाइयाँ होती है?
7. उन पेड़ -पौधों के नाम लिखो जिनमें तुमने फूल लगे देखे हैं?
8. वे कौन-कौन सी चीज़ें है जिनकी खुशबू दूर-दूर तक आती है?
9. कुछ खुशबूदार फूलों के नाम लिखो।

प्रश्न बनाते समय ध्यान रखा कि सभी तरह के प्रश्न हों।

बच्चों में सोचने व विचार करने की क्षमताओं को विकसित करने के लिए सटीक सवालों की ज़रूरत होती है। सवालों की प्रकृति यदि सीधी-सपाट न होकर दिमागी ज़रूरत को बढ़ावा देने वाली हो और शिक्षक इस पर अच्छे से संवाद करे तो बच्चे जटिल सवालों पर सोचने में आनन्द लेने लगते हैं। हालाँकि यह भी देखा जाता है कि यदि सवालों के हल जल्दी न मिलें तो बच्चे इनके प्रति उदासीनता भी प्रदर्शित करते हैं। इसलिए ज़रूरी यह होता है कि सवालों की प्रकृति ऐसी हो जो बच्चों को चिन्तन करने एवं निष्कर्ष तक पहुँचने में मदद करें। सारांश में, सवाल बच्चों को पर्याप्त मानसिक चुनौती देने वाले होने चाहिए एवं सवालों को निर्धारित करते समय शिक्षक द्वारा बच्चों की उम्र एवं उनके संज्ञानात्मक स्तर का ध्यान रखना ज़रूरी है। अर्थात सवाल इतने सरल भी न हों कि वे बच्चों को हल करने की चुनौती न दे पायें, साथ ही इतने जटिल भी नहीं हों कि बच्चे उन्हें समझ ही न पायें और प्रयास छोड़ दें।

अगर तुम्हारे पढ़ते समय लाइट चली जाए तो तुम क्या करोगे? इस सवाल के जवाब में ज़्यादातर बच्चों ने लिखा, हम मोमबत्ती, टार्च, लैम्प, लालटेन, छुलका (चीड़ के लीसे लगे पतले टुकड़े) आदि जलाकर पढ़ेंगे, पर अनिल ने लिखा खाना खाएँगे और जब लाइट आ जाएगी तब पढ़ेंगे। ग्रामीण जीवन जितना घर के भीतर बसा है उतना ही घर के बाहर भी। शहर का जीवन इसकी तुलना में बहुत सीमित है, सिर्फ़ अपने घर, बाज़ार व पड़ोस तक। इसीलिए अँधेरा होने से हमें क्या-क्या कठिनाइयाँ होती हैं? इस प्रश्न के जवाब में बच्चों के

जीवन का विस्तार दिखाई दिया।

1. छान जाने-आने में जब रात हो जाती है बहुत कठिनाई होती है।
2. रात में बाथरूम जाने में परेशानी होती है।
3. जब अँधेरे में खेतों में पानी लगाने जाते हैं तो परेशानी होती है, डर लगता है, आदि।

बच्चों ने फूल तो बहुत से देखे हैं पर उन्हें उनका नाम मालूम नहीं। ज़्यादातर बच्चे फूल से आशय उन्हीं फूलों से समझे जो सजावटी फूल होते हैं या जिनका महत्व उनके फूल होने के कारण ही ज़्यादा माना जाता है जैसे गुलाब, गेंदा, सूरजमुखी आदि। अन्य फूलों की ओर उनका ध्यान नहीं गया जैसे टमाटर, भिण्डी, तुलसी या आलू के फूल। जब कक्षा में बच्चों से इस पर बात की तो बहुत से नाम और जुड़े। कुछ नाम मैंने पहली बार जाने, जैसे भण्डर या श्याम सुन्दरी।

कक्षा 2 के बच्चों के साथ "क्रिकेट मैच" पाठ पर बातचीत की। ये एक 'चित्र पाठ' है जिसमें बहुत से जानवर मिलकर क्रिकेट खेल व देख रहे हैं। चित्र पर बात करते हुए बच्चों ने अपने पालतू जानवरों के बारे में भी कुछ रोचक बातें बतायीं। जैसे बच्चे ने अपने मुर्गे की फाइट किसी दूसरे के मुर्गे से कराई जिसमें उसका मुर्गा हार गया। बच्चे के मुर्गे ने उसे इतना मारा कि उसकी गर्दन से खून निकलने लगा। मैं अपने मुर्गे को रोज़ प्याज़ खिलाता हूँ इसलिए वह बहुत ताकतवर है। यह बताते हुए उस बच्चे का चेहरा खुशी से चमक रहा था। कक्षा में ज्यों ही किसी काम से इधर-उधर जाओ छोटे लड़के अकसर फाइट-फाइट खेलने लगते हैं। मध्यान्तर में भी यह उनका मुख्य खेल होता है। जिसमें बड़े लड़के भी शामिल हो जाते हैं और हमें बीच बचाव करना पड़ता है। हमारे सामाजिक मूल्य इसी तरह हस्तान्तरित होते हैं। अपने घर-परिवार, आसपास, टीवी या फ़िल्मों में बच्चे ज़्यादातर पुरुषों जैसा व्यवहार करते देखते हैं, उसकी ही नकल करते हैं। ऐसा नहीं है कि महिलाएँ किसी तरह की हिंसा नहीं करतीं, पर जहाँ महिलाओं में यह गलत बात, मज़ाक या उपहास के तौर पर देखी जाती है, वहीं पुरुषों में शान व ताकत के रूप में। ऐसे कई व्यवहारों के अलग-अलग प्रभाव व पोषण हमारे समाजों में देखने को मिलते हैं। आज के समय में इनपर सवाल उठाना तो दूर की बात है उलटे इन व्यवहारों को और अधिक प्रोत्साहित किया जाता है, जो मनुष्यता व एक स्वस्थ समाज के लिए घातक है।

बच्चों ने अपने रोज़ खेले जाने वाले खेलों के बारे में बताया। चुल्ली-भाण्डी, दस-बीस, ऊँच-नीच, गारे, एक सहेली, पकड़म-पकड़ाई आदि। बच्चों को खेलते हुए देखती हूँ, तो

पता लगता है कि खेल बच्चों को कितने प्रिय होते हैं। खेल की छोटी से छोटी गतिविधि बच्चों में असीम आनन्द भर देती है। खेल, एक तरह से नेतृत्व, सामाजिकता व सहयोग की भावना तो बढ़ाते ही हैं वे अपनी बारी का इन्तज़ार करना व नये खेल बनाना, नये नियम बनाना भी सिखाते हैं। कुछ दिन पहले कक्षा-एक को 'बोल भाई कितने आप चाहो जितने' खेल खिला रही थी। सिमरन ने कहा, "मैडम जी एक सहेली वाला खेल खेलेंगे।" मैंने पूछा, "क्या है यह खेल?" उसने खेल के बारे में बताया। मुझे याद आया बचपन में हम भी यह खेल खेलते थे। इस खेल में एक बच्चा गोले के भीतर अपना मुँह छिपा कर रोने का अभिनय करता है। शेष बच्चे गोला बनाकर चलते हुए गीत गाते हैं।

एक सहेली धूप में बैठी रो रही थी, उसका साथी कोई नहीं था। उठो सहेली उठो, अपने आँसू पोंछ लो, अपना मुँह धो लो, पूरब- पश्चिम देख लो अपना साथी खोज लो।

बच्चा जिस बच्चे के पास जाकर उसको गले लगाता है फिर वो बच्चा गोले के अन्दर जाता है। गीत गाते हुए बच्चे बहुत उत्सुक होते हैं कि किसको साथी चुना जाएगा। वे उस बच्चे को इशारे भी करते रहते हैं कि मुझे अपना साथी चुनो।

खेलते-खेलते मध्यान्तर का समय हो गया था। मैंने बच्चों से कहा अब वे खाना खाने जाएँ। जिन बच्चों की बारी सहेली बनने की आ चुकी थी वे तो खाना खाने चल दिये पर जिनकी बारी नहीं आयी थी वे मेरे पास आये और बोले, "अभी हमारी बारी नहीं आयी। अभी खेल खत्म कैसे हो गया?"

मुझे दुबारा खेल शुरू कराना पड़ा और जब सब बच्चे सहेली बन गये तब वे खाना खाने गये।

बच्चों की फुटबाल खराब हो गयी है, अब वो पिचक गयी है पर फिर भी बच्चे इसे खेलने ले जाते हैं। बच्चों ने एक नया खेल बना लिया है। सब बच्चे एक ओर खड़े हो जाते हैं, कुछ दूरी से एक बच्चा इस बॉल को बच्चों की तरफ़ फेंकता है जिस बच्चे पर यह लग जाती है वो आउट हो जाता है। अब वो बॉल फेंकता है। बच्चों को इस खेल में बहुत मज़ा आता है।

अगर बच्चों से उनकी मनपसन्द चीज़ के बारे में पूछा जाए तो शायद वो कोई खेल ही होगा। बहुत बार बच्चे अपने खेल में इतने रम जाते हैं कि उन्हें खाने-पीने या अन्य किसी चीज़ का ध्यान ही नहीं रहता। कई बार हम बड़ों को बच्चों के खेल समय की बरबादी लगती है, तो कभी हम उनकी सुरक्षा को लेकर परेशान हो जाते हैं। जबकि खेल के दौरान बच्चे बहुत कुछ सीख रहे होते हैं। वे समूह की उपयोगिता के बारे में जानते-समझते हुए समूह में काम करना

सीखते हैं। इस दौरान अनुमान लगाना, योजना बनाना, ज़िम्मेदारियाँ बाँटना और सामूहिक ज़िम्मेदारी लेना साथ-साथ चलता रहता है। खेल खेलते समय बच्चे अपनी भावनाओं को संयमित करना भी सीखते हैं। वे हार-जीत को एक भाव से महसूस करना सीखते हैं। बच्चों के खेल कई बार उनके आसपास घटित हो रही घटनाओं व सामाजिक व्यवहारों से भी प्रेरित होते हैं। इससे ये भी पता चलता है कि बच्चे अपने आसपास से क्या सीख रहे हैं या कौन-सी चीज़ उन पर क्या प्रभाव डाल रही है। जैसे कि घर-घर खेलते हुए लड़की का बर्तन धोना व लड़के का बाज़ार जाकर सामान लाना। काल्पनिक घोड़े या स्कूटर पर लड़के का आगे बैठना आदि। बच्चों को खेलते हुए उनका अवलोकन शिक्षक को बच्चों के बारे में कई महत्त्वपूर्ण जानकारियाँ देता है।

मैं जब भी बच्चों को ध्यान से खेलते हुए देखती हूँ तो पता चलता है कि वे अपने साथियों के साथ कैसा व्यवहार कर रहे हैं। किसी खेल में पिछड़ने पर उनकी प्रतिक्रिया कैसी होती है? क्या वे संयम से अपनी बारी का इन्तज़ार करते हैं? समस्या समाधान के लिए बच्चे क्या-क्या तरीके अपनाते हैं? ये सभी जानकारियाँ मुझे बच्चों की प्रगति आख्या लिखने में भी मदद करती हैं। साथ ही मैं यह योजना भी बना पाती हूँ कि बच्चों के साथ समूह में क्या-क्या बातें करनी हैं। मुझे लगता है शिक्षा के लक्ष्यों और स्कूल की पाठ्यचर्या के भीतर ये सब बातें भी आती हैं।

आज आईशा व सरस्वती को बुखार आ गया है। सरस्वती सुबह ही घर लौट गयी जबकि आईशा कक्षा में लेटी रही, घर पर कोई नहीं था। माँ विद्यालय में भोजनमाता है। अम्बिका हाथ जलने के कारण विद्यालय नहीं आयी। अंजली कल कण्डाली की झाड़ी में गिर गयी थी। आज ठीक है।

पता नहीं आजकल ये अनावश्यक बाधाएँ क्यों आ रही हैं जिनसे बच्चों का काम रुक रहा है। पर बच्चे बड़े बहादुर होते हैं, वे जल्दी ही अपनी बाधाओं पर काबू पा लेते हैं। बड़ों की तरह चिन्तित नहीं रहते। कभी-कभी लगता है बच्चों के जीवन में थोड़ी-बहुत बाधाएँ आनी चाहिए ताकि उनमें जीवटता बढ़े।

१९.९.११

आज सुबह की प्रार्थना सभा में जब हम साथ-साथ बैठे थे, कविता, कहानी, समाचार आदि गतिविधियों के बीच अचानक मेरी नज़र चाँद पर पड़ी। समय 9.45 हो रहा था और चाँद अभी तक आसमान में दिखाई दे रहा था। मैंने इसी पर बातचीत करने की सोची और बात शुरू की।

"बच्चों चाँद कब दिखाई देता है?"

"रात को।"

"और सूरज?"

"दिन में जी।"

"अभी क्या है दिन या रात?"

"दिन है जी!"

"क्या अभी चाँद दिखाई देगा?"

"नहीं जी!"

"लेकिन मुझे तो दिख रहा है, तुम देखो तो क्या तुम्हें भी चाँद दिखाई दे रहा है!"

बच्चों ने आसमान में देखा।

हाँ जी... हाँ जी का सुखद शोर हुआ।

"ये चाँद दिन में क्यों दिखाई दे रहा होगा?"

बच्चे- "गर्मियों के दिनों में सूरज के साथ दिखाई देता है।"

"क्या चाँद रोज़ दिन में दिखाई देता है?"

"नहीं जी, कभी-कभी।"

कभी-कभी दिन में भी चाँद क्यों दिखाई देता होगा?

"कभी-कभी चाँद ज़्यादा नीचे धरती के पास आ जाता है।"

"चाँद ज़्यादा चमकता है।"

"कभी आसमान उसे छुपा नहीं पाता।"

बादल नहीं होते इसीलिए।

रोहित- "मैडम जी, ये चाँद जहाँ जाने के लिए चला होगा वहाँ पहुँचने में इसे देर हो गयी होगी तब तक सूरज के आने का टाइम भी हो गया था इसलिए सूरज भी आ गया। इसलिए दोनों दिखाई दे रहे हैं।"

अब ये चाँद क्या करेगा?

चलता जाएगा।

"अच्छा तुम्हें पता है न, जब हमारे यहाँ दिन होता है तो कुछ स्थानों पर रात होती है।"

हाँ जी, जी हाँ जी, अमेरिका में, इंग्लैंड में रात होती है।

"अगर ये चाँद और सूरज दोनों यहीं रह गये हैं तो वहाँ क्या हो रहा होगा?"

थोड़ी चुप्पी।

"वहाँ रात हो रही होगी।"

"कैसे? रात तो तब होती है जब चाँद आता है।"

अंजली- "कभी-कभी चाँद देर से आता है तब भी रात होती है। वहाँ शाम हो रही होगी जब ये चाँद वहाँ पहुँच जाएगा तो वहाँ रात हो जाएगी।"

रात में तारे भी होते है, वहाँ तारे होंगे।

रात पहले हो जाती है चाँद बाद में आता है। कभी-कभी चाँद नहीं भी दिखाई देता है।

आरजू- "चाँद के आने का समय अलग-अलग होता है कभी चाँद जल्दी आता है कभी देर में। व्रत के दिन चाँद देर से आता है।" (जवाब की दिशा की ओर बढ़ना)

"किसी अमरीका वाले को फ़ोन करना पड़ेगा, पूछना पड़ेगा कि जब ये सूरज और चाँद दोनों ही हमारे यहाँ है तो वहाँ क्या हो रहा है?" (बच्चे हँसते हैं)

दीदी- "राजीव जी गये हैं लंदन, उनसे फ़ोन करके पूछो।"

बच्चे- "हाँ जी, हाँ जी।"

"पूछूँगी।"

मुझे भी ठीक-ठीक नहीं पता कभी-कभी चाँद दिन में क्यों दिखाई देता है। पता करना होगा। शायद ऐसा चन्द्रोदय व चन्द्र अस्त का समय अलग-अलग होने के कारण होता हो या चन्द्रमा के पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाते समय उस पर पड़ने वाले सूर्य के प्रकाश की स्थितियों के कारण होता हो। आज घर जाकर पता करने की कोशिश करूँगी।

२०.९.११

आज कक्षा-4 और 5 के साथ कल चाँद पर हुई बातचीत को आगे बढ़ाया। मैंने बच्चों को चाँद का सूरज की रोशनी से चमकना, सूर्य व पृथ्वी से उसका सम्बन्ध, चाँद का अपनी धुरी पर घूमना व पृथ्वी के चारों ओर घूमना, दिन रात का होना, अमावस्या व पूर्णमासी के बीच की यात्रा, चन्द्रोदय व चन्द्र अस्त का समय, पृथ्वी के चारों ओर चक्कर लगाते हुए चाँद पर पड़ने वाले प्रकाश की मात्रा व उसका पृथ्वी वासियों को दिखना आदि विषयों पर बच्चों से बात की। पता नहीं मेरी बात बच्चों को कितनी समझ आयी होगी। कुछ दिनों बाद फिर से बात करूँगी थोड़ी ज़्यादा तैयारी के साथ। मैंने बच्चों से कहा कि सम्भव हो तो वे हर रात चाँद को देखें और उसमें हो रहे परिवर्तनों को नोट करें। इस बारे में सुबह सब बच्चों को बतायेँ व चाहें तो किसी रात की कोई खास बात समाचार में भी लिखें।

२१.९.११

आज कक्षा 3, 4, और 5 के साथ कामता प्रसाद की कविता "भोलू के घर टँगा कैलेण्डर" पर काम किया। यह कविता हमारे पुस्तकालय में है। पुस्तकालय में ढेरों ऐसी कविताएँ हैं जिनकी विशेषता है कि इनसे कक्षा 3, 4 व 5 के साथ अलग-अलग तरह से कार्य किया जा सकता है। ये पढ़ने में बहुत ही मज़ेदार हैं। मैंने इस कविता का चार्ट बनाकर बच्चों के सामने टाँग दिया। हमने खूब मज़े ले लेकर पाँच-छह बार कविता को पढ़ा।

इस कविता में महीने के हिसाब से मौसमों के बारे में बताया गया है। जैसे "मार्च सुहाना हो जाता है, अप्रैल जंगल महकाता है।"

कविता पढ़ने के बाद मैंने कक्षा 3 के बच्चों से कहा कि वे इस कविता को अपनी कॉपी पर लिखें और चाहें तो कविता पर चित्र भी बनाएँ। उसके बाद वर्ष के महीनों के नाम अपनी कॉपी पर लिखें।

कक्षा 3 में शुभम, विशाल और मनीषा की लिखने की गति थोड़ी धीमी है। दरअसल ये तीनों अपना काम करते हुए बीच में इधर-उधर ज़्यादा देखते है। इनका लिखित काम को करने में ध्यान ज़्यादा देर तक नहीं रह पाता इसलिए इनसे बीच-बीच में पूछना पड़ता है कि कितना काम हो गया। ये तीनों कक्षा में बातचीत करते हुए अन्य बच्चों की तरह फटाफट बातें नहीं बताते हैं। लेकिन जब भी कोई बात कहते हैं वो एकदम सटीक व पहले न कही बात होती है। बाकी बच्चे देखकर लिखने का काम फटाफट करते हैं। मैंने इन तीनों की कापियों पर स्वयं दिनांक डाली, पिछले पेज पलटे व पुराने कामों पर नाराज़गी जताये बिना आज का काम शुरू करने को कहा। कक्षा-4 व 5 के बच्चों को श्यामपट पर कुछ प्रश्न हल करने को दिये।

1. वर्ष का सातवाँ माह कौन-सा होता है?
2. किन-किन महीनों में सर्दी होती है?
3 हमारे यहाँ किन महीनों में सबसे ज़्यादा गर्मी होती है?
4. मार्च के महीने को सुहाना क्यों कहा गया है?
5. अप्रैल किस तरह जंगल महकाता होगा?
6. इस कविता पर और क्या प्रश्न बन सकते हैं?

कक्षा में लगभग एक घण्टा इन प्रश्नों पर काम हुआ। मुझे कविता की पंक्तियों को और खोलना पड़ा। नये प्रश्न बनाते हुए ज़्यादातर प्रश्न पहले बने प्रश्नों की तरह ही बने। जैसे वर्ष का पाँचवाँ महीना कौन-सा है? या मार्च के पहले कौन-सा महीना आता है?

कुछ नए प्रश्न भी आये, जैसे-

एक साल में दो बार सर्दियाँ क्यों आती है, पहले जनवरी में फिर नवम्बर में ?

फिर बात आयी कि सुहाना मौसम भी दो बार आता है।

मैंने बच्चों से ऋतु चक्र पर बात की।

हमने महीनों का एक चार्ट बनाया व कविता के हिसाब से लिखा कि किस माह में कौन-सी ऋतु होती है या मौसम कैसा होता है?

मैंने बच्चों को यह बताने की कोशिश की कि वर्ष एक दूसरे से जुड़े होते हैं। समय को मापने या जानने के लिए हमने अपनी सुविधानुसार उसे क्रम या नाम दिया है। मैंने बच्चों को हिन्दी महीनों के बारे में बताया।

मुझे ये बात अच्छी लगी कि बच्चे साल को चित्र के रूप में देख पा रहे थे। वे किसी महीने के नाम को पढ़ते-लिखते हुए उसके मौसम के बारे में अनुमान लगा पा रहे थे या उनके दिमाग में कुछ छवियाँ बन पा रही थीं।

जब बच्चे सवालों के जवाब लिख रहे थे तो मैंने गणित में भी इसी कविता की मदद से काम करने का निर्णय लिया। तो आगे का काम कैलेण्डर बनाने से शुरू हुआ।

आज बुधवार है। मैंने श्यामपट पर 21 तारीख बुधवार से शुरू करते हुए इस माह का कैलेण्डर बनाया। इस पर बच्चों से बात की। फिर मैंने बच्चों से कहा, "वे पिछले महीने का कैलेण्डर अपनी-अपनी कॉपी पर बनाएँ।" मैंने उन्हें बता दिया कि पिछला महीना सोमवार से शुरू हुआ था। इस तरह मैंने श्यामपट पर 1 तारीख डालकर बाकी खाने खाली छोड़ दिये। बच्चों ने जल्दी ही अपनी-अपनी कॉपी पर पिछले माह का कैलेण्डर बना दिया। आज हमने कक्षा में कैलेण्डर से जुड़े कुछ इस तरह के सवाल हल किये -

1. यदि 1 तारीख को शुक्रवार हो तो माह का कैलेण्डर बनाना ?
2. यदि 5 तारीख को सोमवार है तो 12 तारीख को कौन-सा वार होगा?
3. यदि 15 तारीख को मंगलवार है तो 6 दिन बाद कौन-सा वार होगा?
4. यदि 7 तारीख को शुक्रवार है उससे 5 दिन पहले कौन-सा वार होगा?

मैंने ध्यान दिया पहले-पहल सवाल हल करने के लिए बच्चों ने कैलेण्डर बनाये। बाद में वे बिना कैलेण्डर बनाये सवाल हल करने लगे।

२२.९.११

आज कक्षा-4 और 5 के साथ कैलेण्डर पर कल किये काम को ही आगे बढ़ाया। मैंने बच्चों को चार-पाँच तरह की नीचे अंकित गतिविधियाँ करायीं।

1. मैं किस महीने मिलता या मिलती हूँ - श्यामपट पर एक ओर बहुत सारी चीज़ों के नाम लिखे जैसे मटर, आँवला, गेहूँ, धनिया ,फ्यौंली, नीबू आदि। दूसरी ओर महीनों के नाम लिखे। बच्चों के चार समूह बनाये। बच्चों ने आपस में बातचीत कर महीनों के आगे उनमें पायी जाने वाली चीज़ों के नाम लिखे। इसमें खूब माथापच्ची हुई।
2. क्रम से लगाना- बच्चों ने महीनों के नाम के हिसाब से पहले पायी जाने वाली व बाद में पायी जाने वाली चीज़ों को क्रम से लगाया। जैसे कि दी गयी चीज़ों में से जो-जो चीज़ें जनवरी में पायी जाती हैं उनका नाम सबसे पहले लिखा।
3. बच्चों ने अपने जन्म महीने का चित्र मौसम के अनुसार बनाया।
4. मैंने बच्चों को उनकी उम्र निकालनी सिखायी, फिर बच्चों ने अपनी और अपने साथियों की उम्र आज की तारीख के हिसाब से पता की, साथ ही ये भी पता लगाया कि वे अपने साथियों से कितने बड़े या छोटे हैं।

आज की खास बात यह रही कि मैंने बच्चों को खूब अनुमान लगाने दिये। आज कक्षा में खूब खुली चर्चा हुई। बच्चों ने अपनी बात की सत्यता के लिए सोच-सोच कर प्रमाण दिये। जैसे कि, जब मैं नानी के गाँव गयी थी, तब मैंने ये फल वहाँ खाये थे, उस समय सर्दियों का मौसम था। सभी बच्चों को आज की गतिविधियों में खूब मज़ा आया।

मुझे ऐसी और कविताएँ ढूँढ़नी होंगी जिनमें कई पक्षों पर एक साथ काम किया जा सके। इस तरह की गतिविधियाँ बच्चों के अनुभवों को कक्षा में जगह देती हैं और उनके सीखने का आधार बनती हैं।

20 अक्तूबर से 24 अक्तूबर 2011

अर्द्धवार्षिक परीक्षाएँ हुईं। मूल्यांकन कार्य किया। इस बार के पेपर, विभाग से ही मिले थे। प्रश्नों में न तो नवीनता थी न ही कोई प्रश्न चुनौतीपूर्ण था, फिर भी कुछ बच्चे पूरा पेपर हल नहीं कर पाये।

हालाँकि शिक्षा व्यवस्था, पैरवी तो सतत एवं व्यापक आकलन की करती है परन्तु पारम्परिक परीक्षाओं का आग्रह नहीं त्याग पायी है। यह एक बड़ा विरोधाभास है। क्या इसका कारण सतत एवं व्यापक आकलन की समझ का कुछ लोगों में न होना है? कुछ समय पहले व्यवस्थागत सुधारों के क्रम में मूल्यांकन प्रक्रिया में बदलाव का क्रम चला परन्तु यहाँ मैं पाती हूँ कि तीन साल इन विचारों के इर्द गिर्द बात होने के बावजूद प्रश्नों की प्रकृति परम्परागत ही है।

25 अक्तूबर से 30 अक्तूबर 2011 तक दीवाली अवकाश रहा।

२.११.११

पिछले दो दिन बच्चों के साथ कुछ क्रियाशील रचनात्मक गतिविधियाँ कीं। कक्षा 3, 4 और 5 के बच्चों ने दीपावली के अपने अनुभव लिखे। दीपावली पर चित्र बनाये और कविताएँ लिखीं। बच्चों ने गत्तों की मदद से मकानों के मॉडल बनाये। बच्चे घर से मिट्टी की चीज़ें बनाकर लाये, जिन पर हमने स्कूल में रंग भरा। मिट्टी की गोलियों की मालाएँ बनाने की बात बच्चों से हुई थी, कि वे छुट्टियों में मिट्टी की गोलियों की माला बनाएँगे। कुछ बच्चों ने कल मालाएँ बनायी थीं, कुछ ने आज बनायीं, जिन पर रंग होने के बाद वे बहुत सुन्दर लग रही हैं।

अर्द्धवार्षिक परीक्षाओं के आधार पर बच्चों का मूल्यांकन करने के बाद हमने तय किया कि एक नयी कार्य योजना बनायी जाए क्योंकि बच्चे हिन्दी लिखने में मात्राओं की बहुत ज़्यादा गलतियाँ कर रहे हैं। इस कार्य योजना के अनुसार मैं कक्षा 2 से 5 के लिए हिन्दी में और प्रधानाध्यापिका अँग्रेज़ी में कार्य करेंगी। बाकी विषयों पर यथावत कार्य होता रहेगा। इसके लिए हमने मध्यान्तर से पहले के समय को दो भागों में बाँटा। 10 से 11.30 बजे तक हिन्दी, फिर 11.30 से 12.40 बजे तक अँग्रेज़ी। इस तरह कुछ समय सिर्फ़ कक्षा एक के लिए भी रहेगा।

३.११.११

पहला दिन:

आज कक्षा में बच्चों की हिन्दी लिखने में होने वाली गलतियों के कारण समझने की कोशिश की। मैंने पाया कि ये नीचे अंकित कारणों से हो रही हैं:

- अशुद्ध उच्चारण के कारण
- स्थानीय भाषा का प्रभाव
- मात्राओं के उच्चारण में लिखने में अन्तर का पता न होना।
- वर्णों के साथ मात्राओं को मिलाकर न लिख पाना।

कार्ययोजना: मैंने उपर्युक्त समस्या के आधार पर एक कार्य योजना बनायी जिसमें किसी वाक्य या अनुच्छेद के माध्यम से बच्चों का ध्यान विभिन्न मात्राओं की और आकर्षित करना व किसी मात्रा के ज़्यादा से ज़्यादा शब्द पढ़ना, लिखना व नये शब्द ढूँढना रखा। इस गतिविधि में बच्चे अपना पाठ पढ़ते हुए अलग-अलग मात्राओं से शब्दों के समूह भी बनायेंगे। मैं बच्चों को श्रुतलेख बोलूँगी जिसे बच्चे स्वयं सुधारेंगे। बच्चे लिखने में बहुत जल्दबाज़ी करते हैं। मैं उनका ध्यान इस और भी दिलाना चाहती हूँ कि वे अपनी बात लिखते हुये शब्दों के उच्चारण पर ध्यान दें व अपनी बात लिखते हुये पढ़ें भी।

हमारी बोलचाल में हमारी मातृभाषा का प्रभाव आना तो स्वाभाविक ही है। पढ़ते समय भी यह प्रभाव दिखता है, जैसे कि रहते को रैते या कहते को कैते पढ़ना। ये कई शब्दों में दिखता है।

इस तरह की गलतियाँ बच्चे उन मात्राओं के साथ करते हैं जिनका उच्चारण मिलता-जुलता होता है। जैसे कि इ और ई की मात्रा या उ या ऊ की मात्रा के साथ। कई बार हम बड़े भी ऐसा करते हैं। अँग्रेज़ी माध्यम से पढ़े लोगों को हिन्दी के शब्दों को पढ़ते-लिखते हुए परेशानी होती है, तो हिन्दी माध्यम के लोगों को अँग्रेज़ी के शब्दों को पढ़ते-लिखते हुए। ऐसा अभ्यास की कमी के चलते होता है। शुद्ध पढ़ना-लिखना निरन्तर अभ्यास से ही आता है। इसलिए मुझे बच्चों को पढ़ने-लिखने के ढेरों मौके देने होंगे, उन्हें अनावश्यक टोकना नहीं होगा। परन्तु समय-समय पर उनका ध्यान सही उच्चारण की ओर भी दिलाना होगा। इसमें सही उपाय यह भी लगता है कि स्वयं के उच्चारण और लेखन पर ध्यान दिया जाए। मेरा

कक्षा-तीन तक शुद्ध लिखने को लेकर कोई विशेष आग्रह नहीं है पर बच्चे जितनी जल्दी समझ कर लिखना शुरू कर दें उतनी जल्दी ही उनके लिखने का कौशल बेहतर होने की सम्भावना होती है।

इस गतिविधि में सबसे शुद्ध कक्षा-3 के बच्चों ने पढ़ा क्योंकि उनके साथ मैं पिछले दो सालों से काम कर रही हूँ।

कुछ नया सीखते हुए दिव्या की आँखों की चमक देखते ही बनती है वो हर नयी चीज़ सीखने को सदैव उत्सुक रहती है। वह चाहती है कि कक्षा में सबसे पहले उसे ही वह चीज़ समझ में आये। वह इसके लिए पर्याप्त मेहनत भी करती है पर उसमें प्रतिस्पर्धा की भी ज़बरदस्त भावना है। जबकि मैं अपनी कक्षा में इस तरह की भावना को कोई महत्त्व नहीं देती। मेरा विश्वास मिलजुल कर सीखने-सिखाने में ज़्यादा है।

आज मैंने श्यामपट पर बिना मात्रा के कुछ शब्द लिखे और कुछ बच्चों से लिखवाये, फिर इन्हें बारी-बारी से प्रत्येक वर्ण का उच्चारण करते हुए पढ़ा और पढ़वाया।

जैसे- अ..म..न.. = अमन

इसके बाद मैंने बच्चों का चेहरा श्यामपट की दूसरी ओर करवा के इन्हीं शब्दों का श्रुतलेख बोला व श्रुतलेख बच्चों से स्वयं जाँचने को कहा। हमारी सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया में शुद्धता पर बहुत आग्रह है चाहे वह शुद्ध उच्चारण हो या लेखन। आमतौर पर विद्यालयों में संचालित होने वाली सम्पूर्ण शिक्षण प्रक्रिया इसी के इर्द गिर्द घूमती है। सोच-विचार करने, रचनात्मकता को बढ़ावा देने को लेकर शिक्षा व्यवस्था व समाज दोनों का बहुत ही कम आग्रह है। कई बार हताशा में, मैं भी उसी दिशा की ओर लौटती हूँ जिसे कई अन्य शिक्षक इस्तेमाल करते हैं। हालाँकि मैं महसूस करती हूँ कि मेरी शिक्षण विधा में विभिन्न विधियों का पर्याप्त समायोजन होना ज़रूरी है, जिसके लिए मैं प्रयास भी करती हूँ।

मैंने जब वर्ष 2004 में शिक्षिका के तौर पर काम करना शुरू किया था तो मेरे शिक्षण का तरीका वैसा ही था जैसा मैंने विद्यालय में अपने शिक्षकों को करते हुए देखा था। मैं अधिकांश समय बच्चों को दिशा-निर्देश देने में बिताती थी। बच्चे मेरी बात सुनते थे और फिर अपनी-अपनी कापियों में कुछ उतारते थे। मेरा मानना था कि बच्चे पहले स्वर व्यंजन सीखेंगे उसके बाद मात्राओं का ज्ञान होगा तब जाकर शब्द और वाक्य लिखने की शुरुआत होगी। भाषा शिक्षण में कहानी सुनना-सुनाना, बच्चों से बातचीत करने के महत्त्व पर मेरी समझ सीमित

थी। गणित की शुरुआत, गिनती व पहाड़े रटने लिखने से ही आगे बढ़ती थी। इसी तरह अँग्रेज़ी में ए बी सी डी से काम शुरू होता था। विद्यालय में बच्चों को अनुशासन में रखने के लिए डराना-धमकाना भी चलता था। इन प्रक्रियाओं के परिणाम स्वरूप साल के अन्त तक कक्षा-एक के बच्चों को उनके लिए निर्धारित सम्बोध न के बराबर आ पाते थे। जब खीझ या हार कर मैं कक्षा-दो में पढ़ने-लिखने की अन्य गतिविधियाँ शुरू करती थी तो बच्चे भी धीरे-धीरे सीखना शुरू करते थे। उस समय मुझे लगता था ये बच्चे अब बड़े हो गये हैं और इस कारण सीख पा रहे हैं। जबकि ये सीखना नयी गतिविधियों के कारण हो रहा होता था।

दो साल का सेवा-पूर्व शिक्षक-प्रशिक्षण एक तरीके से शिक्षक की नौकरी पाने तक ही सीमित रहा था। या ये कहूँ कि इस प्रशिक्षण में ऐसा कुछ हुआ ही नहीं जो दिमाग के बन्द खिड़की-दरवाज़े खोलता या सीखने-सिखाने की कोई नयी समझ दे पाता। प्रारम्भ के कुछ सालों में काम करते हुए मुझे ये आभास होने लगा था कि मेरे शिक्षण के तरीके बच्चों के सीखने में कुछ खास मदद नहीं कर पर रहे थे। मेरे और उनके बीच एक पीढ़ी का अन्तराल होने के बावजूद स्कूल, शिक्षक व छात्र की भूमिका में कोई खास सार्थक बदलाव नहीं हुआ था। जो सवाल मेरी पीढ़ी के बच्चों के सामने थे वो ही अब भी थे। जिन तरीकों ने तब काम नहीं किया था और बच्चों की स्कूल से दूरी बनाने में सहायक बने थे, वे अब भी चलन में थे। बल्कि कई बार इन तरीकों के झूठे गुणगान भी किये जाते थे। इसकी वजह से शायद किन्हीं और तरीकों की जानकारी न होना या नये तरीकों को खोजने के लिए उत्सुक न होना, या फिर जोखिम उठाने से डर बना रहता था। मुझे ये पक्का विश्वास होने लगा कि बाकी सब चीज़ों में हमने पता नहीं कितनी तरक्की की, नये-नए तरीके खोजे, लेकिन अपने बच्चों को बड़ा करने और आने वाले जीवन के लिए तैयार करने में अभी हमें बहुत काम करना है। खुद को ज़्यादा संवेदनशील व खुली समझ का बनाना अभी शेष है। वे तरीके क्या होने चाहिए, वे मदद कर भी पायेंगे या नहीं इस बारे में भी कोई दिशा पता नहीं थी। तब थोड़ी-सी मदद मिली जो कुछ-कुछ काम करती दिखी। ये सर्वोत्तम तरीके थे या नहीं ये तो समय बतायेगा पर इस समय बड़े मददगार साबित हुए। हालाँकि और बेहतर तरीकों और व्यवहार की खोज अभी भी जारी है।

वर्ष 2006 में जब नयी पाठ्य पुस्तकें लिखी जा रहीं थी तो मेरा परिचय राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 से हुआ। साथ ही एनसीईआरटी द्वारा तैयार पाठ्य पुस्तकों को देखने का

अवसर भी मिला। पाठ्य पुस्तक लेखन के दौरान हुई कार्यशालाओं में सीखने-सिखाने के विषय में हुई ढेरों चर्चाओं ने मुझे मेरे तरीकों पर आलोचनात्मक दृष्टि डालने का अवसर दिया। वहीं यह विश्वास भी मजबूत हुआ कि एक शिक्षक को हमेशा जिज्ञासु और पढ़ते-लिखते रहने वाला चाहिए।

अभी अपनी कक्षा में काम करते हुए मैं सीखे गये नये तरीकों से ज़्यादा काम करती हूँ और उनके बेहतर परिणाम भी पाती हूँ। आवश्यकता पड़ने पर पारम्परिक तरीकों की भी मदद लेती हूँ। कुल मिलाकर आज विद्यालय में पारम्परिक और नवीन तरीकों का सुमेल देखने को मिलता है। इसी के साथ स्वयं सीखने व नयी विधियों को जानने समझने की उत्सुकता भी बनी हुई है।

१२.११.११

कल कक्षा-4 व 5 के साथ हमने ''हमारे आसपास'' विषय में खानपान की आदतों के आधार पर जीव-जन्तुओं का वर्गीकरण समझा था। बच्चों को घर से कुछ जीव-जन्तुओं की सूची बनाकर उनका वर्गीकरण करके लाना था। तो सबसे पहले होमवर्क पर बात की। ये सम्बोध मैंने प्रश्नपत्र हल करने के दौरान फीडबैक के आधार पर चुना था। आज लगभग सभी बच्चे शाकाहारी, मांसाहारी व सर्वहारी के बारे में स्पष्ट थे।

आज हमने यह जानने की कोशिश की कि हम जिस भोजन को खाते हैं वह हम तक किन-किन चरणों से होकर पहुँचता है। जैसे- भात यानी पका चावल किन-किन रूपों में बदलता हुआ हमारी भोजन की थाली का हिस्सा बनता है।

धान का बीज बोने से लेकर भात पकाने तक की प्रक्रिया पर हमने बात की। ये सारे बच्चे किसान परिवारों से हैं। घर व खेत के कामों में हाथ बँटाते हैं इसलिए इनका व्यावहारिक ज्ञान किताबी ज्ञान से कहीं अधिक है। बच्चों ने बीज बोने से लेकर भात पकने तक की प्रक्रिया को बहुत विस्तार से बताया। धान की किस्में व उसके पकने में लगने वाला समय, सुगन्ध और पकाने के लिए ज़रूरी पानी पर भी बात की।

आज बच्चों को गृह कार्य दिया कि वे अपने खाने की चार-पाँच वस्तुओं की यात्रा लिखेंगे। जैसे कि ''गेहूँ से रोटी या पूड़ी बनने की यात्रा''।

'हमारे आसपास' की पुस्तक में दिये गये सम्बोधों को ज़्यादातर बच्चे काफ़ी हद तक जानते समझते हैं। उनसे खुलकर बात करो तो वे अपना मत रखते हैं। ऐसे में शिक्षक की यह ज़िम्मेदारी हो जाती है कि वह बच्चों के अर्जित ज्ञान को किताबों में दिये सम्बोधों से जोड़ सकें। बच्चे अपनी बात का सम्बन्ध जोड़ते हुए नयी बातें सीखें। अपनी बात का सही या गलत आधार जाने व सीखे हुए को अपने जीवन में लागू कर पायें। जैसे ज़्यादातर बच्चे भोजन-पूर्व हाथ धोने की बात जानते हैं, पर वे इसकी गम्भीरता नहीं समझते या अपने बार-बार बीमार होने को साफ़-सफ़ाई से नहीं जोड़ पाते। गाँव में कोई बच्चा बीमार होता है तो कई माता-पिता डाक्टर के पास जाने से पहले देवता का इलाज़ शुरू करते हैं। बच्चे स्कूल में बातें करते हुए भी इसका ज़िक्र करते हैं। अगर बच्चों से खुलकर बात करो तो वे बात को समझने का प्रयास करते हैं और अपने घर और स्कूल की बातों को आलोचनात्मक तरीके से जाँचते हैं। शायद कुछ और बड़ा होने पर ये स्वयं किसी निष्कर्ष पर पहुँचें और अपना व्यवहार और आदतें तय करें।

१६.११.११

पिछले दिनों हिन्दी की कक्षा में किये गये काम का आज मूल्यांकन किया। कक्षा-दो के योगेश की श्रुतलेख में एक भी गलती नहीं आयी। जबकि कक्षा-4 की शिवानी और दीपक तथा कक्षा-5 के रोहित, अम्बिका, जयेन्द्री और दीपक ने बहुत सी गलतियाँ कीं। बच्चों को घर से मात्राओं को पहचानकर लिखने का कार्य दिया।

पुस्तक 'हमारे आसपास' की कक्षा में आज कक्षा-4 और 5 के बच्चों को अर्द्धवार्षिक परीक्षा की कॉपियाँ दिखायीं और प्रश्नों पर बातचीत कर कॉपी में काम किया।

मैंने उन सम्बोधों को नोट किया जिन पर कक्षा में दुबारा विस्तारपूर्वक चर्चा व लेखन कार्य करवाने की आवश्यकता है। जैसे कि 'यातायात के साधन व प्रभाव'। अगर तुम्हारे गाँव में सड़क नहीं होती तो गाँव और रहवासियों के रहन-सहन पर क्या प्रभाव पड़ता? सड़क होने का हमारे जीवन पर क्या-क्या प्रभाव पड़ता है? इस प्रश्न के उत्तर में कम से कम चार बातें बतानी थीं पर ज़्यादातर बच्चों ने दो ही बातें लिखीं। जैसे कि- हमें बाज़ार आने-जाने में सुविधा हुई है। पैदल नहीं चलना पड़ता। बच्चे, सड़क का सम्बन्ध स्वास्थ्य, शिक्षा, दूध, सब्ज़ी सामान की पहुँच, रोज़गार, आदि से नहीं जोड़ पाये। जयेन्द्री ने लिखा "सड़क के पास

वाले गाँव में वन-डे मैरिज होती है क्योंकि बारात जल्दी पहुँच जाती है।” बच्चों ने प्रश्नों के उत्तर जानते हुए भी बहुत संक्षिप्त में अपनी बात लिखी है। जबकि कक्षा में चर्चा करते हुए बच्चे विस्तार से व्याख्या करते हैं। उदाहरण के लिए, अगर हम अपना भोजन ढँककर नहीं रखेंगे तो क्या होगा, के जवाब में ज़्यादातर बच्चों ने लिखा हम बीमार हो जाएँगे।

आजकल हमने एक नयी गतिविधि शुरू की है। हम किसी एक पेड़ या पौधे के बारे में कक्षा में चर्चा करते हैं और बच्चे घर से इस चर्चा से निकली जानकारी को लिखकर लाते हैं। कोशिश करते हैं कि हम पंक्तियों को कविता रूप में लिखें। कुछ बच्चे अपनी पंक्तियों को कविता रूप में लिखते हैं कुछ सीधे वाक्य लिख रहे हैं।

इससे पेड़-पौधों के बारे में जानकारी भी हो रही है और बच्चों द्वारा स्वतन्त्र रूप से लिखने से उनकी मात्रात्मक गलतियों में भी सुधार हो रहा है। आज का पेड़ था, “अखरोट”, इसी के साथ ही हमने अन्य फलदार वृक्षों पर भी बात की।

बच्चे जब हमसे बात करते हैं तो हिन्दी में बात करते हैं पर जब वे अपने भाई-बहनों या दोस्तों से बाते करते हैं या लड़ते-झगड़ते हैं, तो गढ़वाली में बोलते हैं। सच है, हम अपनी मातृभाषा में ही सबसे स्पष्ट मौलिक व तर्कपूर्ण विचार-विमर्श कर सकते हैं। अपने विचारों को व्यापक अभिव्यक्ति दे पाते हैं।

भोजनमाता की सबसे छोटी बेटी के पैर में बहुत सारे फोड़े हुए हैं। वो दिन भर दर्द के मारे रोती रही। बाद में उसका एक फोड़ा फूट भी गया। उसकी माँ ने बताया कि घरेलू उपचारों से फोड़े पक रहे हैं। वे उसे डॉक्टर के पास इसलिए नहीं ले जा रहे हैं कि डॉक्टर चीरा लगा देता है। जिससे बच्ची को बहुत दर्द होता है। मैं सोच रही थी काश कभी कोई बच्चा बीमार न हो।

१७.११.११

सुबह की सभा में रोचक गतिविधियों को जगह देने से बच्चे ज़्यादा उत्साह से भाग ले रहे हैं। सबको प्रतिभागिता करने का मौका मिल रहा है। अकसर मैं बच्चों को कोई कहानी सुनाती हूँ या डिस्कवरी या नेशनल ज्योग्राफी चैनल पर आये किसी कार्यक्रम के बारे में बच्चों से बात करती हूँ। आज जयेन्द्री ने अपनी लिखी कहानी सुनायी। सरस्वती ने श्यामपट पर

समाचार लिखे, जिसमें दो बातें मुख्य थीं।

1. आजकल गाँव में रोज़ बन्दरों की टोली आ रही है जो घरों से भी चीज़ें उठाकर ले जाती है। और खेतों में फ़सल का नुकसान भी करती हैं। इन्हें भगाने के लिए गाँव में महिलाओं की बारी लगी है। क्यारियों में प्याज-लहसुन बो दिया गया है।
2. गाँव के नज़दीकी जंगल में लकड़ी (जलावन) कठिनाई से मिल रही है। कल मैंने और प्रधानाध्यापिका ने तय किया था कि मध्यान्तर से पहले तक हिन्दी व अँग्रेज़ी का शिक्षण कार्य इस माह तक चलने देते हैं। क्योंकि इसका नतीजा सकारात्मक मिल रहा है। इन कक्षाओं के द्वारा हम दोनों हिन्दी व अँग्रेज़ी विषय में बच्चों की बेसिक चीज़ों में सुधार करना चाह रहे हैं। हमने यह तय किया कि इस पूरे माह ये गतिविधि होगी, पहले हमने ये योजना 16 नवम्बर तक के लिए ही बनायी थी।

मैंने इस बार ये कार्य सरल व छोटी कहानी से करना तय किया है जिसमें कुछ वाक्य घटा-बढ़ा कर ये सुनिश्चित करूँगी कि एक ही कहानी में ज़्यादा से ज़्यादा मात्राओं के शब्द शामिल हों। आज की कहानी थी “छुटकू खरगोश”। ये एक नन्हे खरगोश की कहानी है जो माँ से छिप कर अकेले तालाब किनारे घूमने जाता है और मुसीबत में पड़ जाता है। फिर अपनी सूझबूझ से मुसीबत से बाहर निकलता है। घर वापस आता है तो माँ उसके लिए गाजर का हलवा बनाती है।

मैंने ये कहानी चार्ट पर भी लिख दी ताकि जितने दिन इस कहानी पर काम होना हो ये बच्चों को दिख पाये। उन्हें बार-बार अपनी कॉपी के पेज ना पलटने पड़ें।

मैंने बच्चों को कहानी से श्रुतलेख बोला। बच्चों ने श्यामपट पर देखकर स्वयं अपनी गलतियाँ सुधारीं।

मैंने बच्चों से कहानी से सम्बन्धित प्रश्न पूछे जिससे ये पता लग सके कि उन्हें कहानी समझ में आयी या नहीं।

बच्चों ने बड़ी आसानी से कहानी के प्रश्नों के जबाव दिये।

अंजली ने कहा, “मैडम जी आपने ‘अगर तुम खरगोश होते तो क्या करते’? ऐसा प्रश्न नहीं पूछा।”

मैं जिस कहानी पर लेखन कार्य भी करना होता है उनमें अगर/यदि वाले प्रश्न अवश्य पूछती हूँ, तो बच्चों को इन प्रश्नों की आदत-सी हो गयी है।

मैंने बच्चों से यह प्रश्न किया तो उन्होंने खरगोश के बच्चे को मुसीबत से बाहर निकालने के अपने-अपने तरीके बताये। कुछ तरीके तो कार्टूनों से प्रेरित थे जैसे गैजेट का यूज़ करना।

बच्चों के काम में प्रगति है ज़्यादातर बच्चे उच्चारण पर ध्यान देकर लिख रहे हैं। वे ध्वनि के हिसाब से मात्राओं का उपयोग कर रहे हैं। मुझे लगता है शुद्ध लिखने से ज़्यादा महत्त्वपूर्ण है अलग-अलग परिस्थितियों पर सोच समझ पाना, अपने अनुभवों के आधार पर चीज़ों को देखना, उनकी व्याख्या करना और अपने लिए अवधारणाओं का निर्माण कर पाना। कभी-कभार हम शिक्षक शुद्धता के पीछे इस तरह पड़ जाते हैं कि बच्चे अपनी सारी शक्ति शुद्ध लिखने में लगा देते हैं। इस कारण वे किसी नयी बात को लिखने में झिझकते हैं कि कहीं गलत न लिख लें और डाँट न पड़ जाए। इसलिए ज़रूरी है कि शुद्ध लिखना किसी सन्दर्भ के साथ हो रहा हो न कि सिर्फ़ लिखने के लिए।

बच्चों को आज गृह कार्य दिया कि वे इस कहानी से अलग-अलग मात्राओं के शब्दों का समूह बनाएँगे। वे अपने मनपसन्द पाँच शब्दों से वाक्य बनाएँगे। कक्षा पाँच वाले बच्चे अपनी किताब से भी 10-10 शब्दों का समूह बनाएँगे।

कक्षा-1 में अँग्रेजी में A से Z तक के अल्फाबेट की पहचान करवाने का काम आगे बढ़ाया। आज कक्षा में Sun पर बातचीत की। मेरी खुद की अँग्रेज़ी में अच्छी पकड़ न होने के कारण मैं बच्चों के साथ अँग्रेज़ी में उतनी अच्छी तरह काम नहीं कर पाती जितनी अच्छी तरह हिन्दी में। मैं इसके लिए घर पर तैयारी कर रही हूँ। बच्चों की मदद भी ले रही हूँ। उम्मीद है धीरे-धीरे इसमें भी सहजता से काम होने लगेगा।

कक्षा-एक की प्रेरणा के पास एक रुपये का सिक्का था। वो बार-बार उसे अपने बस्ते से अन्दर-बाहर कर रही थी। बाकी बच्चों के लिए भी यह कौतूहल का विषय था। मैं बच्चों को स्कूल में रुपये लाने को मना करती हूँ पर फिर भी बच्चे कभी-कभार ले ही आते हैं, जिसे मैं अपने पास रख लेती हूँ और छुट्टी के समय बच्चे वापस ले लेते हैं, वरना तो दिन भर सिक्के की खनखनाहट सुनायी पड़ती है। प्रेरणा भोजनमाता की बेटी है। आज इसकी माँ नहीं आयी है, नानी के घर गयी है। यह पूछने पर कि रुपये किसने दिये, प्रेरणा ने बताया कि कल दिव्या का, बड़ी बहन आईशा ने फीटा (स्केल) तोड़ दिया था इसलिए माँ ने आईशा को 5 रुपये दिये 3 रुपये का फीटा लिया, 2 रुपये आईशा ने लिये, 1 रुपया प्रेरणा को दिया।

मैंने प्रेरणा से पूछा जब उसकी माँ नानी के घर गयी है तो वह दोनों बहनें किसके साथ रहेंगी। दो छोटियों को तो माँ अपने साथ ले गयी है। प्रेरणा ने बताया वे बुआ के साथ रहेंगी।

ठीक है, इधर-उधर मत जाना।

मुझे प्रेरणा से बातें करते देख बाकी बच्चे भी पास सिमट आये।

सलोनी ने कहा, "मैडम जी एक दिन निकी और प्रवीन ने मेंढक को मारा, भगवान जी के मेंढक को।"

कक्षा एक में बुद्धा व मोनिका दो भाई बहन आये हैं। ये लोग अभी-अभी नेपाल से आये है। इसलिए इन्हें हिन्दी बोलने-समझने में कठिनाई होती है। भाषा में लिंग सम्बन्धी शब्दों का प्रयोग शुद्ध नहीं करते हैं। दोनों भाई-बहन साथ-साथ बैठते हैं। मोनिका खूब बोलती है। जबकि बुद्धा थोड़ा शरमाता है।

मैंने बुद्धा को पास बुलाकर पूछा, "तुम्हारे दाँतों को क्या हो गया?"

बुद्धा चुप रहा, मोनिका बोली, "कीड़े ने खा लिया जी।"

"क्यों?"

"ये चाकलेट खाता है न इसलिए।"

"तुमने उन कीड़ों को देखा है।"

"हाँ, देखा है।"

"तो तुमने उन्हें मारा क्यों नहीं?"

"वो भाग गये। रात में चुपचाप आकर दाँत खाया।"

सलोनी बिल्कुल मेरे पास बैठी थी उसके बालों में जूँ दिख रहा था। मैंने वो जूँ निकाल कर उसके हाथ में दिया। "ये ले भगवान जी का जूँ इसे मारेगी या नहीं।"

सलोनी ने फटाफट जूँ मार दिया।

अन्य बच्चे बोले, "मैडम जी हमारी माँ रोज़ हमारे सिर से जूँ निकालती है।"

मैंने बच्चों से इस बारे में बात की कि वे अपनी माँ, दादी या बुआ आदि से अपने बालों में से जूँ निकालने को कहें। गाँव में ये बहुत आम बात है। बच्चे हमसे सटकर बैठते हैं। लगभग

हर बच्चे के सिर के बालों पर जूँ चलते दिखाई पड़ते हैं। कई बार तो मुझे भी शक हो जाता है कि मेरे सिर में भी जूँ आ गये हैं। बच्चे प्रिय हैं, उनकी गन्दगी थोड़े ही न। अकसर बच्चों से और उनके अभिभावकों से बच्चों की व्यक्तिगत साफ़-सफ़ाई पर बातें करते हैं। शायद गाँव का व्यस्त जीवन, साधनों की कमी ऐसे कारण है कि चाहकर भी बच्चों में पर्याप्त साफ़-सफ़ाई नहीं रह पाती। लेकिन इसमें लापरवाही व ध्यान न जाना भी एक महत्त्वपूर्ण बात है।

जूँ की कहानी अभी और लम्बी चलती पर तभी रितिका बोली - मैडम जी हम डांस दिखाएँ?

मेरी हामी भरने पर रितिका व सलोनी ने डांस दिखाया।

"मधुवन में जो कन्हैया किसी गोपी से मिले।"

"ये मधुवन क्या होता है?" मैंने पूछा।

"गाना होता है जी।"

"गंगा माता होती है।"

"कृष्ण की बाँसुरी होती है।"

"हमारे आसपास होता है, जंगल होता है जी, जहाँ कृष्ण गाय चराता है।"

"भगवान का गाना होता है।"

बच्चों से बातचीत में बड़ा आनन्द आता है। हर बच्चा कुछ न कुछ कहना चाहता है। एक बच्चे की ओर मुँह करके बातें सुनने लगो तो दूसरा बच्चा अपने नन्हे हाथ से मुँह अपनी ओर करके अपनी बात सुनाना चाहता है। बच्चे याद कर-करके अपनी बात बताना चाहते हैं ताकि उनकी बात दूसरों की बात से ज़्यादा महत्त्वपूर्ण लगे। बच्चों के खेलों में न जाने कितने अर्थ छिपे होते हैं। नज़दीक से देखो तो पता चलता है कितनी बड़ी और सच्ची है बच्चों की दुनिया। जब खुद के बच्चे छोटे थे, तो फुर्सत ही नहीं होती थी, घर के काम ही नहीं निबटते थे। उनसे थोड़ी प्यार से बात की नहीं कि घर वाले कहते थे, ऐसे तो बच्चे बिगड़ जाएँगे। कई बार सोचती हूँ, काश मैं अब माँ बनती तो अपने बच्चों की ज़्यादा बढ़िया देखभाल कर पाती। उस समय तो अक्ल ही नहीं थी। वैसे अक्ल तो अभी भी कच्ची ही है, बच्चे समझदार हो गये हैं तो काम चल रहा है।

मध्यान्तर के बाद आज कक्षा-4 और 5 के साथ गणित में मापन पर कार्य किया। बच्चों ने विभिन्न चीज़ों की लम्बाई-चौड़ाई मापी व उनका क्षेत्रफल ज्ञात किया।

बच्चों ने कल कक्षा में बातचीत के आधार पर एक-एक पेड़ या पौधे के बारे में विस्तार से लिखा है, जिसमें अपने अभिभावकों की मदद भी ली है। उन्होंने ये जानने का प्रयास भी किया है कि किसी पौधे को कब बोया जाता है या किसी पेड़ पर किस माह में फल लगते हैं। आज हमने औषधीय पौधों पर बातचीत की।

पहले मुझे लगा था बच्चे सिर्फ़ उन्हीं पौधों के बारे में लिखेंगे जिन पर कक्षा में चर्चा हुई है। पर बच्चों ने अन्य पेड़-पौधों में भी रुचि दिखायी और उनके बारे में जानकारी एकत्र की।

१८.११.११

पिछले दिनों अनौपचारिक शिक्षक समूह एवं अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथियों ने मिलकर तय किया कि समूह के साथी मिलकर एक दूसरे के विद्यालय में जाएँगे और उस विद्यालय में होने वाले नवाचार को देखने-समझने का प्रयास करेंगे। इस प्रक्रिया में शिक्षक साथी एक दूसरे की शिक्षण की प्रक्रियाओं से कुछ समझ रहे होंगे, सीख रहे होंगे। अनौपचारिक शिक्षक समूह की शुरुआत फ़ाउण्डेशन के साथियों के साथ मिलकर अक्तूबर 2009 में की गयी थी तब से प्रत्येक माह किसी रविवार के दिन कुछ शिक्षक स्वेच्छा से मिलते हैं और अपने अनुभवों को साझा करते हैं। इसी प्रक्रिया में कुछ किताबें और लेख पढ़ते हैं और अपनी-अपनी ज़रूरत के अनुसार पठन सामग्री का चयन करते हैं।

निर्धारित योजना के अनुसार आज हम पहली बार प्राथमिक विद्यालय सुपार्गा गये थे। सुपार्गा उत्तरकाशी से 25-30 किलोमीटर की दूरी पर सड़क से लगभग 2 किलोमीटर की चढ़ाई पर स्थित है। हम सब साढ़े आठ बजे के लगभग उत्तरकाशी से चले। रास्ते में हँसते-हँसाते सफ़र कम खत्म हुआ पता ही नहीं चला। सुपार्गा से पहले पड़ने वाले गाँव मल्ला में एक शिक्षिका का मायका है, इनके घर पर बड़े प्रेम व सम्मान से हम सबने चाय पी।

मल्ला से सुपार्गा के बीच का रास्ता खेतों से होकर था, रास्ते में नीबू-सन्तरे के पेड़ फलों से लदे थे। बहुत सारे कद्दू यहाँ-वहाँ घरों की छतों पर रखे दिख रहे थे। मैं सोच रही थी कि क्या यहाँ बन्दर नहीं आते होंगे। रास्ते में एक बच्चा घर पर बनायी गाड़ी से खेलता दिखा। यहाँ से आसमान यूँ दिख रहा था मानो हाथ बढ़ाने से छू लिया जाएगा। चढ़ाई पर चलने की आदत छूट जाने से हल्की थकान भी लग रही थी। खिड़की खुली होने से रास्ते में ठण्डी तेज़ हवा के प्रभाव से मुझे हल्का सिरदर्द भी शुरू हो गया था।

जैसे ही विद्यालय में पहुँचे मन खुश हो गया। विद्यालय के पास पंयाँ का एक खूब बड़ा पेड़ था, जो हल्के गुलाबी रंग के फूलों से लदा-फदा मानो हमारे स्वागत को बेचैन हो रहा था। यहाँ सीआरसी संगीता दीदी, कृष्ण कुमार, जगमोहन चोपता और पश्चिमी दीदी हमारे स्वागत के लिए उपस्थित थे। इन सबसे मिलते ही थकान छूमन्तर हो गयी। विद्यालय शान्त, ठण्डी जगह पर स्थित है। विद्यालय के सभी 13 बच्चे बाहर धूप में बरामदे में बैठे थे और अपना-अपना काम कर रहे थे। हम लोग यहाँ कहानी शिक्षण पर 5 दिन की कार्य योजना देखने आये थे। अपने विद्यालय के 54 बच्चों के मुकाबले ये 13 बच्चे बहुत कम और शान्त लग रहे थे। थोड़ी देर बच्चों के बीच बैठी, उनकी कॉपियाँ देखी, जिनमें बहुत कम काम हुआ था। कम इसलिए कह रही हूँ कि बच्चों की कापियों में आठवें महीने की दिनांक पड़ी थी। जबकि कॉपियाँ छोटी व पतली थीं। हो सकता है ये बच्चों की दूसरी कॉपियाँ हो। हमारे विद्यालय के बच्चों की शायद तीसरी या चौथी कॉपियाँ चल रही हैं। बच्चों ने फ़ाउण्टेन पैन से काम किया था। बच्चे शान्त थे। विद्यालय के कमरे आकर्षक थे। इनमें ऋषिवैली पैटर्न के हिसाब से काम शुरू हो चुका था।

इसके बाद हम सब अन्दर कमरे में गये। वहाँ बच्चे भी बैठे थे। पश्चिमी दीदी ने हम सबको "नंगा राजा" कहानी सुनायी। उनका कहानी सुनाने का ढंग बहुत रोचक था और उसमें बच्चों की भी भागीदारी थी। कहानी सुनाने के बाद उन्होंने बच्चों को काम दे दिया और हम शिक्षक बाहर बरामदे में आगे की बातचीत के लिए बैठे। वहाँ दीदी ने अपनी 'कहानी शिक्षण' की पूरी प्रक्रिया साझा की। शिक्षक साथियों, अध्यापिकाओं ने उनसे अपनी जिज्ञासाएँ व्यक्त कीं जिन्हें दीदी ने धैर्यपूर्वक व प्यार के साथ बताया। जैसे कि वे कहानी शिक्षण पर हफ़्ते में कितने दिन काम करती हैं? उनके स्कूल में ऋषि वैली पैर्टन में काम शुरू हुआ है तो वे दोनों तरीकों को मिलाकर कैसे काम करती हैं? वे बच्चों के सीखने में इस तरीके के क्या प्रभाव देखती हैं? आदि।

एक बच्चे ने दीदी की सुनायी कहानी गढ़वाली में व दूसरी लड़की ने हिन्दी में सुनायी। जिनमें नये शब्द जुड़ते दिखे। यह भी दिखा कि अपनी मातृभाषा में बच्चा ज़्यादा सहज था। इस विद्यालय में कक्षा-एक में एक भी बच्चा नहीं है।

जब तक हमारी बातचीत खत्म हुई बच्चे अपने-अपने कागज़ों पर कहानी से कुछ शब्द व प्रश्न-उत्तर लिख चुके थे। ये वो ही शब्द और प्रश्न-उत्तर थे जो उनकी कॉपियों पर लिखे थे। शायद इन बच्चों ने पहले इस कहानी पर अभ्यास किया था। बच्चों से बातचीत के बाद हम

सी.आर.सी. लाटा की तरफ़ बढ़े। सुपार्गा विद्यालय का अनुभव अच्छा रहा, साथ ही मुझे यह सन्तोष भी कि मेरे विद्यालय के बच्चे यहाँ से काफ़ी आगे की प्रक्रिया में चल रहे हैं।

सी.आर.सी. लाटा पहुँचकर हम सबने मिलजुल कर लंच किया व आज के अनुभव और अपनी बातें साझा कीं। मुझे इस बात पर बेहद आश्चर्य भी हुआ जब बच्चों की कापियों पर चित्र देखकर या बच्चों को कहानी सुनाता देखकर कुछ शिक्षकों ने घोर आश्चर्य व्यक्त किया। कभी-कभी सोचती हूँ हम अपने विद्यालय में क्या कर रहे हैं? हमें भाषा शिक्षण को और ज़्यादा विस्तृत रूप में देखने व उसके अनुसार कार्य योजना तैयार करने की आवश्यकता है।

सुपार्गा विद्यालय की 'कहानी शिक्षण की योजना' 5 दिनों से आगे भी बढ़ सकती है और ज़्यादा गतिविधियों व अभ्यास कार्य से बच्चों को ज़्यादा कल्पनाशीलता व अभिव्यक्ति के मौके मिल सकते हैं।

दरअसल हमारी पाठ्य-पुस्तक हँसी-खुशी इसी तरह की कार्य योजना को ध्यान में रखकर लिखी हुई हैं, जिस पर बहुत से शिक्षकों का अभी ध्यान ही नहीं गया है।

घर पहुँचते-पहुँचते शाम के 5.30 हो चुके थे। बहुत तेज़ सिरदर्द हो रहा था। किसी तरह बच्चों को चाय-बिस्कुट दिया। वे खेलने चले गये। मैं दवाई खाकर उलट-पुलट हो रहे घर को ठीक करने व रात के खाने की तैयारी में जुट गयी।

२९.११.११

पिछले एक सप्ताह से हमारे विद्यालय में एक बच्चा शान्तु आ रहा है, जो पहले कभी किसी विद्यालय में नहीं गया है। इसे न तो व्यावहारिक तौर तरीकों की ज़्यादा जानकारी है न ही विद्यालय में चलने वाले पठन-पाठन की। अक्षर ज्ञान या किसी प्रकार की पढ़ाई का भी कोई अनुभव नहीं है। चूँकि उसकी उम्र 12 वर्ष है अतः उसे कक्षा 6 या 7 में होना चाहिए। वह हमारे विद्यालय में आना चाहता है, तो हमने तय किया कि कुछ दिन इसे ऐसे ही विद्यालय आने देते हैं, फिर देखते हैं आगे क्या करेंगे। कल सुबह जब प्रार्थना हो रही थी तो उसकी बिल्ली आ गयी। सारे बच्चों ने शोर शुरू कर दिया। आज भी उसकी बिल्ली व दो छोटे भाई, जिनका नामांकन आँगनबाड़ी में करवाया है, स्कूल में आ गये। कई बार इसे डाँटने का मन होता है क्योंकि कई बार इसके कारण पूरी कक्षा अस्त-व्यस्त हो जाती है। शुरुआत में ही उस पर स्कूल का खराब प्रभाव पड़ जाएगा, ऐसा सोचकर डाँटती नहीं हूँ।

वह खूब सारी बातें करना चाहता है, हर चीज़ को कौतूहल से देखता है, हर वक्त अपने पड़ोस के छोटे बच्चों के साथ खेलना चाहता है। डील-डौल में बड़ा व ताकतवर होने के कारण बच्चों से लड़-झगड़ भी लेता है।

आज सुबह जब मैं विद्यालय आयी तो शान्तु, मोनिका, बुद्धा, समीर, राजेश, आदि बच्चे अपनी कॉपियों से ढेर सारे पेज फाड़कर उनके हवाई जहाज़ बनाकर उड़ा रहे थे। शान्तु इसमें सबसे आगे था। ऐसा पिछले 4-5 दिनों से हो रहा है। मैं बार-बार बच्चों को कॉपी के पेज न फाड़ने को कह रही हूँ पर यहाँ तो शान्तु व अन्य बच्चों के बीच हवाई जहाज़ उड़ाने की प्रतियोगिता हो रही है, कौन कितना ऊँचा हवाई जहाज़ उड़ाता है।

मैंने बच्चों को इधर-उधर फैले हवाई जहाज़ इकट्ठा करने, बेकार कागज़ कूड़ेदान में फेंकने, सफ़ाई करने व प्रार्थना सभा शुरू करने और आगे से कॉपी न फाड़ने आदि कई निर्देश एक साथ दे डाले।

हमारी प्रार्थना सभा पूरी होते-होते दूसरी वाली भोजनमाता आ गयी। उसके साथ उसकी दो छोटी बेटियाँ भी थीं। बड़ी बेटी आँगनबाड़ी से उसके पीछे-पीछे आ गयी थी जबकि सबसे छोटी तो ज़्यादातर साथ ही आती है। इसकी चार बेटियाँ हैं। सबसे छोटी 9-10 माह की है। वो चलती नहीं है, पर घुसड़-घुसड़ कर सब ओर घूम आती है। दो-तीन दिन पहले वो एक अखरोट से खेल रही थी, थोड़ी देर बाद देखती हूँ कि उसने कहीं से एक पत्थर उठाया और उससे अखरोट तोड़ने की कोशिश कर रही है। ये बहुत मस्त बच्ची है। कुछ कबाड़ खाया हो तो दिखाने आती है और थू बोलने पर थूक देती है। चाक के टुकड़े से फ़र्श पर लाइनें खींचती है। आजकल उसने नमस्ते करना व बाय-बाय करना सीख लिया है।

८.१२.११

आज शान्तु की माँ व पिताजी विद्यालय आये। वे शान्तु का नाम लिखाने आये थे। शान्तु 12 साल का लड़का है जो पहले कभी विद्यालय नहीं गया। वैसे तो उसे छठवीं कक्षा में दाखिला लेना चाहिए था पर शान्तु के पिताजी चाहते हैं कि वो छोटी कक्षा से पढ़ाई शुरू करे। इसलिए वो शान्तु को यहाँ भेजते हैं। शान्तु पिछले 10-15 दिनों से रोज़ विद्यालय आ रहा है। ज़्यादातर तो एक-दो की कक्षा में बैठता है। इसका एक कारण यह भी है कि वहाँ उसके पड़ोसी बच्चे पढ़ते हैं। जब से शान्तु विद्यालय में आया है, विद्यालय का माहौल

बदल गया है। शान्तु के साथ बहुत अधिक सहजता, प्रेम व धैर्य से काम करने की ज़रूरत है। वो खुद को कक्षा व विद्यालय की गतिविधियों में अभी जोड़ नहीं पाता है। वह हर समय शोर व शैतानियाँ करता है जो कि उसकी उम्र से निचले स्तर की होती हैं। जैसे अपनी कॉपी फाड़कर हवाई जहाज़ या अन्य कागज़ के खिलौने बनाना, बच्चों के बस्ते छेड़ना या किसी बच्चे द्वारा उसका बस्ता छेड़ने पर शोर करना। कक्षा में अन्य बच्चों द्वारा अपने साथ लाये किसी छोटे खिलौने से खेलने लगना। अपनी बिल्ली या छोटे भाइयों को मध्यान्तर में विद्यालय में बुला लेना। बन्दरों को चिढ़ाने लगना। उनसे एक दिन गन्ना ही छीन लाया।

शान्तु की ये हरकतें किसी भी बच्चे की सहज प्रवृति हो सकती है पर कक्षा में काम करते हुए एक माहौल बनाना ज़रूरी हो जाता है जिससे बच्चे कक्षा में किये जा रहे काम को समझ पायें। ऐसे में शान्तु की ये गतिविधियाँ कक्षा में व्यवधान पैदा करती हैं।

इन सभी कारणों से हमने तय किया कि शान्तु को ज़्यादातर अपने साथ बिठाकर ही काम करवाएँगे, बाकी ज़रूरत अनुसार वह अन्य बच्चों के साथ काम या गतिविधि में शामिल होगा।

इसके पिताजी से यह पूछने पर कि इसे पहले विद्यालय क्यों नहीं भेजा, उन्होंने बताया कि हिमाचल में उन्होंने उसे स्कूल भेजा था पर विद्यालय में बड़े लड़कों द्वारा पिटाई व परेशान करने के कारण इसने दो-चार दिन में ही विद्यालय छोड़ दिया। वह फिर कभी विद्यालय नहीं गया।" आपको इसके टीचर से शिकायत करनी चाहिए थी।" "वो तो और ज़्यादा मारते थे।" शान्तु बीच में ही बोल पड़ा। ओह! फिर तो इसके साथ और ज़्यादा सावधानी व प्रेम से व्यवहार करना होगा। जिस बच्चे के पास स्कूल के शुरुआती अनुभव ही इतने बुरे हों उसकी स्कूल से बेरुखी सामान्य बात है।

शिक्षकों द्वारा बच्चों की पिटायी करना बहुत आम बात मानी जाती है बल्कि कुछ शिक्षक तो जानबूझकर कर अपना प्रभाव डालने व कक्षा को नियन्त्रित करने के लिए बच्चों को मारते हैं। अभिभावकों को भी इसमें कुछ बुरा नहीं लगता जब तक कि बच्चे को कोई गम्भीर चोट न लग जाए। वे भी कई बार अपने शिक्षकों द्वारा पड़ी मार के बारे में बताते हैं, साथ ही यह भी जोड़ते हैं कि उस मार से उन्होंने क्या सीखा। जैसे कि पहले कोई पाठ याद नहीं होते थे फिर याद हो गये आदि।

दण्ड व भय द्वारा सिखाना पुराने समय से ही प्रचलित विधि रही है पर इसकी प्रासंगिकता पर आज तक भी सवाल नहीं उठाये जाते। जबकि विभिन्न शोधों से यह बात साबित हो गयी

है कि बच्चों पर मार पिटाई के बहुत बुरे व नकारात्मक प्रभाव पड़ते हैं। बड़े होने पर बच्चा कैसा होगा ये बहुत हद तक उसके बचपन पर निर्भर होता है।

अगर मैं अपने स्कूली अनुभवों को याद करूँ तो मैंने भी खूब मार खायी है और उससे भी ज़्यादा शाब्दिक प्रताड़ना सही है। स्मृति में शाबासी देने वाले शिक्षक कम व सज़ा देने वाले ज़्यादा हैं। मुझे नहीं लगता किसी भी मार से मैंने कुछ सीखा हो। हाँ, शायद थोड़ी देर के लिए कुछ याद ज़रूर कर लिया होगा।

दरअसल हम अपने पूर्व अनुभवों से सीखते हैं। हमारे साथ हमारे माता-पिता या शिक्षकों ने जो व्यवहार किया था, वैसा ही व्यवहार हम अपने बच्चों से करते हैं। उनके उस व्यवहार का हमारे मन व सीखने पर क्या असर पड़ा, ये सोचने की जहमत हम कम ही उठाते हैं। ये बात सही है कि कई बार कक्षा में ऐसी स्थितियाँ बन जाती हैं जब शिक्षक को कुछ नहीं सूझता। सब कुछ उसके नियन्त्रण से छूटता नज़र आता है पर ऐसी स्थितियों को सँभालने का उपाय दण्ड नहीं हो सकता। मेरा अनुभव यह है कि जब भी मैंने खुद को एक शिक्षिका के रूप में कमज़ोर पाया है तभी मेरे मन में बच्चों को मारने-पीटने की बात आयी है। हालाँकि मैं इससे सदा बचने की कोशिश करती हूँ। लेकिन अपनी कमज़ोरियों से लड़ते हुए कभी-कभी बच्चों को सुना भी देती हूँ कि "मैं तुम्हें मारती नहीं हूँ इसलिए तुम ऐसे हो गये हो" मानो न मारने से मैं उन पर अहसान कर रही हूँ। मैं बच्चों को किसी भी प्रकार का दण्ड देने में विश्वास नहीं करती हूँ और मैं इसके लिए सायास प्रयास करती हूँ, पर अभी भी खुद पर बहुत काम करने की ज़रूरत है। शायद धीरे-धीरे मेरे व्यवहार में बच्चों के लिए गुस्सा आना ख़त्म ही हो जाए।

आज शान्तु दिन भर काम करता रहा और जब कक्षा एक व दो के बच्चों की छुट्टी के समय उसे घर भेजना चाहा तो भी घर नहीं गया। कक्षा- 3, 4, 5 के बच्चों की छुट्टी अभी कहाँ हुई, आप भी घर नहीं जा रहे हो कहकर घर नहीं गया और होम वर्क भी विद्यालय में कर लिया।

बच्चों का जीवन विविधता से भरा है। सभी का बचपन एक जैसा नहीं होता। मुझे लगता है कि शिक्षक को बचपन की समझ होनी चाहिए शायद तभी वह प्रत्येक बच्चे को उसके व्यक्तिगत गुणों के आधार पर समझ सकता है। वरना सभी बच्चों को एक ही तरह से दिशा निर्देशित करने की हमारी परिपाटी कई बच्चों के जीवन को नकारात्मक तरीके से प्रभावित कर सकती है।

९.१२.११

आज काम शुरू किया ही था कि एक स्वयंसेवी संस्था से एक मैडम आयीं। उनका स्वागत करके आने का कारण पूछा तो उन्होंने बताया कि एक सप्ताह तक बच्चों के साथ ‘पुस्तकालय सुरक्षा दिवस’ मनाना है, जिसके तहत बच्चों के साथ गतिविधियाँ भी करवानी है। उन्होंने बच्चों की कापियों के पेज फड़वाकर ही बच्चों को चित्र बनाने और निबन्ध लिखने को दिया व मध्यान्तर तक सारे काम झटपट निबटाकर चली गयीं। जाते-जाते हमें और बच्चों को बता गयीं कि हमें इस सप्ताह क्या-क्या करना है? कई बार लगता है कि हमारी संस्कृति में कर्मकाण्ड का बोल बाला है। बहुत से लोग बिना सोचे-समझे ही कुछ भी करने लगते हैं। ज़्यादातर स्वयंसेवी संगठनों का काम गहराई लिये नहीं है। खासतौर पर इन संगठनों में काम कर रहे साथियों की शिक्षा की समझ पर तो मुझे कभी-कभी सन्देह भी होता है। जैसे कि आज के क्रियाकलापों से मुझे लगा कि एक सप्ताह पुस्तकालय सुरक्षा दिवस के रूप में मनाने के क्या मायने हैं? उत्सवधर्मी संस्कृति में हम अपने रोज़मर्रा के जीवन की ज़रूरी चीज़ों को भी एक दिनी उत्सव में बदल रहे हैं।

रूम टू रीड के पुस्तकालय कार्यक्रम से हमारे स्कूल को बहुत अच्छी किताबें मिली हैं। जिनका हम भरपूर उपयोग करते हैं। निःसन्देह हम उनकी देखभाल भी करते हैं।

वृतान्त दो

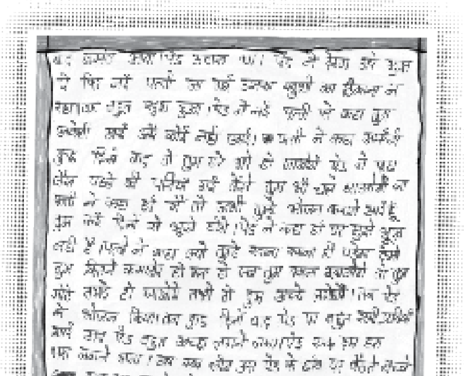

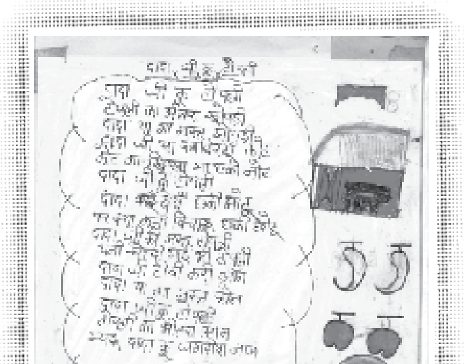

अवलोकन, खोजबीन और अभिव्यक्ति

१०.१२.११

आज गणित की कक्षा में जब बाकी बच्चे महत्तम समापवर्तक के सवाल हल कर रहे थे तब मैंने शान्तु से ढेर सारी बातचीत की। उसने बताया कि वह हिमाचल में कुछ दिन अपनी दीदी के साथ विद्यालय गया। वहाँ बहुत पिटाई होती थी तो हम दोनों ने स्कूल छोड़ दिया। उसकी दीदी का परिवार भी हिमाचल में रहता है। वह पहले दिन शान्तु व दो छोटे भाइयों के साथ स्कूल में आयी थी। दीदी 15 वर्ष की शादीशुदा किशोरी है। शान्तु ने यह भी बताया कि पापा कभी-कभार ही काम करते हैं जबकि माँ रोज़ काम करती है, ऐसा क्यों है पता नहीं। बिल्ली के बच्चे के बारे में पूछने पर उसने बताया कि हिमाचल से आते हुए उसे रास्ते में मिला तो साथ ले आया। और यह भी बताया कि बिल्ली सिर्फ़ बिस्कुट ही खाती है और उसी के पास सोती है। शान्तु को घर जाने को कहा पर वह नहीं गया, काम करने के बाद वहीं कक्षा में अन्य बच्चों को देखता रहा।

3 बजे के आसपास एक स्वयंसेवी संस्था के कार्यकर्ता विद्यालय में आये। उन्होंने बच्चों को गणित के सवाल हल करते हुए प्रसन्नता जताते हुए कहा कि वे विद्यालय में 'मीट्रिक मेला' करवाना चाहते हैं। इससे पहले उनकी संस्था द्वारा विद्यालय को गणित की कुछ टी.एल.एम. दी गयी थी, जैसे कि विभिन्न माप के मापक व तराजू आदि। उन्होंने जानना चाहा कि हमारे विद्यालय में गणित में क्या-क्या टी.एल.एम. है? मैंने उन्हें टी.एल.एम. बताया। उन्होंने न तो मेले की तैयारी के बारे में कोई बात की न सामग्री के प्रयोग या बच्चों की भागीदारी पर।

मंगलवार को मेला करेंगे कहकर विदा ली और चले गये। मैं मेले के बारे में पूछती रह गयी। मुझे सोमवार को 'गरम पानी विद्यालय' में व्यवस्था पर जाना है, तो मेले की तैयारी कैसे होगी? और मेले में क्या होगा पता नहीं।

पिछले कुछ सालों में स्वयंसेवी संस्थाओं के नाम पर विद्यालयों में विभिन्न तरह के लोगों का आना-जाना बढ़ा है। कुछेक की बात छोड़ दें तो ज़्यादातर में शिक्षा को लेकर न तो कोई अच्छी समझ दिखाई पड़ती है ना ही सीखने-सिखाने को लेकर कोई उत्सुकता दिखती है। साथ ही इनमें यह भाव भी है कि सरकारी स्कूलों में कुछ भी सीखना-सिखाना नहीं होता है। शिक्षक बच्चों को पढ़ाते नहीं हैं। कई बार जब बाहर से इनके बॉस आ रहे होते हैं तो यह शिक्षक द्वारा करवाये काम को अपने द्वारा करवाये काम के रूप में बताने में जरा भी नहीं हिचकते हैं। जबकि शिक्षक का तो काम ही बच्चों को स्कूल से सम्बन्धित तमाम गतिविधियाँ करवाना होता हैं। हो सकता है स्कूल के इनके अनुभव बहुत समृद्ध न हों। पर इनके साथ बातचीत व काम करने को लेकर मेरे स्वयं के अनुभव भी कुछ ज़्यादा अच्छे नहीं हैं। कभी-कभी इनसे सहानुभूति भी होती है। इनके जीवन के संघर्ष, कम वेतनमान, रोज़गार का न मिल पाना, सही वातावरण व दिशा-निर्देश की कमी आदि ऐसे कारण हो सकते हैं कि ये जाने-अनजाने इस तरह का व्यवहार करते हों। पर इन्हें काम सीखने से किसने रोका है? काम करने से किसने रोका है? कुछ न कुछ तो अपनी ट्रेनिंग में सीखते ही होंगे। बच्चों के साथ कुछ गतिविधियाँ करवाने का प्रयास क्यों नहीं करते? उदाहरण के तौर पर आज आये महोदय ने कभी भी गणित की कोई गतिविधि बच्चों से नहीं करवायी थी। न ही उन्होंने यह जानने में रुचि दिखायी कि हमारे स्कूल के बच्चों को गणित में क्या-क्या पता है? फिर वे मंगलवार को कैसे मेला करवाएँगे? ज़ाहिर-सी बात है स्कूल में मेला है तो बच्चों के माता पिता और इनके साथी भी स्कूल में आएँगे। ऐसे में समुदाय पर स्कूल का कैसा प्रभाव पड़ेगा, समझा जा सकता है।

१३.१२.११

किसी कारणवश आज मेला करवाने वाले सर नहीं आये। शायद अब किसी दूसरे दिन मेला हो।

आजकल गाँव में रामलीला हो रही है, तो बहुत सारे बच्चे देर से विद्यालय आ रहे हैं। बच्चे देर रात तक ठण्ड में ठिठुरते हुए रामलीला देखते हैं। रात देर से सोने के कारण सुबह देर से उठते हैं, तो स्कूल भी देर से पहुँचते हैं।

आजकल सुबह के समाचार में बच्चों की मुख्य खबर रामलीला के बारे में होती है। जिसमें यह बताया जाता है कि रामलीला में कल क्या-क्या हुआ। किस पात्र ने क्या संवाद कहे या दुकान में क्या हुआ? अंजली घर से स्वेटर ले गयी पर वहाँ पर उतार दी और उसकी स्वेटर खो गयी, आदि।

मध्यान्तर के बाद आज बच्चों ने रामलीला प्रस्तुत की। सबसे पहले मुकुट पूजा ,आरती फिर सीन। कुछ बच्चों ने सीन के बीच में होने वाले भौंडे व हल्के हास्य नाटकों को भी करने की कोशिश की। दारू पीकर नाटक करना, गालियाँ देकर हँसाना आदि। इसमें नवीन व अरविन्द सबसे आगे रहे। ये भी पता चला कि स्टेज पर कुछ बच्चे रोज़ अपना प्रोग्राम दिखाने जाते हैं, जबकि कुछ को तैयारी करने के बावजूद मौका ही नहीं दिया जाता है। जिनके पिता या अन्य रिश्तेदार रामलीला समिति में हैं वे अपने बच्चों को ही बार-बार मौका देते हैं।

जब लड़कियों ने भी लड़कों के साथ रामलीला करनी चाही तो नवीन, मिथलेश आदि ने यह कहकर उन्हें साथ नहीं लिया कि लड़कियाँ रामलीला नहीं खेलती हैं। जब लड़कों ने अपने सीन कर लिये तो मैंने लड़कियों से रामलीला करने को कहा। आरजू, सरस्वती, जयेन्द्री, मनीषा, निधि आदि लड़कियों ने संवाद अच्छी तरह से बोलते हुए व बिना किसी शोरशराबे के सीन किये। आरजू ने रावण के संवाद बेहद प्रभावी तरीके से कहे, सारे लड़के चुप हो गये। हमारा परिवेश व समाज हमें जिस तरह के अनुभव दे रहा है, वास्तव में वे बहुत बार शिक्षा के सन्दर्भों से संगति नहीं रखते, जैसे लड़के व लड़की का भेद बच्चे अपने घर व परिवेश में देखते हैं। कई बार वे अपने प्रति हो रही किसी असमानता या अपने द्वारा हो रहे किसी दुर्व्यवहार को समझ भी नहीं पाते और धीरे-धीरे वैसे व्यवहार के आदी हो जाते हैं। समाज

में व्याप्त इस असमानता को हटाने के लिए ही स्कूली शिक्षा में जेण्डर समानता पर ज़ोर दिया गया है। जिस पर कक्षा में न सिर्फ़ खुल कर बात ही होनी चाहिए बल्कि बच्चों के साथ शिक्षक का व्यवहार भी बिना किसी भेदभाव का होना चाहिए।

१७.१२.११

आज गाँव में एक नवयुवक की मृत्यु हो गयी। वह 25-26 साल का था, जिसे ब्लड कैंसर था। वो एक अच्छा पेंटर था, बहुत सुन्दर पेंटिंग करता था। कल ही उसे चण्डीगढ़ से वापस लाये थे। पिछले दो-तीन सालों से उसका इलाज़ स्वामी प्रेमानन्द जी की मदद से चल रहा था। भोजनमाता अबला ने बताया कि लगभग सात-आठ लाख रुपये खर्च हो गये थे। जिसमें से कुछ गाँव वालों ने चन्दा करके जुटाये और कुछ स्वामी जी ने दिये, फिर भी वह नहीं बच पाया। उसकी पत्नी की उम्र 19 वर्ष है। सबसे छोटी बेटी सात-आठ माह की है। घर में विधवा सास, विधवा बहू और तीन नन्ही बेटियाँ हैं। अब इस परिवार का क्या होगा? अबला ने बताया स्वामी जी कुछ मदद करेंगे।

गाँव की हालत अभी भी बहुत बुरी है, छोटी उम्र में शादी, बेरोज़गारी, शराब, साल दर साल परिवार में बच्चे पैदा होना। सरकारी योजनाओं का ठीक से क्रियान्वयन न होना, गैर सरकारी संगठनों का बीच-बीच में आकर टॉफी बाँट जाना, सब बहुत बुरा है। कैसे ये चीज़ें ठीक होंगी? कौन आकर ठीक करेगा? हमें ही तो ठीक करना होगा, पर कैसे? कई प्रश्न दिमाग में ठकठकाते हैं। खूब बेचैनी होती है, पर कोई सार्थक हल नहीं दिखता। कभी-कभार कोई योजना सफल भी होती है, पर ऐसा कम ही होता है।

परसों, जब हम 'मेरा परिचय' पर बातचीत कर रहे थे तो बच्चों से पता चला कि सिर्फ़ आरजू जिसके पिता नहीं हैं, को छोड़कर सब तीन या तीन से अधिक भाई-बहिन हैं। जिसमें कि भाई-बहिनों की अधिकतम संख्या 7 है। आज भी इतने बच्चे! कहाँ हैं हमारी परिवार नियोजन की योजनाएँ? कहाँ हैं स्वास्थ्य केन्द्र और जागरूकता फैलाने वाले कार्यक्रम। बच्चों ने इस प्रकार बताया: 5 लड़की 2 लड़के या 6 लड़की या 1 लड़का जी। यह नहीं बताया कि कितने भाई, कितनी बहन। जिन दीदियों की शादी हो गयी हैं, बच्चे उन्हें अपने परिवार में नहीं गिन रहे हैं। क्या ये सारे परिवारों की स्थिति है या सिर्फ़ हमारे विद्यालय में पढ़ने वाले बच्चों के परिवारों की ही यह स्थिति है? यह देखना होगा। सामान्यता हमारे

ग्रामीण परिवेश में आज भी परिवार नियोजन को लेकर तमाम तरह की भ्रान्तियाँ व्याप्त हैं। साथ ही लड़के-लड़की के भेद ने भी अनचाहे ही परिवार में बच्चों की संख्या में वृद्धि की है। एक परिवार में तीन-चार बेटियाँ और सबसे छोटा बेटा जैसे तथ्य इस बात के सूचक हैं कि बेटे की लालसा में कई बेटियाँ अनचाही हैं।

१९.१२.११

आज कक्षा एक में सरल वाक्यों के श्रुतलेख में सिमरन ने एक भी अशुद्ध वाक्य नहीं लिखा। अंशिका, दीक्षा व तनीषा ने भी बहुत सुन्दर वाक्य लिखे। यह देख हम दोनों शिक्षिकाओं को बहुत खुशी हुई। विद्यालय में लघु मरम्मत हेतु कुछ निर्माण सामग्री डलवायी गयी है। हमने प्रबन्धन समिति के अध्यक्ष और खच्चर वाले को बताया था कि बजरी और पत्थर कहाँ डलवानी है, क्योंकि छोटे से आँगन में धूप आँगन के एक टुकड़े पर ही आती है। फिर भी उन्होंने निर्माण सामग्री अपनी सुविधा अनुसार धूप वाली जगह पर ही डाली। फलस्वरूप हम सब ठण्ड में बिना धूप के ही बैठे रहे। दोपहर एक बजे के आसपास एबीआरसी रावत जी का फ़ोन आया। उन्होंने निर्माण कार्य सम्बन्धी जानकारियाँ चाहीं, साथ ही यह भी जानना चाहा कि हमारा विद्यालय ब्लॉक स्तरीय प्रतियोगिताओं में भाग लेने क्यों नहीं आया? आज हमारे ब्लॉक में निबन्ध ,सामान्य ज्ञान, कला आदि की प्रतियोगिताएँ थीं जिसमें संकुल स्तर पर निकले बच्चों ने भाग लिया। हमारे विद्यालय से सामान्य ज्ञान में दिव्या ने प्रथम व अम्बिका ने तृतीय स्थान प्राप्त किया था। लेकिन सूचना नहीं मिलने के कारण हम नहीं जा पाये। कल ही सीआरपी मैम विद्यालय में आयी थीं, वे बता देतीं या आज एक फ़ोन ही कर देतीं तो बच्चे भाग ले पाते। दिव्या बहुत होशियार बच्ची है, एक बार किसी बात को बता देने पर समझ जाती है। अगर वह प्रतियोगिता में जाती तो निश्चित ही कोई स्थान प्राप्त करती। ये सोचकर हम दोनों अध्यापिकाएँ निराश हुईं।

२०.१२.११

कभी-कभी माँगने से चीज़ें मिल जाती हैं। कुछ माह पहले स्कूल के बगल में मानव मिशन के स्वामी जी बिस्कुट व सेव देने आये थे। आपके विद्यालय को कुछ सामान चाहिए पूछने पर, हमने कम्प्यूटर के लिए कहा। आज उन्होंने कम्प्यूटर दे दिया। स्कूल में कम्प्यूटर क्या आया, मज़ा आ गया। इससे नयी चीज़ें सीखने में मदद मिलेगी।

आज विद्यालय में ब्लॉक शिक्षा अधिकारी एवं सहायक ब्लॉक शिक्षा अधिकारी रामप्रकाश जी आये। उन्होंने मध्याह्न भोजन सम्बन्धी जानकारियाँ लीं। रसोई, भोजन आदि का निरीक्षण किया व ब्लॉक शिक्षा अधिकारी सर ने बच्चों की कॉपियाँ देखीं और बच्चों से बातचीत की।

२४.१२.११

शीतकालीन अवकाश से पहले आज विद्यालय का अन्तिम कार्य दिवस था। कल से 5 जनवरी तक विद्यालय में शीतकालीन अवकाश रहेंगे।

कक्षा चार व पाँच के बच्चों को घर से करके लाने के लिए दो प्रश्न दिये। जिनके जवाब उन्हें अपने घर-परिवार व आसपास के लोगों से बातचीत करके लिखने हैं।

1. उनके गाँव में कौन-कौन सी सरकारी व गैर सरकारी योजनाएँ चलती हैं?
2. उनके घर व आसपास रहने वाले लोग अपने जीवन-यापन हेतु क्या-क्या काम करते हैं?

कक्षा में इन प्रश्नों पर कुछ बातचीत भी की।

गाँव में बहुत सारी सरकारी और गैर सरकारी योजनाएँ चलती हैं जिनके बारे में बच्चे अपने घर परिवार में बात करते हुए जान जाते हैं। वे अपने घर के प्रत्येक काम का सक्रिय हिस्सा होते हैं इसलिए बहुत-सी जानकारियाँ उन्हें सहज ही हो जाती हैं।

उदाहरण के लिए मनरेगा का काम ,बीज बाँटना ,खाद वितरण, शौचालय निर्माण ,अल्प बचत की कोई योजना आदि।

साथ ही श्री भुवनेश्वरी महिला आश्रम द्वारा भी किशोरियों व महिलाओं के साथ कुछ महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम समय-समय पर गाँव में आयोजित किये जाते हैं। इस तरह के कार्यक्रम आमतौर पर किसी के आँगन में या पंचायती चौक में होते हैं इसलिए बच्चे भी इन्हें देख-सुन रहे होते हैं।

मैंने बच्चों से कहा, “वे अपने माता-पिता या परिवार के अन्य सदस्यों से इस बारे में बात करें।” उनके व आसपास के लोगों के रोज़गार के बारे में जानने का प्रयास करें।

मध्यान्तर के बाद रजिस्टर ठीक किये व विद्यालय की साफ़-सफ़ाई आदि काम किये।

आज जिस गाड़ी में घर लौट रही थी उसका ड्राइवर गाड़ी तेज़ चला रहा था। जब मैंने उसे तेज़ गाड़ी चलाने से मना किया तो वह कहने लगा, “जब-जब जो होना है तब-तब सो सो होय।” क्या खूब! हम बहुत सारी ज़िम्मेदारियों को ईश्वर व भाग्य पर छोड़कर निश्चिंत हो जाते हैं। मनमानी करने की इससे अच्छी वजह और क्या हो सकती है? कोई आप पर आपके व्यवहार पर सवाल उठाये तो आप तुरन्त इसकी ज़िम्मेदारी ईश्वर पर डाल दो।

६.१.१२

आज लगभग सारे बच्चे विद्यालय आये हैं। खूब सर्दी है, बारिश हो रही है और पहाड़ियों पर बर्फ़ गिरी है। छुट्टियों में स्कूल में कुछ निर्माण कार्य हुआ है, जैसे एक कमरे की छत पर पूड़ी डालने का काम, बरामदे का फ़र्श ठीक करना, स्कूल के पीछे गट्टा डालना आदि। पूरे स्कूल में बजरी व अन्य गंदगी फैली है।

हमने मिलजुल कर सफ़ाई की और अपने बैठने व प्रार्थना करने लायक साफ़ जगह बनायी।

थोड़ी देर में प्रबन्धन समिति के अध्यक्ष धर्मवीर जी आये। उन्होंने निर्माण कार्य की प्रगति के बारे में बताया। हमने कमरा खोल कर देखा तो पता चला पूड़ी डालने के बाद भी कमरे में पानी आ रहा है, जिससे सारे चार्ट व चित्र खराब हो गये हैं।

हमने उनसे कहा कि वे इस पूड़ी को फिर से डलवाकर ठीक करें, उन्होंने हामी भरी। अन्य कार्यों को भी जल्दी-जल्दी निबटाने व विद्यालय परिसर की सफ़ाई करने का आश्वासन दिया और चले गये।

बच्चों को घर के लिए दिये काम के बारे में जानना चाहा तो पाया ज़्यादातर बच्चों ने बहुत ही लापरवाही से अपना काम किया है।

कक्षा-4 और 5 के बच्चों ने अपने माता-पिता या अन्य लोगों से बातचीत की तो है पर बहुत सतही तौर पर। छोटी कक्षाओं में कुछ बच्चों ने ही अपने काम को समझ कर किया है। ज़्यादातर ने हिन्दी में एक-दो कविताएँ या नकल उतार कर कुछ लिखने का प्रयास किया है। छोटे बच्चों को घर पर काम करने में बड़ों की मदद चाहिए होती है। गाँव के माहौल में जहाँ माता-पिता का शैक्षिक स्तर बहुत निचला है, उनसे ज़्यादा उम्मीद भी नहीं की जा सकती। छुट्टियों में बच्चों को किसी भी प्रकार का लिखित काम करना अच्छा नहीं लगता है। मुझे भी लगता है छुट्टियों में बच्चों को काम देना उनकी छुट्टियों का मज़ा खराब करना है। छुट्टियाँ तो होती ही खेलने के लिए हैं पर बच्चे इन दिनों में खूब टीवी देखते हैं। माता-पिता को भी लगता है कुछ लिखने-पढ़ने का काम होता तो बच्चे थोड़ी देर के लिए टीवी से दूर रहते। यही सोचकर मैंने छोटे बच्चों को कुछ काम घर से लिखकर लाने को दिया था।

आज हमने कक्षा में इस विषय पर चर्चा की कि ‘बच्चों ने छुट्टियों में घर में क्या-क्या किया?’

७.१.१२

आज मौसम बेहद ठण्डा था। बारिश व बर्फ़बारी के बावजूद बच्चे विद्यालय आये थे। आज भुवनेश्वरी महिला आश्रम से कुछ कार्यकर्ताओं व डुण्डा ब्लॉक के कुछ शिक्षकों को हमारे विद्यालय की लाइब्रेरी देखने व बातचीत करने आना था। सुबह लगभग 10.30 बजे ये लोग आये, हमारी लाइब्रेरी देखी। मैंने लाइब्रेरी में अपने काम करने के तरीकों के बारे में बातें साझा की। कुछ बच्चों से बातचीत करके व चाय पीकर 12 बजे के लगभग ये लोग चले गये। इनके साथ प्रधान अध्यापिका भी गयीं। उनको प्राथमिक विद्यालय भटवाड़ी जाना था।

११.१.१२

मौसम ठण्डा ही है। बारिश होने से आँगन और गन्दा लग रहा है। ठेकेदार जी से मैंने कहा कि वे जल्दी ही इस मिट्टी बजरी को बाहर फिंकवाएँ। उन्होंने कहा कि दो-चार दिन में हम फिंकवा देंगे।

बजरी के कारण कमरे बहुत गन्दे हो रहे हैं, बच्चों के चप्पल-जूतों के साथ कमरों में खूब बजरी आ रही है।

१५.१.१२

कल से उत्तरकाशी बाज़ार में प्रतिवर्ष लगने वाला माघ मेला भी शुरू हो गया है। ये मेला 23-24 तारीख तक बना रहेगा। बच्चों में मेला जाने को लेकर बड़ी उत्सुकता है।

फरवरी या मार्च में बाल शोध मेला भी होना है, इसके लिए आज मैंने एक कार्य योजना बनायी।

१६.१.१२

आज मध्यान्तर के बाद का समय कक्षा-4 और 5 के साथ बाल शोध मेले पर बातचीत के लिए रखा। इस दौरान हमने पिछले दो मेलों के अनुभवों, तैयारी व प्रक्रिया आदि पर बातचीत की। कक्षा-5 के बच्चे पिछले वर्ष एक शोध कार्य कर चुके हैं, जबकि कक्षा-4 के बच्चों के लिए यह नया अनुभव रहेगा।

बालशोध मेला खोज विधि द्वारा शिक्षण का एक तरीका है। मेला शब्द आयोजन से जुड़ा है। 'पर्यावरण अध्ययन' शिक्षण का एक बड़ा लक्ष्य बच्चों में अवलोकन करने , तथ्य एकत्रित करने, वर्गीकरण करने व प्रकृति एवं समाज में घटित हो रही घटनाओं के कारण-कार्य सम्बन्ध समझने से है। इसके अन्तर्गत हम कुछ अवधारणाएँ चुनते हैं और उस पर समूह कार्य करते हुए अपनी समझ विकसित करते हैं। शिक्षक की मदद से बच्चे अवधारणा से सम्बन्धित बहुत से सवाल बनाते हैं और सवालों पर बातचीत करते हैं। सवालों के उत्तर जानने के लिए समुदाय व अभिभावकों से बातचीत करते हैं एवं अभिभावकों से मिले उत्तरों का अन्य स्रोतों से मिलान करके सटीक उत्तर की समझ बनाते हैं।

इस प्रक्रिया में शिक्षक की मदद से पूरक सवाल बनाये जाते हैं। इन सवालों का उत्तर तलाशने के लिए बहुत से लोगों से बातचीत करने का क्रम चलता रहता है। इस प्रक्रिया में बच्चे सवाल बनाने, बड़ों से बातचीत करते हुए उनका मत जानने, जवाबों को वर्गीकृत करने

और रिपोर्ट तैयार करने जैसे कौशलों से परिचित होते हैं। इसी क्रम में किसी एक दिन विद्यालय में बच्चे अपने शोध के नतीजों को अभिभावकों एवं अन्य बच्चों के सम्मुख प्रस्तुत करते हैं। यह पूरी प्रक्रिया अध्ययन-अध्यापन का हिस्सा है। पिछले दो सालों से मैंने खोजबीन विधि को अपने शिक्षण में जगह दी है।

पिछले मेलों पर बातचीत के बाद हम विचार करने लगे कि इस वर्ष किस विषय पर शोध कार्य किया जाए? बच्चे अपने-अपने सुझाव देने लगे, पहले उन्होंने वे विषय सुझाये जिन्हें वे पिछले मेलों में देख चुके थे। जब कुछ नया करने की बात आयी तो हमने अपनी पाठ्य पुस्तकें टटोलनी शुरू कीं। बहुत ढूँढ़ने के बाद भी हमें कोई नया या चुनौतीपूर्ण विषय नहीं मिला। फिर हमने विषय-वस्तु से बाहर जाने की सोची। हमारे आस-पास की पाठ्य पुस्तक के आधार पर हमने हमारे परिवेश में होने वाले अनेक क्रियाकलापों, घटनाओं पर बातचीत की। इस प्रकार अलग-अलग विषयों पर बातचीत करते हुए हमने अपने शोध के लिए विषय चुना 'हमारे आस पास के काम धन्धे एवं अभिभावकों के रोज़गार।'

मुझे लगा ये ऐसा विषय है जिस पर बच्चे आसानी से लोगों से बातचीत कर पाएँगे। साथ ही हम अपने आसपास के कुछ कामों के बारे में भी जान रहे होंगे।

कक्षा- 4 और 5 में मिलाकर 19 बच्चे हैं। 12 बच्चे कक्षा-5 में और 7 बच्चे कक्षा- 4 में। आज हमने कक्षा में सभी बच्चों के माता-पिता द्वारा किये जाने वाले कार्यों पर चर्चा की। जो इस प्रकार थी:

क्र.	नाम	कक्षा	माता-पिता का कार्य
1.	*मिथलेश*	*5*	*खेती, पण्डिताई व राजकीय सेवा*
2.	*प्रवीन*	*5*	*खच्चर चलाना, खेती-बाड़ी*
3.	*रोहित*	*5*	*मज़दूरी और खेती*
4.	*अनिल*	*5*	*मज़दूरी और खेती*
5.	*दीपक*	*5*	*खच्चर चलाना और खेती*
6.	*सरस्वती*	*5*	*मज़दूरी और खेती*
7.	*जयेन्द्री*	*5*	*मज़दूरी और खेती*

क्र.	नाम	कक्षा	माता-पिता का कार्य
8.	*अम्बिका*	*5*	*डेयरी में काम करना और खेती*
9.	*मनीषा*	*5*	*मजदूरी*
10.	*शोभा*	*5*	*ठेकेदारी व खेती*
11.	*साधना*	*5*	*पोस्टमैन, दुकानदारी और खेती*
12.	*निधि*	*5*	*खेती, मज़दूरी, अन्य कार्य*
13.	*दीपक*	*4*	*मज़दूरी, खच्चर चलाना*
14.	*मनीष*	*4*	*मज़दूरी और खेती*
15.	*नवीन*	*4*	*पापा नहीं है, माँ छोटे-मोटे कार्य करती है खुद कभी-कभी सामाजिक कार्यों में ढोल बजाने का काम करता है।*
16.	*शिवानी*	*4*	*पण्डिताई और खेती*
17.	*अंजली*	*4*	*खच्चर चलाना और खेती*
18.	*दिव्या*	*4*	*खच्चर चलाना और खेती*
19.	*आरजू*	*4*	*पापा नहीं हैं, माँ आँगनवाड़ी में सहायिका और खेती का कार्य करती है।*

इन बच्चों में से मिथलेश, अंजली, दिव्या, साधना, और शोभा के परिवार में जीवनयापन के लिए खेती की पर्याप्त ज़मीन है, जबकि अन्य परिवारों के पास बहुत कम ज़मीन है। सभी बच्चों की माताएँ अपने घर-परिवार, खेती, जंगल आदि का कार्य देखती हैं। मनीषा की माँ नियमित मज़दूरी का कार्य करती है। अन्य माँएँ भी मनरेगा आदि में कार्य करती हैं। प्रवीन के दादा जी वैद्य यानी हकीम का कार्य भी करते हैं।

हमने यह निश्चय किया कि हम मध्यान्तर के बाद के दो पीरियड शोध कार्य के लिए रखेंगे और इस कार्य को सप्ताह में कम से कम तीन दिन तो अवश्य देंगे। प्रधान अध्यापिका और मैंने मिलकर यह भी तय किया कि गणित और अँग्रेज़ी विषय मध्यान्तर से पहले पढ़ाएँगे और शेष विषय मध्यान्तर के बाद।

चूँकि हिन्दी और पर्यावरण अध्ययन से सम्बन्धित "हमारे आसपास" की पाठ्य पुस्तकों का कार्य लगभग पूरा हो चुका है और पाठ्यचर्या के अनुसार अधिकांश अवधारणाओं पर सन्तोषजनक कार्य किया जा चुका है, तो अब हम गणित और अंग्रेज़ी पर ज़्यादा ध्यान केन्द्रित करेंगे।

१७.१.१२

आज सुबह हमने गणित पर काम किया और मध्यान्तर के बाद बाल शोध मेला के बारे में बात शुरू की। सबसे पहले हर बच्चे ने अपने माता-पिता व घर के अन्य सदस्यों के कार्यों के बारे में कल की बातचीत को ही आगे बढ़ाया। बच्चे अपने घर के अलावा दूसरे बच्चों के घरों के बारे में भी काफ़ी जानकारी रखते हैं।

जब बच्चे अपने घर के सदस्यों के कामों के बारे में विस्तार से बता चुके तो मैंने इस पर बात की कि तुम्हारे गाँव में लोग कितने तरह के काम करते होंगे? या वे कौन-कौन से काम हैं जिन्हें तुम्हारे गाँव में रहने वाले लोग करते हैं? बच्चे अपने जानने वाले लोगों के काम के बारे में बताने लगे। जब बच्चे इन सब कामों के बारे में बता रहे थे तो मैं इन्हें श्यामपट पर लिख रही थी। बाद में ये लिस्ट बाल शोध मेले वाली कॉपी पर उतार दी। आज बच्चों ने कुल 32 तरह के कामों पर ही पहचान बनायी। उम्मीद है कि अभी वे और बहुत सारे कामों के बारे में जानेंगे।

१९.१.१२

कल जिलाधिकारी महोदय की ओर से माघ मेले का अवकाश था। वैसे तो कुछ बच्चे पहले भी मेले हो आये हैं पर कुछ कल भी मेला गये थे। उनके नये हेयर बैण्ड, चूड़ियाँ और कपड़े अन्य बच्चों को आज भी मेला जाने को उकसा रहे थे। योगेश कक्षा-दो, शुभम कक्षा-तीन, प्रियंका कक्षा-3 और मिथलेश कक्षा-पाँच ने प्रार्थना-सभा में अपने मेले के अनुभव के बारे में अन्य बच्चों को बताया। साथ ही यह जानकारी भी दी कि अभी मेले का सामान बहुत महँगा है, इसलिए वे ज़्यादा सामान खरीदने 23-24 तारीख के आसपास जाएँगे। बाकी बच्चों ने भी कहा, "मैडम जी, उनके घरवालों ने कहा 'कि अभी सामान बहुत महँगा है।

दो-तीन दिन बाद जब थोड़ा सस्ता हो जाएगा तब वे उन्हें मेला ले जाएँगे' ।" मेला अभी 24-25 तारीख तक रहेगा।

कल के काम को आगे बढ़ाते हुए आज हमने कुछ और नये कामों के बारे में जाना। दोपहर बाद जब हम अन्दर काम करते हैं तो भीतर बहुत ठण्डा और अँधेरा होता है। धूप तो 1.00 बजे ही चली जाती है पर बाहर फिर भी थोड़ी गरमाहट रहती ही है। बाहर बैठने पर आँगन में फैले पत्थरों, बजरी, मिट्टी, ईंटों के कारण पर्याप्त जगह नहीं होती है। तेज़ हवा से बजरी-मिट्टी के उड़ने के कारण असुविधा होती है। यह बजरी-मिट्टी सारे विद्यालय में फैल गयी है। विद्यालय में जिस थोड़े से भाग में सुबह 10 बजे से लगभग 1 बजे तक धूप रहती है, ठीक वहीं पर लाख समझाने के बावजूद ये सामान फैलाया हुआ है। ठेकेदार महोदय का कहीं पता नहीं है। शोभा से पूछने पर उसने बताया कि पापा कल घर नहीं आये थे। मैंने बच्चों से पूछा, "क्या हम ये आँगन खुद साफ़ कर सकते हैं?" सब "हाँ जी, हाँ जी", कहकर शोर करने लगे। हमने तय किया कि अगर कल भी प्रबन्धन समिति के अध्यक्ष महोदय विद्यालय नहीं आये तो हम खुद ही अपना आँगन व्यवस्थित करेंगे। तेज़ ठण्डी हवा चलने लगी तो हम वापस अन्दर बैठे और लाइट न होने की वजह से अँधेरे में ही अपना काम करते रहे।

२१.१.१२

साथी हाथ बढ़ाना

पिछले पूरे दो दिन मैंने व कक्षा-4 और 5 के बच्चों ने विद्यालय की साफ़-सफ़ाई में ही गुज़ारे। हमने फालतू पत्थर व मलबे को विद्यालय के पीछे की गली में बिछाया। किचन व स्टोर रूम में निकली लकड़ियों को सीआरसी रूम व विद्यालय के बीच की गली में जमाया, जहाँ दो छतों के आपस में जुड़े रहने के कारण बारिश नहीं आती है। हालाँकि ज़्यादातर लकड़ियाँ सड़ी हुई हैं। बजरी को स्कूल के पीछे ईंटों का घेरा बनाकर रखा। मलबे व कूड़े को स्कूल से काफ़ी दूर फेंका। फिर कम से कम 100 बाल्टी पानी से सारा विद्यालय धोया। इसमें छोटी भोजनमाता ने भी मदद की। प्रधानाध्यापिका ने अन्य बच्चे देखे। हम थककर चूर हो गये थे। बच्चे तो फिर भी तरोताज़ा दिख रहे थे, पर मेरा हाथ दर्द से टूट रहा था। फिर भी मन में सन्तुष्टि की मुस्कान थी।

जब भी हम इस तरह का सामूहिक श्रम वाला काम करते हैं तो नवीन का नेतृत्व देखने लायक होता है। चूँकि वो घर में भी लोगों के साथ छोटे-मोटे काम दिहाड़ी मज़दूरी के तौर पर करता है तो उसके हाथ बेलचा चलाने में सही लगते हैं। गाँव में बच्चे अपने माता-पिता के साथ खेती व जंगल जाने का काम शौकिया भी करते हैं और मदद के तौर पर भी।

रोहित करना तो बहुत कुछ चाहता है, लेकिन शारीरिक रूप से कमज़ोर होने पर हड़बड़ा जाता है। शिवानी अलग से काम करना चाहती है। मिथलेश काम तो ज़्यादा नहीं करता पर सबसे अच्छी बातचीत करके समूह में कार्य बाँट देता है। फिर भी बच्चे तो बच्चों की तरह ही काम करेंगे। सो मैंने भी उनके साथ खूब काम किया। काम के बाद हम सबने बिस्कुट खाये। रोहित तो पहले ही दिन पूरा काम निबटाना चाह रहा था। उसने प्रस्ताव रखा कि मैं घर चली जाऊँ, वो सब काम कर देंगे, पर मैंने मना कर दिया।

बच्चे अपनी कक्षाएँ साफ़-सुथरी देख कर खुश थे। दिव्या बोली, “मैडम जी अब कपड़ों पर ज़्यादा धूल नहीं जमेगी।” प्रवीण ने कहा, “खाना खाते समय भात में धूल नहीं उड़ेगी।” उसकी इस बात पर हम सब हँस पड़े।

२३.१.१२

आज सुबह स्कूल बड़ा साफ़-सुथरा लग रहा था। काम करने में अच्छा लगा। धूल काफ़ी कम थी। पिछले कुछ दिनों से मैं एक बात देख रही हूँ। बच्चों के जूते जल्दी-जल्दी टूट जाते हैं, खासकर नीचे से तो उन्होंने जूते पहनने का अनोखा जुगाड़ कर रखा है। फटे जूते के अन्दर चप्पल पहनकर। मेरा मन किया कि उनसे पूछूँ क्या इससे उन्हें असुविधा नहीं होती है, पर उन्हें संकोच न हो, यह सोचकर रुक गयी।

इन दिनों मेरा पूरा ध्यान कक्षा-4 और 5 के साथ गणित पर काम करने के साथ ही बाल शोध मेले अर्थात प्रोजैक्ट कार्य **‘स्थानीय रोज़गार’** पर केन्द्रित है। चूँकि अभी तक की हुई बातचीत व चर्चा-परिचर्चा से हम अपने विषय के बारे में पर्याप्त जान-समझ चुके हैं। तो अब इस पर काम करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं। आज मैंने इस प्रोजैक्ट की पूरी प्रक्रिया तैयार की जिसमें बच्चों की भी मदद ली। हमने तय किया कि हम छोटे-छोटे समूहों में काम करेंगे। समूहों में काम करने के बाद बड़े समूह में चर्चा करेंगे और आगे का काम तय करेंगे। मैंने बच्चों के समूह बनाते हुए ध्यान रखा कि प्रत्येक समूह में कक्षा-4 और 5 दोनों के बच्चे हों

और उन बच्चों के घर आसपास हों जिससे उन्हें गाँव में जाकर काम करने में सुविधा हो। विषयवस्तु का चुनाव हम कर चुके थे और उस पर पर्याप्त चर्चा-परिचर्चा भी हो चुकी थी। बच्चे इतना तो जान ही गये थे कि वे इस बार के बाल शोध में तरह-तरह के कामों के बारे में बता रहे होंगे। मैंने बच्चों के साथ मिलकर इस प्रोजैक्ट को करने के उद्देश्य कुछ इस प्रकार निर्धारित किये:

बच्चे अपने आसपास किये जाने वाले तरह-तरह के कामों के बारे में विस्तारपूर्वक जानें।

बच्चे रोजग़ार व व्यवसाय से सम्बन्धित विभिन्न आँकड़े एकत्र करें। भौगोलिक क्षेत्र में विभिन्न काम-धन्धों की प्रकृति को समझें।

मौसम व काम-धन्धे या व्यवसाय के सम्बन्ध को समझें। विभिन्न कार्यों से जुड़े आर्थिक पक्ष को समझें।

(वास्तव में पूरा प्रयास अपने आसपास के कामों के बारे में एक आलोचनात्मक समझ विकसित करने से है।)

उनमें प्रत्येक कार्य और कार्य करने वाले व्यक्ति के प्रति आदर की भावना का विकास हो।

वे ये जाने सकें कि मास्टर सिर्फ़ किताबें पढ़ने-पढ़ाने वाला व्यक्ति नहीं होता है बल्कि अपने काम को निपुणता से कर सकने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने काम का मास्टर होता है। जैसे, खच्चर वाला जानता है कि उसे कब कैसे, कहाँ बजरी, पत्थर लेने जाना है। कौन-सी बजरी, रेत किस काम आयेगी। नदी का बहाव व बजरी पत्थर की उपलब्धता के बारे में वो सब जानता है।

वे पारम्परिक, नये, लुप्त प्रायः आदि कार्यों के बारे में जान पाएँ, उनका वर्गीकरण कर सकें। लुप्त प्रायः कार्य/रोज़गार और आधुनिक रोज़गारों के होने/खत्म होने के कारणों को जान सकें।

शिक्षा का रोज़गार से सम्बन्ध स्थापित कर पाएँ।

किसी काम के दौरान होने वाली कठिनाइयों व उनके समाधानों के बारे में जान सकें।

उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए आवश्यक था कि हम बहुत से लोगों से बातचीत करें। काम करने की जगहों पर जाकर लोगों के काम करने के तरीकों, औज़ारों के बारे में जानें।

बच्चे बातचीत को नोट करें, इसके लिए मैंने बच्चों के साथ मिलकर एक प्रश्नावली तैयार की जिसमें नीचे लिखित प्रश्न शामिल किये।

1. नाम
2. आयु
3. शिक्षा
4. आप क्या काम करते है?
5. आप यह काम कब से कर रहें है?
6. आपने यह काम किससे सीखा?
7. आपको काम करने में किस प्रकार की कठिनाइयाँ होती है?
8. आप उन्हें कैसे ठीक करते है?
9. आपकी मासिक आय कितनी है?

इस प्रश्नावली का उपयोग लोगों से बातचीत करने में करना था। इसके लिए मैंने 8 कापियाँ बनायीं। यह कॉपी एक तरफ़ चित्र बनाने के लिए सादे पेज व दूसरी तरफ़ लिखने के लिए लाइन वाली थी। बच्चों से कहा कि वे इस कॉपी के प्रत्येक लिखने वाले पेज पर ये प्रश्न लिखें। इन प्रश्नों के उत्तर हम लोगों से बातचीत करके लिखेंगे। एक पेज पर एक ही व्यक्ति का साक्षात्कार लिखें। मैंने प्रत्येक कॉपी के पहले पेज पर ये प्रश्न लिखे और बच्चों से कहा बाकी पेजों पर वे खुद प्रश्न लिखें। फिर मैंने ये सारे प्रश्न श्यामपट पर लिखे व बच्चों को पास बिठाकर दोनों भोजनमाताओं से बातचीत कर उनके उत्तर भरकर बच्चों को नमूना दिखाया। बच्चों ने भी स्कूल में काम कर रहे प्रबन्धन समिति के अध्यक्ष से बातचीत कर श्यामपट पर प्रश्नों के उत्तर लिखे।

३.२.१२

योजनानुसार प्रोजैक्ट के उद्देश्य से सुबह ही मैं व कक्षा-4 और 5 के बच्चे गाँव में गये। हम समूहों में गाँव में बिखर गये और लोगों से बातचीत की। हमने निश्चय किया था कि 1.00 बजे तक विद्यालय वापस आ जाएँगे। ताकि बच्चे समय पर दोपहर का खाना खा सकें।

वापसी पर बच्चों ने अपने अनुभव बताये जैसे: लोग जानना चाह रहे थे कि वे इन प्रश्नों को क्यों पूछ रहे हैं। कुछ लोग अपना साक्षात्कार नहीं देना चाहते थे, कुछ ने कहा पढ़ाई-लिखाई के बजाए गाँव में घूम रहे हो आदि। कुछ बच्चों ने कहा, "उनका साथी कुछ नहीं पूछ रहा था, सब मैं ही पूछ रहा था, ये कॉपी पर सही नहीं लिख रही थी वगैरह।"

मैंने इन मुद्दों पर बातचीत की व बच्चों से कहा, "कल से वे छुट्टी होने के बाद अपने समूह में और अपने घरों के आसपास लोगों का साक्षात्कार लेंगे, जिस पर हम अगली सुबह कक्षा में चर्चा-परिचर्चा करेंगे।"

४.२.१२

आज प्रत्येक समूह अपने काम के बारे में बताने को उत्सुक था, उनके कुछ सवाल भी थे।

जैसे: दिव्या- "क्या हम अपने घर के लोगों के साक्षात्कार ले सकते हैं?"

रोहित- "मेरी माँ की मासिक आय नहीं है तो क्या उसका साक्षात्कार आयेगा?"

मिथलेश- "कॉलेज जाने वाले लड़के-लड़कियों से साक्षात्कार लेना है या नहीं?"

प्रवीन- "जो अपना साक्षात्कार नहीं दे रहा है उसका क्या करें?"

मैंने बच्चों के सवालों के जवाब दिये। हमें लगभग 7-8 दिन लगातार लोगों से बातचीत करनी होगी। बच्चों को यह भी ध्यान रखना होगा कि एक व्यक्ति से बात भले ही दो समूह कर लें पर उसका साक्षात्कार एक ही समूह नोट करेगा। आज मैं, मिथिलेश और रोहित, अवतार के पिताजी के पास गये और उन्हें विद्यालय आने का न्यौता दिया ताकि सभी बच्चे उनका साक्षात्कार ले सकें। उन्होंने कहा वे ज़रूर समय निकालकर विद्यालय आएँगे।

06 फरवरी 2012 से 08 फरवरी 2012

वार्षिक परीक्षा के लिए गणित प्रश्नपत्र निर्माण कार्यशाला में भागीदारी के लिए अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के कार्यालय गयी।

६.२.१२

12.00 बजे तक सिर्फ़ मैं और अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथी ही थे । 2.00 बजे सहायक ब्लॉक शिक्षा अधिकारी आये । उन्होंने कुछ शिक्षकों को फ़ोन किये ।2.00 बजे तक 7-8 लोग ही आ पाये थे, आज कुछ काम नहीं हो पाया ।

७.२.१२

आज समूह में प्रश्न पत्र बनाये । ज़्यादातर लोग नये थे । ज़्यादातर सवाल किताब के सवालों में ही हेर-फेर कर बना लिये गये । प्रश्नों पर सुधारात्मक चर्चा-परिचर्चा भी कम ही हो पायी ।

८.२.१२

आज बाकी समूहों द्वारा बनाये प्रश्नपत्रों को देखकर कुछ सुधार करने की कोशिश की । इन प्रश्न पत्र निर्माण प्रक्रिया में कुछ मज़ा नहीं आया, कोई नया या चुनौतीपूर्ण प्रश्न भी न बन पाया । बस कामचलाऊ रही यह कार्यशाला ।

१५.२.१२

कक्षा में इन दिनों जो बातचीत हो रही है वो बहुत रोचक होने के साथ-साथ बच्चों के मन में बहुत से सवाल भी खड़े कर रही है । बच्चे इन दिनों रोज़ शाम को अपने आसपास के व्यक्तियों से बातचीत कर रहे हैं । वे जिस व्यक्ति से बात करते हैं पहले वो उनसे ढेर सारे सवाल करता है । बच्चे ये सब क्या कर रहे हैं? किसने दिया ये काम? स्कूल में पढ़ाई -लिखाई तो होती नहीं इस तरह के फालतू काम होते है, वगैरह-वगैरह । कई लोग अपनी मासिक आय नहीं बताना चाहते । लेकिन जब बच्चे अपनी नोटबुक पेंसिल लेकर उन्हें बातचीत के लिए तैयार कर लेते हैं, तो एक से बढ़कर एक किस्से निकल पड़ते हैं । महिलाएँ साक्षात्कार देने में शरमाती हैं, अपना नाम बताने में भी शरमाती हैं । कई महिलाएँ ये कहती हैं, “हमसे क्यों पूछ रहे हो? आदमी लोगों से पूछो ।” बच्चे अपनी माँ, दादी, चाची आदि को साक्षात्कार के लिए कैसे-कैसे मना रहे हैं!

गाँव में अलग-अलग आर्थिक-सामाजिक स्तर हैं। बच्चे शुरू से ही इस माहौल में पल-बढ़ रहे हैं। लेकिन इस शोध कार्य के दौरान उन्हें गम्भीरता से चीज़ों व स्थितियों का अवलोकन करने का अवसर मिला है। उन्हें अपनी बात को साझा करने के लिए माहौल और साथी मिले हैं, जिनसे बहुत-सी बातें बच्चे कर रहे हैं। चूँकि बच्चे अपने घर में बहुत से कार्यों में हाथ बँटाते हैं, तो अलग-अलग कामों को करने का उनके पास व्यवहारिक अनुभव भी है। पूरी बातचीत में नवीन की ओर से बिल्कुल अलग व सटीक तथ्य निकल रहे हैं। सोचती हूँ, क्या व्यवहारिक ज्ञान अभावों में बढ़ जाता है?

कक्षा में चर्चा से सामने आये कुछ बिन्दु:

माँएँ और सभी महिलाएँ दिन भर घर के बहुत सारे काम करती हैं। खेतों में, जंगल में, पशुओं की देखभाल में बहुत मेहनत से काम करती हैं। लेकिन उनकी कोई मासिक आय नहीं है या आय बहुत कम है। वे अपनी मरज़ी से रुपया भी खर्च नहीं कर सकतीं।

काम दो तरह के होते है, रोज़ करने वाले काम जो बहुत ज़रूरी हैं और कभी-कभी करने वाले काम।

कुछ कामों को करना सरल होता है कुछ को करना कठिन होता है। जब तक हम किसी काम को खुद करके नहीं देखते है वो हमें सरल काम लगता है।

कुछ काम हम अपने शरीर से, हाथ-पैरों से करते हैं। जबकि कुछ कामों को करने में दिमाग ज़्यादा लगाना पड़ता है।

शारीरिक कामों वाले रोज़गार में कम रुपये मिलते हैं। जबकि ये काम हमारे जीवन के लिए बहुत ज़रूरी होते हैं। इनके बिना हमारा जीवन कठिन हो जाता है।

जो लोग दूसरों का जीवन सरल बनाते हैं उनका खुद का जीवन बहुत कठिन होता है।

ये कौन तय करता है कि किस काम को करने के कितने रुपये देने हैं? ये किन-किन चीज़ों से तय होता है? ताकत से ,समय से, उस काम में लगने वाले रुपयों से या किसी और चीज़ से?

क्या ऐसा नहीं हो सकता कि सबको काम करने के बराबर रुपये मिलें?

हर काम को करने का एक सही तरीका होता है उस काम को हमें सीखना पड़ता है। बिना सीखे किया गया काम अच्छी तरह से नहीं हो सकता है।

जो काम ज़्यादा पढ़-लिख कर मिलता है उसमें ज़्यादा मासिक आय होती है ऐसे कामों को करने के लिए ऑफिस जाना पड़ता है।

अगर हमें अपना काम अच्छी तरह से करना आता है तो हम ज़्यादा रुपए कमा सकते हैं।

जिनका परिवार अच्छा होता है उन्हें भी अच्छा काम मिलता है। बच्चों की नज़र में अच्छे परिवार से आशय है अच्छी आर्थिक, सामाजिक, स्थिति वाले परिवार।

बच्चों ने कहा, "काम तो सभी अच्छे होते हैं, हमारे लिए ज़रूरी भी होते हैं, पर कुछ लोग कुछ कामों को छोटा समझते है कुछ को बड़ा।" गरीब आदमी के काम की कदर कम होती है और उसको करने वाले आदमी को इज़्ज़त भी नहीं मिलती है। लोग उसे भला-बुरा कहते हैं, उसका मज़ाक बनाते हैं।

पढ़ाई-लिखाई करने से हमें अपने काम में मदद मिलती है। हमें कोई ठग नहीं सकता। हम अपने काम की जानकारी ले सकते हैं, पूछताछ कर सकते हैं।

मिथलेश ने कहा, "हमें पता ही नहीं था पालक या टमाटर की इतनी किस्में होती हैं। हम सोचते थे कुछ भी बो दो पालक के ही बीज तो हैं। लेकिन अब पता चला अगर हम सही बीज बोएँगे तो हमें ज़्यादा पालक मिलेगी।" प्रवीन ने जोड़ा, "अगर हम सही तरह सब्ज़ी बेचने जाएँगे तो ज़्यादा रुपये मिलेंगे।"

'सही तरह से' के बारे में पूछने पर वो बोला, "गाँव में सुबह-सुबह बाज़ार से सब्ज़ी लेने वाले लोग आते हैं जो गाँव वालों से बहुत सस्ती सब्ज़ी खरीदते हैं। एक दिन जब मैं अपने दादा जी के साथ बाज़ार गया था तो वहाँ भैरव चौक पर वही आदमी सब्ज़ी बेच रहा था, जिसने सुबह गाँव से सब्ज़ी खरीदी थी। जब मेरे दादा जी ने उससे सब्ज़ी का भाव पूछा तो उसने भिण्डी 40 रुपया किलो बतायी। हम वहाँ थोड़ी देर तक खड़े रहे, उसे देखते रहे। वो लोगों को बहुत ज़्यादा महँगी सब्ज़ी बेच रहा था। मेरे दादा जी ने कहा, 'इससे अच्छा तो हम अपनी सब्ज़ियाँ खुद बाज़ार लाकर बेचें'।"

बच्चों द्वारा लिये कुछ साक्षात्कार के प्रमुख बिंदु अगले पृष्ठ पर तालिका में दिये गये हैं :

साक्षात्कार-एक

नाम	*श्रीमती भिमादेई*
उम्र	*59 वर्ष*
शिक्षा	*नहीं*
कार्य	*घरेलू कार्य, गृहिणी*
वे ये कार्य कब से करते हैं ?	*शादी के बाद से*
साल में कितने दिन कार्य करते हैं ?	*पूरे साल, हर दिन*
मासिक आय	*कुछ नहीं*
कार्य किससे सीखा ?	*अपनी माँ से*
काम करने का तरीका?	*सुबह जल्दी उठना, घर की सफाई करना खाना बनाना, बर्तन धोना, कपड़े धोना, घर की देखभाल करना, नातियों की देखभाल करना, खेती के काम देखना, जंगल जाना, घास लकड़ी लाना आदि।*
काम करते हुए क्या-क्या परेशानियाँ होती है?	*काम करते हुए थकान लगती है, तबीयत ठीक नहीं रहती है जब नाती रोते है तब उन्हें खिलाना पड़ता है, चुप कराना पड़ता है। घर में किसी बात से कोई नाराज न हो, घर में सब ठीक ठाक रहें, ये देखना पड़ता है*
परेशानियाँ कैसे ठीक करते हैं ?	*काम में अन्य लोगों से मदद माँगते है। छोटे नातियों को दूध पिलाते है, उन्हें घुमाते हैं।*

साक्षात्कार –दो

नाम	श्री अवतार पंवार
उम्र	32 वर्ष
शिक्षा	कक्षा 8 तक
कार्य	आश्रम में एम्बुलेंस चलाना
वे ये कार्य कब से करते हैं ?	12 साल से
साल में कितने दिन कार्य करते हैं ?	साल भर
मासिक आय	3000 रुपये
कार्य किससे सीखा ?	अपने दोस्त से
काम करने का तरीका?	गाड़ी साफ करना, गाड़ी धोना, मरीजों को गाड़ी में बैठाना, मरीजों को लाने छोड़ने जाना, उन्हें अस्पताल ले जाना, घर लाना आदि ।
काम करते हुए क्या-क्या परेशानियाँ होती है?	कभी-कभी दूसरी गाड़ी भी चलानी पड़ती है । देर तक गाड़ी चलाने से कमर थक जाती है । रात-बिरात इधर-उधर जाना पड़ता है । कभी रास्ते में गाड़ी खराब हो जाती है, बरसात में रास्ता खराब रहता है । कभी गाड़ी में पेट्रोल नहीं होता तब परेशानी होती है ।
परेशानियाँ कैसे ठीक करते हैं ?	थोड़ा आराम करते है । दूसरे ड्राइवरों से मदद माँगते है । बाजार से पेट्रोल लाते है तब परेशानियाँ ठीक होती है ।

साक्षात्कार-तीन

नाम	*श्री दिनेश लाल*
उम्र	*39 वर्ष*
शिक्षा	*कक्षा 5 तक*
कार्य	*ध्याड़ी मजदूरी*
वे ये कार्य कब से करते हैं ?	*19-20 साल से*
साल में कितने दिन कार्य करते हैं ?	*7-8 महीने*
मासिक आय	*3000 से 4000 रुपये*
कार्य किससे सीखा ?	*प्रेमलाल से*
काम करने का तरीका?	*सुबह उठकर, नहा-धोकर भोजन आदि करके 8 बजे काम के लिए निकल जाना । शाम को या रात में घर आना, काम में पत्थर तोड़ना, मसाला बनाना, ईंट देना, मिस्त्री जो काम बताए वो करना। बजरी-सीमेंट एक स्थान से दूसरे स्थान पहुँचाना आदि । जिसके घर काम करने गए है वह जो काम बताए उसे करना ।*
काम करते हुए क्या-क्या परेशानियाँ होती है?	*भारी पत्थर उठाना पड़ता है, देर तक काम करना पड़ता है । कभी-कभी चोट लग जाती है । ठण्ड में या तेज धूप में काम करना पड़ता है । मालिक की डाँट खानी पड़ती है । काम ढूँढ़ना पड़ता है । कभी-कभी बहुत दिनों तक काम नहीं मिलता है तब परेशानी होती है । मालिक समय पर रुपया नहीं देता ,कम रुपया देता है तब परेशानी होती है । सीमेंट से हाथ -पैर फट जाते हैं ।*

नाम	श्री दिनेश लाल
परेशानियाँ कैसे ठीक करते हैं ?	भारी पत्थर को तोड़ देते हैं। डॉक्टर के पास दिखाते हैं या घरेलू उपचार करते हैं। अपने दोस्तों से काम की बात करते हैं। जब रुपए मिल जाते है तो परेशानी ठीक हो जाती है। घर आकर हाथ-पैर धोकर तेल आदि लगाते हैं।

साक्षात्कार-चार

नाम	श्री रमेश चौहान
उम्र	50 वर्ष
शिक्षा	कक्षा 4
कार्य	वन विभाग में
वे ये कार्य कब से करते हैं ?	25 साल से
साल में कितने दिन कार्य करते हैं ?	रोज़ाना
मासिक आय	रु. 4000
कार्य किससे सीखा ?	वन विभाग से ट्रेनिंग लेकर जंगल में जाते हैं।
काम करने का तरीका?	जहाँ पौधे लगाने होते है उस जगह को साफ सुथरा करते है। नर्सरी से पौधे ले जाकर उन्हें वहाँ लगाते है उनमें पानी देते हैं। उनकी देखभाल करते हैं।
काम करते हुए क्या-क्या परेशानियाँ होती है?	पौधों को पानी देने में परेशानी होती है। कभी इन पौधों को जानवर खराब कर देते है, कभी लोग पौधों को उखाड़ कर अपने घर ले जाते हैं या नुकसान करते है। जब जंगल में आग लगती है तो आग बुझाने में बहुत कठिनाई होती है।

नाम	***श्री रमेश चौहान***
परेशानियाँ कैसे ठीक करते हैं ?	***नहर से ले जाकर पौधों को पानी देते हैं। नए पौधे लगाते हैं। पौधों के चारों तरफ बाड़ लगाते हैं। आग बुझाने की कोशिश करते हैं। लोगों को समझाकर उनसे बात करके उन्हें समझाते हैं कि पौधों को नुकसान नहीं पहुँचाना चाहिए।***

२४.२.१२

आज हमने तय किया कि आज तक लिये साक्षात्कारों पर ही अपना काम आगे बढ़ाएँगे। अब तक बच्चे कुल 288 लोगों के साक्षात्कार ले चुके हैं। आज हमने इन सब साक्षात्कारों को देखा-पढ़ा व इन पर चर्चा की। बातचीत के बाद तय किया कि किन रोज़गारों, व्यवसायों पर विस्तृत जानकारियाँ लेंगे। जैसे दूध व्यवसाय, घास बेचना, लकड़ी बेचने का व्यवसाय, खच्चर पर सामान ले जाना, खेती, दुकानदारी, ड्राइवरी, सब्ज़ी बेचना, घराट के कार्य, वैद्य का कार्य आदि। मैंने फिर बच्चों की रुचि के अनुसार समूह बनाये और उन्हें व्यवसाय और रोज़गार विशेष के बारे में विस्तृत जानकारियाँ इकट्ठी करने को कहा।

हमें जिन रोज़गारों के बारे में विस्तृत जानकारी एकत्रित करनी थी उन्हें सूचीबद्ध किया। इन कार्यों के बारे में विस्तृत जानकारी देने के लिए कौन-कौन सन्दर्भ व्यक्ति हो सकते हैं उन्हें भी चिह्नित किया।

बच्चों की बातचीत से यह बात निकलकर आयी कि कुछ काम तो ऐसे हैं जिनके बारे में कोई भी बता देगा, जैसे खेती के कार्य, घास-लकड़ी लाना, दूध बेचना आदि। लेकिन कुछ काम ऐसे हैं जिन्हें वो ही व्यक्ति बता सकता है जो उसे कर रहा है जैसे ड्राइवर का काम, खच्चर वाले का काम, नौकरी करना आदि। तो हमने यह तय किया कि जिन कामों के बारे में प्रत्येक बच्चा अपने घर परिवार से जानकारी ले सकता है उसे प्रत्येक बच्चा जानेगा। बाद में सभी बच्चों द्वारा ली गयी जानकारियों के आधार पर सभी इन कामों का विश्लेषण करेंगे। बाकी कामों के बारे में बच्चे समूह में जानकारियाँ एकत्र करेंगे।

व्यक्तिगत तौर पर सभी बच्चे नीचे अंकित व्यवसायों के बारे में जानकारी एकत्र करेंगे:

* खेती के कार्य

* पशु पालन (खच्चर, गाय, बैल, भैंस, बकरी आदि)
* घास-लकड़ी लाना
* सब्जी उगाना (अपने परिवार लायक)
* समूह में नीचे अंकित व्यवसायों के विषय में जानेंगे:
* खच्चर चलाना
* ड्राइवर का कार्य
* सरकारी नौकरी
* घराट पन-चक्की का कार्य
* सब्ज़ी उगाने व बेचने का कार्य
* वैद्य का कार्य
* दुकानदारी
* राज मिस्त्री व मज़दूरी कार्य
* पोस्टमेन
* सरकारी राशन की दुकान
* बढ़ई का कार्य
* लीसा निकालने का काम

हमने इस बारे में भी बातचीत की कि क्या कुछ व्यक्ति ऐसे हो सकते हैं जो हमारे स्कूल आकर सभी बच्चों को अपने कामों के बारे में जानकारियाँ दें।

मैंने बच्चों से कहा कि जब वे सन्दर्भ व्यक्तियों से उनके कामों के बारे में जानकारी लें तो उनसे स्कूल आने के बारे में भी बात करें। ज़रूरत पड़ने पर मैं भी बात कर सकती हूँ।

हमने कुछ बिन्दुओं पर बात की जिन पर हमें आगे कार्य करना है। जैसे:

* रोजगार का नाम - उदाहरण: खच्चर चलाना
* सन्दर्भ व्यक्ति -जो खच्चर चलाता है
* आवश्यक संसाधन, वस्तुएँ - इस काम को करने के लिए क्या-क्या चीज़ें चाहिए होती हैं
* उनकी उपयोगिता जानना

* कार्य की प्रक्रिया - काम को करने के क्या-क्या तरीके हैं?
* ध्यान देने योग्य बातें - काम के दौरान किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?
* मासिक आय - खच्चर चलाने वाले की मासिक आय
* अन्य जानकारियाँ - कोई विशेष बात

उपरोक्त बिन्दुओं के आधार पर हमें विस्तार से समूह में जानना है।

२७.२.१२

आज विद्यालय में अतिरिक्त ज़िला अधिकारी महोदय आये और साढ़े दस बजे तक यहाँ रहे। बच्चे अपने पठन-पाठन की प्रक्रिया शुरू कर रहे थे। मैं बच्चों के प्रोजेक्ट कार्य देख रही थी। दीदी छोटे बच्चों के साथ थीं। उन्होंने सारे रजिस्टर देखे। भोजनमाताओं से बातचीत की। आज 51 में से 48 बच्चे उपस्थित थे। कक्षा-4 और 5 के कुछ बच्चे बाहर बैंच निकालकर अपने शोध कार्य ठीक कर रहे थे। कुछ गाँव में घराट व चक्की पर होने वाले कार्यों का अवलोकन करने गये थे।

जब अतिरिक्त ज़िला अधिकारी जाने लगे तो उनके साथ आये संकुल समन्वयक ने उन्हें बताया कि ये स्कूल अकादमिक स्तर पर भी एक बेहतरीन स्कूल है। अतिरिक्त जिला अधिकारी रुके उन्होंने कक्षा 4-5 के बच्चों से पूछा, "20 तक पहाड़े कितने बच्चों को आते हैं?" अधिकांश बच्चों को आते थे परन्तु मुश्किल से 3-4 बच्चों ने हाथ उठाये। ज़्यादातर बच्चों को 17-18 तक पहाड़े याद थे। उन्होंने अनिल से 17 का और दिव्या से 19 का पहाड़ा सुना। उन्होंने मुझसे पूछा, "आप इन्हें गणित पढ़ाती हैं?" हाँ, कहने पर बोले, "इनको 20 तक पहाड़े याद नहीं हैं, देखिए मैडम आमतौर पर माना जाता है कि जिन विद्यालय में अध्यापिकाएँ होती हैं, वहाँ के बच्चे गणित में कमज़ोर होते हैं।"

मैंने कहा, "ऐसा नहीं है सर, आप चाहें तो इनसे सवाल हल करवा सकते हैं और पहाड़े भी तो गुणा ही हैं यदि बच्चों को गुणा की अवधारणा स्पष्ट है तो वे पहाड़े खुद ही बना लेंगे।"

उन्हें मेरा तर्क पसन्द नहीं आया। वे और कोई प्रश्न किये बिना चले गये।

संयोग से पहाड़ों के धुरन्धर गाँव में गये थे। बाद में दिव्या बोली, "मैडम जी, मुझे 25 तक पहाड़े याद हैं।" "तुमने उस समय क्यों नहीं बताया?" दिव्या चुप रही।

कोई भी अधिकारी विद्यालय में आकर ये नहीं पूछता आप लोग आजकल क्या कर रहे हैं। आपके विद्यालय की विशेषता क्या है? बच्चे इन दिनों क्या सीख रहे हैं? कोई परेशानी या किसी चीज़ की ज़रूरत है क्या? न ही वे थोड़ी देर बच्चों से बातचीत कर उन्हें सहज बातचीत के लिए प्रोत्साहित कर पाते हैं। सिर्फ़ पहाड़े कब तक विद्यालय का मूल्यांकन करते रहेंगे?

४.३.१२

हमने अपना प्रोजैक्ट कार्य 'बाल शोध मेला' की तैयारी पूरी कर ली है। अब बाकी बचे दिन मैं बच्चों के साथ गणित की कुछ और अवधारणाओं पर काम कर पाऊँगी। आजकल मैं कक्षा-4 और 5 के साथ प्रतिशत और कोष्ठक पर काम कर रही हूँ।

शोध से सम्बन्धित कुछ रोज़गार जिनके बारे में बच्चों ने विस्तृत जानकारी ली है, इस प्रकार हैं-

1. **रोजगार का नाम: खच्चर पर रोड़ी, बजरी आदि सामान ढोने काम करना।**

 1.1 **आवश्यक संसाधन:**

  1.1.1 खच्चर - वह पशु जिस पर बोझा ढोते हैं।

  1.1.2 खच्चर वाला - वह व्यक्ति जो खच्चर पर सामान ढोता व खच्चर हाँकता है।

 1.2 **आवश्यक वस्तुएँ:**

  1.2.1 खुरची - खच्चर की पीठ पर रखने वाला थैला जिसमें सामान भरते हैं। इसके दोनों खानों में बराबर वजन का सामान रखना पड़ता है। वरना ये गिर जाएगा।

  1.2.2 स्वण्डा - इसके अन्दर घास भरी होती है इसका काम सामान डालते समय खच्चर को चोट से बचाना होता है।

  1.2.3 प्लान - ये खुरची के नीचे खच्चर की पीठ पर कसा होता है।

  1.2.4 कम्बल - प्लान के नीचे 1 या 2 कम्बल बिछाते हैं जिससे खच्चर के बाल ना झड़ें।

1.2.5 नाल - खच्चर के तलुओं पर लोहे की पट्टी जैसी चीज़ लगाते हैं, जिससे खच्चर के पैर में काँटा आदि ना चुभे और खच्चर को चलने में परेशानी न हो। खच्चर की चप्पलें।

1.2.6 खच्चर का भोजन - चना, चारा, घास, भूसा, चिलौऊ, पानी आदि।

1.3 **प्रक्रिया:** खच्चर के ऊपर सामान भरकर एक जगह से दूसरी जगह पहुँचाते हैं

1.4. **ध्यान देने योग्य बातें:**

1.4.1 नदी के किनारे से बजरी, पत्थर लाते समय नदी के बहाव व तेजी का ध्यान रखना चाहिए।

1.4.2 खच्चर पर ज़्यादा सामान नहीं लादना चाहिए।

1.4.3 खच्चर व खच्चर वाले के खाने-पीने व आराम का ध्यान रखना चाहिए।

1.4.4 खच्चर की नाल खुरी गिर जाने पर जल्दी ही दूसरी लगानी चाहिए।

1.4.5 खच्चर की पीठ का सामान जिस पर रखकर सामान ढोना है समय - समय पर बदल देना चाहिए।

1.4.6 यह ध्यान देना चाहिए कि खच्चर उजाड़ यानी किसी की फसल खाने ना जाए। वह बिट्टे , डंगार अर्थात ऐसी ऊँची पहाड़ी जहाँ से गिरने का भय हो, न जाए।

1.4.7 खच्चर को मारना-पीटना नहीं चाहिए।

1.4.8 खच्चर चलाते हुए सावधानीपूर्वक चलना चाहिए कहीं खच्चर लात ना मार दे।

1.4.9 काम हो जाने के बाद खच्चर इधर-उधर खुले नहीं छोड़ने चाहिए।

1.4.10 खच्चर पर लदे सामान का सही हिसाब रखना चाहिए।

1.5 **खच्चर वाले की औसत मासिक आय:** रु. 2000 से रु.10000।

1.6 **खच्चर की औसत कीमत:** रु. 50000 से रु. 60000 तक।

सन्दर्भदाताओं के नाम: श्री धर्मवीर, काशी लाल, राम लाल, धर्मेन्द्र, सुरेश लाल, सन्तरी लाल आदि।

2. रोज़गार का नाम: सब्जी व्यवसाय

2.1 **आवश्यक संसाधन -** उपजाऊ ज़मीन, सिंचाई के लिए पानी, गोबर, खाद, हल, बैल, कुदाल, फावड़ा, कंधा (कबाड़ छानने वाला) बीज, पौधे, बिजूका, चौकीदार, बाड़, वाण (पौधे या बेल को सहारा देने वाली डण्डियाँ), खेत में काम करने वाले लोग।

2.2 **प्रक्रिया:** खेत को हल लगाकर जोतना, मिट्टी भुरभुरी करना, मिट्टी में नमी होनी चाहिए। गोबर की खाद डालनी, दुबारा जुताई करके बीज का बिखराव करना। 10-15 दिन बाद पानी डालना, तब तक बीज अंकुरित हो जाएँगे। 2 हफ़्ते बाद हल्की गुड़ाई करना। कुछ दिनों बाद नन्हे पौधों को सूखने से बचाना। 2 हफ्ते बाद घास-पतवार हटाना। हल्की गोबर की खाद डालना। अगर पौधों पर कीड़े लगे हो तो कीटनाशक का छिड़काव करना। फूल आने पर ज़्यादा सिंचाई करना। फल लगने पर यदि कोई सूखा पौधा हो तो उसे तुरन्त निकाल देना। पेड़ की कोई टहनी या पेड़ हल्का सूख गया हो तो उसकी जड़ में कीट नाशक डालना। घने पौधे हटा देना, सब्ज़ी तैयार होने पर सावधानी पूर्वक निकालकर सब्ज़ी विक्रेता को बेचना।

2.3 **ध्यान देने योग्य बातें:**

2.3.1 सब्जी के बीज या पौधे हमेशा उद्यान विभाग, कृषि विभाग, रजिस्ट्रेशन वाले सब्ज़ी बीज भण्डार से लेने चाहिए या स्वयं तैयार करें।

2.3.2 स्वस्थ बीजों का चुनाव करना चाहिए।

2.3.3 क्यारियों की समय-समय पर निराई-गुड़ाई-सिंचाई करनी चाहिए।

2.3.4 जब फल लगने लगें तो बन्दरों और उजाड़ जाने वाले पशुओं का ध्यान रखना चाहिए।

2.3.5 सब्ज़ी तैयार होने पर नियमित निकालकर बाज़ार पहुँचानी चाहिए।

2.3.6 सब्जी की कुछ किस्में-

- पालक - पालक बड़ी, पालक छोटी, पालक काँटेदार, पालक देशी, पालक तराई वाली
- राई - राई छोटा पत्ता, राई हाथी कान, राई चारी, राई गोल पत्ता, राई सरसों, राई मोटा पत्ता
- मूली - मूली लम्बी, मूली चारी, मूली मीठी, मूली गोल, मूली शलजम।
- मटर सब्जी वाला, मटर पीतला, मटर बड़ा
- गोभी गोल, गोभी पत्ता, गोभी साबुत, फूल गोभी, गोभी देशी, गोभी धनिया छाप,
- प्याज देशी, प्याज तराई, प्याज साबुत।
- कद्दू गोल, कद्दू बड़ा, कद्दू सफ़ेद, कद्दू लम्बा, कद्दू दानेदार, कद्दू मीठा
- लौकी बड़ी, लौकी छोटी, लौकी बारीक, लौकी सफ़ेद, लौकी कलर वाली, लौकी देशी
- ककड़ी , टमाटर, भट्टा (बैंगन), मिर्च, खीरा, तिंडा, चचेड़ा, आलू, चना आदि
- बच्चों ने टमाटर की 20 किस्में ढूँढ़ निकालीं।

2.4 **सब्जी व्यवसाय शुरू करने की लागत:** रु. 2000

2.5 **सब्जी वाले की छमाही आय:** रु. 8000

2.6 **मासिक आय:** रु. 2000 लगभग

आमतौर पर सब्जी व्यवसाय में लागत का लगभग चार गुना धन प्राप्त होता है।

सन्दर्भ व्यक्ति : श्री शूरवीर पोखरियाल, श्रीमती मीना , श्रीमती नन्दा

बच्चों ने मिलकर कुल 288 लोगों से बातचीत कर प्रश्नावली भरी थी। उन्होंने 51 तरह के रोज़गारों के बारे में जाना। अलग-अलग लोगों से उनके काम के अनुभव सुने।

इन अनुभवों का सामान्यीकरण करके मुख्य बातें नोट कीं, जो आगे के पृष्ठ दी गयी हैं:

क्र.	रोजगार का नाम	अनुमानित मासिक आय	काम करने वालों की संख्या
1	*ध्याड़ी- मजदूरी*	*रु. 2000-6000*	*30*
2	*फौजी*	*रु.20000-25000*	*05*
3	*खच्चर चलाना*	*रु.2000-5000*	*10*
4	*कृषि*	*रु.500-5000*	*32*
5	*अध्यापक*	*रु.2000-35000*	*12*
6	*बिजली का काम*	*रु.5000-8000*	*3*
7	*दुकानदारी*	*रु.3000-15000*	*7*
8	*गृहिणी*	*रु.00*	
9	*दूध व्यवसाय (गाय-भैंस पालना)*	*रु.2000-5000*	*6*
10	*भोजन माता*	*रु.1500*	*4*
11	*दर्जी*	*रु.1000 -3000*	*2*
12	*लुहार*	*रु.300-500*	*1*
13	*बढ़ई*	*रु.1000-4000*	*6*
14	*जंगल के काम (वन विभाग)*	*रु.1000-4000*	*3*
15	*पगीड़ा बनाना*	*रु.200-500*	*2*
16	*ठेकेदारी*	*रु.500-2000*	*5*
17	*घास बेचना*	*रु.500-1000*	*5*
18	*सरकारी सेवा*	*रु.1500-2500*	*15*
19	*लकड़ी बेचना*	*रु.400-800*	*6*
20	*बीआरओ में काम*	*रु.5000*	*1*
21	*डाक्टर*	*रु.10000-30000*	*1*
22	*होटल में काम करना*	*रु.-4000*	*5*
23	*ड्राइवर*	*रु.3000-5000*	*5*

क्र.	रोजगार का नाम	अनुमानित मासिक आय	काम करने वालों की संख्या
24	*राज मिस्त्री*	*रु .2000 -5000*	*10*
25	*फोटोग्राफी/ विडियोग्राफी*	*रु.1000-5000*	*2*
26	*आशा कार्यकर्ती*	*रु.5000*	*2*
27	*सब्जी बेचना*	*रु.1000-3000*	*15*
28	*आँगनवाड़ी सहायिका*	*रु.2000*	*2*
29	*आँगनवाड़ी शिक्षिका*	*रु.5000*	*2*
30	*रिटायर्ड सरकारी सेवक*	*रु.5000*	*7*
31	*स्वेटर बुनना*	*रु.400-800*	*6*
32	*पंडिताई का कार्य*	*रु.2000-10000*	*5*
33	*घराट चलाना*	*रु.1000-3000*	*7*
34	*चौकीदार*	*रु.4000*	*6*
35	*ग्राम प्रधान*	*रु.500*	*1*
36	*डाकिया*	*रु.8000*	*1*
37	*पेंटर*	*रु.1000-3000*	*5*
38	*चिराई, चिरान्ती (लकड़ी /पेड़)*	*रु.1000-2000*	*4*
39	*दवाई बेचने वाला, एम.आर*	*रु.8000-12000*	*1*
40	*पंच कर्म मसाज*	*रु.4000*	*1*
41	*पुलिस*	*रु.1500*	*1*
42	*वैद्य*	*रु.300-500*	*2*
43	*प्रेरक (लोक शिक्षा)*	*रु.2000*	*2*
44	*ब्यूटी पार्लर*	*रु.500-1000*	*1*
45	*गाड़ी धुलना*	*रु.800*	*1*

क्र.	रोजगार का नाम	अनुमानित मासिक आय	काम करने वालों की संख्या
46	*आश्रम में काम करना*	*रु.2000-3000*	*17*
47	*मैनेजर*	*रु.10000*	*1*
48	*बाजगी (ढोल बजाना)*	*रु.200-500*	*4*
49	*रिगांल की चीजें बनाना*	*रु.300-800*	*5*
50	*ऊन व्यवसायी*	*रु.2000-10000*	*6*
51	*हलया (हल लगाने वाला)*	*रु.500-800*	*15*

आज हमने अपने प्रोजैक्ट के लिए पुआल, लकड़ी, बोरी व कपड़े आदि से एक खच्चर व एक भेड़ तैयार की। इसमें अवतार के पापा व प्रधान अध्यापिका दीदी की भी मदद ली। इन दिनों मैं अपने विद्यालय के प्रोजैक्ट वर्क में बच्चों के संग बेहद व्यस्त रही। अतः प्रधानाध्यापिका ने कक्षा एक, दो व तीन के बच्चों के साथ काम किया।

हमारे इस शोध कार्य में सभी अभिभावकों ने सहयोग दिया।

हमारे अनुरोध पर श्री शूरवीर पोखरियाल, श्री छोटे लाल, श्री बलवीर और ग्राम प्रधान श्री बिहारी लाल स्कूल में आये व अपने-अपने कार्यों के बारे में बच्चों को बताया।

खासतौर पर श्री पोखरियाल जी ने तीन दिन विद्यालय आकर सब्ज़ी व्यवसाय व गाय पालन पर बच्चों को विस्तृत जानकारियाँ दीं। वे इस सम्बन्ध में दो-तीन ट्रेनिंग भी ले चुके हैं। इसके लिए वे शिमला भी जा चुके हैं। इन्होंने बच्चों के साथ मॉडल बनाने में भी मदद की।

९.३.१२

आज नवीन व मिथलेश देर से विद्यालय आये। पूछने पर पता चला कि मिथलेश नवीन के घर पूजा करने गया था। इस काम के उसे 20 रु. मिले। तुमने वहाँ क्या किया? क्या तुम्हें पूजा करनी, मंत्र पढ़ने आते हैं? मिथलेश ने बताया कि उसने हवन किया और गायत्री मंत्र पढ़े। ओम स्वाहा कहा। नवीन बाजगी जाति से है अर्थात गाँव में शुभ अवसरों पर ढोल बजाकर प्रतिभाग करके धान या अन्य चीज़ें इकट्ठा करने वाली जाति। जबकि मिथलेश ब्राह्मण का बेटा है। दोनों खुश दिखाई दे रहे थे।

ग्रामीण परिवेश में जाति व्यवस्था एवं लिंग भेद बेहद सहज रूप से जारी है। ऐसा नहीं है कि शहरों में यह सब नहीं है, पर वहाँ पर लोग एक दूसरे से ज़्यादा मतलब नहीं रखते हैं, तो यह सब चीज़ें परदे में रहती हैं। समुदाय व परिवार एक ऐसी पाठशाला है जो समाज में स्थापित मूल्यों को बेहद सहजता से बच्चों में स्थानान्तरित करती है। सोचती हूँ कि यदि मुझे कक्षा 6, 7 और 8 में काम करने का अवसर मिले तो मैं इन सब सवालों को बातचीत में शामिल कर पाऊँ। शायद कक्षा 3, 4, 5 के बच्चों से भी इन मुद्दों पर बात हो सकती है। परन्तु कई बार मुझे समझ नहीं आता कि बातचीत को कैसे आगे बढ़ाया जाए कि बच्चे बातचीत में स्वाभाविक रुचि लें? विद्यालय में हम सचेत प्रयास करते हैं कि किसी भी प्रकार का भेदभाव किसी भी बच्चे से किसी भी स्तर पर न करें। एक तरीका यह भी हो सकता है कि बच्चों से इतनी सहजता का व्यवहार हो कि जब कभी भी किसी बच्चे के साथ किसी प्रकार की असमानता का व्यवहार कहीं पर हो वे उसको सहन न करें उसका प्रतिरोध करें।

मध्यान्तर में हमने 'ये भी कोई खाना है' कहानी पर नाटक किये। मैंने कल ये कहानी बच्चों को सुनायी थी। बच्चों को नाटक करने में बहुत मज़ा आता है। बच्चों ने 6-6 के समूह बनाये और खुद ही अपना रोल निश्चित कर नाटक खेला। बच्चे ये भी देख रहे थे कि किस समूह का नाटक सबसे अच्छा रहा।

बाद में हमने 'चुपचाप आवाजें सुनो' वाला खेल भी खेला।

१३.३.१२

आज बाल शोध मेला था। सुबह से बहुत तेज़ बारिश हो रही थी। मैंने संकुल समन्वयक मैम को फ़ोन करके मेले के बारे में पूछा, तो उन्होंने कहा कि आज तो मेला होगा ही। क्योंकि 16 तारीख से वार्षिक परीक्षाएँ होनी हैं। 11.00 बजे तक मौसम साफ़ होने लगा था। हमने अपना स्टॉल 10.30 बजे तक लगा दिया था। मेला बालिका विद्यालय उत्तरकाशी में था। बच्चे अपने काम को प्रस्तुत करके प्रसन्न थे। हमने अन्य विद्यालयों के स्टॉल देखे। बच्चों व शिक्षकों से बातें की। बच्चों ने शुरू में खूब सारे गीत व कविताएँ भी सुनायीं। प्रधानाध्यापक दीदी पहले विद्यालय गयीं, फिर मेले में आयीं। उन्हें भी बच्चों का काम देखकर अच्छा लगा।

हमने मिलकर खाना खाया, लेकिन खाना खाते समय हुई एक घटना ने मन दुखी कर दिया। एक शिक्षिका ने इसलिए सब्ज़ी नहीं खायी क्योंकि सब्ज़ी की प्लेट से पहले अनुसूचित जाति की अध्यापिका द्वारा सब्ज़ी ली गयी थी। वह इस बात पर बार-बार इशारा करते हुए खूब हँसी। ये बात वह अध्यापिका व अन्य सब भी जान रहे थे। कुछ हँस रहे थे व कुछ चुपचाप अपना खाना खा रहे थे। मुझे बहुत बुरा लग रहा था, क्योंकि ये मेरे ही बगल में बैठी थीं। मैंने सब्ज़ी और भात खाया था। वे बार-बार मुझसे "सब्ज़ी चाहिए, सब्ज़ी अच्छी बनी है, घर जाते समय ये ही सब्ज़ी ले जाना" कहकर खूब हँस रही थीं। मैंने उन्हें कई बार चुप रहने को कहा पर वे नहीं मानीं। मुझे कारण भी बहुत देर में समझ आया क्योंकि इस तरह का व्यवहार मेरे व्यवहार का हिस्सा नहीं है। मेरी परवरिश एक स्वस्थ व प्रगतिशील माहौल में हुई है।

१४.३.१२

कल भोजनमाता भी हमारे साथ बाल शोध मेले में गयी थी। उसने कल वहाँ पर घटित अन्य घटनाओं के बारे में बताया। बाज़ार के विद्यालय के कुछ लड़कों से नवीन व अन्य बच्चों का मेले में ही खाना खाते हुए झगड़ा हो गया था। कुछ लड़कों ने नवीन से उसका नाम व जाति पूछी। उसके जाति न बताने पर उससे छीना झपटी की, उसकी आइसक्रीम गिरा दी और कहा, "हम जानते हैं तू...है!" ये सुनकर नवीन ने उनसे मार-पिटायी की। भोजनमाता के बीच-बचाव से झगड़ा शान्त हुआ। मैं उस वक्त अन्य बच्चों का स्टॉल देख रही थी। बाद में घर लौटते हुए रास्ते में फिर वे लड़के आये व बच्चों से मॉडल छीनने लगे।

यहाँ भी किसी तरह भोजनमाता ने बात सँभाली। बच्चे मुझे बुलाने आ रहे थे कि तब तक वे बच्चे भाग गये।

मैं यह सब जानकर स्तब्ध रह गयी। छोटी-छोटी बात पर बच्चे आपस में लड़ते-झगड़ते रहते हैं, फिर मान भी जाते हैं, पर जातिगत आक्षेप...! बच्चे ये सब बड़ों से ही तो सीखते हैं। कल अध्यापिका का व्यवहार, बच्चे का जातिगत सम्बोधन और झगड़ा करना...! हम अपने बच्चों को क्या सिखा रहे हैं? क्या देना चाहते हैं उन्हें? ये सब जान-सुनकर मन बहुत दुखी हो जाता है। एक शिक्षिका होने के नाते हम बच्चों पर अपना अच्छा खासा प्रभाव डाल सकते हैं। अगर हम ही इन सब बातों में उलझे जाएँगे, तो बच्चों को क्या सिखाएँगे?

मैं खुशनसीब हूँ कि मेरी माँ ने हमें कभी यह सब नहीं सिखाया-समझाया। वे भी एक शिक्षिका हैं। हमारे घर में हर छोटे-बड़े व्यक्ति का आदर होता है। मेरी माँ तो घर आये किसी भी व्यक्ति को चाहे वह किसी भी जाति, धर्म व रोज़गार से जुड़ा हो, किसी को भी अपने घर से बिना चाय-पानी के नहीं जाने देतीं। जातिवाचक शब्द या इनसे जुड़ी घटनाओं से मेरा पहले-पहल सामना अपनी ससुराल में या विद्यालय में ही हुआ। मुझे मेरे घर में नहीं, मेरी माँ ने नहीं, बल्कि किताबों ने और विद्यालय में शिक्षकों ने सिखाया कि हर व्यक्ति की जाति होती है, धर्म होता है और वो ही उसकी सामाजिक स्थिति व स्थान सुनिश्चित करता है। दुःख-सुख, कम-ज़्यादा, बुरा-भला सब जाति के आधार पर वितरित होता है। मैं अपनी माँ का सम्मान करती हूँ क्योंकि वे बहुत सारे मामलों में बहुत सहृदय व सहिष्णु हैं।

हम अपने स्कूलों व पाठ्य पुस्तकों में नैतिक शिक्षा देने की बात करते हैं। लेकिन सबसे बड़ा स्कूल तो हमारा यह समाज ही है। यदि हम किसी बच्चे को प्यार नहीं कर सकते, उसका सम्मान नहीं सकते तो हम उससे सम्मान पाने की इच्छा कैसे रख सकते हैं? ऐसे में अगर कोई बच्चा किसी तरह का असामान्य व्यवहार करे तो हमें हैरान नहीं होना चाहिए।

२३.३.१२

वार्षिक परीक्षाएँ हुईं। इस बार की परीक्षा कापियों में प्रश्न तो सामान्य ही थे लेकिन प्रिंटिंग में बहुत सारी खामियाँ थीं। एक-एक अतिरिक्त पेज भी दिया गया था जिसकी कोई आवश्यकता नहीं थी। हर प्रश्न के बाद प्रश्न के अनुसार ही स्थान छोड़ा जाना था। कुछ

विषयों, जैसे कक्षा-4 हिन्दी और "हमारे आसपास" का पेपर बहुत लम्बा था। छोटे बच्चों के हिसाब से अक्षरों के आकार बहुत छोटे थे।

२७.३.१२

बाल-चौपाल की बात

आज अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम बाल-चौपाल में अपने विद्यालय के 20 बच्चों के साथ शामिल हुई। यहाँ बच्चों ने खूब मज़े किये और काफ़ी कुछ सीखा। आयोजन रामलीला मैदान में किया गया था। इसमें कुम्हार, रिंगाल का काम करने वाले, साइकिल पंचर सुधारने वाले, चित्रकार, चरखे पर रुई से धागा बनाने वाले, विज्ञान के खेल आदि के विशेषज्ञ मौजूद थे। ये बच्चों को अपना काम दिखा रहे थे। बच्चे भी उनके साथ काम सीख रहे थे। यहाँ बच्चे मनचाहे स्टाल पर जाकर मनपसन्द काम करने की कोशिश कर रहे थे। मैंने भी कुम्हार के चाक पर कुछ बनाने की कोशिश की। एक कुल्हड़ और एक गमला बनाया। बच्चों ने कुम्हार और चाक पहली बार देखे थे। उन्हें ये सब देख खूब अच्छा लगा। उन्होंने थिएटर की कुछ गतिविधियाँ भी कीं, गीत, कविताएँ गायीं, कहानी सुनी, खाना खाया और फिर वापस घर लौटे। बच्चों को यहाँ आकर खूब मज़ा आया।

३१.३.१२

आज बच्चों का रिजल्ट निकलने वाला था। सारे बच्चे बेहद उत्साहित थे। सारे बच्चे अगली कक्षा में चले गये हैं। कक्षा-5 के बच्चे अब दूसरे स्कूल में चले जाएँगे। ये तो हर साल का सिलसिला है। बच्चों का जाना बुरा लगता है पर ये बच्चे तो रोज़ ही रास्ते में मिलते रहेंगे। जब इनका मन होगा तब स्कूल भी मिलने आ जाएँगे, जैसे पहले गये बच्चे अभी तक आते हैं। मिथलेश कक्षा-5 में प्रथम आया है। ये बच्चा जब प्राइवेट स्कूल से हमारे स्कूल में कक्षा-4 में आया था तो इसकी झोली में सिर्फ़ शिकायतें थीं। मुझे विश्वास है कि इसने यहाँ बहुत कुछ सीखा है, जैसे: नेतृत्व क्षमता, समूह में काम करना, सबके सामने अपनी बात रखना और सबसे बड़ी बात, खुद पर विश्वास करना। शैक्षिक कार्य तो सीखे ही हैं। ये ही बात है जिस कारण मुझे अपने शिक्षिका होने पर गर्व है, एक बच्चे की आँखों में खुशियों की चमक पैदा कर पाना।

२.४.१२

आज मैं, प्रधान अध्यापिका व बच्चे गाँव में 'स्कूल चलो' अभियान के तहत अभिभावकों से मिलने गये। हम दोनों आँगनबाड़ियों में भी गये। पता चला कि वहाँ गिनती के चार-पाँच बच्चे ही हैं जिनके पाँच साल पूरे हो रहे हैं। इनमें से भी तीन बच्चे जुलाई या अगस्त में पूरे पाँच साल के होंगे। जब गाँव में ही बच्चे नहीं हैं तो स्कूल में कहाँ से आएँगे?

७.४.१२

आज मैंने बच्चों की कापियाँ देख-पढ़कर फीडबैक तैयार किया, जिससे यह पता चल गया कि किस कक्षा में कौन-कौन सी दक्षताएँ ऐसी हैं जिन पर अभी तुरन्त ध्यान देने की आवश्यकता है।

बच्चों की किताबें भी आ गयी हैं, जो उनको बाँट दी हैं। किताबें छपाई की दृष्टि से निम्न स्तर की हैं। पेज आपस में जुड़े हैं या उखड़े हुए हैं। कक्षा-4 की हिन्दी की किताब से "हम भी होते काश कबूतर" कविता वाला पेज गायब है। छपाई की और भी बहुत-सी कमियाँ हैं। यह जानकर कि ये तो सरकारी स्कूल के बच्चों के लिए हैं, गुणवत्ता का कोई ध्यान नहीं रखा गया है। कभी-कभी लगता है कि हम आदम समय में ही ठीक थे जब सारी चीज़ें व व्यवस्थाएँ बिना लाग-लपेट व पैकिंग के चलती होंगी। हो सकता है उस समय की अपनी दिक्कतें रही हों। पर अभी तो हम सभ्यता के जिस शिखर पर पहुँचने का दावा कर रहे हैं, शायद वहाँ के रास्तों की ही कमियाँ होंगी जिसने हमारा दिमाग इतना कुन्द बना दिया है कि हमें किसी भी गलत बात का बुरा नहीं लगता। सवाल पूछना तो दूर, हम सवाल सुनना भी पसन्द नहीं करते। चुप्पी की जानलेवा संस्कृति में जीने के आदि होते जा रहे हैं हम। ऐसे में मुझ जैसे लोग अपने लिए बस बेचैनियाँ ही पैदा करते रहते हैं, कुछ कर-वर तो सकते नहीं सिवाय बौद्धिक जुगाली के।

१२.४.१२

पिछले चार दिन सृजनात्मक कक्ष, बालसखा कक्ष और पुस्तकालय को व्यवस्थित करने, नये चार्ट लगाने, नयी गतिविधियाँ तैयार करने और नयी कार्य योजना तैयार करने में बीते।

मैंने पुस्तकालय को ऑफिस के अन्दर वाले कमरे में शिफ़्ट किया ताकि कक्षा शिक्षण के साथ-साथ पुस्तकालय की गतिविधियाँ भी संचालित की जा सकें। शेष अन्य सृजनात्मक कार्य विषयवार, बालसखा कक्ष में ही पहले की तरह ही किये जाएँगे। इस बार मैंने इस कक्ष को चार भागों में बाँटा है। हिन्दी कोना, गणित कोना, अँग्रेज़ी कोना व 'हमारे आसपास' कोना। ऐसा विषयों को पर्याप्त समय देने व आपसी सम्बन्ध स्थापित करते हुए सीखना-सिखाने की मंशा से किया है। एक कोने में बच्चों के प्रोजैक्ट कार्य को भी प्रदर्शित किया है।

बच्चे हमेशा अपने काम को स्वीकृति मिलता देख व दूसरों को उसे दिखा बेहद खुश होते हैं।

अब हमारा विद्यालय नये शिक्षण सत्र के लिए तैयार है। नयी साज-सज्जा, नयी गतिविधियों के लिए अवश्य प्रेरित करेगी। बच्चे भी इससे खुश हैं। काम के बाद लगी गहरी थकान में ही सच्चा सुख है।

१६.४.१२

आज हमारे विद्यालय में आमिर खान प्रोडक्शन की टीम आयी थी। वे सत्यमेव जयते के किसी एपिसोड की शूटिंग कर रहे थे और कुछ स्कूलों में होने वाली अच्छी गतिविधियों को शूट कर रहे थे। इसके लास्ट एपिसोड में ये शूटिंग शामिल की जाने की सम्भावना है। उनके साथ एपीएफ़ के साथी भी आये थे। उन्होंने हमारे विद्यालय की तमाम चीज़ें शूट कीं, मेरा इण्टरव्यू लिया। बच्चों से ढेर सारी बातें की। हमारा भूकम्प वाला प्रोजैक्ट देखा। वे दिन भर की तमाम गतिविधियों में शामिल रहे। शाम को अनौपचारिक शिक्षक समूह की बैठक भी हुई। जिसमें रचनात्मकता पर चर्चा हुई। आज प्रधान अध्यापिका दीदी का छुट्टी पर रहना बहुत खला क्योंकि स्कूल की तमाम गतिविधियाँ हम मिलजुल कर करते हैं। अगर वे होतीं, तो वे भी अपनी बात रखतीं।

१७.४.१२

आज सुबह काफ़ी ठण्ड थी, शायद आज मैं कुछ ज़्यादा ही जल्दी घर से निकल आयी थी। रास्ते में अवतार, रोहित, दिव्यांशी, पूनम व अन्य बच्चे मिले, सब खुश लग रहे थे। स्कूल पहुँची तो कोई बच्चा नहीं आया था। मैंने विद्यालय खोला और कुछ किताबें अपने पढ़ने के लिए छाँटी। इतने में आईशा व अन्य बच्चे आ गये। धीरे-धीरे कुछ और बच्चे आये। आज भी 32 बच्चे ही आये थे। कल गाँव में शादी और मेला था, पर आज तो ऐसा कुछ नहीं था फिर भी कम बच्चे आये थे।

आज सुबह प्रार्थना सभा में हमने काफ़ी देर तक बातचीत की। आज दीदी नहीं थी तो मैंने कक्षा एक के लिए फ़र्श पर ढेर सारे चित्र बनाये और उन पर पत्थर लगाने को कहा। बाद में कक्षा-2 के बच्चे भी इस गतिविधि में शामिल हुए। उन्होंने गिनकर पत्थर लगाये। कक्षा -3, 4 और 5 में सारणी व वर्गीकरण पर काम किया। मैंने श्यामपट पर लगभग 80 शब्द लिखे और उन्हें रसोई, रंग जैसे, काला-लाल, भोजन, पहनना, स्कूल, बाज़ार, खेल वाली चीज़ों आदि में छाँटकर लिखने को कहा। जब तक ये बच्चे इस गतिविधि को करते रहे, मैं कक्षा-1 और 2 का अवलोकन करती रही। रीतिका कुरते में कंकड़ भरकर ला रही थी, तो रवि जेब में भरकर। शेरू दूर से ही निशाना लगाकर अपने चित्र के आसपास कंकड़ पत्थर फेंक रहा था। मैंने उसे वैसा करने से मना किया। थोड़ी देर बाद कक्षा 2 के बच्चे बताने लगे कि उनके चित्र में कितने-कितने पत्थर लगे हैं। जैसे सिमरन-160 पत्थर, समीर पहले 100 लगे फिर 18 और लगे। “सब मिलाकर कितने हुए?” समीर-चुप। “फिर से गिनकर आओ तो।” थोड़ी देर बाद आकर “118 जी।” जब कक्षा 3, 4 और 5 के बच्चे पहली गतिविधि कर चुके तो मैंने विशेषण पर गतिविधि करायी। मैंने बाहर लगे तीनों श्यामपट पर तीन शब्द लिखे और एक-एक उदाहरण लिखकर छोड़ दिया। बच्चे आकर नये शब्द जोड़ने लगे।

मध्यान्तर के बाद कक्षा-2 के बच्चों से पेड़ के बारे में बातचीत कर श्यामपट पर कुछ वाक्य लिखे, जिन्हें बच्चों ने बारी-बारी से आकर पढ़ा व अपनी कॉपी पर लिखा। कक्षा-3, 4 और 5 के बच्चों के साथ जोड़ व गुणा के सवाल किये।

आज अग्निशमन विभाग से तीन लोग हमारे विद्यालय आये। उन्होंने आग लगने के कारण, बुझाने के उपाय आदि पर बहुत महत्त्वपूर्ण जानकारी दी। बच्चों को पढ़ने के लिए कार्ड भी दिये। इतने में छुट्टी का समय हो गया, तो हम सब अपने-अपने घरों की ओर चल दिये।

आज सुबह दिव्या आकर बोली, “मैडम जी आप परसों कितना भीगे।” उसके स्वर में चिन्ता थी। मुझे बहुत अच्छा लगा। परसों मैं स्कूटी पर स्कूल से घर भीगते-भीगते पहुँची। बहुत ठण्ड लगी, तभी से सर भारी हो रहा है। दिव्या को मेरा ख्याल रहा, सोचकर अच्छा लगा।

आज कक्षा-एक में बच्चे अपनी-अपनी चूड़ियाँ फैलाकर ‘चूड़ी ले लो’ वाला खेल, खेल रहे थे। सभी बच्चे, दुकानदार बनी सलोनी को घेरकर बैठे थे। गाँव में फेरी वाले आकर जिस तरह चूड़ी बेचते हैं, ये भी वैसा ही अभिनय कर रहे थे। चुपचाप बैठकर छोटे बच्चों के खेल देखना व उनकी बातचीत सुनना एक आनन्ददायी अनुभव होता है, जिससे यह भी पता चलता है कि बच्चे कितनी सूक्ष्मता से अपने आसपास हो रही गतिविधियों को देखते हैं। ये निरीक्षण ही उनके समाजीकरण की शुरुआती प्रक्रिया होते हैं। हमें पता ही नहीं चलता और बच्चे वयस्कों की दुनिया का हिस्सा बनते जाते हैं। हमारे व्यवहार व तौर तरीके, दूसरों के प्रति हमारी भावनाएँ, हमारी संस्कृति अगली पीढ़ी को हस्तान्तरित होती जाती है। बच्चों की ज़िन्दगी के व्यावहारिक अनुभव कम होने के कारण बहुत- सी गलत बातें व अवधारणाएँ भी हस्तान्तरित हो जाती हैं। जिन पर शायद बहुत बाद में वे नये अनुभव हासिल होने पर सोच पाते हैं या फिर न भी सोच पाते हों।

१८.४.१२

आज जब विद्यालय पहुँची तो एक-दो बच्चे आ गये थे। हमने विद्यालय खोला, पौधों को पानी दिया तब तक धीरे-धीरे और बच्चे भी आ गये। आज के समाचार में आरज़ू ने कहा और श्यामपट पर लिखा - आजकल गाँव में बन्दर खूब आ रहे हैं। प्याज उखाड़ने की कोशिश कर रहे हैं। कल हमारे विद्यालय में फ़ायर ब्रिगेड वाले आये थे। उन्होंने बताया की 100, 101 ओर 108 आपातकालीन फ़ोन नम्बर हैं। किसी भी तरह की दुर्घटना होने पर इन नम्बरों पर फ़ोन लगाकर पुलिस या फायर ब्रिगेड बुलाया जाता है।

आज दीदी व मैंने आपस में कक्षाओं और विषयों को बाँटा। नयी समय सारणी बनायी और तय किया कि आज से इसी समय सारणी के अनुसार ही पढ़ाएँगे।

मैंने चार और पाँच कक्षा को शब्द-युग्मों से वाक्य बनाने को दिये। जब तक बच्चों ने वाक्य बनाये मैंने अपने लिए निर्धारित विषयों की किताबें खोजीं। काम की कुछ नयी कुछ पुरानी किताबें मिल गयीं। इन विषयों के फ़ीडबैक देखे। अभी हमने इतना ही काम किया था कि

एसबीएमए से कुछ लोग वाश कार्यक्रम के तहत विद्यालय में आये। उन्होंने हमसे बातचीत की। वे वाश कार्यक्रम से होने वाले फ़ायदों के बारे में जानना चाह रहे थे।

उनके जाने के बाद कक्षा-दो व तीन को हिन्दी का एक-एक पाठ पढ़ाया।

२०.४.१२

आज कक्षा-4 और पाँच के साथ हिन्दी में कल पढ़ाये पाठों के प्रश्नों पर काम किया। कक्षा-5 के प्रश्न बोध व अनुप्रयोग वाले थे जिनके बच्चों ने बहुत ही रुचिकर जबाव दिये। कक्षा-5 के साथ स्त्रीलिंग, पुल्लिंग व पर्यायवाची शब्दों पर काम किया। इसके बाद उन्हें जोड़ व घटाने के कुछ प्रश्न करने को दिये। मैं यह पता करना चाहती थी कि मुझे गणित में कहाँ से शुरुआत करनी है। कक्षा-5 के बच्चों के बारे में तो मुझे पता है कि दीपक, मनीष, शिवानी, गणित में अन्य बच्चों से थोड़ा पीछे हैं। बच्चों के जवाब जाँचने पर पता चला कि कक्षा-4 के ज़्यादातर बच्चों को हासिल के जोड़-घटाने के सवाल नहीं आते हैं। तय किया मुझे जोड़-घटाने से ही शुरूआत करनी होगी।

कक्षा-1, 2 और 3 के साथ कल स्पेलिंग पर काम किया था आज ये काम आगे बढ़ाया। कक्षा 1 के बच्चों ने ब्लैकबोर्ड पर चित्र बनाये।

शान्तु 20 तक गिनती लिखना-पहचानना सीख गया है। उसे अपना नाम लिखना भी आ गया है। पर ये अन्य बच्चों के साथ गीत, कविता, पाठ दोहराता नहीं है, चुपचाप सुनता रहता है। बोलो तो थोड़ी देर दोहराकर चुप हो जाता है। इसका भाई शेरू भी कक्षा-1 में आ गया है। लगता है कुछ सालों में शेरू, शान्तु से ज़्यादा शैक्षिक सम्बोधों को सीख जाएगा।

समय कम है और करने को बहुत सारी चीज़ें हैं। अभी बाल गणना भी शुरू करनी है। सोमवार को नयी प्रबन्धन समिति का गठन करने के लिए मीटिंग बुलायी है। ज़्यादातर बच्चे अभी तक नयी कॉपियाँ नहीं लाये हैं। उनसे नयी कॉपियाँ लाने को कहा। गणित में दो-तीन दिन सब बच्चों के साथ, एक साथ काम करके समूह में काम करूँगी। किताब की शुरुआत फिर करूँगी। पहले जोड़-घटाना, गुणा-भाग तो आ जाए। क्योंकि ये संक्रियाएँ मूलभूत हैं और अन्य गणितीय संक्रियाओं को समझने के लिए ये ज़रूरी हैं।

मैंने इसके लिए बच्चों के तीन समूह बनाये जिनके साथ नीचे लिखित काम करना हैं।

समूह 1 - साधारण जोड़ -घटाना

समूह 2 - हासिल वाला जोड़-घटाना

समूह 3 - जोड़-घटाने के बड़े सवाल

मध्यान्तर में जगमोहन चोपता विद्यालय में आये थे। उन्होंने मुझसे बातचीत कर टीचर्स-ट्रेनिंग से सम्बन्धित फ़ार्म भरा।

२१.४.१२

कक्षा-4 की हिन्दी की किताब में प्रिंटिंग की बहुत सारी कमियाँ हैं। पहले ही पाठ में कुछ पेज नहीं हैं। आगे भी कई सारे पाठों में बहुत सारी चीज़ें नहीं हैं। बच्चों को इससे परेशानी हो रही है। उन्हें अपनी किताब को देखकर अच्छा नहीं लग रहा है।

पर्याप्त बातचीत के बाद भी बच्चे और भोजनमाता शान्तु के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार नहीं कर पा रहे हैं। इधर शान्तु का भाई शेरू भी कक्षा-1 में आ गया है। शान्तु की तरह ये भी खूब हाथ-पैर चलाता है। शान्तु को शब्दों, वाक्यों को दोहराने में भी दिक्कत होती है। वह दूसरे बच्चों के साथ कविता गीत भी नहीं दोहराता है। लेकिन कल उसने "चिड़िया रानी" कविता सुनायी थी, आधी-अधूरी ही सही। मुझे लगता है अपने छोटे भाई व अन्य बच्चों को पढ़ते-लिखते देख शान्तु के मन में थोड़ी कमतर की भावना और असहजता आ गयी है। क्योंकि जब बच्चे किताब पढ़ रहे होते हैं तब वह उन्हें बड़े अजीब तरह से देखता है। ऐसे में उसके साथ बहुत ही सजग होकर काम करने की ज़रूरत है।

२३.४.१२

आज हिन्दी में कक्षा-4 के बच्चों को **'अगर ऐसा होता तो'** से जुड़े प्रश्नों पर चर्चा-परिचर्चा करवायी व लिखने का काम भी किया। बच्चों के जवाब बहुत रोचक थे। जैसे 'अगर पेड़ों के पैर होते तो क्या होता ?' सवाल के उन्होंने नीचे अंकित जवाब दिये।

पेड़ अपने दोस्तों से मिलने जा पाते।

वे घूमने-फिरने जा पाते।

अपने दोस्त पेड़ों के साथ खेलते।

हम पेड़ों पर बैठकर दूर-दूर घूमने जाते।

वे अपनी मनपसन्द जगहों पर उगते।

वे अपने को काटने नहीं देते, भाग जाते।

हमें उनसे फल माँगकर खाने पड़ते।

पेड़ अपने बच्चे पेड़ों से मिलने उनकी देखभाल करने जा पाते।

तब पेड़ बैठ भी पाते। बच्चे उनकी डालियों से फल तोड़ पाते।

पेड़ों के चलने से रास्ते में भीड़ हो जाती।

पेड़ों पर पानी डालने की ज़रूरत नहीं होती वे अपने आप नदी में पानी पीने जाते।

जब कोई जानवर उनकी पत्तियाँ खाने आता पेड़ भाग जाते।

जब वो सोये रहते जानवर चुपके से आकर उनकी पत्तियाँ खाते।

अगर नदियाँ उड़ पातीं तो क्या होता? के जवाब इस तरह आये:

नदियाँ आसमान में उड़ती रहतीं।

जहाँ-जहाँ नदी उड़ती वहाँ-वहाँ पानी के छीटें पड़ते रहते।

हमें पीने, खाना पकाने, कपड़े बर्तन धोने, नहाने आदि के लिए पानी नहीं मिलता।

हम पानी के बिना मर जाते।

जानवरों को पानी नहीं मिलता।

जहाँ पानी की ज़्यादा ज़रूरत होती नदी वहाँ चली जाती।

नदी हमें अपनी मरज़ी से पानी देती।

तब नदी में रहने वाले जानवर, मछली भी नदी के साथ आसमान में उड़ते।

हमारी परेशानी बढ़ जाती।

बरसात में नदी में ज़्यादा पानी भर जाता तो वो भारी हो जाती तब वो गिर भी सकती थी।

कोई मछली मरती तो हमारे ऊपर गिरती।

नदियाँ उड़- उड़ कर आसमान में मिलतीं। तब उसमें रहने वाले जीव-जन्तुओं में दोस्ती हो जाती। वे एक नदी से दूसरी नदी में जा सकते।

कोई नदी सूरज के ज़्यादा नजदीक जाती तो सूख भी सकती या सूख जाती।

चिड़ियों को आसमान में ही पीने का पानी मिल जाता।

हमें हैण्डपम्प का पानी पीना पड़ता।

तब पुल नहीं होते।

नाव, जहाज़, नहीं चलते।

पेड़-पौधे सूख जाते।

बरसात में गदेरा पार करने की दिक्कत नहीं होती।

जब नदी का बैठने का मन होता तब हमें पानी मिलता।

जहाँ नदी बैठती वहाँ गीला हो जाता।

नदी पर बाँध नहीं बनता।

बिजली नहीं मिलती।

पूजा के लिए जल नहीं मिलता।

कोई नदी में डूबता नहीं।

मछली खाने को नहीं मिलती।

तब बजरी भी नहीं मिलती।

बजरी वाले मकान नहीं बनते।

जहाँ-जहाँ नदी उड़ती वहाँ-वहाँ छाया होती।

हमारे सिर के ऊपर नदी की आवाज़ आती।

नदी को दूर-दूर तक दिखाई देता।

प्रियंका ,मनीषा व आईशा इस तरह के प्रश्नों के जवाब देने में सबसे आगे हैं।

बच्चों ने इतनी तरह के जवाब दिये कि मैं सुखद आश्चर्य से भर गयी। मैंने उन्हें होमवर्क में भी इसी तरह के प्रश्न दिये। अगर बच्चों से सही संवाद किया जाए तो हम उनकी कल्पनाशीलता को नयी उड़ानें दे सकते हैं। उनकी तर्क शक्ति बढ़ा सकते हैं व उन्हें चीज़ों, स्थितियों में आपसी सम्बन्ध बिठाने में मदद कर सकते हैं। जैसे नदी वाले प्रश्न में बच्चों ने नदी से जुड़ी तमाम स्थितियों पर सोचकर अपने जवाब दिये। पर ऐसी कल्पनाओं में सन्दर्भों के साथ पर्याप्त बातचीत व प्रोत्साहन की आवश्यकता होती है।

कक्षा-5 के साथ आज हास्य कथा "शेख चिल्ली व कुत्ते" पढ़ी।

आज विद्यालय में नवीन प्रबन्धन समिति का गठन करने के लिए अभिभावकों की मीटिंग थी जिसमें 10-11 लोग ही आये। महिलाओं में मात्र प्रियंका की माँ और सुषमा आयी।

गणित में कक्षा-4 और 5 के साथ इकाई-दहाई की अवधारणा पर काम किया। लगता है मई माह तक पुनरावृत्ति कार्य ही करना पड़ेगा।

२४.४.१२

आज मौसम सुहाना था। सुबह से ही अच्छी धूप खिली थी हालाँकि दोपहर बाद बहुत तेज़ तूफान आया। आज कक्षा-4 और 5 को श्रुतलेखन कराने से पता चला, कुछ बच्चे ज़्यादा मात्राओं की गलतियाँ कर रहे हैं। इसलिए आज फिर से कक्षा-4 और 5 के साथ मात्राओं और शब्दों के विस्तारित स्वरूप पर बात की। मुझे लगता है अभी 2-3 दिन ऐसा ही करना पड़ेगा। हम फिर से आगे बढ़कर पीछे चले जाते हैं। समझ में नहीं आता बच्चे बार-बार वही गलतियाँ क्यों करते हैं? फिर भी मुझे इतना सन्तोष तो है कि मेरे पढ़ाये कुछ बच्चे 'क' और 'का' का फ़र्क समझते हैं और उनका सही उच्चारण करते हैं। वे 'अ' और 'आ' में घालमेल नहीं करते।

आज मेरी ये धारणा पुख्ता हुई कि बच्चे शिक्षक की मदद से समूह में ज़्यादा बेहतर काम करते हैं। कल जिन बच्चों ने मिलकर एक प्रश्न के 30 से भी ज़्यादा उत्तर दिये थे उन्होंने उसी तरह के प्रश्न को घर से करने पर 2 या 3 उत्तर ही लिखे हैं। किसी-किसी बच्चे ने तो सिर्फ़ 1 ही।

आज कक्षा-4 और 5 के साथ गणित पर काम करने का समय नहीं मिला।

आज 4-5 दिनों बाद नवीन भी आ गया है।

आज बच्चों ने मध्यान्तर में बाल संसद की जिसमें साफ़-सफ़ाई, स्वाअनुशासन और विद्यालय में होने वाली अन्य गतिविधियों पर बातचीत की। इस दौरान मैंने पाया कि अंजली भविष्य की कुशल वक्ता है। नवीन बेहतर नेतृत्व कर सकता है। दिव्या अपनी बुद्धि व कौशल से किसी का भी मन जीत सकती है। शिवानी छोटे समूह में सक्रिय रहती है पर बड़े समूह में झेंप जाती है। प्रत्येक बच्चे की अपनी कोई न कोई विशेषता है। इस तरह की बातचीत से हमें बच्चों की वाकपटुता, नेतृत्व क्षमता, समूह में बात रखने के तरीके व सामूहिक विषयों में भागीदारी के बारे में पता चलता है।

बच्चों को अवसर व प्रोत्साहन देने से वे अपनी क्षमताओं को बढ़ा सकते हैं। शिक्षक का रवैया बच्चों की क्षमताओं को दिशा देने में एक महत्त्वपूर्ण कारक है। ये भी कहा जा सकता है कि अच्छे व बुरे छात्र, शिक्षक या स्कूल ही बनाता है। जिस तरह बच्चा अपनी मित्र मण्डली में बात रखता है उसी प्रकार स्कूल में क्यों नहीं रख सकता? उसे किस बात का डर रहता है? छोटी कक्षाओं से ही जिस बच्चे को प्रोत्साहन मिलता है और जो स्वयं भी किसी काम में रुचि दिखाते हैं उनकी दक्षताएँ निरन्तर निखरती जाती हैं। वहीं दूसरी ओर जो बच्चे किसी भी कारण से अपनी बात कहने में संकोच करते है, आगे आने में डरते हैं, वे धीरे-धीरे हाशिये पर चले जाते हैं। लिहाजा अनचाहे ही दब्बू व नकारा घोषित कर दिये जाते हैं।

अपने स्कूल में मैं सजगता से यह ध्यान रखती हूँ कि सभी बच्चों को बराबर अवसर मिलें। लेकिन जब बच्चे स्वयं समूह में काम करते हैं तो कुछ खुद-ब-खुद नेतृत्व अपने हाथ में ले लेते हैं जबकि कुछ उदासीन या कम सक्रिय हो जाते हैं। मुझे लगता है इसके बहुत से सामाजिक या सांस्कृतिक कारण भी हो सकते हैं। कभी-कभी ऐसा भी लगता है कि बच्चे रुचि न होने या ज़िम्मेदारी से बचने के लिए भी ऐसा करते हैं। जैसे कुछ बच्चे बिना कहे ही साफ़-सफ़ाई या अन्य कामों में मदद करते हैं जबकि कुछ मदद माँगने पर भी टालबराई करते हैं। कुछ बच्चे रोज़ प्रार्थना सभा में आकर अपनी बात रखना चाहते हैं जबकि कुछ अपनी बारी आने पर भी इतना आत्मविश्वास नहीं जुटा पाते की बड़े समूह के सामने अपनी बात रखें। वे बुलाये जाने पर आगे आते हैं, स्वेच्छा से नहीं। जब वे अपनी बात कह रहे होते हैं तो लगता है उनका ध्यान न तो अपनी बात अच्छी तरह से कहने में है न ही किसी को कुछ सुनाने की उनकी इच्छा है बल्कि वे तो उस घड़ी का इन्तज़ार करते हैं कि वे कब वापस अपनी जगह पर जा पाएँगे। ये हर बार अपनी बात बहुत धीमे-धीमे कहते हैं। कई बार तो

अगर बाकी बच्चों का ध्यान सुनने में न हो तो पता भी नहीं चलता कि इन्होंने क्या कहा। कई बार मुझे बच्चों का ध्यान जबरन इनकी बात की ओर दिलाना होता है, साथ ही उन्हें यह भी अहसास कराना होता है कि उनकी बात महत्त्वपूर्ण है जिसे हम सब ध्यान से सुन रहे हैं, जिससे की ये बच्चे अगली बार स्वयं बोलने को प्रेरित हों।

२६.४.१२

सुबह श्रुतलेख गतिविधि व गणित में समूह कार्य किया।

मध्यान्तर के बाद कक्षा-1 व 2 के साथ गणित में काम किया। कक्षा 4-5 के साथ 'बालसखा कक्ष' में कपड़े व ऊन से खिलौने बनाये। मैंने बच्चों को कपड़े पर डिज़ाइन बनाना, डिज़ाइन काटना, उसे सिलना व उसमें पुरानी ऊन, कतरनें या रूई, कागज़ आदि भरना सिखाया।

कुछ दिनों पहले हम गाँव के ऊन व्यवसायियों से उनके पास पड़ी अनुपयोगी ऊन माँगकर लाये थे। ऊन से बहुत बदबू आ रही थी। आज हमने इस ऊन को पतीले में कपड़े धोने का पाउडर डालकर भिगोने रखा। कल सुबह इसे धोएँगे। इसमें बहुत सारे काँटे-कुर्रे भी हैं। शायद धोकर कुछ निकले जाएँ। ये ऊन हमारे बालसखा कक्ष में काम आयेगी। बालसखा कक्ष में बच्चों के साथ काम करने का एक मकसद उन्हें अपने हाथों से काम करने के अवसर देना भी है इससे उनमें सृजनात्मकता तो बढ़ती ही है, समझ व अवलोकन क्षमता भी विकसित होती है और खेल-खेल में सीखना तो है ही।

२७.४.१२

सुबह जब स्कूल पहुँची तो 5-6 बच्चे आ गये थे। बच्चे साथ में कुछ फूल के पौधे भी लाये थे। दिव्या, शिवानी, आरजू ने इन पौधों को लगाया व पानी डाला। हमने फूलों की 3 नयी क्यारियाँ बनायी हैं। पिछले दिनों जब मैंने दीदी से कहा कि हम कुछ छोटे फलदार वृक्ष लगाएँगे तो वे बोली अमरूद का पेड़ मत लगाना नहीं तो छुट्टी के बाद बच्चे अमरूद तोड़ने स्कूल में आएँगे। इस बात पर हम बहुत हँसे। पौधा अभी लगा नहीं, बच्चे फल तोड़ने आ गये! विद्यालय में जरा सी जगह है, जो है भी वो सीमेंट से भर दी गयी है। ये नन्हे-नन्हे पौधे बड़ी राहत देते हैं। बच्चे भी अपने लगाये पौधों की अच्छी देखभाल करते है। दीदी को पौधे

लगाना व उनकी देखभाल करना पसन्द है। पिछले दिनों उन्होंने गुलाब की कुछ कलमें रोपी थीं जिनपर आजकल खूब फूल खिले हैं।

आज प्रार्थना सभा में मैंने बच्चों को 'नन्ही चिड़िया व समुद्र' की कहानी सुनायी। किस प्रकार नन्ही चिड़िया ने विशाल समुद्र के अन्याय के आगे हार नहीं मानी। उसके साहस और संकल्प ने किस तरह बाकी सारे जानवरों, पक्षियों, नदी, बादल को उसका साथ देने को प्रेरित किया। ये कहानी बच्चों को सुनायी जाने वाली एक बेहतरीन कहानी है। भवानी ने समाचार लिखे और सुनाये। दीक्षा ने कहानी सुनायी। कल किसी आदमी ने शान्तु को लँगड़ी मारकर गिरा दिया जिससे उसकी बायीं आँख के ऊपर गहरी चोट लगी। वह पट्टी बाँधकर आया है। मैंने उससे पूछा, "टिटनेस का इंजेक्शन लगवाया क्या ?" उसकी समझ में नहीं आया। बाद में जब उसके पापा स्कूल में आये तो मैंने उन्हें शान्तु को डाक्टर के पास ले जाकर टिटनेस का इंजेक्शन लगवाने की सलाह दी जिससे कि वो जल्दी ठीक हो जाए।

१.५.१२

आज मई दिवस है। बच्चों के साथ कक्षा में मई दिवस के बारे में बातचीत की।मध्यान्तर से पहले हिन्दी और गणित की गतिविधियाँ करायीं। मध्यान्तर के बाद कक्षा-1, 2 के साथ गणित की गतिविधियाँ की। कक्षा 2 के ज़्यादातर बच्चे 10 कंकड़ों की 10, 10 की पंक्तियाँ बना रहे हैं व उन्हें ठीक से गिन रहे हैं। कक्षा-1 के बच्चे 20 तक कंकड़ गिनना सीख गये हैं। उन्हें कंकड़ों व गुटकों से खेलना बहुत पसन्द है। समीर ने 100 तक ढेरियाँ बनायी व गिनीं। सिमरन, प्रेरणा 10-10 की जगह कम या ज़्यादा कंकड़ों की ढेरियाँ बना लेती हैं फिर गिनते समय कम-ज़्यादा करती रहती हैं।

शान्तु बड़े बच्चों के साथ जितना असहज होता है छोटे बच्चों के साथ उतना ही स्नेहिल व सहयोगी होता है, तब वह बातें भी खूब करता है। आज उसने खुद थोड़ी ऊन साफ़ की। उसकी चोट अभी भी ठीक नहीं हुई है।

आज हमने "नीला समन्दर" चित्र-कविता पढ़ी व उस पर बातचीत की। बच्चों ने तरह-तरह बातें की, ऐसा लग रहा था मानो वे साक्षात मछली, सागर, नाव, पेड़, नारियल, व्हेल आदि देख पा रहे हों।

आज अम्बिका भी स्कूल आयी थी। वह कक्षा छह में पढ़ने के लिए बड़े स्कूल चली गयी है। मैंने आज यहाँ आने का कारण पूछा तो चुप रही। वह दिन भर विद्यालय में रही। छोटे बच्चों के कमरे में उनके साथ काम करवाने में मदद की। मुझे इस बात से बहुत-बहुत खुशी होती है कि मेरे विद्यालय के पाँचवीं पास बच्चे अवसर मिलते ही पुराने विद्यालय आ जाते हैं। बच्चों के लिए ये विद्यालय कभी पराया नहीं होता, पुराना नहीं होता।

२.५.१२

आज घर जाते समय मेरे पुराने विद्यालय की शिक्षिका मिली थीं। प्रमिला दीदी ने बताया कि बच्चे मुझे याद कर रहे थे। वे कह रहे थे कि, "रेखा मैडम हमें नोटों से अंक-संख्या पढ़ना, जोड़ना-घटाना, हिसाब-किताब करना समझाती थीं। वो इस स्कूल से क्यों चली गयीं?" मुझे अच्छा लगा। बच्चों के मन और जीवन में अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज़ करा पाना ही तो एक शिक्षक की लालसा होती है।

शान्तु को आज बुखार आ गया, वह विद्यालय नहीं आया। गाँव में गेहूँ की फसल भी पक गयी है, अब कुछ दिन बड़े बच्चे अनुपस्थित रहेंगे। वे अपने घर के कामों में अपने अभिभावकों की मदद करेंगे। मध्यान्तर के दौरान मैं पुस्तकालय में कुछ पढ़ रही थी। कक्षा-4 के बच्चे आये और कहने लगे, "मैडम जी किताबें ले जाएँ।" "ज़रूर ले जाओ।" बच्चे अपनी मनपसन्द किताबें घर पढ़ने के लिए ले गये। नवीन अपनी किताब मेरे पास लेकर आया और उसे पढ़ कर सुनाने को कहा, कहानी सुनकर बोला, "अब मज़ा आया।" पहले उसे ठीक से समझ नहीं आ रहा था। धीरे-धीरे उसका आत्मविश्वास बढ़ रहा है अब वो निःसंकोच अपनी बात कहता है।

आठवीं में पढ़ने वाली मेरी बेटी अप्पू बता रही थी, "कल हम पुस्तकालय गये थे। मैडम ने बहुत बेकार कॉमिक्स पढ़ने को दी।" उनकी मैडम उन्हें खुद किताबें निकाल कर देती हैं। हम बच्चों पर कब विश्वास कर पाएँगे? कभी-कभी शिक्षकों व विद्यालय की समझदारी देखकर घोर अफ़सोस होता है। विद्यालय व शिक्षकों का बच्चों के जीवन पर सर्वाधिक असर पड़ता है। हो सकता है किन्हीं कारणों से किसी बच्चे के घर का वातावरण उतना संवेदनशील व रचनात्मक न हो जितना कि बच्चे के सम्पूर्ण स्वस्थ विकास के लिए आवश्यक है। लेकिन विद्यालयों की स्थापना तो इन्हीं मूल्यों को पोषित करने के लिए की

गयी है। मेरा मानना है कि विद्यालय के समस्त क्रियाकलापों में बच्चों के स्तर के अनुकूल उनकी भागीदारी सुनिश्चित होनी चाहिए। फिर चाहे वह साफ़-सफ़ाई हो या किसी कार्यक्रम का नेतृत्व करना हो। दरअसल विद्यालय एक सामुदायिक संस्थान होने के नाते बच्चों को बहुत-सी बातें व्यवहारिक रूप से सिखा पाने में सक्षम हैं। जैसे कि सामुदायिक चीज़ों का उपयोग व देखभाल करना। जब बच्चे अपनी मनपसन्द किताबें खुद निकाल कर पढ़ते हैं तो वे अपनी चयन की स्वतन्त्रता पर खुशी महसूस करते हैं। उनमें अपनी किताबों, स्कूल व शिक्षकों के प्रति प्रेम व अपनापन बढ़ता है। तब वे किताबों के प्रति लापरवाह होने के बजाए उनकी सुरक्षा करते हैं। किसी किताब के फट जाने पर डरते या छुपाते नहीं उसे ठीक करते हैं। ऐसा मुझे अपने स्कूल के बच्चों के साथ महसूस होता है।

पुस्तकालय का उपयोग किसी भी विद्यालय के महत्त्वपूर्ण संसाधन के तौर पर किया जाना चाहिए। जहाँ बच्चों के स्तर व रुचि की बहुत-सी श्रेष्ठ किताबें हों और बच्चे उनका उपयोग कर पा रहे हों। बच्चे अपने परिवेश, देश, समाज, संस्कृति के बारे में जितना अधिक पढ़ेंगे उनकी समझ उतनी ही ज़्यादा विकसित होगी। वे स्वप्रेरित रूप से पढ़ने के लिए तैयार होंगे। हम शिक्षकों का दायित्व है कि बच्चों को रट्टू तोता बनाने के बजाए स्वतन्त्र चिन्तन करने के लिए प्रेरित करें, जिससे उनमें एक स्वतन्त्र व्यक्तित्व व चिन्तनशील मन के रूप में उत्तरोत्तर विकास करने की सम्भावना बनी रहे।

३.५.१२

आज प्रधान अध्यापिका दीदी मनेरी में प्रेरकों के कार्य का ऑडिट करवाने गयी हैं। सुबह विद्यालय आने पर देखा अंजली और शिवानी क्यारी में फूलों के पौधे लगा रही हैं, अन्य बच्चे खेल रहे हैं। कल दोपहर कक्षा-4 और 5 का कमरा साफ़ करना रह गया था, तो विशाल, मनोज ओर योगेश उसे साफ़ कर रहे थे। प्रार्थना सभा का समय होने पर हमने प्रातः कालीन गतिविधियाँ की। नवीन 3 दिन बाद स्कूल आया है। वह गेहूँ की फ़सल काटने, सुखाने आदि में व्यस्त था। उसने समाचार सुनाये। आरज़ू ने "चिड़िया और समुद्र" वाली कहानी सुनायी। कहानी के बीच में चिड़िया को मासूम चिड़िया कहती रही। आज बहुत सारे बच्चे गन्दे कपड़ों में थे। बच्चों से बार-बार व्यक्तिगत व आसपास की सफ़ाई के बारे में बात करनी पड़ती है। बच्चों के जीवन में वही आदतें, चीज़ें व गतिविधियाँ ज़्यादा असरदार होती हैं जो विद्यालय, घर व समुदाय में समान रूप से अपनायी जाती हैं। विद्यालय में बार-बार

सफ़ाई की बातें करने पर और इसके लिए साबुन, पानी, तेल, कंघा, नेलकटर आदि जुटाने पर भी यह सब ज़्यादा कारगर नहीं हो पाता है क्योंकि घर पर यह सब आदतों और दिनचर्या में शामिल नहीं होता है। दिव्या, अंजली व कई बच्चों को कई दिनों से खुजली हो रही है। बगल में अस्पताल होने पर भी माता-पिता को दवाई लाने की फुर्सत नहीं है।

जिन गतिविधियों का सम्बन्ध सिर्फ़ विद्यालय स्तर तक ही सीमित है और जो लगातार दो वर्ष से बच्चों के दैनिक कार्य का हिस्सा बन हुई है उन्हें बच्चे खुशी-खुशी करते हैं। जैसे रोज़ सुबह बाहर ब्लैकबोर्ड पर समाचार लिखना, आज का सवाल के जवाब लिखना, पुस्तकालय का उपयोग आदि। सांस्कृतिक बदलाव एक धीमी प्रक्रिया है। साफ़-सफ़ाई, समाजीकरण की एक लम्बी प्रक्रिया है। कृषक समाजों में सफ़ाई के वे मापदण्ड नहीं है जो तथाकथित सभ्य शहरी समाजों के मानक हैं। हमारे विद्यालय एवं शिक्षा, शहरी सभ्य मानसिकता की परिचायक है जो साफ़ सफ़ाई के मामले में तो ठीक ही जान पड़ती है।

आज आईशा ने समाचार लिखे - आजकल खेतों में गेहूँ पक गये हैं। कुछ खेतों के गेहूँ हरे हैं। चक्की भी लग गयी है। पेड़ों पर नये-नये पत्ते लग गये हैं। हमारे विद्यालय की क्यारियों में भी सुन्दर-सुन्दर फूल खिले हैं और हमने कुछ नये पौधे लगाये हैं। आज का मौसम सुहाना है। धूप खिली है। कल गाँव में भुवनेश्वरी संस्था वाले आये थे उन्होंने नाटक दिखाया और शिक्षा के बारे में जानकारी दी। आज बड़ी मैडम मनेरी गयी हैं। मैंने इसमें जोड़ा कल हमारे नए राज्यपाल श्री अजीज कुरैशी जी ने कार्यभार ग्रहण किया। हमारी पूर्व राज्यपाल श्रीमती मारग्रेट अल्वा स्थानान्तरित होकर राजस्थान चली गयी हैं।

१२.५.१२

मध्यान्तर में कक्षा-2 की सिमरन, अंशिका, प्रेरणा रोजाना की तरह आकर कहने लगीं, “हमें लाइब्रेरी में किताब पढ़नी है।” ये लड़कियाँ बार-बार लाइब्रेरी जाना चाहती हैं। इन्हें इनकी मनचाही किताबें निकाल कर दीं।

मध्यान्तर के बाद कक्षा-1 व 2 के बच्चों को बालसखा कक्ष में ले गयी। हमने कंकड़, पत्थर व गुटकों की मदद से गणित की गिनने व समूह ढेरियाँ बनाने की गतिविधियाँ कीं। बच्चों ने गतिविधियाँ करने के बाद ब्लैकबोर्ड पर संख्या एवं गिनती भी लिखी। मैं दूर से बच्चों के लिखने का क्रम व पैटर्न देख रही थी। अंशिका व सिमरन आराम से चाक को दबाकर व

पर्याप्त समय लेकर अंक लिख रही थीं जबकि राजेश की चाक पकड़ने में बिल्कुल भी मजबूती नहीं थी। राजेश अपनी कॉपी में भी ऐसे ही लिखता है।

रीतिका और प्रेरणा ने 5-5 पत्थरों की पंक्तियाँ बनायी। धीरे-धीरे बच्चे ऐसे ही जोड़, घटाना व पहाड़े सीख जाएँगे।

नये आये बच्चों में इस कमरे को लेकर बहुत आकर्षण है। वे खेल-खेल में लकड़ी के गुटकों से बड़ी-बड़ी आकृतियाँ बना लेते हैं। जिसमें गुटकों का आकार व भार का सन्तुलन मायने रखता है।

बाद में उन्हें "बिल्ली के बच्चे" की कहानी सुनायी। जब कक्षा-1, 2 की छुट्टी हो गयी तो कक्षा-5 के साथ भिन्न की गतिविधियाँ कीं। छोटी-बड़ी भिन्न और समतुल्य भिन्न को टीएलएम की मदद से करके देखा। कक्षा-3 और 4 के साथ हासिल वाले घटाने के सवाल हल किये। लगता है कुछ दिनों में सबको हासिल के घटाने आ जाएँगे। हमने इबारती प्रश्नों की मदद से घटाने के सवाल बनाये। बच्चों ने जब खुद प्रश्न बनाये तो बड़े -छोटे अंकों का ध्यान नहीं रखा। आज कक्षा में इस विषय पर भी बात की कि जब हम घटाने के सवाल बनाते हैं तो किन-किन बातों का ध्यान रखना है? बच्चे छोटी संख्याओं में तो ये बात जानते हैं। आज हमने हज़ार व दस हज़ार की संख्याओं के साथ अभ्यास किया। हमने उन सवालों का भी अभ्यास किया जिनमें बार-बार हासिल लेना पड़े। ऐसे सवाल बच्चे खुद कैसे बनाएँगे ये बात बच्चों को बतायी।

१५.८.१२

पिछले दिनों 3 अगस्त को आयी भीषण बाढ़ ने सब कुछ अस्त-व्यस्त कर दिया है। गंगोरी का मुख्य पुल बह गया जिससे हम स्कूल नहीं आ पाये। बच्चों और स्कूल की खबर फ़ोन से ही पता चली। आजकल नदी पर एक लकड़ी के पटरों वाला अस्थायी पुल बना है। इसी से आज नदी पार करके स्कूल आये। स्यूँणा गाँव का स्कूल पूरी तरह खत्म हो गया है। संगमचट्टी घाटी में बेहद नुकसान हुआ है। खेत, घर, पशु और जन हानि, हर तरह का नुकसान अगोड़ा-ढासड़ा क्षेत्र से शुरू होकर उत्तरकाशी ज्ञानसू तक हुआ है। कुछ नुकसान प्रकृति ने किया है बाकी इन्सान ने भी कोई कसर नहीं रखी है, आपदा लाने में। नदी खोद-खोद कर घर व होटल बनाये हैं। नदी बेचारी क्या करे उसे तो बहने के लिए रास्ता चाहिए ही ! खैर...

आज हमारे साथ जगमोहन चोपता भी स्कूल में आये। रास्ते में आपदा के कारण नुकसान नहीं हुआ होता तो चारों तरफ़ सावन का सौंदर्य भरा होता। आज सारे बच्चे विद्यालय आये थे।

गणेशपुर गाँव में बरसात से कोई नुकसान नहीं हुआ है। गाँव वालों से मिलकर उनकी खैरियत जानी। हमारे विद्यालय के पीछे वाले मकान में भी कुछ आपदा पीड़ित परिवार आये हैं। उनकी कुशलता जानी।

बच्चों के साथ मिलकर स्वतन्त्रता दिवस मनाया।

१६.८.१२

जिलाधिकारी महोदय ने आपदा पीड़ित क्षेत्र के विद्यालय की कुछ दिनों तक छुट्टी कर दी है। नदी पर बना अस्थायी पुल टूट गया है जिससे नदी पार कर गणेशपुर जाना नामुमकिन हो गया है।

३.९.१२

आज अनुमानतः एक माह बाद फिर से विद्यालय लगा है। बच्चों की पढ़ाई का एक माह का नुकसान हुआ है। आज सुबह के सत्र में कक्षा 3, 4, 5 के बच्चों के साथ पिछले दिनों आयी आपदा पर बातचीत की। हमने आपदा से सम्बन्धित कब, क्यों, कहाँ और कैसे आदि पहलुओं पर चर्चा की। कक्षा 5 और 4 के ज़्यादातर बच्चे अपने घर के किसी बड़े या दोस्तों के साथ जाकर गंगोरी देख आये थे। गंगोरी, गणेशपुर से 2 किलोमीटर की दूरी पर भागीरथी और एक छोटी नदी असी-गंगा के मुहाने पर स्थित है। नवीन और मनीष हर दूसरे-तीसरे दिन बड़े लड़कों के साथ गंगोरी जाकर वहाँ के हालात देख आते थे। इनके पास ब्यौरेवार जानकारियाँ थीं। नवीन बड़े उत्साह से बता रहा था, कब, कहाँ, क्या हुआ और क्यों हुआ ? मैंने बच्चों से पूछा, “आपदा से पहले किस किसने गंगोरी देखा हुआ था ? ” सबने हाथ उठा लिये और बताने लगे कि वे कब-कब, किसके साथ गंगोरी गये थे ? मैंने उनसे पूछा, “पहले की गंगोरी और अब की गंगोरी में क्या-क्या अन्तर है?”

बच्चों ने बताया:

"पुल बह गया है। तीन बार पुल बनाया वो बह गया। उसमें एक आदमी भी मर गया। आजकल नया वैली पुल लगा है। पार्क बह गया, दुकानें बह गयीं, सड़क बह गयी, घर बहे, नाई की दुकान बह गयी, वगैरह।" ज़्यादातर बच्चे बाल कटाने व चाऊमिन खाने के बहाने गंगोरी जाते हैं।

मैंने बच्चों से पूछा, "क्या वो पहले वाली गंगोरी और अब वाली गंगोरी के चित्र बना सकते हैं?" उन्होंने हामी भरी और अपनी कॉपी पर दो चित्र बनाये। पहले वाले चित्र में बाज़ार, पुल, बच्चे, पार्क आदि थे तो दूसरे में बाढ़, नदी, टूट-फूट, अव्यवस्था, टूटे मकान-दुकान आदि चीज़ें थीं।

बच्चों ने अपने-अपने अनुभव लिखे।

उस दिन क्या हुआ? उन्हें कब पता चला कि गंगोरी में बाढ़ आयी? उन्होंने गंगोरी में जाकर क्या-क्या देखा व उन्हें क्या लगा? आदि।

हमने बाढ़, बादल फटना, नदी में अचानक ज़्यादा पानी आना आदि मुद्दों पर कक्षा में बातचीत की।

४.९.१२

आज कक्षा 3, 4 और 5 के बच्चों के लिए गणित की कार्य योजना बनायी जिसमें गुणा को प्रमुखता दी। मैं अगले 20-25 दिन इसी योजना पर काम करूँगी। सुबह के सत्र में आधा समय गणित व आधा हिन्दी को देना है। गणित में बच्चों के स्तर अनुसार उनकी कॉपी पर सवाल दूँगी व हिन्दी में कक्षावार समूह कार्य होगा।

गणित में मेरे पास 4 तरह के बच्चे हैं।

1. छोटी-बड़ी संख्याओं का गुणा करने का तरीका जानते हैं परन्तु इबारती प्रश्नों को समझ नहीं पाते-
2. गुणा के सवाल हल करना जानते है पर शून्य या हासिल लेते समय गड़बड़ कर देते है। स्थानीय मान की अवधारणात्मक समझ नहीं है।
3. पहाड़ों की अवधारणा से परिचित नहीं हैं।
4. गुणा की मूलभूत समझ ही नहीं है।

मैंने बच्चों को उपर्युक्त आकलन के आधार पर चार समूह में बाँटा। उनके स्तर अनुसार दो-दो सवाल ब्लैकबोर्ड पर लिखे। जब बच्चे सवाल हल कर चुके, तो उन्हें एक दूसरे के उत्तरों को जाँचने और नये सवाल बनाने को कहा।

मैंने सबसे कमज़ोर समूह के साथ काम किया। मेरा प्रयास रहेगा कि कुछ दिन इसी तरह काम हो। मैं प्रत्येक समूह के साथ थोड़ा-थोड़ा काम करूँ और बच्चे समूह में एक दूसरे के साथ सीखें। मैंने पाया है कि बच्चे समूह में अच्छे से काम करते हैं और सवालों के जवाब समझने में एक दूसरे की बेहतर मदद कर पाते हैं। चूँकि बच्चों के सोचने और समझने का तरीका वयस्कों से अलग होता है इसलिए वे एक दूसरे की समस्याओं और दुविधाओं को बेहतर तरीके से समझ पाते हैं। आज भवानी ने आकर मुझसे कहा कि वह इबारती सवाल हल करना सीख गयी है और दिव्या ने उसकी मदद की है।

५.९.१२

बच्चे पुस्तकालय की पुस्तकों का बहुत अच्छी तरह उपयोग कर रहे हैं। वे उन्हें खुद ही निकालते हैं, रजिस्टर में नोट करते हैं, स्कूल में पढ़ते हैं और घर भी ले जाते हैं। इन किताबों को पढ़ने का प्रभाव उनकी अन्य गतिविधियों पर भी पड़ता दिख रहा है। उनकी पढ़ने-लिखने की रुचि बढ़ी है। ऐसे बच्चे जो हिन्दी पढ़ने-लिखने में कमज़ोर हैं, वे भी इन किताबों का अच्छा उपयोग करते हैं। वे इन किताबों में बने चित्रों और अपने साथियों की मदद से पूरी कहानी जान जाते हैं। छोटे बच्चे कई बार मेरे पास किताब लेकर आते हैं और उसे पढ़कर सुनाने को कहते हैं।

मेरे मन में यह विचार आया है कि क्यों न इन किताबों का उपयोग पाठ्य पुस्तक के साथ करके किसी पाठ के उद्देश्य को और समृद्ध किया जाए। किसी एक सन्दर्भ पर अन्य सन्दर्भों के साथ बातचीत करके उसे सामाजिक, सांस्कृतिक, पर्यावरणीय आदि दृष्टिकोणों से भी देखा-समझा जाए। मैंने अपने पुस्तकालय की लगभग सभी पुस्तकें पढ़ी हैं। इनमें बहुत-सी पुस्तकें ऐसी हैं जिनका उपयोग पाठ्य पुस्तक के साथ बहुत ही सहजता से किया जा सकता है।

आज इसी काम के लिए नयी कार्य योजना बनायी। योजना है कक्षा-4 और 5 के बच्चों को हिन्दी की पाठ्य पुस्तक पढ़ाते समय पुस्तकालय की पुस्तकों का उपयोग करना। उदाहरण स्वरूप कक्षा चार में "एक हजार बाल्टी पानी" नामक पाठ है जिसमें व्हेल मछली और एक

बच्चे की कहानी है। इस पाठ के साथ मछली, पानी व समुद्र से सम्बन्धित कुछ अन्य किताबों जैसे "तीन मछली," "मच्छो मछली", और "मछलियाँ तैरती कैसे हैं?" आदि पुस्तकों का उपयोग हो सकता है।

इसके लिए पुस्तकें छाँटने में बच्चों की मदद भी ली जा सकती है। मैंने बच्चों से इस बारे में बात की।

इस काम में कुछ लिखित कार्य भी होगा। इसके लिए बच्चों की एक-एक अलग कॉपी बनायी जो पुस्तकालय में ही रहेगी। ये योजना कुछ इस तरह क्रियान्वित होगी:

पाठ्य पुस्तक से पाठ पढ़ना

पाठ पर विस्तृत कार्य करना

पाठ से सम्बन्धित 4-5 पुस्तकें पुस्तकालय से पढ़ना

पुस्तकों पर कक्षा में बातचीत करना

लिखित कार्य-प्रश्न बनाना, नयी जानकारियाँ लिखना, नये शब्द जानना

समूह में कार्य करना व अन्य साथियों को बताना

बच्चों द्वारा मौलिक लेखन करना आदि

आज मध्यान्तर में बच्चों के साथ मिलकर किताबें छाँटी व उन्हें अलग खाने में रखा। बच्चों को बताया कि वे जिस खाने में से किताबें निकालेंगे तो वहीं वापस रखेंगे।

मध्यान्तर के बाद भी आज इसी विषय पर काम किया। हमने बारिश पर पाठ्य पुस्तक से कविता पढ़ी फिर पुस्तकालय से बारिश से सम्बन्धित कविताएँ ढूँढ़ीं। कुल 32 कविताएँ मिलीं जिन पर बारिश के अलग-अलग रंग रूप है।

किताबें छाँटते हुए बच्चे बीच-बीच में कहने लगे, ये किताबें उस पाठ के साथ काम आ सकती हैं। इस तरह वे इन किताबों को अलग रखने लगे। कुछ बच्चे अपनी पहले पढ़ी किताबों को याद करके उन्हें ढूँढ़ने लगे।

पूरे पुस्तकालय में किताबें ही किताबें फैली थीं। तीन पाठों के लिए मध्यान्तर में किताबें छाँटी थीं। तीन चार पाठों के लिए बच्चों ने खुद ही किताबें छाँट लीं। बच्चे जान गये थे कि

उन्हें अपने पाठों से मिलती-जुलती किताबें छाँटनी हैं। अब कल से इस पर व्यवस्थित काम होगा। गणित में समूह कार्य आगे बढ़ाया।

२९.९.१२

आजकल मैं विद्यालय में अकेली हूँ, तो सुबह कक्षा-4 और 5 के साथ भाषा शिक्षण व पुस्तकालय वाली गतिविधि कर रही हूँ।

पिछले दिनों पुस्तकालय वाली गतिविधि में अच्छा काम हुआ है। बच्चों में समझकर पढ़ने, प्रश्न पूछने, प्रश्न लिखने का कौशल बढ़ा है। बच्चों की किसी सन्दर्भ पर बात करने की योग्यता बढ़ी है। समूह में काम होने से ज़्यादा पुस्तकों का उपयोग हो रहा है। बच्चे इन सन्दर्भों का उपयोग अपनी बात कहने, अवलोकन करने, अपनी कहानी व कविता लिखने में भी कर रहे हैं।

गणित में हम छोटे समूहों से बड़े समूह में लौट आये हैं। केवल 2-3 बच्चों को अलग से काम देना पड़ रहा है। कक्षा 3 के बच्चे अपनी पाठ्य पुस्तक से काम कर रहे हैं। कक्षा 2 भी कक्षा 3, 4, 5 वाले कमरे में बैठकर ही काम कर रही है। जबकि कक्षा-1 के बच्चों के साथ मैं बारी-बारी बड़ी कक्षाओं के बच्चों से काम करवा रही हूँ।

३.१०.१२

बच्चे एक दूसरे के संग सीखते हैं।

आज जब मैं मध्यान्तर के बाद सृजनात्मक वादन में बच्चों के साथ बात कर रही थी, तभी कक्षा एक की रीतिका व कक्षा दो सिमरन मेरे पास आकर बोली, “हम डांस दिखाना चाहते हैं, कविता सुनाना चाहते हैं।” मैंने कहा, “सुनाओ” तो 6-7 बच्चे खड़े होकर, हावभाव के साथ हाथ दवा है, हाथ दुआ है, वाला गीत गाने लगे। उन्हें गीत गाता देख कक्षा-1 व 2 के बाकी बच्चे भी आकर उनका साथ देने लगे। मेरे आश्चर्य की सीमा न रही। इन्हें मैंने कब गीत सिखाया, फिर वे बोले, “हम डांडागाँव वाला गीत करके दिखाएँ।” और हाँ का इन्तज़ार किये बिना रितिका, सिमरन, प्रेरणा, श्वेता, ऋतु एवं रवि फटाफट खड़े हुए और गीत गाते हुए नृत्य करने लग। क्या सुन्दर नृत्य-भाव! कौन न मोहित हो इन मासूमों पर! मन खुश

हो गया। बहुत-बहुत खुश! नवीन ,दिव्या, मनीषा आदि सब बड़े बच्चे अपना-अपना काम छोड़ इनका डांस देखने लगे।

मैं सोचने लगी मैंने तो इन्हें ये गीत नहीं सिखाये थे। इन्होंने ये सब कैसे सीखा?

जब मैं कक्षा 3, 4 और 5 के बच्चों के साथ इन दो गीतों की प्रैक्टिस करवा रही थी तो ये नन्हे दर्शक सिर्फ़ देख नहीं रहे थे वरन सूक्ष्म अवलोकन कर रहे थे, तभी तो न सिर्फ़ गीतों के बोल बल्कि एक्शन भी हूबहू कर रहे थे।

कक्षा-कक्ष शिक्षण में भी आजकल कक्षा 2 ,कक्षा 3, 4, 5 के साथ ही बैठती है। ऐसे में जब मैं बड़े बच्चों के साथ संवाद कर रही होती हूँ तो मौका मिलते ही छोटे भी अपनी बात कह देते हैं। सुबह की सभा में भी छोटे बच्चे हर तरह की गतिविधियों में भाग लेना चाहते हैं। समाचार बोलने से लेकर गीत-कविता, कहानी तक में बार-बार हम बोलें जी, हम बोलें जी, हाथ उठा-उठा कर बड़ों की छुट्टी कर देते हैं।

आज रितिका (कक्षा-1) ने “लालू और पीलू” कहानी सुनायी। उसने बीच में अपने संवाद भी डाले जैसे माँ ने लालू से पूछा

“क्या हुआ बेटे ?

माँ रुको ,मैं पीला-पीला गुड़ लाता हूँ।”

रितिका बहुत होनहार बच्ची है वह हर गतिविधि में बढ़-चढ़ कर भाग लेती है।

४.१०.१२

आज मध्यान्तर में बच्चे खेल रहे थे। मैं बाहर बैठी किताबें पढ़ रही थी। सलोनी (कक्षा-1) मेरे पीछे से आकर किताब के चित्र देखने लगी। उसकी देखा-देखी और बच्चे भी आ गये और मुझसे चिपक-चिपक कर किताब देखने लगे। मैंने पूछा ,क्या है? यहाँ क्यों आये तुम सब? जाओ जाकर खेलो। वे नहीं माने एक दूसरे को देख मुस्कराने लगे।

अच्छा कहानी सुनोगे। हाँ, सबने कहा। ठीक है बैठ जाओ। वे मेरे पैरों से सटकर बैठ गये। मैंने उन्हें कहानी सुनायी “मुफ़्त ही मुफ़्त”।

कहानी बड़ी मज़ेदार है, इसलिए उन्हें खूब मज़ा आया।

५.१०.१२

सुबह की सभा कभी-कभी बहुत अच्छी होती है। यदा-कदा मौसम की वजह से बच्चे छितर जाते हैं तब उतना मज़ा नहीं आ पाता। स्कूल में जगह कम है। बच्चों को धूप लगती है। एक बड़ा कमरा भी नहीं है कि सभी बच्चे एक साथ अच्छे से अन्दर बैठ जाएँ। फिर भी कुछ चीज़ों की बच्चों को आदत पड़ गयी है। जैसे कि सुबह की सभा में गाँव के समाचार सुनाना एवं अपनी पसन्द की कविता और कहानी सुनाना। पाठ्य पुस्तकों के साथ पुस्तकालय की किताबों को मिलाकर अच्छा काम हो रहा है। मैं इसे पूरे वर्ष करना चाहूँगी। हालाँकि इसमें काफ़ी वक्त लगता है क्योंकि बच्चे किताबें छाँटते हुए भी पढ़ते हैं और पूरे कमरे में किताबें बिखरा देते हैं। बच्चों के साथ साँझी सम्पत्ति की देखभाल पर भी बात करनी पड़ती है। जैसे-जैसे काम आगे बढ़ रहा है, बच्चे पाठ्य पुस्तकों की विषयवस्तु से सन्दर्भित अधिकाधिक किताबें छाँटने का प्रयास कर रहे हैं। मैंने तय किया है कि किताबें छाँटने का काम बच्चे बारी-बारी से सिर्फ़ मध्यान्तर में ही करेंगे।

यदि किताबें आकर्षक हों और बच्चों के स्तर को ध्यान में रख कर लिखी गयी हों तो बच्चे उन्हें ज़्यादा से ज़्यादा पढ़ना चाहते हैं। चूँकि अधिकांश पुस्तकें भाषा की हैं और गणित की पुस्तकों का अभाव है इसलिए गणित के लिए जितना समय और संसाधनों की ज़रूरत है उतना हम जुटा नहीं पाये हैं। ऐसे में ज़रूरी है कि गणित विषय में काम करने के लिए पर्याप्त समय निकाला जाए। अँग्रेज़ी विषय पर भी कुछ न कुछ काम करना ही है। तो ऐसे में ज़रूरी है कि विषयों के बीच में स्वाभाविक एकीकरण तलाशने की कोशिश की जाए। मुझे लगता है कि मेरी अपनी सीमाएँ है, मैं जितना सोच-विचार भाषा शिक्षण में कर पाती हूँ उतना सम्भवतः अन्य विषयों में नहीं कर पाती। और अँग्रेज़ी भाषा पर तो मेरी खुद की पकड़ काफी कमज़ोर है।

१०.१०.१२

आज से भाषा शिक्षण पर सेवारत प्रशिक्षण प्रारम्भ हुआ।

इस बार के प्रशिक्षण का मुख्य आकर्षण हैं शिक्षण में गतिविधियों का महत्त्व। प्रशिक्षक महोदय ने सामान्य-सी कुछ गतिविधियाँ करवायीं। वे गतिविधियों को नवीन सन्दर्भों के साथ जोड़ नहीं पा रहे थे। हालाँकि वे अपनी ओर से पूरा प्रयास कर रहे थे।

आज एपीएफ़ से जगमोहन चोपता भी आये थे। जगमोहन जी ने एक समूह गतिविधि करवायी जिसमें समूह के सारे व्यक्तियों को मिलकर एक मशीन बनकर कार्य करते हुए खुद को प्रस्तुत करना था। बड़ा मज़ा आया। बाद में उन्होंने इस गतिविधि पर विस्तृत चर्चा भी करवायी। चर्चा का सार मशीनों के विभिन्न भागों की उपयोगिता को समझना एवं प्रत्येक भाग के विशेष महत्त्व को रेखांकित करना था। साथ ही इस तरीके के दौरान बातचीत के माध्यम से पूरी प्रक्रिया को समझाना भी था। वास्तव में इस प्रकार की सामूहिक गतिविधियाँ भाषा-शिक्षण का महत्त्वपूर्ण भाग होती हैं। जगमोहन ने इस दौरान सभी शिक्षकों से ढेर सारी बातचीत की। इस दौरान मैंने पाया कि शिक्षक साथी रुचि ले रहे थे।

वास्तव में बातचीत के माध्यम से बहुत-सी अवधारणाओं को सहज रूप से समझा जा सकता है। बातचीत एक प्रकार से सोच-विचार करने की दिशा में ले जाती है और इस दौरान सीखना प्रभावी होता है। परन्तु बातचीत वही व्यक्ति आगे बढ़ा पाता है जिसकी विषयवस्तु पर पकड़ होती है या फिर वह पूरे संवाद के दौरान कुछ सीखना चाहता हो। मुझे लगता है हम अधिकांश शिक्षक साथियों को शिक्षण का पेशा खास रोमांचित नहीं कर पाता, तभी तो ज़्यादातर शिक्षक हिन्दी भाषा के प्रशिक्षण को फ़िज़ूल समझते हैं। उन्हें लगता है इसमें क्या सीखना है? नयी बात क्या है? पर जब उनसे भाषाई कौशलों पर बात होती है तो वे लिखने, पढ़ने से आगे नहीं बढ़ पाते हैं।

हम लोग भाषा को सोचने, विचार करने, तर्क करने, कल्पना करने, प्रश्न करने, अवलोकन करने आदि से जोड़कर नहीं देख पाते हैं। ऐसा लगता है हमें सब पता है पर वास्तव में पता नहीं होता है। हमारे पास न तो अपनी बात बताने के लिए वाक्य हैं न ही हम कुछ बताना ही चाहते है! ज़्यादातर शिक्षक चाहते हैं कि मास्टर ट्रेनर महोदय कुछ बातें आगे से बता दें और वे उसे नोट भर कर लें।

इस मॉड्यूल के पिछले कवर पर मेरी कविता “भाषा” दी गयी है। देखकर संकोच भरी खुशी हुई लेकिन किसी ने उस पर कोई बात नहीं की। सेवारत प्रशिक्षणों पर वर्ष भर में ढेर सारे संसाधन खर्च होते हैं परन्तु इनका प्रभाव काफी सीमित है। मैं स्वयं के सन्दर्भ में देखूँ तो पाती हूँ कि मैंने वर्ष में 10 दिन चलने वाले प्रशिक्षणों से विशेष लाभ अर्जित नहीं किया है। एक तो ये प्रशिक्षण सूचना देने के तौर पर ही संचालित होते हैं। दूसरे, विचार-विमर्श के लिए जगह कम होती है और किसी तरह मॉड्यूल पूरा करना पहली प्राथमिकता होती है। प्रशिक्षण देने वाले सुगमकर्ताओं की अपनी सीमाएँ हैं। एक ही व्यक्ति समावेशी शिक्षा से लेकर नवाचारी शिक्षा की बात बिना ठोस अनुभवों के प्रवचनकर्ता की तरह करता है। हालाँकि कई बार लगता है, मुझे कहना चाहिए कि मुझे समझ नहीं आ रहा परन्तु अपने ही शिक्षक साथियों के बीच उपेक्षा का भाव देख कर भीतर ही भीतर असन्तोष पैदा करने के अलावा कुछ कर नहीं पाती। हालाँकि मैं अपने साथ असन्तोष को लम्बा नहीं चलने देती हूँ। विद्यालय में अपने तरीके से बच्चों के साथ संवाद करने की कोशिश करती हूँ ताकि उनमें सवाल उठाने की काबिलीयत पैदा हो।

३०.१०.१२

प्रशिक्षण और दशहरे की छुट्टियों के बाद आज विद्यालय पहुँची। प्रार्थना सभा में बच्चों से उनकी छुट्टियों के अनुभवों के बारे में जाना। बाद में कक्षा 3, 4 और 5 को उनके छुट्टियों के अनुभव भी लिखाये। छुट्टियों में ज़्यादातर बच्चे लकड़ी व छिन्तियाँ - चीड़ के सूखे, झड़े फल जो जलाने के काम आती हैं - लेने जंगल गये थे। आजकल खेतों में गेहूँ, सब्ज़ी आदि की बुआई का काम भी चल रहा है इसलिए बच्चे खेतों में भी खूब मदद कर रहे हैं। मैं कुछ दिनों की छुट्टी पर थी जिसका असर पूरे विद्यालय और बच्चों पर दिख रहा है, मुझे खूब खीझ हो रही है।

४.११.१२

आज अनौपचारिक शिक्षक समूह की ब्लॉक स्तरीय बैठक में शामिल होने बड़कोट, पुरोला गयी। यहाँ हमारी यह पहली बैठक थी। अनौपचारिक समूह की अवधारणा हेमराज भट्ट ‘बालसखा’ की स्मृति में हुई प्रथम संगोष्ठी के समय पनपी थी। हेमराज भट्ट एक ऊर्जावान

शिक्षक थे और उनकी पहचान पढ़ते-लिखते रहने वाले शिक्षक की थी। वे अपने दैनिक अनुभवों को लिखते थे और बच्चों के लिए बाल कहानी और कविताएँ लिखना उनके शिक्षा कर्म का ही हिस्सा था। नवम्बर 2008 में एक सड़क दुर्घटना में उनकी असमय ही मृत्यु हो गयी थी। वे स्वयं को बालसखा कह कर सम्बोधित करते थे। बालसखा के कार्यों व विचारों से प्रेरणा पाने हेतु कुछ साथियों ने यह निश्चय किया था कि प्रतिवर्ष किसी न किसी शैक्षिक विषय पर एक संगोष्ठी करेंगे। उस समय मैंने, राजीव शर्मा, कृष्ण कुमार आदि ने मिलकर इस संगोष्ठी के लिए बहुत मेहनत की थी। कई शिक्षक साथियों व समुदाय के अन्य व्यक्तियों से बातचीत की थी। संगोष्ठी के सफल आयोजन के बाद ये विचार परिपक्व हुआ था कि शिक्षक साथी माह में एक बार अनौपचारिक बैठक करेंगे और अपनी शैक्षिक गतिविधियाँ साझा करेंगे।

उत्तरकाशी में अनौपचारिक शिक्षक समूह का गठन करने का विचार अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन का था। इससे पहले रचनात्मक शिक्षक मण्डल राज्य स्तर पर इसी प्रकार का काम कर रहा था। कुछ अन्य समूह भी अपने-अपने स्तर पर सक्रिय थे। वास्तव में जब एक ही पेशे से जुड़े लोग अपने अनुभव और सीखने-सिखाने के तरीकों को साझा करते हैं तो इसमें वे एक दूसरे से परस्पर सीख रहे होते हैं। इस तरह से सीखना किसी भी सेवाकालीन प्रशिक्षणों से ज़्यादा कारगर हैं। हालाँकि सेवाकालीन प्रशिक्षण भी सम्भवतः आपस में एक दूसरे से सीखने के विचार के इर्द गिर्द ही बुने गये होंगे। परन्तु अपने अनुभव के आधार मैं कह सकती हूँ कि सेवाकालीन प्रशिक्षण किसी भी मायने में 'प्रवचन सभा' से भिन्न नहीं होते। उत्तरकाशी में अनौपचारिक शिक्षक समूह समय-समय पर बैठक करता रहा है और शिक्षक साथी अपने विद्यालय में हुई शैक्षिक गतिविधियों की जानकारी साझा करते रहे हैं। इसी क्रम में पिछले वर्ष ऊधम सिंह नगर वाला समूह उत्तरकाशी आया था। भटवाड़ी में हुई अनौपचारिक शिक्षक समूह की शुरूआत की तर्ज़ पर अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथियों ने अन्य ब्लॉकों में भी समूह बनाये हैं। हमारे समूह ने पिछले वर्ष तय किया था कि हम ऊधम सिंह नगर जाएँगे। फिर तय हुआ, पहले अपने ज़िले के अन्य समूहों से मिल लें।

सुबह 8 बजे हम उत्तरकाशी से चले। दोपहर एक बजे के करीब बड़कोट पहुँचे। धरासू बैण्ड से चिन्यालीसौड़ व डुण्डा के चार साथी भी हमारे साथ हो लिये, जिनमें चिन्यालीसौड़ से मोनिका भी थी जिसे देखकर मन खुश हो गया। मोनिका मेरे साथ सेवा पूर्व शिक्षक प्रशिक्षण की सहपाठी थी और हम लोग कई सालों के बाद मिल रहे थे। बड़कोट के अनौपचारिक शिक्षक समूह ने हमारा स्वागत किया। हम लोगों ने विगत वर्ष में हुए समूह क्रियाकलापों को

साझा किया। खरोला जी ने अपनी बात रखी और कहा कि समूह के साथियों से संवाद करते हुए उन्होंने अपनी गणित शिक्षण की विधाओं में बदलाव किया है। वे बच्चों के साथ मिल कर सहायक शिक्षण सामग्री का निर्माण करते हैं और इस प्रकिया में बच्चे गणितीय अवधारणाओं को बेहतर तरीके से सीखते है। बड़कोट के साथियों ने भी अपनी बात रखी। सब कुछ अच्छा रहा, सारे शिक्षक ऊर्जा से भरे लगे।

अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन के साथी भी बड़े प्रेम-सम्मान से मिले। बड़कोट से पुरोला का 30 किलोमीटर का रास्ता बेहद खूबसूरत था। हालाँकि खेतों में आजकल फसलें नहीं हैं। चार बजे के आसपास पुरोला पहुँचे। बात शुरू होते-होते पाँच बज गये थे। पुरोला के साथियों ने अपने तीन वर्ष के कार्यों के बारे में बताया जिसमें ऐसा लग रहा था समूह समुदाय के बीच अपनी पहुँच बनाना चाहता है। जगमोहन चोपता जी ने भटवाड़ी ब्लॉक के शिक्षक साथियों का परिचय पुरोला ब्लॉक के अनौपचारिक शिक्षक समूह के शिक्षकों से करवाया। भटवाड़ी ब्लॉक सहायक संसाधन समन्वयक रामप्रकाश रावत जी ने भटवाड़ी ब्लॉक में उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों के बारे में अवगत कराया। उन्होंने कहा कि वे भरसक प्रयास करते हैं कि उनकी मासिक बैठकों में शिक्षक साथी अपने अनुभवों को साझा करें और एक दूसरे के अनुभवों से सीखें। इस दौरान मैंने समग्र भाषा शिक्षण विधि से अपने शिक्षण के अनुभव भी साझा किये।

पुरोला ब्लॉक के शिक्षक बलबीर सिंह रावत जी ने **‘बोली बचाओ अभियान’** के अन्तर्गत **‘बंगाणी भाषा बचाओ’** से सम्बन्धित कार्यों पर जानकारी दी। उनकी बातचीत में पहाड़ की विभिन्न भाषाओं के संरक्षण में विद्यालय एवं शिक्षक की भूमिका की तरफ़ इशारा था।

अन्य शिक्षकों की बातचीत से लगा कि शिक्षक साथी हमें प्रतिद्वन्द्वी के रूप में देख रहे हैं। एक साथी ने तो कह ही दिया, ये सब अपने मुँह मिट्ठू बनना है। साथी औपचारिक थे, भावों की कमी थी, लगता था हम बिना बुलाये मेहमान की तरह आ गये हैं। एपीएफ़ के साथियों ने भी शायद आपस में इस यात्रा हेतु अच्छी तैयारी नहीं की थी। यहाँ शिक्षक साथियों ने हमसे मिलने में कोई खास रुचि नहीं दिखायी। हालाँकि समय की भी कमी थी पर भाव समय कहाँ देखते हैं वो तो नज़रें मिलने भर से व्यक्त हो जाते हैं। एपीएफ़ की एक साथी ने कहा, “जब तक शिक्षक खुद के बच्चे सरकारी स्कूल में नहीं पढ़ाते, ये सब बातें व्यर्थ हैं। ”यहाँ पर हमारे अनौपचारिक समूह के साथियों ने मुझे सूत्र सम्मान मिलने की खुशी में एक शाल भेंट की और मेरी एक कविता भी पढ़ी। कितना अच्छा होता अगर ये छोटी-सी घटना मेरे

अपने उन साथियों के बीच होती जिन्हें इसमें रुचि होती। यहाँ तो बस ज़बरदस्ती वाली बात लग रही थी। ज़्यादातर शिक्षकों के लिए यह बात झेलने जैसी लग रही थी, खैर। रात का खाना खाकर मैं, मोनिका, मंजू दीदी और निर्मला दीदी देर रात तक बातें करते रहे। ढेरों बातें, जीवन के विविध रंग लिये।

५.११.१२

आज हमें मोरी ब्लॉक के कुछ विद्यालयों में जाना था। उत्तरकाशी का मोरी ब्लॉक हिमाचल प्रदेश की सीमा पर स्थित है। पुरोला से मोरी का रास्ता बहुत खूबसूरत है। पुरोला ब्लॉक की पूरी घाटी किसी पठारी भू-भाग की तरह लगती है। मोरी ब्लॉक के हनोल नामक स्थान पर महासू देवता का प्राचीन मन्दिर है जिसकी पूरे इलाके में काफी ख्याति है। यहाँ से हम चार समूहों में बँट गये। अब हमें चार अलग-अलग विद्यालयों में जाना था। हमारा समूह राजकीय प्राथमिक विद्यालय मौताड़ में गया। हम मोरी जाने वाले रास्ते में उतर गये फिर वहाँ से लगभग 3 कि.मी. पैदल चलकर विद्यालय पहुँचे। रास्ते में धूल व बजरी थी। कच्ची सड़क वाला रास्ता था। शायद कभी यहाँ नदी या गदेरा बहता रहा हो। नीचे टौंस नदी बह रही थी। बेहद खूबसूरत, चौड़े पाट, चौड़ी घाटियाँ, ऊँचे पहाड़ सब कुछ रूमानी था, मन करता था यहीं ठहर जाएँ।

1964 में बना था राजकीय प्राथमिक विद्यालय मोताड़। यहाँ छात्र संख्या 41 है और दो शिक्षक नियुक्त हैं। आज एक ही शिक्षक उपस्थित थे, दूसरे शिक्षक किसी काम से संकुल संसाधन केन्द्र गये थे।

बच्चे निःसंकोच अपनी बात कह रहे थे। वे हमारे बारे में जानने को उत्सुक थे। तीन, चार और पाँच के बच्चे अपनी पाठ्यपुस्तक पढ़ रहे थे। कक्षा-कक्ष साफ़ सुथरे थे। बच्चों में खुलापन देख कर अन्दाज़ा लगाया जा सकता था कि यहाँ के शिक्षकों को विद्यालय आना अच्छा लगता है। शिक्षकों से बातचीत में अन्दाज़ा हो गया कि शिक्षक अपनी परम्परागत समझ के आधार पर मेहनत से काम करते हैं।

दोपहर के बाद हम सभी साथी वापस पुरोला लौटे। रास्ते में कल की बैठक वाले एक शिक्षक मिले पर उन्होंने ऐसे मुँह मोड़ा मानो हमें जानते भी न हों। यहाँ एक महोदय ने मुझसे पूछा, तुम्हारी प्रा. वि. का नाम क्या है? तुम्हारे विद्यालय में लघु मरम्मत का पैसा आया है या नहीं।

नहीं आया है तो मैं अभी तुम्हारे विद्यालय में 5000 रुपये भेजता हूँ। कल जब तुम अपने विद्यालय की प्रस्तुति दे रही थी तो मैं देख रहा था कि तुम्हारे कक्षा-कक्ष की दीवार का चूना झड़ा हुआ है।

जिस कमरे का ज़िक्र वे कर रहे थे वह 'बालसखा कक्ष' है और वहाँ की छत टपकती है, दो बार ठीक करवा चुके हैं परन्तु सुधार नहीं हुआ है। दीवारों पर सीलन आती है जिससे हमारा काम जल्दी खराब भी हो जाता है। मई में उस कमरे की मरम्मत व रंग-रोगन हुआ था लेकिन जून, जुलाई व अगस्त में हुई भारी बारिश ने फिर से बहुत ज़्यादा सीलन पैदा कर सारा काम खराब कर दिया।

मैंने उन्हें दीवार की पुताई खराब होने का कारण बताया। सोचा पूरे कक्षा-कक्ष शिक्षण के प्रस्तुतिकरण के दौरान उन्हें सिर्फ़ दीवारें ही दिखीं वो भी निचला सीलन वाला हिस्सा। उन दीवारों पर बच्चों का काम नहीं दिखा न ही बच्चों की बातें जिस पर वे अपने कुछ सुझाव दे पाते। उत्तरकाशी पहुँचते-पहुँचते रात के 9.15 बज चुके थे। घर पहुँचकर देखा, बच्चे सो गये थे। सबने खाना खा लिया था। मेरे लिए सब्ज़ी-दाल तो रखी भी पर रोटी नहीं थी। पहले सोचा रोटी बना लूँ पर बहुत थकान और सिरदर्द के कारण ऐसे ही सो जाने की इच्छा हुई।

१०.११.१२

आज अंजली, आरज़ू और दिव्या को संकुल स्तर की प्रतियोगिताओं में भाग लेने गाँधी विद्या मन्दिर उत्तरकाशी जाना था तो विद्यालय की सारी ज़िम्मेदारी नवीन और शिवानी की थी। जब मैं 9.20 पर विद्यालय पहुँची बच्चे सफ़ाई करने की शुरुआत कर रहे थे। कक्षा-कक्ष हमने कल शाम ही साफ़ कर दिये थे। बाहर आँगन साफ़ करना था। नवीन और मनीष पानी छिड़क रहे थे। मनीषा और प्रीति झाड़ू लगा रहे थे। अरविन्द और प्रियंका समाचार लिख रहे थे। मैंने ऑफ़िस खोला। आज का विचार लिखा, "कोई भी दुख मनुष्य के साहस से बड़ा नहीं, हारा वही जो लड़ा नहीं" -कुँवर नारायण। आज का विचार कभी मैं लिखती हूँ, कभी बच्चे, तो कभी प्रधान अध्यापिका। फिर मैं बच्चों को आज के विचार के बारे में बताती हूँ। सुबह की सभा की सभी गतिविधियाँ अच्छी हुईं। आज कक्षा 3, 4 और 5 के साथ भाग के सवाल करने हुए मैंने पाया शिवानी फटाफट सवाल हल कर रही है जबकि अन्य दिनों वह सवाल हल करने में काफ़ी देर करती है और दो-तीन बार बुलाने पर ही अपना काम दिखाती

है। आज अंजली, दिव्या, आरजू कक्षा में नहीं है तो क्या शेष दिन शिवानी इन बच्चों से झेंपती है। क्योंकि ये बच्चे फटाफट काम करते हैं और शाबासी पाते हैं। फिर चाहे वो शाबासी नज़रों से ही पता क्यों न चलती हो। आज बच्चों ने खूब सारे सवाल किये। मैंने तय किया अब से शिवानी को सबसे पहले काम के लिए पूछूँगी। कुछ माह पहले भी मैंने शिवानी को कुछ ज़िम्मेदारियाँ दी थीं जिन्हें उसने कुछ दिन निभाया फिर खुद ही अन्य बच्चों को दे दिया। क्या कम बोलने वाला बच्चा ज़्यादा बोलने वाले बच्चों से झेंपता है? उसे इस बात का अहसास कौन कराता है? मुझे लगता है कि हम ही जाने-अनजाने बच्चों में भेदभाव कर देते हैं। एक शिक्षक को हर समय सचेत मस्तिष्क के साथ काम करना चाहिए वरना बालमन कब किस बात से सकुचा जाए क्या पता।

जितना ज़रूरी किसी शिक्षक का बच्चों को प्रश्न पूछने को प्रेरित करना, उनमें सीखने की ललक पैदा करना होता है, उतना ही ज़रूरी है कि वह अपने रवैये ,व्यवहार व आदतों के प्रति सचेत रहे। एक शिक्षक को निरन्तर इस पर काम करना चाहिए कि वह बच्चों के लिए सीखने का बेहतर परिवेश कैसे बना पाये। वह अपनी कक्षा में ऐसा कुछ करे कि प्रत्येक बच्चा सीख रहा हो। बच्चों में एक दूसरे से हीन भावना न पनपे। कई बार मेरी कक्षा उन बच्चों पर ज़्यादा केन्द्रित हो जाती है जो बेहतर सीख रहे होते हैं। शायद मैं भी बच्चों के साथ आगे बढ़ना चाहती हूँ। ऐसे में कई बार उन बच्चों के साथ काम छूट जाता है जिन पर ज़्यादा ध्यान व समय देने की ज़रूरत होती है।

मध्यान्तर के बाद सृजनात्मक वादन थोड़ा लम्बा चला। मैंने कक्षा 3, 4 और 5 के बच्चों को 4 समूहों में बाँटा और उन्हें किसी मशीन के कार्य पर आधारित मूक अभिनय करने को कहा। पिछले दिनों मैंने उन्हें इस तरह की कुछ छिटपुट गतिविधियाँ करवायी थीं। तीन समूहों ने क्रमशः चक्की, घराट व थ्रेसर पर अपनी प्रस्तुति दी। एक समूह दर्जी की दुकान बना। क्या शानदार प्रस्तुतियाँ थी! नवीन का समूह तो गज़ब था! दो बच्चे शुभम व अनन्ता एक दूसरे का हाथ पकड़ कर विशाल की पीठ के पीछे कैंची में झूल रहे थे जो मशीन का पट्टा बनी थीं। नवीन अपने मुँह से मशीन शुरू होने से लेकर तेजी से चलने और अचानक पट्टा उतरने पर रुकने की आवाज़ निकाल रहा था।

अन्य समूहों ने भी खुद को अच्छी तरह मशीन बनाया।

मैंने प्रत्येक प्रस्तुति के बाद हर समूह से अलग-अलग सवाल पूछे जिसका उन्होंने खूब उत्साह से जवाब दिया। जैसे - कौन-कौन बच्चे मशीन का कौन-कौन भाग बने थे? कौन

क्या कर रहा था? इसमें और क्या हो सकता था? आदि। बड़े बच्चों की प्रस्तुति देख कक्षा एक और दो के बच्चों ने भी कपड़े धोना ,खाना बनाना, डिक्के फाड़ना, बर्तन धोना, हल लगाना आदि पर अभिनय किया। इसके बाद हमने “ये भी कोई खाना है” पुराने नाटक पर बात की। बच्चे दो समूहों में बँट गये और अपनी प्रस्तुति दी। यहाँ पर प्रियंका समूह की प्रस्तुति शानदार रही। उन्होंने इसमें दो दृश्य अपनी ओर से जोड़ दिये। बच्चे अपनी कल्पना को कैसे साकार रूप दे देते हैं। पुराने नाटक में माँ व शिक्षिका का पार्ट नहीं था। शायद इसे ही कहते हैं रचनावाद। यानी बच्चे हूबहू पहले की गयी बात या गतिविधि अक्षरशः नहीं दोहराते बल्कि अपनी तरफ़ से नयी बातें जोड़ते हैं। अपने अनुभवों का समावेश करते हैं और अपने लिए नए सिरे से ज्ञान रचते हैं। प्रत्येक बच्चे में ये सब कर पाने की नैसर्गिक क्षमता होती है और यदि विद्यालय का परिवेश उन्हें अपनी बात कहने के लिए अवसर देता है तो फिर उनकी रचनात्मकता को नयी उड़ान मिलती है।

आज छुट्टी के बाद घर लौटते हुए रास्ते में दो लड़कों ने हाथ दिया। एक ने कहा बाज़ार तक जाना है। शायद गणेशपुर के ही लड़के थे, मुझे जानते थे। स्कूटी चलाते हुए सोच रही थी सच में समय बदल रहा है। कुछ साल पहले किसी महिला की स्कूटी में कोई पुरुष पीछे बैठना पसन्द नहीं करता था। अच्छा है, ऐसे ही समय बदले और एक दिन सब बराबरी का स्थान पाएँ।

२५.११.१२

आज दोपहर 2 बजे से अनौपचारिक शिक्षक समूह की बैठक थी जिसमें पहले पुरोला भ्रमण पर चर्चा हुई फिर बालसखा कार्यक्रम की तैयारी पर बात हुई। वहाँ से लौटते-लौटते शाम के 6 बज गये।

दुनिया में एक विचार हमेशा से प्रचलित रहा है कि हम जैसा देखना चाहते हैं, वैसा ही देखते हैं और वैसे ही हो जाते हैं। अगर हम अच्छाई देखना चाहें तो हमें अच्छाई ही दिखेगी और हम भी अच्छे बन जाएँगे या हमारे साथ भी अच्छा होगा। मेरे मन में एक बात आती है अगर हम सब, हर चीज़, हर व्यक्ति में, सब कुछ अच्छा-अच्छा देखने लगेंगे तो गलत और कमियाँ कौन सुधारेगा? हमें अपनी गलतियों-खामियों के प्रति भी उतना ही सजग रहना होगा जितना हम अपनी प्रशंसा एवं अच्छे गुणों के प्रति हैं, वरना हमारा विकास अवरुद्ध हो जाएगा।

कई बार हम अच्छा देखने के चक्कर में प्राब्लम ब्लाइण्ड हो जाते हैं। हमें आलोचना से डर लगता है। ऐसी स्थिति में हम विचारों के लिए किसी और पर निर्भर हो जाते हैं और हमें जहाँ जो पसन्द आता है वो ही तरीका - बोलने ,शब्द चयन, काम करने आदि के लिए - उपयोग करने लगते हैं। अगर हमें कुछ दिनों के लिए अकेले छोड़ दिया जाए तो हम उसी स्तर पर मिलते हैं जहाँ पहले थे। जोखिम उठाने से डरने वाले अनुयायी तो बन जाते हैं, नेतृत्व नहीं दे पाते।

अनौपचारिक शिक्षक समूह का सदस्य होने के नाते मुझे लगता है कि हम आपस में एक दूसरे की अच्छाइयों से सीखने के साथ-साथ एक दूसरे की कमियों की ओर भी आलोचनात्मक ढंग से देख पाएँ। उन्हें सम्भव हो तो आपस में बातचीत कर सुलझाने की ओर बढ़ें। ये कहना कि गलतियों को तो सभी देख रहे हैं पर अच्छाइयों को सिर्फ़ हमने देखा-समझा है, कहाँ तक सच हो सकता है। ये तो वही बात हो गयी मीठा-मीठा गप्प कडुवा-कडुवा थू। क्या हम सच में एक दूसरे से सीखने, एक दूसरे की मदद करने की ओर बढ़ रहे हैं? यदि अच्छे काम के लिए प्रोत्साहित करना किसी शिक्षक की मदद करना है तो उसके किसी काम में सहज ही किसी कमी को देखकर उस ओर उसका ध्यान दिलाना उसका मनोबल कम करना कैसे हो सकता है? हो सकता है उस ओर उसका ध्यान नहीं गया हो और हमारी बातचीत उसे उसके काम को और आगे ले जाने में मदद कर पाए।

शायद आज मैंने बहुत से लोगों को नाराज़ कर दिया। आदत से मजबूर। अगर कोई समझ पाये तो समझ सकता है। मैं जैसी हूँ वैसी ही हूँ। मैं दोहरा चरित्र नहीं जी सकती न ही मुखौटा लगाकर लोगों को खुश करने की सोच सकती हूँ। शायद इसीलिए मेरे बहुत कम दोस्त हैं, परन्तु जो हैं वे मुझे पहचानते हैं और मुझ पर विश्वास करते हैं। मेरे लिए इतना ही काफ़ी है।

२६.११.१२

कक्षा-तीन, चार और पाँच के साथ गणित की कक्षा में भाग पर काम करते हुए पाया कि दीपक, मनोज, शुभम यहाँ तक कि प्रियंका भी आज सवाल गलत कर रही हैं।

ये बच्चे घटाने में भी गलतियाँ कर रहे हैं। छुट्टियों से पहले तो सब ठीक चल रहा था फिर आज ऐसा क्यों हुआ, बहुत खीझ हुई, गुस्सा भी आया। मुझे गणित में बार-बार शुरू से शुरू

करना पड़ता है। दिव्या, अंजली, आरजू, शिवानी कक्षा 5 में हैं और बिना किसी गलती के सवाल हल कर रही हैं।

कक्षा-तीन के बच्चों को भी उनके स्तर के अनुरूप सवाल दिये पर यहाँ भी विकास अंक पहचानने में गलती कर रहा है। जबकि मैं प्रत्येक बच्चे को अलग-अलग उनकी कॉपी में सवाल समझा चुकी हूँ। शायद मैं गणित का शिक्षण ठीक से नहीं कर पा रही हूँ। बच्चों को अवधारणाओं की स्पष्टता नहीं हो पा रही है।

मुझे खुद पर गुस्सा आ रहा था। हम आगे बढ़ने की बजाए पीछे लौट रहे थे।

आज फिर से कक्षा 2 से लेकर 5 तक को अंक पहचान करवाये, जैसे: 10+1 = 11, 20+1 = 21 आदि। आज 50 तक ही अंक की पहचान करवायी। लगता है बाहर चहारदीवारी पर वाल- ब्लैकबोर्ड बनवाने ही पड़ेंगे जिससे कि किसी भी समय बच्चों से गणितीय संक्रियाएँ करवायी जा सकें। कई बार सोचती हूँ मैं बच्चों को अवधारणात्मक समझ देने की बजाए कुछ निर्धारित/प्रचलित सूत्रों की मदद से सिखाना शुरू कर दूँ बाद में खुद समझ लेंगे। लेकिन नहीं, ऐसा करने से बच्चों को सवाल हल करने तो आ जाते हैं लेकिन ज्यों ही इन सवालों से इतर घुमा-फिराकर या नये तरीके से किसी सवाल को हल करना होता है, बच्चे अटक जाते हैं। वहीं दूसरी ओर जिस बच्चे को किसी सम्बोध की अवधारणात्मक समझ होती है वह उस सम्बोध से सम्बन्धित कोई भी सवाल हल कर देता है, भले ही कुछ ज़्यादा समय ले।

आज सुबह ही बन्दरों की टोली विद्यालय में आ गयी थी जो दिन भर उत्पात मचाती रही। उन्होंने पौधे उखाड़े, खूब धमाचौकड़ी की और भगाने से भी नहीं भागे।

२९.११.१२

आज सुबह कक्षा 2 से 5 के अधिकांश बच्चों के साथ अंक पहचान पर काम किया। जबकि अंजली, दिव्या, आरजू व शिवानी को उनकी गणित की किताब से सवाल करने को दिये। इन बच्चों ने आज अपवर्तक के सवाल हल किये व भाज्य-अभाज्य आदि के भी सवाल हल किये।

आज गणित की कक्षा में पाया कि मनोज, विशाल, दीपक, शुभम अभी भी अंक सही नहीं पहचान पा रहे हैं। अगर उन्हें 12, 22, 32, 42, 52, 62, 72, 82, 92, आदि संख्याएँ पढ़ने को कहें तो वो अंदाजे लगाकर पढ़ रहे हैं।

60+2 = 62 (बासठ) होता है या 72 (बहत्तर) उन्हें पता नहीं चल रहा।

मैंने ब्लैकबोर्ड पर सारे बच्चों को फिर से बताया कि 20 के साथ जुड़े साथी अंकों के साथ (बीस) ईस का उच्चारण आयेगा 30 के साथ (तीस) तीस जैसे,

22 बाईस

37 सैंतीस

32 बत्तीस

80 अस्सी

40 चालीस

47 सैंतालीस

85 पिचासी

इस तरह से बताने पर ज़्यादातर बच्चे समझ गये कि नौ वाले अंक को उसके बाद आने वाली दहाई से जोड़कर पढ़ना है जबकि 1 से 8 तक के अंकों का उच्चारण उसी दहाई के दो अन्तिम शब्द-वर्ण के साथ करना है।

जैसे:

29 उनतीस

30 तीस

31 इक्कतीस या 39 उनचालीस या 41 इकतालीस

इस तरह से पढ़ना सिर्फ़ इक्यावन से अट्ठावन तक बदल रहा है।

49 उन पचास

50 पचास

50+1 = 51 इक्यावन

50+2 = 52 बावन

50+8 = 58 अट्ठावन

59 उनसठ

60 साठ

मैंने उनका ध्यान अंकों की खास ध्वनि की ओर भी दिलाने का प्रयास किया। जैसे, चौदह, चौबीस, चौंतीस, चवालीस आदि।

इस तरह से बताने पर भी शुभम अंक पहचानने में गलती करता रहा। दीपक सोच समझ कर कहने की कोशिश कर रहा था।

कक्षा 2 की सिमरन, अंशिका, प्रेरणा, मीना, कक्षा 3 व 4 के बच्चों से भी अच्छी तरह अंक पहचान रही हैं। मैं कोशिश कर रही थी कि छोटे बच्चों के जबाव इस तरह से आएँ कि बड़े बच्चों को खराब न लगे।

२९.११.१२

अर्द्धवार्षिक परीक्षा में बच्चों की कॉपियाँ जाँचते हुए मैंने पाया था कि गणित में बच्चों ने सवाल हल करते हुए कुछ गड़बड़ियाँ की हैं लेकिन मामला उतना निराशाजनक भी नहीं है जितना मैं मान रही थी।

जब मैंने बच्चों की समस्या का विश्लेषण किया तो पता चला कि कक्षा 3, 4, 5 में कुछ बच्चे ऐसे हैं जिन्हें स्थानीय मान की अवधारणा को समझने में समस्या है।

ये समस्या तब अधिक बढ़ रही है जब वे इबारती प्रश्न हल करते हैं। संख्या बड़ी होने पर समस्या भी बढ़ रही है। संख्याएँ जोड़ते हुए बच्चे संख्याओं के स्थान का ध्यान नहीं रख रहे हैं इस कारण जोड़ -घटाना गलत हो रहा है। वे 204 को 2004 लिख रहें है। इबारती प्रश्नों को हल करते हुए वे सवाल को समझ नहीं रहे हैं इसलिए किस सवाल में कौन सी संक्रिया करनी होगी इसका सही अनुमान वे नहीं लगा पा रहे हैं।

ये समस्या कक्षा 3 व 4 के बच्चों के साथ ज़्यादा है। कक्षा 5 के बच्चे सवाल तो समझ रहे हैं पर हल करते हुए गड़बड़ कर रहे हैं। अकसर हम बच्चों को हासिल लेने के परम्परागत तरीके से जोड़, घटाना, गुणा ,सिखाते हैं। किसी संख्या, किसी अंक की स्थिति क्या है के

बारे में बच्चों का ध्यान नहीं दिला पाते। ऐसे में यह अपेक्षा कि बच्चे एक दो बार बताने पर ही अवधारणा को पकड़ लेंगे, शायद सही नहीं है।

जिन बच्चों के साथ कक्षा-1, 2 में अवधारणाओं पर ठीक तरह से काम हुआ होता है, वे ही बच्चे कक्षा 3, 4, 5 की दक्षताओं पर काम कर पाते हैं। कक्षा 3, 4, 5 में पाठ्यक्रम के अनुसार काम शुरू करने के लिये आधार तैयार होना बहुत ज़रूरी होता है। क्योंकि अब संक्रियाएँ थोड़ी-सी बड़ी व जटिल होती जाती हैं। ऐसे में पूर्व में बनी समझ अगर स्पष्ट नहीं है तो नवीन अवधारणाओं को समझने में बाधाएँ आती हैं। गणित, क्रम व पैटर्न का खेल भी है, इसमें बहुत से सम्बोध एक दूसरे से जुड़े होते हैं, बिना पहला स्टेप पूरा किये सीधे दूसरे या तीसरे स्टेप पर जाने से गलतियों की सम्भावना बढ़ जाती है।

मैंने बच्चों को कक्षा में एक बड़े गोले में बिठाया उन्हें कुछ सवाल हल करने को दिये और उनके हल किये सवालों के बारे में उनसे पूछा तो मुझे उनकी दुविधा व प्रक्रियाओं के बारे में पता चला। मैंने उन्हें ध्यान से सवाल हल करते हुए देखा और जानने की कोशिश की कि वे अंकों से किस प्रकार खेल रहे हैं या जूझ रहे हैं।

मुझे लगा बच्चों से हर छोटी-बड़ी चीज़ पर बात करनी होगी। उन्हें अवधारणाओं के साथ-साथ प्रचलित तरीके भी बताने होंगे। संख्या कैसे पढ़नी है? अंक किस तरह से लिखने हैं, इन्हें लिखते हुए किन-किन बातों का ध्यान रखना है?

जब बच्चों को सवाल नहीं आते हैं तो मुझे बुरा तो लगता ही है साथ ही अपनी दक्षताओं व तरीकों पर भी शंका होने लगती है। क्या मैं अच्छी शिक्षिका नहीं हूँ? क्या मुझे अच्छी तरह गणित पढ़ाना नहीं आता। गणित मेरी रुचि का विषय है। मुझे खुद गणित की बहुत-सी अवधारणाएँ बहुत बाद में पता चलीं। इस कारण मैं चाहती हूँ कि मेरे बच्चे अवधारणाओं को समझते हुए आगे बढ़ें।

आज मैंने बच्चों के दो बड़े समूह बनाये।

पहला समूह कक्षा-4 और 5 के उन बच्चों का बनाया जिन्होंने सैकड़े तक की संख्याओं को सही पढ़ा व लिखा।

दूसरे समूह में कक्षा 3 और 4 के बच्चे रखे। कक्षा 3 के सभी बच्चे व कक्षा-4 के वे बच्चे जिन्हें संख्या पहचान में समस्या है।

कक्षा 3 व 4 के बच्चों को गिनती लिखने को कहा व अपनी कॉपी में ध्यान से धीरे-धीरे गिनती पढ़ने को कहा। तब तक दूसरे समूह के साथ इकाई, दहाई, सैकड़ा की रंगीन तीलियों के साथ संख्या बनाने का खेल खेला। इन संख्याओं को कॉपी पर भी लिखा और इनके स्थानीय मान व विस्तारित रूप भी लिखे।

उदाहरण के लिए आरज़ू को कहा वो 257 रुपये मुझे दे। उसने 2 सैकड़ा की 5 दहाई की और 7 इकाई की तीलियाँ मुझे दीं। इस संख्या को विस्तरित रूप व स्थानीय मान के साथ कॉपी पर लिखकर दिखाया।

फिर उन्हें दो-दो के समूह में काम करने को कहा। खुद पहले समूह के साथ 1 से 100 तक की संख्याओं पर बात की। संख्याएँ ब्लैकबोर्ड पर लिखवायीं।

मैं चाह रही थी बच्चों को संख्याओं का क्रम पता चले। उनका ध्यान इस ओर जाए कि 48, 47 के बाद आता है, या 58 से 10 कम है, या 62 तक पहुँचने के लिए 1 से 62 तक, 1 के बाद 1 जोड़ना पड़ता है।

70 का मतलब है कि हमने 1 से 70 तक एक-एक कदम बढ़ाया है। बच्चों ने बाहर जमा छोटे-छोटे पत्थरों से 1 से 100 तक पंक्ति बनायी व अँगुली रखकर पढ़ा। फिर उसमें 25 वाँ या 32 वाँ पत्थर पहचाना।

३०.११.१२

आज भी गणित में दो समूहों में काम किया।

कक्षा 3 और 4 के समूह के साथ रंगीन तीलियों और मोतियों के साथ सैकड़ा तक की संख्याएँ बनायीं। उन्हें शब्दों व अंको में लिखा। आज शून्य व दहाई पर ध्यान दिलाते हुए संख्याएँ बनायीं। जैसे 305, 501.

बच्चे समझ गये जब दहाई वाली तीली या मोती है ही नहीं तो उसे पढ़ेंगे या लिखेंगे कैसे?

बच्चों ने ‘ संख्या बनाओ ’ का खेल खेला। किसी बच्चे को कोई संख्या कही जाती और वो झटपट उसे लाता सबको दिखाता।

लगभग सभी बच्चों ने सही तीलियाँ या मोती उठाये। पहला समूह अपना काम करता रहा। मैंने कक्षा-4 और 5 के दूसरे समूह के साथ मिलकर चार्ट काटकर इकाई दहाई सैकड़े व हज़ार तक के कार्ड बनाये। मैं जब भी ऐसा कोई काम करती हूँ, बच्चों को साथ रखती हूँ जिससे वे स्वयं भी अपने लिए इस तरह की सामग्री बना सकें। यह समूह पहले समूह से आगे चल रहा है इसलिए इसकी मदद दूसरे समूह को सिखाने में ली जा सकती है। मैंने खूब सारे कार्ड बनाये जिनके दोनों तरफ़ अंक, संख्या लिखी। इन कार्डों की मदद से अलग-अलग संख्याएँ बनायीं। बच्चों का ध्यान विस्तारित रूप की ओर दिलाया।

कार्ड बनने के बाद दोनों समूहों को एक साथ बिठाकर इन कार्ड की मदद से संख्या बनाओ खेल खेला।

प्रत्येक बच्चे को एक-एक कार्ड दिया जिसके दोनों तरफ़ अंक/संख्याएँ लिखी थीं। फिर ब्लैकबोर्ड पर कोई संख्या लिखी। जिन बच्चों के पास वे अंक थे उन्होंने सामने आकर संख्या बनायी।

जैसे शुभम के पास कार्ड	संख्या	200
अंजली के पास कार्ड	संख्या	50
शिवानी के पास कार्ड	संख्या	2
बनी संख्या -		252

बच्चों को इसमें खूब मज़ा आया। वे अपने साथियों की मदद भी करते रहे। उन्हें पता चला कि कार्ड को एक-दूसरे के ऊपर सही स्थान में रखने से ही संख्याएँ सही बनेंगी। पहले समूह को घर के लिए यह काम दिया कि वो सैकड़ा तक की तीस संख्या कॉपी में बनाएँ व उसे शब्दों में लिखें और उसका विस्तारित रूप भी लिखें।

जैसे 412 = 400+10+2 चार सौ बारह

दूसरे समूह को अपने लिए 1000 तक के कार्ड बनाने थे व उनसे संख्याएँ बनानी थी।

१.१२.१२

बच्चे जब कुछ सीख रहे होते हैं तो उन्हें स्वयं ही पता चल जाता है कि उन्हें वह सवाल या अवधारणा किस सीमा तक आ रही है या उन्होंने कितना सीखा है। उसी आधार पर उनका आत्मविश्वास बढ़ता-घटता है। सभी बच्चों ने घर में काम किया था। पहले समूह के अलावा दूसरे समूह के कुछ बच्चों ने भी अपनी नोट बुक के पेजों से अपने लिए कार्ड बनाये थे।

नवीन ने किसी खाली डिब्बे को काटकर कार्ड बनाये थे। सरस्वती व जयेन्द्री ने शादी के पुराने कार्ड काटकर। मुझे लगा अन्य बच्चे भी सोच रहे थे, उन्हें ये आइडिया क्यों नहीं आया।

खैर, मैंने बच्चों को सुझाया, "हम स्कूल में जमा शादी के कार्ड या पुराने कैलेण्डर का उपयोग आज नये कार्ड बनाने में कर सकते हैं।"

जब मैंने बच्चों को घर पर कार्ड बनाकर संख्याएँ बनाने को दी थीं तो मैंने सोचा था वे कार्ड को घुमा फिराकर कई सारी संख्याएँ बनाएँगे पर अफ़सोस, ऐसा कुछ नहीं हुआ। बच्चों ने एक तरफ़ लिखे अंको से एक संख्या व दूसरे लिखे अंको से एक और संख्या बनायी।

मुझे निराशा हुई। ये बच्चे संख्याओं से खेल क्यों नहीं रहे? इन्हें मज़ा क्यों नहीं आ रहा?

पहले समूह को तीलियाँ व मोती देकर कल की गतिविधि करने को दीं।

स्वयं दूसरे समूह के साथ नये कार्ड बनाये। आज कुछ कार्ड लाख तक के भी बनाये। कार्ड बनाने के दौरान बच्चे एक दूसरे से कार्ड लेकर संख्या पढ़कर देख रहे थे कि कार्ड सही बन रहे हैं या नहीं। मैं सोच रही थी इन कार्डों की मदद से क्या-क्या सवाल हल हो सकते हैं।

आज खूब सारे कार्ड बनाये ताकि प्रत्येक बच्चे के पास कार्ड हों। वो फटाफट नयी संख्याएँ बना सकें।

मैं यह मान के चल रही हूँ कि इससे बच्चे संख्याओं को पढ़ना, उन्हें स्थानीय मान के साथ देखना तो कम से कम सीख ही लेंगे।

इस तरह से काम करने में समय बहुत लगता है पर मैंने सोच लिया है इस माह इसी तरह गणित में काम होगा।

सभी बच्चों को एक साथ बिठाकर हज़ार तक की संख्या बनायी। अलग-अलग कार्ड बदलकर नयी-नयी संख्याएँ बनायीं। अभी भी शुभम, दीपक और नवीन संख्याएँ पढ़ते हुए अटक रहे हैं।

चार-चार बच्चों के समूह बनाये, उन्हें कार्ड का 1 सेट दिया व चुनौती रखी कि कौन-सा समूह सबसे ज़्यादा संख्याएँ बना पाता है, देखते हैं।

ये कार्ड कुछ ऐसे थे:

पहली तरफ़	दूसरी तरफ़
4000, 500, 40, 7	5000, 300, 80, 2

आज बच्चों ने नयी-नयी संख्याएँ बनायीं और उन्हें शब्दों में भी लिखा। मैंने बीच-बीच में प्रत्येक समूह में जाकर सभी बच्चों को प्रतिभाग करने को प्रेरित किया। प्रत्येक ग्रुप में 1 या 2 सक्रिय सदस्य थे जो दूसरों को मौका दिये बिना फटाफट संख्याएँ बना रहे थे। कल दो-दो के समूह बनाऊँगी। जब बाकी सदस्य संख्याएँ बनाना, कार्ड रखना आदि प्रक्रियाएँ देख रहे थे तो कुछ न कुछ तो सीख ही रहे होंगे।

प्रत्येक बच्चे को कार्ड का एक सैट देकर घर से संख्याएँ बनाने को दीं।

३.१२.१२

सभी बच्चों ने संख्याएँ बनायी हैं। कुछ ने चार कुछ ने पाँच। मिथिलेश प्रवीण, दिव्या, अंजली व आरजू ने 8 संख्याएँ बनायी हैं। लगता है अपनी गाड़ी धीरे-धीरे पटरी पर आ रही है। आज दो-दो के समूह में काम हुआ।

मैंने ये ढूँढ़ा कि इन कार्डों से क्या-क्या सवाल हल हो सकते हैं? अभी कुल 10 तरह के सवालों/गतिविधियों को नोट किया।

1. संख्याएँ बनाना, लिखना, पढ़ना
2. शब्दों में लिखना
3. संख्याओं के विस्तारित रूप लिखना

4. स्थानीय मान
5. अनुवर्ती व पूर्ववर्ती संख्या बताना
6. जोड़ना, घटाना
7. सबसे बड़ी व सबसे छोटी संख्या बनाना
8. बनी संख्याओं को आरोही, अवरोही क्रम में लगाना
9. दूसरे साथी से अपने कार्ड बदलकर नयी संख्याएँ बनाना
10. संख्याओं पर इबारती सवाल बनाना

४.१२.१२

आज कक्षा 5 के समूह को अलग कर दिया। वे लाख तक के कार्ड से संख्याएँ बनाएँगे और उनका स्थानीय मान, विस्तारित रूप और शब्दों में लिखेंगे।

इस समूह में मनीषा, निधि व रोहित थोड़ा धीरे से काम करने वाले हैं लेकिन अन्य बच्चों की गति अच्छी है।

कक्षा-चार को दस हज़ार व कक्षा-तीन को हज़ार तक की संख्याओं के कार्ड दिये। कक्षा-4 में लड़कियों का समूह अच्छा काम कर रहा है। जबकि तीनों लड़के बार-बार एक-दूसरे से पूछ रहे हैं। यानी यदि पर्याप्त सीखने के अवसर दिये जाएँ तो लड़का-लड़की दोनों बराबर हैं। यह मान्यता कि लड़कियाँ गणित में कमज़ोर होती हैं, पूरी तरह से गलत है। वास्तव में गणित को अमूर्त रूप में देखने-सीखने से पहले यथार्थ में ठोस अनुभवों का महत्त्व होता है। आमतौर पर लड़कियों को इस तरह के अनुभव कम मिलते हैं जहाँ वे संख्याओं से अपनी रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में खेल पाएँ। जबकि लड़कों के अधिकांश खेलों तक में संख्याओं की भरमार होती है। कंचे, क्रिकेट और भी अन्य तरीके के खेलों में संख्याओं का उपयोग होता है। दूकानों पर खरीददारी के लिए भी ज़्यादातर उन्हें ही भेजा जाता है। मध्यान्तर से पहले का पूरा समय गणित में ही जा रहा है। कल से कक्षा 3 के साथ अलग काम होगा और कक्षा 4-5 के साथ कल बनायी योजना के अनुसार काम करूँगी।

गणित में अच्छा काम हो रहा है। अभी भी हम कार्डों से ही काम कर रहे हैं। कुछ कार्ड फट गये हैं इसलिए कुछ नए कार्ड बनाये।

५.१२.१२

कल निर्धारित की गयी गतिविधियों/सवालों पर कक्षा 5 से बात की और दो सेट कार्ड से सवाल हल किये। फिर इन गतिविधियों/सवालों को चार्ट पर लिखकर कक्षा में टाँग दिया। बच्चों ने अपने-अपने कार्ड से संख्याएँ बनायीं व गतिविधियों से सवाल हल किये।

आज तो गज़ब ही हो गया। तीन संख्याओं का इबारती प्रश्न हल करते हुए कक्षा-4 और 5 के 19 में से 14 बच्चों ने सवाल इस तरह हल किये:

प्रश्न - एक जंगल में चीड़ के 750704 पेड़ थे। 12305 पेड़ तूफान में गिर गये और 18609 पेड़ काट दिये गये बताओ कितने पेड़ बचे।

हल: 750704

- 12305

- 18609

उत्तर 719790

ज़्यादातर बच्चों ने सवाल का उत्तर सही निकाला। बच्चों ने घटाने की दोनों संख्याओं को बिना जोड़े ही बड़ी संख्या से एक-एक करके घटा दिया था।

आज कक्षा में बच्चों से सवाल हल करने के क्रमबद्ध तरीके, सवाल में छिपे संख्याओं के साथी, सवाल हल करने की प्रक्रिया, संख्या लिखना, सवाल बनाते समय किन बातों का ध्यान रखेंगे आदि पर बात की।

हम उन सवालों को कैसे बनाएँगे जिनमें घटाने के हासिल वाले अंक आएँ? इसके लिए बच्चों को अंक जमाना बताया।

इसके बाद कक्षा में एक भी सवाल गलत नहीं हुआ लेकिन ऐसा क्यों हुआ ये पता नहीं चल पाया।

नवीन ने अपना सवाल हल करते हुए कहीं से भी उधार ले लिया जब उसने अपने सवाल का हल मुझे समझाया तो मैं हैरान रह गयी।

बच्चों व अपना मूल्यांकन करने के लिए आज बच्चों को बिना कार्ड के ब्लैकबोर्ड पर सवाल हल करने को दिये। खुशी की बात है कि ज़्यादातर बच्चों के काम में प्रगति है। पता नहीं कब फिर से इन कार्ड की ज़रूरत पड़ जाएगी। इसलिए ये बचे-खुचे कार्ड तो सँभालकर रखने ही होंगे।

गणित के काम में बहुत ज़रूरी है कि हमारे पास बहुत सी सहायक सामग्री हो। बच्चे उनसे खेलते हुए सीखें। हमारे पास हर तरह के संसाधन की कमी है इसलिए बच्चों को अवधारणाएँ स्पष्ट कराते हुए बहुत जूझना पड़ता है।

७.१२.१२

पिछले दो दिनों कक्षा-4 और 5 के साथ कार्डों की मदद से स्थानीय मान व अन्य सवालों पर काम किया। ज़्यादातर बच्चों के काम में प्रगति है। आज बच्चों के लिए एक नयी कार्य योजना बनायी व उसके अनुसार काम शुरू किया। इसका उद्देश्य यह है कि बच्चे अपने आसपास गणित देख समझ पाएँ। उनकी गणित में रुचि जगे। वे सवालों से घबराएँ नहीं बल्कि उनका हल ढूँढ़ने की ओर बढ़ें। मुझे लगता है गणित की अमूर्तता कभी-कभी इसलिए भारी पड़ जाती है क्योंकि वो व्यावहारिक जीवन व अनुभवों से सहज सम्बन्ध नहीं जोड़ पाती। हालाँकि इस तरह का काम कक्षा-1 और 2 के बच्चों के साथ होना चाहिए जिससे बच्चे धीरे-धीरे अमूर्तता में सवाल हल करने की दिशा में बढ़ें।

आज मैंने बच्चों को काम दिया कि वे अपने आसपास देखकर संख्याएँ ढूँढें और उन पर सवाल बनाएँ। एक-दो उदाहरण बताकर मैंने बच्चों को दो-दो के समूह में बाँट दिया और उन्हें अलग-अलग कमरों में भेज दिया। साथ ही उनसे ये कहा कि वे अपनी बात को पूरे वाक्यों में लिखें। बच्चों ने खूब सारी चीज़ों को गिना व संख्याएँ ढूँढ़ीं। उन्होंने हर कमरे, आँगन और रसोईघर में संख्याएँ ढूँढ़ीं। उन्होंने एक दूसरे की कॉपियाँ देखी और एक दूसरे की कमियाँ बताकर उसे ठीक करने में मदद की। जब बच्चों ने संख्याएँ इकट्ठी कर लीं तो मैंने उनसे कहा, “अब वे अपनी संख्याओं से सवाल बनाकर हल करें। ‘जैसे कि कक्षा 5 के कमरे में कविता के 8 चार्ट लगे हैं और कक्षा 3 के कमरे में 10 चार्ट, तो बताओ दोनों कमरों में कुल मिलाकर कितने चार्ट लगे हैं?’ और किस कमरे में ज़्यादा चार्ट लगे हैं और कितने ज़्यादा? वगैरह।” आज बच्चों ने इसी तरह के सवाल बनाकर हल किये जो उनके स्तर से

कमज़ोर/आसान तो थे पर उनका ध्यान आकर्षित कर पा रहे थे। जब भी बच्चे कुछ नया करते हैं तो वे अपना काम मन से करते हैं तब उन्हें जबरन काम करने को नहीं कहना होता। पर मेरी मुश्किल यह है कि मैं उनके लिए निरन्तर नयी व रोचक गतिविधियाँ नहीं ढूँढ़ पाती हूँ। और इस तरह की गतिविधियों के लिए जितना समय देना चाहिए वह भी सम्भव नहीं हो पाता क्योंकि बाकी कक्षाएँ भी देखनी होती हैं। आज बच्चों को घर के लिए भी संख्याएँ ढूँढ़ने और सवाल बनाने का काम दिया।

८.१२.१२

ज़्यादातर बच्चों ने अपने घर व आसपास का अवलोकन कर संख्याएँ ढूँढ़ीं हैं और सवाल हल किये हैं। कुछ बच्चों, जैसे कि जयेन्द्री, दीपक व मनोज, ने विभिन्न कारणों से 5-6 प्रश्न ही बनाये थे जबकि नवीन ने 9 प्रश्न बनाये थे। बाकी बच्चों ने 15-20 प्रश्न बनाये थे। मैंने आज भी दो-दो बच्चों के समूह बनाये और उनसे कहा कि वे एक दूसरे से बातचीत कर संख्याएँ ढूँढ़े व उन पर सवाल बनाएँ। जैसे कि तुम्हारे घर में कितने लोग हैं? कितनी महिलाएँ हैं कितने पुरुष हैं? आदि। ये जानकारी दोनों बच्चों की कॉपी पर लिखी होनी चाहिए व सवालों को भी दोनों अपनी-अपनी कॉपी पर हल करेंगे। समूह में काम करते हुए बच्चे एक दूसरे को प्रेरित तो करते हैं पर कई बार एक बच्चा दूसरे पर हावी भी हो जाता है। ऐसे में जिस बच्चे को जल्दी से सवाल हल करने आते हैं वो सवाल हल कर लेता है और दूसरा उसकी कॉपी से उतार लेता है। इसलिए ये ध्यान देना पड़ता है कि दोनों बच्चे या समूह के सभी बच्चे सीख रहे हों। बच्चों ने आपस में बातचीत कर सवाल बनाये व मुझे दिखाते रहे। मैं उनका ध्यान उन बिन्दुओं की ओर आकर्षित करती रही जिन पर वे नये सवाल बना पाएँ। आज बच्चों को घर के लिए यह काम दिया कि वे अपने परिवार के प्रत्येक सदस्य की उम्र पता करके लाएँगे।

कक्षा 3 के बच्चों को आज कार्ड से सवाल हल करवाये। मैंने खूब सारे कार्ड जो इकाई, दहाई, सैकड़ा और हज़ार के थे, उलटे करके फैला दिये और उनसे कहा कि वे किन्हीं भी तीन कार्डों को उठाएँ और उनमें दी गयी संख्याओं को अपनी कॉपी पर जोड़ें। सवाल हल करके मुझे कार्ड सहित दिखाकर कार्ड वापस रख दें और नये कार्ड से सवाल बनाएँ। इस तरह मुझे ये भी पता चला कि पिछले दिनों किये अभ्यास को बच्चों ने कितना सीखा है। ज़्यादातर बच्चों ने सही सवाल हल किये।

८.१२.१२

कक्षा चार-पाँच में बच्चों ने अपने परिवार के सभी सदस्यों की उम्र पता की थी। कुछ बच्चों ने कहा, "उनकी दादी या माँ ने कहा, 'मुझे नहीं पता मैं कितने साल की हूँ'?" कुछ बच्चों के परिवार में कम सदस्य थे जबकि हमें सवाल बनाने के लिए ज़्यादा सदस्य या संख्याएँ चाहिए थीं, तो हमने अनुमान से आयु लिखी व दूर या आसपास के रिश्तेदारों को परिवार में शामिल किया। इस प्रकार प्रत्येक बच्चे के पास बहुत सी संख्याएँ जमा हुईं। मैंने बच्चों से कहा अब हम इन जानकारियों पर सवाल बनाएँगे। शुरुआत इस तरह के प्रश्नों से हुई - तुम्हारे दादा जी की उम्र कितनी है? और जो धीरे-धीरे इस तरह के सवालों तक पहुँची - तुम्हारे दादा और दादी की उम्र का योग कितना है? तुम्हारे दादा और दादी की उम्र में कितना अन्तर है या तुम्हारे दादा तुम्हारी दादी से कितने साल बड़े हैं ? आज बच्चों ने कक्षा में इसी तरह के सवाल हल किये। बच्चों को घर के लिए काम दिया कि वे इसी तरह के सवाल किसी और बच्चे के नाम से बनाएँ जिसमें नयी संख्याएँ हों।

१३.१२.१२

पिछले दो दिन कक्षा-4 व 5 ने खूब सारे सवाल बनाये। शुभम् व नवीन के अलावा सभी बच्चों ने जल्दी-जल्दी नए सवाल बनाए। इन दोनों ने शुरू में अपने साथियों की कॉपी से देखकर सवाल बनाये फिर धीरे-धीरे अपने आप सवाल बनाये। अब बच्चे इस तरह के सवाल बना पा रहे हैं - यदि तुम्हारी माँ की उम्र 5 साल ज़्यादा होती तो तुम्हारी माँ और तुम्हारी उम्र का अन्तर या योग कितना होता? तुम्हारे घर के सबसे बड़े व सबसे छोटे सदस्य की उम्र का योग क्या है और उम्र में अन्तर कितना है? आदि। आज हम बड़ी संख्याओं की और बढ़े। इसके लिए किताबों की मदद ली। जैसे कि मैंने ब्लैकबोर्ड पर एक सारणी बनायी जिसमें सभी पाठ्यपुस्तकों के पेजों की संख्या बच्चों से पूछकर भरी। फिर इस तरह के सवाल हल किये-

सबसे ज़्यादा पेज किस किताब में हैं?

गणित और हिन्दी की किताब के पेजों का योग व अन्तर बताओ? आदि।

इस तरह से बच्चों को सवाल हल करवाने का मेरा उद्देश्य यह था कि बच्चों को संख्याओं से अपनापन लगे। उन्हें यह अहसास हो कि किताबों में दिये सवाल भी हमारे आसपास से ही निकले होते हैं, साथ ही उन्हें संख्याओं व संक्रियाओं से भय महसूस न हो। बच्चों ने कितना सीखा यह तो आगे काम करके पता चलेगा। वास्तव में गणित को हम पुस्तकों से पढ़ाते हैं, पुस्तकों के बहुत से सवालों के सन्दर्भ बच्चों के परिवेश के नहीं होते। ऐसे में बच्चे सवालों को अपनी वास्तविक ज़िन्दगी में नहीं देख पाते। जबकि यदि उन्हें अपने आसपास के जीवन में गणित खोजने के लिए कहा जाता है तो वे बेहद स्वाभाविक तरीके से गणितीय अवधारणाओं को जानने-समझने लगते हैं। विगत कुछ दिनों के अनुभवों से मैंने समझा है कि एक शिक्षक जब तक अपने सीखने-सिखाने के तरीकों पर सवाल नहीं उठाता तब तक सम्भवतः वो नये तरीके नहीं खोजता और हमेशा बच्चों को ही कठघरे में खड़ा करके अपनी असफलता को छुपाने की कोशिश करता है।

वृतान्त
तीन

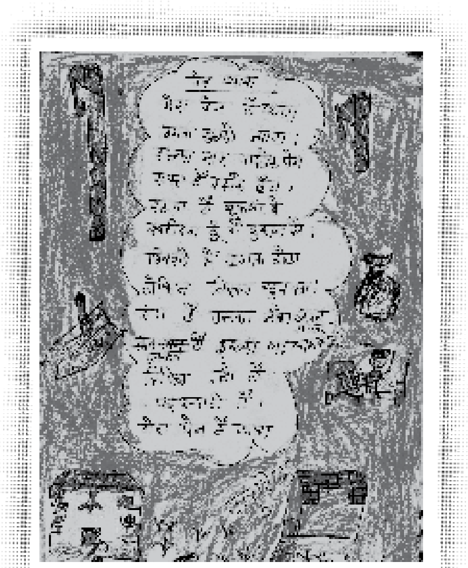

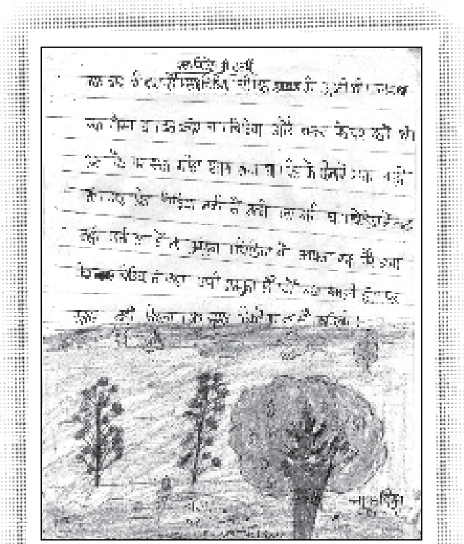

प्राथमिक शाला में शिक्षिका/शिक्षक होने का अर्थ

७.१.१३

लम्बी छुट्टियों के बाद आज स्कूल जाना हुआ। मैं 16 दिसम्बर से छुट्टियों पर चली गयी थी। जाते समय मैंने बच्चों को बताया था मैं सूत्र सम्मान लेने छत्तीसगढ़ और विशाखापट्टनम जा रही हूँ। मैं वहाँ से 25 दिसम्बर को देहरादून लौट आयी थी। फिर जाड़े की छुट्टियाँ पड़ गयीं। इसलिए आज बच्चों से मिलना हुआ। गाड़ी से उतरते ही बधाणी जी व समुदाय के कुछ अन्य लोगों से मिलना हुआ। बधाणी जी ने बहुत खुश होकर नये साल की बधाई दी, साथ ही बधाई दी सम्मान पाने की।" मैडम जी! आपको बहुत-बहुत बधाई हो! हमें तो अब पता चला कि आप कवि भी हैं!" ज़रूर बधाणी जी ने अखबार में समाचार पढ़ा होगा। दीदी और बच्चे बहुत गर्मजोशी से मिले। नवीन ने समाचार में कहा, "हम आज खुश हैं क्योंकि हमारी छोटी मैडम को पुरस्कार मिला है।" बच्चों ने बहुत उत्साह से अखबार में छपी फोटो और समाचार के बारे में बताया। सुबह की सभा में कुछ बच्चों ने अपनी छुट्टियों के बारे में बताया। फिर बच्चों ने मुझे घेर लिया। मैंने बच्चों से और दीदी से करीब डेढ़ घण्टे बातें की। बच्चों को रेल, पठार, आन्ध्र प्रदेश, विशाखापट्टनम और छत्तीसगढ़ आदि के बारे में बताया। फिर भी न तो मैं पूरी बात बता पायी न ही बच्चों की उत्सुकता खत्म हुई। वे मेरी यात्रा के बारे में और-और जानना चाह रहे थे। मैंने कहा, "बाकी बातें बाद में करेंगे।" वे न चाहते हुए भी कक्षा में चले गये। आजकल हम बाहर बैठ रहे हैं। खूब ठण्ड है पर धूप खिली है। एक-डेढ़ बजे तक तो कुछ हिस्से में धूप रहेगी ही।

मैंने कक्षा 3, 4 और 5 के बच्चों को अपनी कॉपी में छुट्टियों के बारे में लिखने को कहा। कक्षा-एक की सलोनी मेरे पास आकर बोली, “शेरू ने सिमरन की पेंसिल ले ली है।” मैंने कहा, “माँग लो।” वो बोली “नहीं दे रहा है, छुपा ली है।” ये ही सब बातें सिमरन भी आकर कहने लगी। मैंने शेरू से पूछा, “तुमने सिमरन की पेंसिल ली है क्या?” उसने नहीं में गर्दन हिलायी। इतने में सिमरन ने शेरू का बैग चैक किया, पेंसिल नहीं मिली। मैंने सिमरन से उसके खुद के बैग में चैक करने को कहा, पेंसिल मिल गयी। शायद कॉपी के बीच छिप गयी होगी। शेरू खूब मजबूत कद काठी का, थोड़ा शरारती, कम बोलने वाला बच्चा है। अकसर गाँव के बच्चे उसको चिढ़ाते हैं और परेशान करते हैं। ज़्यादा परेशान करने पर वो बच्चों को एक-दो झापड़ भी लगा देता है। शुरू में, मैं भी शेरू को ही डाँटती थी। फिर बार-बार शिकायत आने पर अवलोकन किया तो पाया शेरू व अनुसूचित जाति के बच्चों के प्रति अन्य बच्चों में एक कमतर की भावना छुपी है। जो अनजाने ही उनके व्यवहार में प्रदर्शित होती है। बच्चों में ये भावना कैसे आयी? स्कूल में तो ऐसा कोई व्यवहार उनसे नहीं किया जाता। घर, गाँव का व्यवहार स्कूल के व्यवहार से ज़्यादा असर डालता है क्या? ऐसे में स्कूल का ये कर्तव्य हो जाता है कि वह और अधिक सजगता से अपनी भूमिका निभाये। मैंने सिमरन और सलोनी दोनों को पास बुलाकर समझाया, “उन्हें ऐसा नहीं करना चाहिए, वे शेरू को सॉरी कहें व आगे से ऐसा न करें।”

इस बीच शेरू चुपचाप बैठा रहा। उसने स्वतः ही अपना बस्ता सिमरन को क्यों देखने दिया? उसने प्रतिरोध क्यों नहीं किया? मुझे ये बहुत बुरा लगा। सांस्कृतिक तौर पर असमानता, दादागिरी व हीनता की भावना यूँ ही तो हस्तान्तरित नहीं होती। बच्चों के भावनात्मक पक्ष को समझना बेहद ज़रूरी है। बचपन में परिवार में या फिर विद्यालय में सहपाठियों के द्वारा नकारे जाने से बच्चे के जीवन पर नकारात्मक असर पड़ सकता है। मैं कोशिश करती हूँ कि बच्चों के जीवन में घटित होने वाली हर छोटी-बड़ी बात को जान पाऊँ ताकि जब कभी उन्हें मेरी ज़रूरत हो तो मैं उनकी भावनात्मक कठिनाइयों से निकलने में मदद कर पाऊँ।

छुट्टियों से पहले हमने बाहर लगभग आधी चहारदीवारी पर हरे रंग से बड़ा-सा वाल हरा पट्ट बनवा दिया था। आज मैंने इस पर चाक से बहुत सारे खाने बनाये। हर खाने पर एक चित्र और उसका नाम लिखा। कक्षा 2 के बच्चों से उस चित्र पर वाक्य लिखने को कहा, साथ ही ब्लैकबोर्ड पर उन्हें जोड़ के सवाल भी करने को दिये।

इस तरह से काम करवाने के बहुत लाभ हैं। एक साथ कई बच्चों का काम देखा जा सकता है। बच्चे एक दूसरे का काम सुधारने में मदद करते हैं। बच्चे अपने-अपने काम में व्यस्त रहते हैं। कक्षा 2 के साथ कक्षा-1 के बच्चे भी खड़े रहते हैं, वे उनके साथ वाक्य बनाने में मदद करते हैं। मतलब वे अपने बनाये वाक्य कक्षा 2 के बच्चों से लिखवाना चाहते हैं। मैं बहुत समय से इस हरापट को बनवाना चाहती थी। इस तरह का बड़ा ब्लैकबोर्ड एक उपयोगी शिक्षण सामग्री है। पुस्तकालय के साथ-साथ यह मुझे बच्चों को सेल्फ-लर्नर बनाने में मदद करेगा। हमें चाक से काम करता देख बच्चे भी उस का उपयोग करना चाहते हैं। इस ब्लैकबोर्ड के माध्यम से कक्षा-1 एवं 2 के बच्चों को लिखने का अभ्यास करवाया जाएगा।

८.१.१३

आज दीदी के साथ मिलकर यह तय किया कि सी.आर.सी. वाले कमरे की दीवार पर कुछ चित्र व शब्द एक साथ लिखवाएँगे। अभी हमने इस वर्ष के टीएलएम के लिए आये रुपये भी ज़्यादा कुछ खर्च नहीं किये हैं।

आज मैंने दीदी को अपनी योजना/सुझाव बताये। मेरी योजना अपने विद्यालय की बाहरी दीवार और चहारदीवारी के शेष भाग पर खूब सारे छोटे चित्र उनके नाम के साथ बनाने की है। साथ ही गणित में संख्याओं के खेल एवं अन्य गतिविधियों को भी स्थान देने का इरादा है। इस तरह पेंटर का खर्च भी बच जाएगा। दीवार पर यदि 40-50 चित्र शब्द भी बनते हैं तो कक्षा-1, 2 के बच्चों के साथ काम करने में मदद होगी। संख्याओं के खेल से गणित की विभिन्न अवधारणाओं को समझने में मदद मिलेगी।

विद्यालय से घर लौटते समय मैं सोचती रही कि ऐसे क्या चित्र हो सकते हैं जो बच्चों को ज़्यादा से ज़्यादा चीज़ों को जानने-समझने, पठन व लेखन दक्षताओं को बढ़ाने, बातचीत करने, अवलोकन करने, वर्गीकरण करने और चर्चा करने आदि के मौके दे सकें और बच्चों को काम करते हुए मज़ा भी आये।

मेरे मन में फलों, सब्ज़ियों, दैनिक उपयोग की वस्तुओं, आसपास की चीज़ों, पशुओं, पक्षियों के चित्र, मौसम, ऋतुओं के चित्र, भिन्न, मैजिक बॉक्स, सम-विषम ,अनुवर्ती-पूर्ववर्ती, पहाड़े, जोड़, आकृतियाँ, पैटर्न आदि को चित्रित करने के विचार आते रहे।

२७.१.१३

आजकल मैं योजना अनुसार पेंटिंग का काम कर रही हूँ। आज एक 'मौसम वाला पेड़' पेंट किया। कल 'कहानी आगे बढ़ाओ' में तीन अधूरी कहानियाँ लिखी थीं। आगे के लिए सोचा है कुछ शब्द चित्र, जादुई वर्ग, पैटर्न, रेखाचित्र, अंकों के खेल बनाऊँ। पेंटिंग का काम बहुत थका देने वाला है। लेकिन इसे देखकर बच्चों को मज़ा आ रहा है, उन्हें ये अच्छा लग रहा है। पिछले दिनों कक्षा-4 और 5 के बच्चों के साथ गणित में जो काम किया था वह आगे बढ़ रहा है। छुट्टियों में बच्चों ने अपने सीखे हुए को भूला नहीं है। इसका आशय यह है कि मेरी शिक्षण विधा बच्चों को इबारती सवाल की अवधारणाओं को समझने में मदद कर पा रही है। वरना अब से पहले तक बच्चे गणित में अपेक्षा के अनुरूप प्रदर्शन नहीं कर रहे थे।

२३.१.१३

पिछले दिनों बनायी अपनी कार्य योजना के अनुसार आज मैंने विद्यालय भवन की मुख्य दीवार पर शब्द चित्र बनाने की सोची। दरअसल मेरी योजना दीवार पर या ऐसी जगह पर लगभग 100 शब्दचित्र बनाने की है जहाँ बच्चे बिना किसी बाधा के स्वयं या बड़े बच्चों की मदद से अनुमान लगाकर कुछ रोचक शब्दचित्रों को देख व पढ़ सकें। पहले मैंने इसके लिए चहारदीवारी का चुनाव किया था पर बेस कलर खराब होने के कारण वे चित्र बारिश से खराब हो गये। अब पहले चहारदीवारी पर अच्छा पेंट करना होगा फिर वहाँ चित्र बनाऊँगी। अन्य दीवारों पर मैंने अपने चित्रों के लिए फल, सब्ज़ी, बर्तन, कपड़े, पशु-पक्षी, दैनिक उपयोग की वस्तुओं और प्रकृति से चित्र चुने। मैं चित्र बनाने का काम कर रही थी और पास बैठे कक्षा-1 और 2 के बच्चों की प्रतिक्रिया आने लगी "कितना सुन्दर है! आप बहुत अच्छा चित्र बना रहे हो जी! ये क्या लिखा है?" "आपने सीढ़ी 'बांगी' (टेढ़ी) बना ली।" मुझे पता चल गया बच्चों को चित्र पसन्द आ रहे हैं।

चित्रों की एक पंक्ति बनाने के बाद मुझे लगा पूरा काम होने के बाद दीवार अच्छी लगेगी। चित्र बनाते-बनाते मुझे लगा ये काम अच्छा लगा तो बाकी दीवार का उपयोग भी किया जा सकता है। मध्यान्तर तक 10-12 चित्र ही बन पाये। बीच में बच्चों का काम देखा, उन्हें हिन्दी में काम के बाद गणित में काम करवाया। पेंटिंग का काम वो भी सीधी टीन की नालियों वाली दीवार पर करना बहुत थका देने वाला है।

मध्यान्तर में भी कुछ चित्र बनाये। आज कुल 28 चित्र ही बन पाये। गर्दन में दर्द होने लगा पर चित्र देखकर अच्छा लगा। दीदी को भी काम पसन्द आया। उन्होंने आगे की दीवार पर काम करने की सहमति जतायी। सहयोगी व प्रोत्साहन देने वाला प्रधानाध्यापक भी एक 'प्लस पॉइण्ट' होता है। मैं सौभाग्यशाली हूँ कि अभी तक मिले 4 प्रधानाध्यापकों ने हमेशा मेरे नवाचारों को प्रोत्साहन दिया है, मेरी बात मानी है और मुझे बहुत सारी रचनात्मक गतिविधियाँ करने हेतु अनुमति दी है। हालाँकि ये बात भी सच है कि यदि वे अनुमति न देते तो भी मैं अपना काम ऐसे ही करती। परन्तु सहमति वातावरण को ज़्यादा सौहार्दपूर्ण और सीखने वाला बनाती है।

२४.१.१३

आजकल गाँव में शिवपुराण चल रहा था। नवीन पूरे ग्यारह दिन वहाँ जा रहा था। उसने वहाँ 11 दिन तक ढोल बजाया। नवीन बाजगी जाति से है। वह नियमित अवसरों जैसे रोपाई वाले दिनों में गाँव में ढोल नहीं बजाता इसलिए उसके पूजा में ढोल बजाने पर कुछ लोगों ने आपत्ति की। उसे मेहनताना भी बहुत कम दिया। फिर भी उसने पूरे दिन पूजा में भाग लिया।

आज शिवपुराण का समापन है। सुबह कुछ अभिभावक मिले थे, उन्होंने हमें वहाँ आने का आमंत्रण दिया। विद्यालय में आज सिर्फ़ नेपाली मूल के और अनुसूचित जाति के बच्चे उपस्थित थे। सवर्ण जाति के बच्चों में कोई भी बच्चा या बच्ची विद्यालय नहीं आये थे। कुल 23 बच्चे उपस्थित व 23 बच्चे अनुपस्थित।

बच्चों से पूछने पर पता चला वे कलश यात्रा व हवन में भाग लेंगे। "तुम क्यों नहीं गये?" पूछने पर बच्चों ने बताया "हमें वहाँ नहीं जाना था, इसलिए माँ ने कहा विद्यालय जाओ।" अच्छा किया। बहुत-बहुत बुरा लगा ये जानकर।

हम कहते हैं सब ठीक हो रहा है। अब नस्ल भेद, जाति भेद नहीं होता। कहाँ नहीं होता, घर में, गाँव में, शहर में सब जगह ये मौजूद है। स्त्री-पुरुष में, अमीर-गरीब में, सवर्ण-अनुसूचित जातियों में, घरों में, मंदिरों में, शादी-ब्याह में, सामूहिक भोजों में, हर जगह।

शिक्षिका होने के नाते मैं समुदाय से जुड़ी हूँ, बच्चों से जुड़ी हूँ। विद्यालय में हम बच्चों के साथ किसी तरह का कोई भेदभाव नहीं करते, पर घर गाँव की घटनाएँ विद्यालय में भी अपना

प्रभाव दिखाती हैं। बच्चों में ऊँच-नीच का भाव आता है। बच्चों को पता चलता है उनके गाँव में कुछ सामूहिक चीज़ें/जगह ऐसी हैं जहाँ उनका प्रवेश वर्जित है। पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरित होती कुरीतियाँ हैं जिन्हें खत्म करने के बजाए हम अपने स्वार्थ के लिए बनाए रखना चाहते हैं। एकमात्र सही शिक्षा ही वह उपाय है जो इस घृणित स्थिति को बदलने में सक्षम है। मन मुक्त हो तभी इन सब चीज़ों को बदला जा सकता है।

जैसे कल एक महिला कह रही थी जिस ईश्वर ने ये बच्चे दिये हैं वो ही इनकी देखभाल करेगा। उसकी पाँच बेटियाँ हैं अभी तक। आज बच्चे कम आये थे, तो आज पूरे दिन पेंटिंग का काम किया। बच्चों ने खुद काम किया और गणतन्त्र दिवस की तैयारियाँ की।

२७.१.१३

आज छुट्टी थी। दोपहर को कक्षा 7 में पढ़ने वाला अवतार व कक्षा 6 का रोहित घर पर मिलने आये। ये बच्चे करीब 2 घण्टे हमारे घर पर रहे। मेरा बेटा अक्षत मुझसे कहता है, "अवतार कितना आत्मविश्वासी लड़का है वो जिस तरह से आपसे बात करता है, आपको फोन करता है, मैं अपने टीचर के साथ कभी इस तरह बात करने की सोच भी नहीं सकता।" मुझे लगता है यह सारा मामला एक दूसरे पर विश्वास व प्रेम का है। शिक्षक को कभी भी बच्चों की पहुँच से बाहर नहीं होना चाहिए।

२८.१.१३

आज सुबह 9.40 पर विद्यालय पहुँची। कुछ बच्चे विद्यालय आ गये थे, कुछ आ रहे थे। जाड़े में कभी-कभार बच्चे देर से विद्यालय आते हैं। आज मौसम ठण्डा है। धूप नहीं है। सुबह की सभा में आज प्रियंका ने नेतृत्व किया। समाचार भी प्रियंका और विपिना ने लिखे। सुबह की सभा में सारे बच्चे बढ़-चढ़ कर भाग ले रहे हैं। गाँव के समाचार, कहानी, कविता, सामान्य ज्ञान, कोई विशेष बात आदि चीज़ें सुबह की सभा का हिस्सा होती हैं। अपनी उपस्थिति दर्ज़ करवाते हुए भी बच्चे कोई स्पेलिंग/सामान्य ज्ञान/पहाड़े या अपने बारे में कोई बात आदि कहते हैं।

आज मैंने मध्यान्तर तक पूरे शब्दचित्र बना लिये। कुल 96 शब्दचित्र बनाये, जिन्हें बच्चे बहुत पसन्द कर रहे हैं।

मध्यान्तर के बाद कक्षा-1 और 2 के बच्चे अपने खिलौनों से खेलते रहे। मैंने दूसरी दीवार पर विभिन्न क्रियाओं वाले रेखाचित्र बनाये। जैसे गेंद खेलता बच्चा, साइकिल चलाती बच्ची, खेत जोतता किसान आदि। उन पर कक्षा 3, 4 और 5 के बच्चों ने प्रतिक्रियाएँ दीं। आज मैंने 16 रेखाचित्र बनाये।

चहारदीवारी पर पेंटिंग का काम अभी रोकना पड़ेगा क्योंकि धूप नहीं है। दीवार पूरी तरह सूखी नहीं है। अब कुछ दिन बालशोध मेले की तैयारी में लगाने होंगे। पिछले दिनों दिसम्बर में भी कुछ तैयारियाँ की थीं, लेकिन वो अस्त-व्यस्त थीं।

कक्षा 3, 4, 5 में हिन्दी का पाठ्यक्रम लगभग पूरा हो चुका है। उन्हें उनके पाठ्यक्रम के अनुसार सम्बोध आ रहे हैं। दिक्कत है बस मात्राओं में। गणित में कक्षा 5 के साथ अभी बहुत मेहनत करनी होगी। खासकर नवीन, मनीष और दीपक के साथ।

अब तक कुल 96 शब्द चित्र बन गये हैं। साथ ही कुछ पैटर्न, मैजिक क्यूब चित्र बनाए हैं, तीन अधूरी कहानियाँ भी चित्रित की हैं।

इतने दिनों तक मुझे पेंट करता देख आज दीदी ने भी कुछ चित्र बनाने की सोची। आज उन्होंने 4-5 चित्र बनाए।

सौन्दर्यबोध की दृष्टि से तो विद्यालय पेंटिंग करने से बहुत सुन्दर लग रहा है। अब इनका उपयोग बच्चों के सीखने-सिखाने में करना होगा तभी ये मेहनत सफल होगी।

२९.१.१३

आज का दिन सृजनात्मक व शैक्षिक दोनों तरह के कामों से भरा बढ़िया दिन था। आज सुबह कक्षा 3,4,5 को शब्दचित्रों से श्रुतलेख लिखवाया। कक्षा-1 व 2 के बच्चों ने खुद शब्दचित्रों को कॉपी पर बनाने-लिखने की बात कही। इस तरह आज के दिन की शुरूआत शब्दचित्रों से की। ज़्यादातर बच्चों ने श्रुतलेख में दो-चार गलतियाँ की, पर शुभम्, नवीन,

दीपक ने ज़्यादा गलतियाँ की। श्रुतलेख के बाद सबने शब्दचित्रों को देखकर अपनी-अपनी गलतियों को ठीक किया।

मध्यान्तर में 5 रेखाचित्र और बनाए जो मुझे बहुत अच्छे लगे। बच्चों को चित्रों भरी दीवारें बहुत अच्छी लग रही हैं। वे जब-तब आपस में उन पर बातें कर रहे थे।

बच्चे बहुत सारी बातें करना चाहते हैं। एक मिनट भी चुप नहीं रहते। जब वे काम कर रहे होते हैं तो भी बातें करते हैं। पेंसिल-रबर माँगते हुए, टॉयलेट आते-जाते, भाई-बहनों से चीज़ें माँगने हुए , एक दूसरे को आवाजें लगाते हैं। छोटे बच्चे तमन्ना, रितिका, अमित, सिमरन, अनिता, रवि बहुत मुखर हैं। लगातार कुछ न कुछ बोलते रहते हैं। हरदम आपस में शरारत करते हैं। कभी-कभी बच्चों का यह कौतूहल शोर अनुभव होता है। बच्चों और बड़ों की दुनिया में यही अन्तर है। बच्चों की आपस में बातें बड़ों के लिए शोर में तबदील हो जाती हैं। कम जगह भी इसका एक कारण हो सकती है। विद्यालय में धूप दो जगहों पर आती है। आँगन छोटा- सा है। एक जगह पर कक्षा-1,2 व दूसरी जगह पर कक्षा 3,4,5 के बच्चे बैठते हैं। ऐसे में बच्चे धूप में एक दूसरे से सटकर बैठते हैं। अन्दर भी ऐसे ही होता है। कमरे छोटे होने से हमेशा गरमी या ठण्डक,अँधेरा व जगह की परेशानी होती है। मध्यान्तर में भी बच्चे हमारे पास व सामने ही खेलते हैं। रचनात्मक शिक्षण में तो और भी ज़्यादा बातचीत व शोर होता है। बच्चे उत्तेजित होते हैं, खुद को गतिविधि में शामिल करना चाहते हैं। कितना अच्छा होता अगर इस विद्यालय में थोड़ी और जगह होती।

छोटे बच्चों के साथ निरन्तर संवाद व काम करने की ज़रूरत होती है। एक पल का अवरोध भी सारी मेहनत खराब कर देता है। वे तो सीखने में निरन्तर मजा चाहते हैं।जैसे ही मजा नहीं आता उनका ध्यान कहीं और चला जाता है जो बड़ों को शरारतें लगती हैं। पारम्परिक शिक्षण में सभी बच्चों को एक-सी क्षमता वाला मान लिया जाता है व उनसे समान रिजल्ट की उम्मीद भी की जाती है। रचनात्मक, सृजनात्मक शिक्षण के लिए हमारे विद्यालयों में समय, सुविधाएँ, उपकरण और माहौल ही नहीं होता है। ऐसे में खीझ होना स्वाभाविक है जबकि सभी बच्चों के मूल्यांकन के लिए एक ही प्रक्रिया अपनानी पड़ती हो। परन्तु इन्हीं सब परिस्थितियों में से समस्या का हल भी शिक्षक को ही निकालना होता है। वरना उसे अपने काम में मज़ा नहीं आता। फिर वह मात्र समस्या गिनाने वाला कर्मचारी बन जाता है।

विद्यालय में दिन भर काम करने से बहुत थकान हो जाती है। काम का सन्तोष होता है पर शारीरिक, मानसिक थकान का बोझ भी होता है। ऐसे में, मैं घर पर अपने बच्चों के साथ अच्छे से काम नहीं कर पाती हूँ। घरेलू ज़िम्मेदारियों के बीच उन पर झल्लाती हूँ, कभी हाथ भी उठा देती हूँ, पर बच्चे तो निश्छल होते हैं, सब भूलकर थोड़ी ही देर में गले लग जाते हैं। मुझे हमेशा इस बात की आत्मग्लानि होती है कि मैं अपने बच्चों को पर्याप्त समय व संसाधन नहीं दे पाती। अपनी महत्त्वाकांक्षा व सपनों को उनमें देखने लगती हूँ। कई बार मुझे लगता है कि मैं एक स्मार्ट माँ नहीं हूँ। मैं कई बार उनकी मदद नहीं कर पाती। उन पर नियम व अनुशासन थोपती हूँ। न चाहते हुए भी उनको अहसास कराना चाहती हूँ कि मैं उनकी वजह से कहीं आ-जा नहीं सकती। मैं चाहती हूँ वह मेरी थकान को समझें और अपने काम स्वयं करें। अपने हाथ-पाँव बिना कहे धो लें और थोड़ी-बहुत पढ़ाई भी करें। लेकिन बच्चे तो बच्चे हैं, वे अपने बचपन का मज़ा लेना चाहते हैं। हमारे घर में बड़ों द्वारा इस बात पर बहुत ज़ोर रहता है कि बच्चे बिगड़ें नहीं, उन्हें बहुत ज़्यादा छूट न मिले, वे सर पर न चढ़ जाएँ। इनसे उपजी खीझ भी मैं बच्चों पर उतारती हूँ। मैं बहुत अच्छी माँ नहीं हूँ पर मेरी इस कठोरता के पीछे बहुत से सन्दर्भ हैं। शायद बड़े होने पर मेरे बच्चे ये सब समझ पाएँ।

२.२.१३

आजकल हम बालशोध मेले की तैयारी भी कर रहे हैं। बालशोध मेला, खोजबीन विधि से इस परिवेश के बारे में सीखने-समझने की प्रक्रिया है, जिसका मुख्य उद्देश्य बच्चों में स्वयं खोजकर जानने की प्रवृत्ति को बढ़ाना है। इस प्रक्रिया में बच्चे अपने अभिभावकों और समुदाय के सदस्यों की मदद से अपने परिवेश के बारे में छानबीन करते हुए बहुत-सी सामाजिक और प्राकृतिक अवधारणाओं के बारे में समझ विकसित करते हैं। ऐसा करते हुए उनमें अवलोकन करने, सूचनाएँ एकत्र करने, वर्गीकरण करने और निष्कर्ष निकालने जैसे कौशलों का विकास होता है। मैं अपने विद्यालय के बच्चों को खोजबीन के अवसर देती हूँ परन्तु मेले आयोजित करने का आशय अपनी जाँच-पड़ताल व प्रामाणिकता का प्रदर्शन दूसरों के सामने करना है, जिससे दूसरे लोग भी जानें और अगर हम कहीं संशय में हैं तो वे हमारी मदद भी कर सकते हैं।

पहले मैंने सोचा था गंगोरी और पूरे उत्तराखण्ड में बाढ़ आने, बादल फटने वाली घटना को आधार बनाकर ''प्राकृतिक आपदा'' विषय पर इस वर्ष का मेला करेंगे। फिर बाद में लगा इस विषय पर कक्षा में पर्याप्त बातचीत हो गयी है और घटनास्थल पर जाकर चीज़ें देखना, पीड़ितों-प्रभावितों से बातचीत करना, इतने छोटे बच्चों को ले जाकर करना सम्भव नहीं है। तो नया विषय ढूँढ़ना पड़ा।

इस बार विज्ञान में सम्भावना तलाशी। हमारे पाठ्यक्रम में अब विज्ञान की अलग से कोई किताब नहीं चलती है। "हमारे आसपास" में विज्ञान को सीधे-सीधे नहीं दिया गया है। इसलिए बच्चों के साथ विज्ञान की छोटी-छोटी बातों पर विस्तार से चर्चा नहीं हो पाती है। जिससे कई बार कक्षा में इस तरह का माहौल बनने में कठिनाई होती है कि बच्चे कारण-कार्य सम्बन्धों की ओर सोचने के लिए बढ़ें, उनके मन में क्यों व कैसे वाले सवाल उठें और वे उनका हल ढूँढ़ना चाहें। क्रिटिकल थिंकिंग के लिए विज्ञान के प्रश्न व अवधारणाएँ बहुत मदद करती हैं। किसी घटना के बारे में अनुमान लगाना, अपने जवाबों व गतिविधियों द्वारा उत्तर तक पहुँचना, अपने गलत व सही उत्तरों की व्याख्या करने को प्रेरित होना, सोचने को प्रेरित होना जैसी दक्षताओं के विकास में विज्ञान की कक्षा बहुत सहायक सिद्ध होती है।

काफ़ी सोच-विचार कर विषय चुना - "बल कार्य और ऊर्जा।" बच्चों की बल, कार्य एवं ऊर्जा जैसी अवधारणाओं की अपनी एक समझ होती है। हालाँकि यह कोई ज़रूरी नहीं कि यह समझ अवधारणा की बिल्कुल सही समझ हो।

बच्चे, बल को ज़ोर या ताकत से कार्य को किसी काम के होने व करने से और ऊर्जा को ताकत मिलने के सन्दर्भ में समझते हैं। मशीन से उनका आशय ऐसी किसी वस्तु से है जो काम में उनकी मदद करती है। खुलकर बात करने से प्रत्येक बच्चे को ये स्पष्ट हो गया कि हम क्या शोध करने वाले हैं। किसी भी भौतिक घटना के पीछे कोई न कोई कारण-कार्य सम्बन्ध होता है और इस प्रोजैक्ट कार्य का उद्देश्य बच्चों को इसी पक्ष से अवगत करवाना है। साथ ही बच्चे जान पाएँ कि संसार में होने वाली प्रत्येक गतिविधि कई अन्य गतिविधियों से जुड़ी होती है। जितना और जैसा किसी वस्तु/घटना के बारे में हम जानते हैं, उतना और वैसा जानना ही पर्याप्त नहीं है। किसी बात को सीधे-सीधे मान लेने के बजाय उसे जाँच-परख कर उसके कारणों व प्रभावों सहित जानना सीखने की दिशा में एक बड़ा कदम है। गाँव में बहुत सारी ऐसी घटनाएँ होती हैं जो बाल मन पर गहरी और अमिट छाप डालती हैं। बच्चे उन पर अचम्भित होते हैं। उनके पास क्या है - क्यों है के ढेरों सवाल होते हैं। परन्तु सवालों को सुना नहीं जाता और उन्हें

चुप करा दिया जाता है, क्योंकि कई बार हमें भी उनके सवालों के जवाब मालूम नहीं होते या हम खुद संशय में होते हैं। हम पारम्परिक चीज़ों पर बात करने से डरते हैं।

हमारे द्वारा चयन किया गया विषय बहुत जटिल व विस्तृत है। पता नहीं ये कैसे होगा? और जो मैं सोच रही हूँ वो सही दिशा है भी कि नहीं, संशय मुझे भी है। देखती हूँ क्या होता है, कुछ न कुछ तो इससे हम सीखेंगे ही। मैं विज्ञान में खोजबीन के माध्यम से सामाजिक मुद्दों की जाँच-पड़ताल के सन्दर्भ खोलना चाहती हूँ। एक बार बच्चे किसी अवधारणा को क्या और क्यों के सन्दर्भ में गहराई से पड़ताल करना सीख जाएँ तो फिर वे प्रत्येक घटना और अवधारणा को समझने के लिए उसी तरीके के इस्तेमाल करते हैं। मेरी समझ में आलोचनात्मक चिन्तन विकसित करने का यह एक तरीका है। भौतिक जगत की घटनाओं पर क्यों के सवाल करना आसान है क्योंकि समाज को इस पर आपत्ति नहीं होती परन्तु जैसे ही हम किसी परम्परा या सामाजिक पहलू पर क्यों के सवाल करने लगते हैं तो हमारे आसपास के अधिकांश लोग विचलित हो जाते हैं।

४.२.१३

कल कक्षा-4 और 5 में हमने "कैसे कहेंगे कोई काम किया है?" पर बातचीत की थी जो काफ़ी रोचक रही। कल की बातचीत के आधार पर आज का विषय था 'पेशीय बल'।

मैंने कहा, "अच्छा बताओ हम किसी काम को कैसे कर पाते हैं?"

बच्चे बोले, "दम लगाकर, ज़ोर लगाकर हमें वो काम करना आता है। क्योंकि हमें वो काम करना ज़रूरी है। हमें उस काम को करने के लिए किसी ने कहा होता है," वगैरह।

मैं - "जब हमें नल से पानी भर कर लाना होता है तो हम क्या करते हैं?"

अरविन्द - "नल से बाल्टी में पानी भरेंगे फिर उस बाल्टी को हाथ से उठाकर घर लाएँगे।"

मैं - "भरी हुई बाल्टी को उठाने पर वो आसानी से उठ जाती है या हमें कुछ और भी करना पड़ता है?"

अरविन्द - "बाल्टी उठाने में हमें हाथ से ज़ोर लगाना पड़ता है।"

मैं - (क्यारी में उगे पौधे दिखाते हुए) "हमें उन पौधों को जड़ से उखाड़ना हो तो हम क्या करेंगे?"

दिव्या - "हम उसे पकड़ कर ऊपर को खींचेंगे।"

नीरज - "अगर पौधे की जड़ गहरी हो तो उसे कुदाल से खोदकर निकालेंगे। इससे ज़्यादा ज़ोर नहीं लगाना पड़ेगा।"

मैं - "हम जब कोई काम करते हैं तो अपने शरीर के विभिन्न अंगों से ज़ोर या ताकत लगाते हैं। पशु पक्षी भी अपने काम इसी तरह करते हैं। जैसे हाथ से, पैर से, कोहनी से, पीठ से, सिर से।"

नवीन - "जैसे दिमाग पर ज़ोर लगाने से हमें पुरानी बातें याद आ जाती हैं।"

मनीष - "मैडम जी, मैंने टीवी पर देखा एक आदमी अपनी दाढ़ी से सिलेण्डर उठा रहा था।"

नवीन - "हाँ... हाँ... सिलेण्डर भी उठा रहा था। अपने बालों से ट्रक भी खींच रहा था।"

योगेश - "ट्रक वाला आदमी दूसरा था।"

नवीन - "दूसरा था क्या? तूने किस चैनल पर देखा?"

योगेश - "न्यूज वाले पर।"

नवीन - "कौन सा न्यूज़ वाला?"

मैं - बात की दिशा बदलते देख- "हाँ कुछ लोग ऐसा करते हैं।"

नवीनः - "मैडम जी उन्हें दर्द नहीं होता होगा?"

"पता नहीं दर्द तो होता होगा। अच्छा ये बताओ पशु-पक्षी किन कामों में अपने शरीर से ज़ोर या ताकत लगाते हैं?"

बच्चे - "उड़ने में, दौड़ने में, भौंकने में, सामान ले जाने में, हल लगाने में आदि।" बच्चों ने खूब सारे जवाब दिये।

मैं - "हाँ, ये बल या ताकत हम अपनी मांसपेशियों से लगाते हैं। पशु-पक्षी भी ऐसा ही करते हैं। इसलिए इस तरह के बल को पेशीय बल कहते हैं।"

अंजली ने पूछा, "मांसपेशियाँ मतलब?"

मैंने जवाब दिया, “मांसपेशियाँ मतलब...हमारा शरीर का ज़्यादातर भाग दो-तीन चीज़ों से मिलकर बना है। हड्डी, खून और मांसपेशियाँ। देखो, छू कर देखो।” बच्चों के शरीर को छू कर मांसपेशियों के बारे में बताया।

नवीन - “मांस नहीं जानती, तूने मांस नहीं खाया बकरी का।” नवीन बार-बार बात बड़ा देता है पर उसकी बात व्यावहारिक होती है।

मैं - “अगर हमें पेशीय बल लगाना है तो हमें क्या चाहिए?”

बच्चे - “ताकत चाहिए।”

मैं - “और हमें ताकत कैसे मिलती है?”

बच्चे - “खाना खाने से।”

दीपक - “गाय,बैल को घास खाने से ताकत मिलती है।”

मैं - “जब हम खूब सारा पौष्टिक या सन्तुलित भोजन खाते हैं तो हमारे शरीर में काम करने की ताकत आती है। गाय बैल, खच्चर आदि को भी अच्छा-अच्छा चारा घास खाने को देते हैं तो वे खूब सारा काम करते हैं।”

दिव्या - “हरी घास खाने से गाय खूब दूध देती है।”

मैं - “हाँ, और सूखी घास-चारा भी गाय के लिए ज़रूरी होता है।”

सन्तुलित भोजन पर बच्चों से बात करना हमेशा आत्मग्लानि से भर देता है। बच्चों से कहना होता है कुछ चीज़ें हम रोज़ खाते हैं कुछ कभी-कभार। इनमें से बहुत सारे बच्चे ऐसे हैं जिन्हें घर पर रोज़ दाल-सब्ज़ी या दूध नहीं मिल पाता है। शुक्र है, विद्यालय में रोज़ दोपहर में दाल-चावल मिल जाता है। वरना प्राथमिक विद्यालय में ज़्यादातर बच्चे दोपहर में भूखे रह जाते थे। खैर, कक्षा-4 और 5 के बच्चों के नये समूह बनाये। उन्हें कहा कि वे अपने घर में आसपास, गाँव में पेशीय बल के उदाहरण देखें व कॉपी में नोट करें।

६.२.१३

पिछले दो दिन से बच्चे गाँव में पेशीय बल के अनेक उदाहरण देख चुके हैं। उन्होंने इन्हें नोट किया है। इस बार भी काम समूह में हो रहा है।

कुछ उदाहरण - धान कूटना, सब्ज़ी की गुड़ाई करना, हल लगाना, आटा गूँथना, घास काटना आदि। इस तरह के कई सारे उदाहरण बच्चों ने लिखे हैं। खासतौर से अंजली के समूह से कुछ उदाहरण बड़े ही मज़ेदार हैं, जैसे -

- माँ जब गाय का दूध निकालती है तो उनको पेशीय बल लगाना पड़ता है।
- माँ जब सुप्पे पर धान-चावल छानती है।
- जब हम गाय बाँधते हैं।
- जब हम जंगल जाते हैं तो बहुत सारी छिंती - चीड़ के सूखे फल - मिलती हैं तो हम भारा लगाते हैं और वह बहुत भारी हो जाता है तो हमें उसे घर छोड़ने के लिए बहुत पेशीय बल लगाना पड़ता है।
- जब कोई पानी में बहता है तो कोई दूसरा उसे पानी से बाहर निकालने की कोशिश करता है तो उसे पेशीय बल लगाना पड़ता है।
- जंगल से भारी लकड़ियाँ लाने पर।
- भारी खम्भा उठाकर लगाने पर।
- ढिक्के फाड़ने पर। (खेत में हल लगाने के बाद मिट्टी के मोटे-मोटे ढेले जिन्हें लकड़ी से बनी हथौड़ी से फोड़कर बारीक किया जाता है)
- पेड़ पर घास डालने या लगाने पर।
- चटनी पीसने पर आदि

नवीन ने इस ओर ध्यान दिलाया है कि किसी काम को करने के लिए सही दिशा, स्थान व समय पर बल लगाने से ही काम सही तरह से होता है।

जैसे, बेलचा खींचने पर या हल लगाने पर या पेड़ की कोई बड़ी डाली काटते समय रस्सी

की मदद लेने पर। ये बात भी निकलकर आयी कि जब दो लोग मिलकर किसी काम को कर रहे हों तो उनका बराबर या लगभग बराबर बल लगाना ज़रूरी होता है।

प्रियंका ने बताया, कपड़े निचोड़ते समय/रजाई का खोल या कोई बड़ा कपड़ा निचोड़ते समय अगर कपड़ा पकड़ने वाला कमज़ोर है तो निचोड़ने वाले के ज़ोर से उसके हाथ से कपड़ा छूट जायेगा व फिर से गन्दा हो जायेगा।

बड़ी मेज़ या तख्त, लकड़ी उठाते समय कमज़ोर की तरफ़ ज़्यादा भार पड़ेगा।

मनीष - किसी चीज को तोड़ने के लिए एक ही जगह पर वार करना व एक ही दिशा में वार करना ज़रूरी होता है, जैसे कि लकड़ी फाड़ते समय।

प्रत्येक समूह ने 100 से भी अधिक उदाहरण लिखे हैं। बच्चों ने अपने अनुभवों को याद कर करके उदाहरण लिखे हैं जिनमें कुछ दैनिक जीवन के अवलोकन व अनुभव हैं तो कुछ खास मौकों के। इनको लिखने से पहले उन्होंने आपस में बातें भी की हैं।

जैसे -

- जब गाय का बछड़ा इधर-उधर भागता है तो उसे पकड़ने के लिए हमें बहुत सारा पेशीय बल लगाना पड़ता है।
- मेले में चरखी वाले को चरखी रोकने के लिए पेशीय बल लगाना पड़ता है।

गुरुत्व बल -

बच्चे यह बात समझने में सफल रहे कि पृथ्वी का अपना आकर्षण बल होता है। जिससे चीज़ें उस पर टिकी होती हैं। ये बल चुम्बकीय बल की तरह नहीं होता कि चीज़ों को अपनी तरफ़ खींचे पर यह अपने ऊपर रखी चीज़ों को इधर-उधर गिरने-लुढ़कने नहीं देता है।

बच्चों के मन में शंकाएँ भी थीं - जैसे पंछी, तितलियाँ, हवाई जहाज़, राकेट, पतंग, हवाई आदि आसमान में कैसे उड़ते हैं ?

पेड़ ऊपर की तरफ़ क्यों बढ़ता है ? वो जमीन में क्यों नहीं घुस जाता?

हम लम्बे क्यों होते हैं? आदि।

बच्चों ने यह भी निष्कर्ष निकाला कि पृथ्वी अपनी चीज़ों के लिए ही यह बल लगाती है। अपनी चीज़ें, मतलब जो इस धरती पर थीं या मनुष्य ने बनायी हैं।

पृथ्वी के पास इतना ज़्यादा आकर्षण बल नहीं होता कि बहुत दूर की चीज़ों को अपने पास खींच सके नहीं तो सारे तारे, चाँद, सूरज पृथ्वी पर गिर जाते। हल्की चीज़ों पर कम बल लगता है। जैसे पतंग, गुब्बारा, बादल। बारिश की बूँदें तभी ज़मीन पर गिरती हैं जब वे भारी हो जाती हैं। बच्चों ने कुछ रोचक विचार भी दिये।

आरज़ू (कक्षा 5) : धरती माता है इसलिए अपने बच्चों (पेड़-पौधे, जीव-जन्तुओं, नदी आदि) को बढ़ने देती है पर अपने से दूर नहीं जाने देती।

अरविन्द (कक्षा 4) : अगर पृथ्वी बल नहीं लगाती तो सारी चीज़ें एक दूसरे से टकराती रहती। एक दूसरे को चोट पहुँच सकती। इसलिए पृथ्वी आकर्षण बल लगाती है।

दिव्या (कक्षा 5) : अगर हमें चीज़ें या खुद को इधर-उधर ले जाना है तो हमें बल लगाना पड़ता है। सन्तुलन बनाना पड़ता है। जितना ज़्यादा बल लगाएँगे उतनी दूर तक जाएँगे। लेकिन फिर पृथ्वी बल लगाकर हमें वापस बुला या खींच लेगी।

चुम्बकीय बल:

बच्चे चुम्बक को जानते-पहचानते हैं। चुम्बकीय बल के बारे में बताते हुए वे अपने पहले के अनुभवों से जान गये कि चुम्बक लोहे या लोहे से बनी चीज़ों को अपनी तरफ़ आकर्षित करता है। आज कुछ बच्चे अपने साथ चुम्बक भी लेकर आये थे। जिससे उन्होंने कुछ खेल भी खेले। नवीन के पास काफी बड़ा चुम्बक है, जो उसे स्पीकर के अन्दर से मिला था। वह चुम्बक इतना शक्तिशाली था कि टिन की दीवार के पार से भी लोहे की चीज़ों को आकर्षित कर पा रहा था। बच्चों ने स्कूल की लगभग सभी चीज़ों पर चुम्बक लगाकर देखा कि वे लोहे से बनी हैं या नहीं।

मैंने भी बच्चों के साथ चुम्बक के कुछ खेल किये।

इन्हीं सब के बीच बच्चों ने ऊर्जा के स्रोत, उपभोक्ता व कार्य की चेन को भी समझा। उन्होंने इसे कुछ ऐसे लिखा –

ऊर्जा के स्रोत	**उपभोक्ता**	**कार्य**
घास, चारा, चना	**खच्चर**	**बजरी, पत्थर, सीमेंट ढोना**
भोजन	**मनुष्य**	**खेतों में काम करना**
सूर्य	**पेड़-पौधे**	**भोजन बनाना**
पेट्रोल/डीजल	**गाड़ी**	**सवारी ले जाना**

मैंने बच्चों को एक गतिविधि पहले विद्यालय में फिर घर पर समूह में करने को दी।

लोग क्या काम कर रहे हैं? किसकी मदद से कर रहे हैं?

बच्चों ने इसे कुछ इस तरह लिखा -

दिव्या की चाची धान कूट रही है। वह यह काम रीडा, गिंज्याला, सूप, ओखली की मदद से कर रही है। धान से चावल निकल रहें हैं। वह पेशीय बल लगा रही है। उसे सब्ज़ी, रोटी, दाल, भात, मट्ठा से ऊर्जा मिल रही है।

बच्चों ने अपने घर व आसपास होने वाले बहुत से कामों का बारीकी से अवलोकन किया और वह काम किस साधन की मदद से किया जा रहा है इसकी सूची बनायी जैसे:

कार्य व साधन

घास काटना - दरांती

लकड़ी फाड़ना - बसूला

चटनी पीसना - सिलोटा

दो दिन में बच्चों ने करीब 100-150 औज़ारों या सरल मशीनों को अपने आस-पास ढूँढ़ निकाला। चूहेदानी, चिमटी, मौखा - बैल के मुँह की जाली, संडसी, मुंगरी, हुलेटा, किला (गाय बाँधने की खूंटी) रस्सी, दरांती, कद्दूकस, बेलचा, फूँकनी, कील, सुई, चिमटा, चाकू, सब्बल, घन, पल्ली, डण्डा आदि।

मुझे लगता है मैंने इस बार कैसे विषय का चुनाव कर लिया है। अभी तक हम इस विषय पर बलों के प्रकार व प्रभाव ,ऊर्जा के स्रोत, कार्य करने में सहायक साधन व सरल मशीनों के बारे में जान चुके हैं। इसी बातचीत के बीच में उपभोक्ता व भोजन के स्रोत, खाद्य शृंखला, भोजन के प्रकार व तत्व आदि सन्दर्भ भी जुड़ते गये। इस विषय में रोज़ नयी-नयी चीज़ें जुड़ रही हैं। मैं इस विषय को फ़िलहाल यहीं समेटना चाहती हूँ। विषय फैल गया है। इस बीच बच्चों ने काफ़ी कुछ सीखा भी। वे रोज़ ही कुछ न कुछ करते-सीखते जा रहे हैं। पर हमारे पास प्रदर्शित करने को कुछ खास नहीं है। जैसा कि आमतौर पर मेलों में आकर्षक चीज़ें सजाई होती हैं। इस बार हमारे पास बच्चों की निरीक्षण पुस्तिकाएँ, चार्ट, विज्ञान के कुछ सरल प्रयोग और ढेर सारे प्रश्न हैं।

बच्चे उत्सुक हैं। उन्हें मेले के दिन का इन्तज़ार है। ऐसे में बहुत ज़रूरी है कि मेले में उन्हें कुछ ऐसे लोग मिलें जो उनसे उनके काम के बारे में पूछें, बच्चे भी उनसे अपने सवाल कर पाएँ। लेकिन ऐसा कम ही हो पाता है।

१.३.१३

आजकल दीदी छुट्टी पर हैं तो काम करने में कठिनाई हो रही है। आज 51 बच्चे उपस्थित थे। मौसम अब काफ़ी गर्म हो गया है। बाहर आँगन में धूप आ जाती है तो बच्चे बाहर नहीं बैठ पाते। अन्दर कमरे छोटे-छोटे हैं तो बच्चों के लिए खुलकर जगह नहीं हो पाती है। यदि दो कमरों के बीच दरवाज़ा होता तो शायद कुछ मदद हो पाती। वो तो शुक्र है कि कक्षा सातवीं का अवतार विद्यालय आ रहा है। उसकी परीक्षाएँ खत्म हो गयी हैं और एक महीने की छुट्टियाँ हैं। आने को तो और बच्चे भी आना चाहते हैं परन्तु मैंने मना कर दिया। बच्चे खूब मज़े करना चाहते हैं पर मेरे तो पसीने छूट जाते हैं। दो-दो भोजनमाताएँ हैं, चाहें तो मदद कर सकती हैं, लेकिन यदि इन्हें पानी भरने को भी कहो तो चिढ़ जाती हैं। बाथरूम में जहाँ बच्चे खाना खाकर हाथ धोते हैं, कभी साफ़-सफ़ाई नहीं करतीं। कुछ बोलो तो बातचीत बन्द कर देती हैं। मुँह फुला लेती हैं। इनसे किसी सहारे की उम्मीद रखना व्यर्थ है। मुझे तो ये कुछ समझती ही नहीं, कहती हैं बड़ी मैडम से बात करेंगे।

कक्षा-एक में पढ़ने वाले शेरू की शरारतें बढ़ती ही जा रही हैं। कुछ दिन पहले उसने अमित को पत्थर मार दिया था। आज सिमरन को पीटा। पूछो तो कुछ बोलता नहीं। कुछ दिन पहले

उसने उस कमरे में जिसमें झूले, सी-सा झूला आदि खिलौने रखे होते हैं, उस कमरे का ताला कुछ बड़े लड़कों के साथ मिलकर तोड़ दिया। कुछ खिलौने भी तोड़ दिये। उसके पापा से मैंने बात की थी, उन्होंने बताया घर पर भी ऐसे ही करता है। अड़ोस-पड़ोस के बच्चों के माता-पिता भी शिकायत करते रहते हैं। शेरू के पापा ने बताया उन्होंने उसकी खूब पिटायी की पर वो मानता नहीं। मैंने उन्हें समझाया, पिटायी तो हल नहीं, प्यार व धैर्य से ही काम लेना होगा। मैं अब कभी शेरू को डाँटती नहीं। जब भी कोई उसकी शिकायत लेकर आता है, पूरी बात जानने की कोशिश करती हूँ। पर ये तब कुछ कहता ही नहीं, चुपचाप खड़ा रहता है और बच्चे बोलते जाते हैं। इसलिए मैं या दीदी ज़्यादातर शेरू को अपने पास ही बिठाते हैं, पर ये तो समस्या का हल नहीं। बहुत कठिन स्थिति होती है जब दो बच्चे आपस में मारपीट की शिकायत लेकर आते हैं या किसी एक चीज़ को अपनी बताते हैं और शिक्षक को सही बात पता लगानी होती है।

कभी-कभी सोचती हूँ इतने धैर्य व प्रेम से घर के बच्चों को पढ़ाती तो वे तो कलक्टर ही बन जाते पर उनके हिस्से तो गुस्से व थकान के कारण चिड़चिड़ापन ही आता है।

शब्दचित्र व अन्य पेंटिंग जो दीवार पर बनायी हैं, बहुत काम आ रही हैं। जब भी देखती हूँ कोई न कोई बच्चा/बच्ची इनके पास खड़ा पढ़ या देख रहा है। एक बच्चा दूसरे से कुछ सवाल पूछ रहा होता है। कक्षा-एक की रीतिका में सीखने की ज़बरदस्त लगन है। उसका मन चाहता है सब कुछ मैडम आज ही सिखा-पढ़ा दें। आज वो मेरे पास आयी और बोली मुझे पहाड़े पढ़ा दो। मैंने उसे 5 तक पहाड़े पढ़ाये। ये देखकर अन्य बच्चे भी पास आकर पहाड़े पढ़ने लगे। रीतिका को अपनी चुटिया वाली टोपी बहुत पसन्द है। लाख मना करने पर भी रोज़ टोपी पहनकर आ जाएगी। जिससे दिन भर कक्षा अस्तव्यस्त रहेगी। कोई उसकी टोपी उछाल देगा, तो कभी वह खुद घुमाने लगेगी। बच्चे छोटी-छोटी चीज़ों या वजहों पर शिकायत करने लगते हैं, लड़ने-झगड़ने लगते हैं। ऐसे में कक्षा का शिक्षण कार्य अवरुद्ध हो जाता है। दरअसल हर बच्चा चाहता है, मैडम उस पर लगातार व विशेष ध्यान दें। फटाफट उसकी बात सुनें, व उसकी समस्या का हल करने को तत्पर हों। लेकिन कक्षा में कई बार बच्चों की प्रत्येक बात पर ध्यान नहीं दिया जा सकता। कई बातें व हरकतें नज़रअन्दाज़ करनी होती हैं। ऐसे में कई बार बच्चों को लगता है कि उनको पर्याप्त महत्त्व नहीं दिया जा रहा है। कई बार वे रूठ भी जाते हैं। वे तभी मानते हैं जब उनकी बात सुनी जाती है और उनकी समस्या को हल करने का प्रयास किया जाता है। तब तक वे अनमने ही बने रहते हैं।

२.३.१३

आज जब विद्यालय पहुँची लगभग सारे बच्चे आ चुके थे। आईशा ने समाचार लिखे। प्रीति व विशाल ने फूलों में पानी डाला। सुबह की सभा बहुत अच्छी तरह संचालित हो रही है। बच्चे अपनी दमदार उपस्थिति बनाये हुए हैं। मनोज ने समाचार सुनाये। दीक्षा ने बहुत सुन्दर कहानी सुनायी। आज मैंने भी एक कहानी सुनायी। सुबह की सभा के बाद मैंने काम बाँटा। अवतार कक्षा- 2 के साथ काम करेगा। प्रियंका व गजेन्द्री कक्षा-1 के साथ। मैं खुद कक्षा-3, 4 व 5 के बच्चों के साथ। कक्षा- 2 को विलोम शब्दों पर वाक्य बनाने को दिये।

उदाहरण- श्यामा लम्बी लड़की है। जबकि रीना... । आगे अवतार को निर्देश दिये। कक्षा-एक के बच्चों को शब्दों/चित्रों के मिलान वाली गतिविधि करने को दी। कक्षा- 3 व 4 को स्तर अनुसार पुस्तकालय की पुस्तकों से अनुच्छेद पर प्रश्न-उत्तर बनाने को दिये। अब मैं खुद कक्षा- 5 के साथ गणित में काम करने लगी। सबने होमवर्क किया था। दिव्या, अंजली, आरजू, मनीष और शिवानी निरन्तर प्रगति है पर नवीन और दीपक में कुछ खास नहीं। जबकि नवीन सीखने का बहुत प्रयास करता है। दिव्या तो एक बार बताने पर ही समझ जाती है। आज मैंने इन्हें मिश्र संक्रियाओं के सवाल हल करवाये। कक्षा 5 को सवाल समझाकर उन्हें और सवाल हल करने को दिये। बीच-बीच में कक्षा- 3 व 4 के बच्चों का काम देखा। कक्षा 5 आज गणित में ही काम करती रही। कक्षा- 3 व 4 वालों को गुणा के मिलान आधारित अभ्यास कार्य करवाया व कुछ स्पेलिंग याद करने को दीं। लगभग सभी बच्चे मिश्र संक्रिया की अवधारणा समझ गये हैं। कल कुछ कठिन सवाल हल करवाऊँगी।

मध्यान्तर के बाद कक्षा- 3, 4 व 5 के साथ गतिविधि पुस्तिका-हिन्दी से कुछ काम करा रही थी तो विज्ञापन पर बातचीत शुरू हुई। बच्चे विज्ञापन के बारे में क्या सोचते हैं? क्या उन्हें लगता है जितनी बातें विज्ञापन में बतायी जाती है वे सच होती हैं?

ज़्यादातर बच्चों का मानना है कि विज्ञापन चीज़ों को बेचने के लिए प्रचार करना होता है। इससे हमें पता चलता है कि बाज़ार में क्या-क्या नया सामान आया है। बहुत-सी चीज़ें ऐसी हैं जो हमारे गाँव की दुकानों में नहीं मिलती हैं। बच्चों के अनुसार ज़्यादातर विज्ञापन झूठे होते हैं। लोगों को ठगते हैं। बच्चों ने अपने अनुभव भी साझे किये।

नवीन ने बताया, “वो दो बार बुद्धू बना है। एक बार लड़की वाली फ़ेयर एण्ड लवली लगायी, पर रंग गोरा हुआ ही नहीं। थोड़ी देर तक गोरा लगा पर फिर वैसा ही हो गया। दूसरी बार बोर्नविटा पिया पर लम्बा ही नहीं हुआ।”

दिव्या का कहना है, "कोई अपने सामान को खराब थोड़ी ही बतायेगा। हमें निर्णय लेना होता है कि हम क्या खरीदें क्या नहीं।"

आरज़ू ने कहा, "अगर कोई अपने सामान को झूठ-मूठ अच्छा बताता है तो दुबारा उसका सामान कोई नहीं खरीदता है।"

ज़्यादातर विज्ञापनों में लड़कियाँ क्यों होती हैं? इसका जवाब कक्षा 3 की अर्पिता ने दिया, "क्योंकि लड़कियाँ किसी की बात को जल्दी मान जाती हैं। किसी की बातों में जल्दी आ जाती हैं।" भवानी, मनीष, प्रीति, योगेश आदि का भी यही मानना है। उन्होंने बताया कैसे फेरी वाले गाँव में आकर उनकी माँओं को खराब सामान बेच जाते हैं। नवीन ने कहा, "ऐसा इसलिए होता है क्योंकि महिलाएँ बहुत कम लोगों को जानती हैं।" वो महिलाओं की छोटी दुनिया और कम अनुभवों की बात करना चाहता था। उसने कहा, "आदमी लोग रोज़ बाजार जाते हैं कुछ न कुछ सामान खरीदते हैं इसलिए उन्हें सामान की कीमत और क्वालिटी के बारे में ज़्यादा पता होता है।"

वे विज्ञापन ज़्यादा प्रभावशाली हैं जिनमें तन्दुरुस्ती, कीटाणु आदि की बात की जाती है। कीमत भी अपना असर दिखाती है। जैसे लाइफ़बॉय, डेटोल, व्हील आदि का लोकप्रिय होना।

बाज़ार ने बच्चों के मस्तिष्क पर बहुत गहरा असर डाला है। बच्चे बड़े उपभोक्ता बनकर उभरे हैं। इसी तरह किशोर-किशोरियाँ भी। बाज़ार गर्ल-चाइल्ड व बॉय-चाइल्ड को भी अलग-अलग उपभोक्ता के तौर पर देखता व उपयोग करता है। किसी भी स्वास्थ्य पेय जैसे कॉम्प्लान आदि में बढ़ती बच्ची नहीं होती, बढ़ता बच्चा होता है। सही पोषण की कमी भी लड़के में ही पूरी करनी होती है। लड़कों वाली क्रीम, लड़कियों वाली क्रीम, विज्ञापन में लड़कों के डियो से लड़कियों का किसी भी हद तक पागल हो जाने को दिखाना मानसिक विकृति पैदा नहीं करेगा तो क्या करेगा? बाज़ार हमेशा से मुनाफ़े पर टिका होता है पर विज्ञापन के नाम पर जितनी अश्लीलता आज दिखाई देती है उतनी शायद पहले कभी नहीं रही होगी। दूसरों का मज़ाक बनाना, अपनी गन्दी आदतों को शान से अपनी ताकत बताना, बार-बार ये कहना कि जो फलाँ चीज़ यूज़ नहीं करता वो मूर्ख है, आम बात हो गयी है। ऐसी चीज़ें दिखाकर बच्चों को संवेदनशील मनुष्य के रूप में विकसित होता देखने की कल्पना करना जानबूझकर मूर्ख बनने जैसा है।

इस तरह की बातचीत बच्चों को आलोचनात्मक चिन्तन की ओर ले जाती है। जब बच्चे अपने आसपास हो रही घटनाओं और अपने अनुभवों पर कक्षा में बातचीत करते हैं तो वे

अपने तर्कों को कसौटी पर कसते हैं। सही गलत का निर्णय करने की ओर बढ़ते हैं। दरअसल बच्चे सिर्फ़ स्कूल में ही नहीं सीख रहे होते हैं। वे अपने आसपास, घर और अन्य बहुत से स्रोतों से कुछ न कुछ सीख रहे होते हैं। ऐसे में स्कूल की ज़िम्मेदारी यह भी होती है कि वह बच्चों के अर्जित ज्ञान व समझ को एक सही दिशा देने में मदद करे।

४.३.१३

आज सोमवार है, कुल 47 बच्चे उपस्थित हैं। आज बहुत सारे बच्चों को गन्दे कपड़ों में बिना ठीक से हाथ-मुँह धोए, ठीक से बाल न बनाकर स्कूल आया देख बहुत दुःख हुआ। माना कि स्कूल में पानी, कंघी, साबुन है पर यह सब ठीक कराने में कितना समय बरबाद हो जाता है।

कक्षा-एक में श्वेता, सिम्मी और सागर में खास प्रगति नहीं हो पा रही है। ये शरारत करने में तो आगे हैं पर शब्द लिखना सीखने में पीछे। कॉपी फाड़ना इनका मनपसन्द काम है। जबकि मैं कोई ऐसा काम नहीं करती जिससे ये मेरी वजह से कॉपी फाड़ें। जैसे कि लेख पर डाँटना या मुड़े-तुड़े पेज पर नाराज़ होना आदि। चित्र बनाने की गतिविधि भी ये बहुत लापरवाही से करते हैं। शायद अभी इनसे चाक या पेंसिल पर मजबूत पकड़ नहीं बन पाती है। क्या कुछ बच्चों में एकाग्रता की दक्षता धीरे-धीरे आती है? ऐसे में शिक्षक को क्या करना चाहिए? पता नहीं। मैं इन्हें ज़्यादातर अपने सबसे पास बिठाकर काम कराती हूँ, परन्तु जैसे ही मैं अन्य बच्चों से घिरती हूँ ये भाग जाते हैं। कभी-कभी लगता है बिना डाँट काम नहीं चलता पर डाँटने से तो सीखना नहीं आता।

भोजनमाताएँ भी कभी-कभी कमाल करती हैं। अगर खाना बचा था तो मुझसे कहना चाहिए था। मैं बच्चों को पूछकर जो खाना, खाना चाहता है उसे खाना खाने भेजती। परन्तु उन्होंने तो चुपके से बच्चों से कहा था कि खाना खा लेना। बड़ी भोजनमाता की नातिन व छोटी की बेटी मेरी दूसरी कक्षा में जाने पर रसोई में गयीं, उनके पीछे बाकी बच्चे भी गये। थोड़ी देर में पाती हूँ पूरी रसोई में ऊधम मचा है। चीनी का डिब्बा गिरा पड़ा है साथ में सारी चीनी भी। कोई इधर दौड़ रहा है, कोई उधर। बच्चों को मुझसे किसी तरह का कोई डर क्यों नहीं लगता? क्या उन्हें लगता है कोई बात नहीं, मैडम कहेंगी “ये क्या किया?” फिर बातचीत होगी और अन्त में आगे से ऐसा नहीं करना और क्या?

कई बार बच्चे मेरे सब्र को मेरी कमज़ोरी मान लेते हैं। जबकि मैं चाहती हूँ बच्चे अपने विवेक और निर्णय से कार्य करना सीखें। वे झूठ न बोलना या चोरी न करना, किसी को परेशान न करना इसलिए न कर रहे हों कि उन्हें कोई पाप चढ़ेगा या उन्हें कोई देख रहा है बल्कि इसलिए कर रहे हों कि ऐसा करना गलत है। इससे बाकी लोगों को व स्वयं उन्हें भी कोई परेशानी हो सकती है, बुरा लग सकता है, काम खराब हो सकता है। शायद ये तरीका धीरे-धीरे असर करे।

किसी भी अध्यापक का विद्यालय में हर दिन अलग होता है। कई दिन खुशी एवं ऊर्जा का संचार करने वाले होते हैं। जबकि कई दिनों के अनुभव हताशा एवं खीझ भी उत्पन्न करते हैं। साथ ही अध्यापक की व्यक्तिगत ज़िन्दगी में हो रही घटनाएँ भी विद्यालय में उसके व्यवहार को प्रभावित करती हैं।

६.३.१३

आज 51 में से 49 बच्चे उपस्थित थे। आज का दिन बहुत ही ज़्यादा थकाने वाला था। पता नहीं क्यों? आज कक्षा-1 व 2 ने बहुत ऊधम मचाया। मैं उन्हें काम देकर कक्षा 3, 4 व 5 के साथ काम कर रही थी, तो वे खूब इधर-उधर भागे, चीज़ें तोड़ी, कागज़ फाड़े, एक दूसरे के साथ लड़ाई की।

छोटे बच्चे बिना शिक्षिका के मानते ही नहीं, फिर चाहे बड़ी कक्षा से कोई उनके साथ क्यों न हो। आज अवतार का कहना भी उन्होंने नहीं माना।

दोपहर में मीना, प्रेरक विद्यालय आयी। उसने बताया "मुकेश, जो कि एक दूसरा प्रेरक है, एक माह से देहरादून गया है। गाँव में 'लोक शिक्षा केन्द्र' में पढ़ाई ठीक ढंग से नहीं हो रही है, आदि।"

मुझे पाउलो फ्रेरे की वे बातें याद आ रहीं थीं जो उन्होंने ब्राज़ील में प्रौढ़ शिक्षा अभियान के दौरान के अपने अनुभवों पर लिखी थीं। पाउलो ने शिक्षा को सामाजिक, मानसिक व राजनीतिक परिवर्तन व सुधार के औज़ार के तौर पर पहचाना था और इसके लिए बहुत संघर्ष किये, यातनाएँ सहीं। अपनी विश्व प्रसिद्ध पुस्तक **"उत्पीड़ितों का शिक्षा शास्त्र"** में वे लिखते हैं, शिक्षा भी राजनीति है और जिस प्रकार राजनीति वर्गीय होती है, उसी तरह शिक्षा भी वर्गीय होती है।

मीना काम करना चाहती है पर अन्य महिलाएँ उसे सपोर्ट नहीं कर पातीं। महिलाओं के पास घर, जंगल, खेत, पशु से जुड़े हज़ारों तरह के काम हैं, इन सबसे फ़ुर्सत मिले तब तो पढ़ने जाएँ। फिर इन्हें लगता है, क्या होगा पढ़कर, ज़िन्दगी को तो ऐसे ही रहना है। काश! इनके लिए योजना बनाने वाले इनसे पूछते, इन्हें क्या चाहिए। ये क्या चाहती हैं? पुरुष लोक शिक्षा केन्द्र में पढ़ने को उत्सुक नहीं हैं। ऐसा नहीं है कि गाँव के सारे पुरुष साक्षर हैं। पर इनके अपने पूर्वाग्रह हैं। हम शिक्षिकाएँ समय पर गाँव की महिलाओं को प्रेरित करती हैं कि वे अपनी सुविधानुसार केन्द्र में जाएँ। मीना अपने स्तर पर प्रयास करती है पर ये प्रयास नाकाफ़ी हैं। ज़्यादातर लोगों की इस काम में कोई रुचि नहीं है। कुछ लोगों का यह भी सोचना है कि इससे गाँव के दो लोगों को रोज़गार मिला है यही बहुत है। आमतौर पर किसी भी सरकारी योजना के स्वागत का पहला आधार यही होता है कि उससे कितने लोगों को रोज़गार मिलेगा। उससे सार्वजनिक रूप से क्या बदलाव आयेगा ये बाद की बात होती है। जब सोचता कोई और है, करता कोई और, और होना किसी और के लिए होता है तो ऐसे ही होता है।

ये बात भी कुछ हद तक सही है कि कई बार हम अपने हितों के लिए सही निर्णय लेने में सक्षम नहीं होते, उसके लिए सजग नहीं होते, हमें पर्याप्त जानकारी या ज्ञान नहीं होता है। ऐसे में कोई दूसरा हमारे लिए निर्णय लेता है। जैसे कि लोकतन्त्र में सामूहिक हितों की बात की जाती है पर तथ्य यह भी बताते हैं कि जब तक हमारे स्वयं के प्रयास मजबूत नहीं होते बदलाव कम ही होते हैं।

कभी-कभी मुझे लगता है कि भारत में शिक्षक, खासतौर पर प्राथमिक शिक्षक को एक अनुत्पादक व्यक्ति के रूप में देखा जाता है। वो लाख जतन करे, न तो कोई उसके काम को प्रोत्साहित करने वाला है, न ही उसकी मानसिक या शारीरिक थकान महसूस करने वाला। बल्कि हर कोई उसके ऊपर सवाल खड़ा करना अपनी ज़िम्मेदारी और योग्यता मानता है। सवाल होने बुरी बात नहीं पर स्थितियों को समझे बिना सवाल उठाने से कोई लाभ नहीं होता। ऐसा नहीं कि मैं अपना काम किसी तरह के प्रोत्साहन के लोभ में करती हूँ। मेरे काम की मुझे तनख़्वाह मिलती है। अपना काम करना मेरा कर्तव्य है। पर एक शिक्षक अपनी नौकरी करने के साथ सामाजिक बदलाव लाने में भी उपयोगी साबित हो सकता है जबकि उसके आसपास के लोग भी उसकी मदद करें।

७.३.१३

आज मध्यान्तर के बाद ‘सृजनात्मक वादन’ में बच्चों ने “पाँच पूँछ का चूहा” नाटक का मंचन किया। सबने खूब मज़े किये। नाटक पर बात करते हुए बच्चों की बातों से लगा कि उनकी क्षमताओं को लेकर हमारे अनुमान बेहद सीमित होते हैं। बच्चे हमारे अनुमानों से कहीं अधिक बुद्धिमान होते हैं। धीरे-धीरे घर, परिवार, स्कूल, समाज बच्चों की इस प्रकार कण्डीशनिंग कर देते हैं कि बच्चे अपना मौलिक चिन्तन भूल समाज द्वारा स्वीकृत व प्रचलित व्यवहार करने लगते हैं। वे डर कर रहने लगते हैं। अपने लिए सुरक्षित व सुविधाजनक जगह व काम तलाशने लगते हैं और बाकी दुनिया में क्या हो रहा है इससे कोई खास मतलब नहीं रखते।

बच्चे चूहे को क्यों चिढ़ा रहे होंगे? के जवाब में, बच्चों ने पूछा, “ये आदमी के बच्चे हैं या अन्य जानवरों के या चूहों के?”

मैंने कहा, “शायद चूहों के ही होंगे तभी तो वे चूहे से बात कर पा रहे थे।”

दीक्षा - “पर चूहा तो नाई से भी बात कर रहा है।”

विकास - “शायद ये पहले ज़माने की बात है जब चूहे आदमी से बात कर सकते होंगे।”

“अच्छा मान लो ये बच्चे अन्य चूहों और जानवरों के हैं तो वे बार-बार चूहे की पूँछ को लेकर क्यों चिढ़ा रहे होंगे?”

बच्चे - “मज़ा लेने के लिए।”

“चिढ़ाने के लिए।”

“वो चूहा अपने को ज़्यादा समझता होगा।”

“क्योंकि उसके पास अन्य चूहों से ज़्यादा पूँछें थी।”

“वह दूसरे चूहों से अलग दिखता होगा।”

“सारे चूहे चाहते थे कि वो हमारे जैसा दिखे।”

मैंने पूछा, “तुम्हें क्या लगता है, दूसरों से अलग दिखना खराब बात है?”

बच्चे - “नहीं ,खराब बात नहीं।”

“जिसको भगवान जी ने जैसा बनाया वो वैसा दिखेगा।”

“कोई अपने को सजा-सँवार भी सकता है।”

“हो सकता है उस चूहे ने अपने पर और पूँछें उगा ली हों और वो इस बात को बाकी चूहों को नहीं बता रहा हो। या बाकी चूहे ज़्यादा पूँछें नहीं उगा पा रहे हों इसलिए उस चूहे को चिढ़ा रहे हों।”

मैंने फिर पूछा, “लेकिन जब चूहे ने अन्य पूँछें कटवाकर एक ही पूँछ बना ली तो भी उसे क्यों चिढ़ाया गया होगा?”

बच्चे - “मज़ा लेने के लिए।”

“क्यों वो चूहा बार-बार चिढ़ रहा था और अपनी पूँछ कटवा रहा था जबकि उसे तो दर्द भी हो रहा होगा।”

“वो चूहा बेवकूफ़ था, उसे तो सज़ा मिलनी ही चाहिए थी।”

मैंने कहा, “वो चूहा बेवकूफ़ कैसे था?”

बच्चे, “वो दूसरों के चिढ़ाने पर चिढ़ रहा था और अपना नुकसान कर रहा था। उसे फ़ालतू बातों पर ध्यान नहीं देना चाहिए था। उसे अन्य चूहों को समझाना चाहिए था, मैं जैसा हूँ वैसा ही रहूँगा। तुम चाहे जितना चिढ़ा लो।”

नवीन, “शायद वो चूहा भी दूसरे चूहों जैसा बनना चाहता था इसीलिए तो वो बार-बार अपनी पूँछ कटवा रहा था।”

अंजली, “हमें ऐसा नहीं करना चाहिए, चाहे हमें कोई कितना भी चिढ़ाये हमें नहीं चिढ़ना चाहिए। हम जितना चिढ़ते हैं लोग हमें उतना ही चिढ़ाते हैं।”

बच्चों के साथ इसी तरह की बातचीत चली। मुझे अपने बचपन की ऐसी बहुत-सी छोटी-बड़ी घटनाएँ याद हैं जब मैं दूसरों के चिढ़ाने से बहुत परेशान या निराश हो जाती थी। एक और बात यह भी याद है कि जब मेरे पास कोई नयी चीज़ आती थी जैसे कि फ्रॉक या सैंडिल या क्लिप आदि तो अन्य साथी उस चीज़ का मज़ाक बनाते थे। कई बार वे उसे बेकार बताते थे। तब वे मेरे साथ कुट्टी कर देते थे या जानबूझकर साथ नहीं खिलाते थे। मेरे दोस्तों में बहुत कम ऐसे थे जिनकी माँ नौकरी करती थीं। इसलिए भी मेरे पास कुछ चीज़ें उनसे पहले आ

जाती थीं। शायद ये अनजाने में होता हो, बाल मन एक दूसरे की चीज़ों से चिढ़ता हो क्योंकि हर बच्चा वैसी ही चीज़ अपने लिए भी चाहता हो। पर बड़े होने पर भी अपनी हर उस बात के लिए अपने आसपास के लोगों की उपेक्षा सहन की है जो उनसे अलग थी। मेरा पहनावा, चलने का, सोचने का, बात करने का तरीका। पता नहीं क्यों हम किसी को उसकी विशिष्टता के साथ स्वीकार नहीं कर पाते? हम चाहते हैं, सब हमारी तरह हों। जो भी अलग-सा दिखता है उसे अपने समूह में लाने हेतु हज़ार तिकड़म लगाते हैं। प्रेम, शक्ति ,डर, हँसी उड़ाना, निष्कासन हर तरीका अपनाते हैं। और अगर वो व्यक्ति अपनी विशिष्टता छोड़ हमारे समूह में आ भी जाए तो भी उसे मन से स्वीकार नहीं करते। उसकी छोड़ी हुई विशिष्टता से भी भय खाते हैं।

आमतौर पर मैं किसी कहानी या नाटक पर तुरन्त बच्चों से बात नहीं करती पर आज बात हो गयी।

८.३.१३

आज कक्षा-1के बच्चे पेज में कुछ काम करना चाहते थे तो उन्हें चित्र बनाने को दिये। छोटे बच्चों के चित्र बहुत गूढ़ होते हैं। अगर उनके चित्रों पर उनसे बातचीत न करो तो ठीक-ठीक और पूरा-पूरा समझ में नहीं आता है वे कहना क्या चाहते हैं।

छोटे बच्चे दुनिया को देखने-समझने की प्रारम्भिक अवस्था में होते हैं। इस समय दुनिया के बारे में उनकी अवधारणाएँ जल्दी-जल्दी बनती और बिगड़ती हैं। बच्चे अपनी नज़रों से दुनिया को देखते समझते हैं। छोटे बच्चों की कल्पनाएँ और बातें बहुत रोचक होती हैं जिन्हें सुनने में मज़ा तो आता ही है, इसी बहाने उनके करीब आने और उनको समझने का मौका भी मिलता है।

अंजली (कक्षा-1) ने कुछ ऐसा चित्र बनाया था: एक बड़ा पेड़ और उसके अन्दर एक छोटा पेड़। उसने बताया ये पेड़ और ये उसकी बेटी है। पेड़ अपनी बेटी के साथ धूप सेंक रहा है। उसने अपनी बेटी को गोद में बिठाया है।

अंजली के चित्र को समझना चाहूँ तो लगता है वो माँ और बच्चे के सम्बन्ध को दर्शा रही है। जिसमें माँ के प्यार के साथ-साथ माँ से मिलने वाली सुरक्षा और विश्वास भी दिखता है।

आज कक्षा-एक के बच्चों को बिल्कुल अपने पास बिठाया। आज शेरू की कोई शिकायत नहीं आयी। सबने मज़े से काम किया।

अवतार (कक्षा-7) ने कक्षा-4 के बच्चों का गणित का टेस्ट लिया। वो स्कूल आकर बहुत खुश है। मेरी बात नहीं मानता, अपनी मरज़ी से काम करता है। उसे मुझसे कोई संकोच नहीं है। मुझे लगता है उसको सही दिशा मिले तो वह शिक्षा के क्षेत्र में अच्छा काम कर सकता है। मैं इसकी पूरी मदद करूँगी। क्या पता कभी भविष्य में हम साथ-साथ काम कर रहे हों!

कक्षा 3, 4, 5 ने कल का दिया होमवर्क किया है। उन्होंने उन पेड़-पौधों की सूची बनायी है जिन पर आजकल नयी पत्तियाँ और फूल आ रहे हैं। बच्चों ने पत्तों व फूलों का रंग भी नोट किया है। बहुत से पौधों के बारे में अवलोकन कर अपनी बात नोट की है। जैसे, पौधा - फ्यौंली, फूल का रंग - पीला, पत्ती का रंग - हल्का हरा।

सेमल पर फूल लग रहे हैं अभी पत्तियाँ नहीं आयी हैं।

चीड़ पर नयी चमकीली हरी नुकीली पत्तियाँ और नयी छिन्ती आयी हैं।

मौलू पर नये काँटे, सफ़ेद फूल, नयी गाढ़ी हरी पत्तियाँ आयी हैं, आदि।

दोपहर बाद कक्षा 3, 4 व 5 के बच्चों ने, जिनका कहानियों को पूरा करने का काम छूटा था, उसे पूरा किया, शेष बच्चों ने गणित में काम किया।

आज का होमवर्क - उन सामानों की सूची बनाकर लाना जिन्हें उन्होंने खरीदा है या जिनका विज्ञापन उन्होंने टीवी पर देखा है। इसके लिए आज टीवी देखने की ज़रूरत नहीं बल्कि आज तक जितनी देखी हैं उसी को याद करके लिखना है।

उदाहरण - साबुन, बिस्कुट, पेय, खाने-पीने की अन्य चीज़ें आदि।

९.३.१३

आज सारे बच्चे साफ-सुथरे बनकर विद्यालय आये थे। सुबह जब मैं विद्यालय पहुँची, तमन्ना (कक्षा-1) एक छोटी थैली में 4-5 बेर, 4-5 अंगूर मेरे लिए लायी थी। वो बोली, “मैडम, आपके लिए कल मैं बाज़ार गयी थी तब लायी।” नन्ही-सी गाँव की बच्ची बाज़ार

जाकर अपने लिए फल लायी, उसमें से भी मेरे लिए बचा लिये। मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने उससे एक बेर, एक अंगूर लेकर बाकी वापस उसे खाने को दिये और अपने बेर व अंगूर उसी के सामने खा लिये। जब हम बच्चों को प्रेम और सम्मान देते हैं तो वे स्वाभाविक तरीके से इन मूल्यों को समझ रहे होते हैं।

बाल मन को जीतना कोई आसान बात नहीं होती। आज दुर्गेश स्कूल आया है। वह, एपीएफ़ में काम करता है। 20-22 साल का युवा है, कॉलेज में बी.ए. की पढ़ाई भी कर रहा है। मेरे एक मित्र ने उसे सुझाव दिया है कि वह मेरे विद्यालय में आकर सीखने-सिखाने को लेकर कुछ समझ बनाये। आज अवतार भी विद्यालय आया है। अवतार इसी विद्यालय का छात्र है। वह इस विद्यालय में होने वाली समस्त गतिविधियों से परिचित है और मेरे काम कराने के तरीकों से भी परिचित है। इसलिए जब मैं उसे किसी गतिविधि को कराने के लिए निर्देश देती हूँ तो वह तुरन्त समझ जाता है। जबकि दुर्गेश को बच्चों के साथ काम करने का कोई अनुभव नहीं है। आज जब मैंने कक्षा-2 के बच्चों से कहा कि दुर्गेश उनके साथ काम करेगा तो वे मना करने लगे। उन्होंने चाहा कि अवतार या मैं उनके साथ काम करूँ। सिमरन ने कहा, "दुर्गेश भैया कॉपी चैक नहीं करते हैं।" मैंने जब यह कहा, "तुम बहुत सारे हो ,तुम्हारी बारी नहीं आ पाती होगी" तो वो बोली, "आप कैसे करते हैं?" मैंने उनसे बात की कि, "भैया अभी नये हैं, तुम्हें उनकी मदद करनी चाहिए। तुम अब कक्षा 3 में जाने वाले हो, वगैरह" तो वे मान गये।

दुर्गेश को बहुत मेहनत करनी होगी।

आज दोपहर जब हमारी सृजनात्मक कक्षा चल रही थी तो एक साधु व एक जापानी महिला एक बड़ी परात में लड्डू लेकर आये और बिना मुझसे कुछ बात किये बच्चों को बाँटने लगे। जब तक मैं बच्चों से कुछ बात करती बच्चे उन्हें घेर चुके थे। बड़ी मुश्किल से मैंने बच्चों को बिठाया व लड्डू बँटवाये। होना तो ये चाहिए था कि वो पहले मुझसे बात करते फिर लड्डू बाँटते। मैं पहले उनके लाये लड्डू खाती। मैं कोई शंकालु नहीं हूँ पर ये सब दान/दया सरकारी विद्यालय के बच्चों के प्रति ही क्यों है? बगल में प्राइवेट स्कूल भी है, ज़रा कोई वहाँ जाकर बिना पूछे बच्चों को लड्डू खिलाकर दिखाये। खाना खिलाना बुरी बात नहीं पर दया भाव से बेचारा समझकर खिलाना मुझे कतई पसन्द नहीं। बाद में बच्चों से बातचीत की पर बच्चे तो बच्चे हैं। सब उनसे ऐसे ही व्यवहार करते हैं तो झट हाथ फैलाना उनकी आदत बन गयी है।

सरकारी प्राथमिक विद्यालय के बारे में दुनिया भर के लोगों का मानना है कि इनमें पढ़ने वाले बच्चे गरीब व लाचार होते हैं और कोई भी उनके लिए कुछ भी देने करने को स्वतन्त्र होता है। यह बात कुछ हद तक सही है कि सरकारी स्कूल में पढ़ने वाले ज़्यादातर बच्चे कमज़ोर व वंचित तबकों से होते हैं, उनके पास संसाधनों की कमी होती है। पर यह बच्चे भी बाकी सारी दुनिया के बच्चों की तरह संवेदनशील, उत्साही व सीखने-समझने के लिये उत्सुक होते हैं। सभी को इनके साथ उतनी ही गरिमा व प्रेम से व्यवहार करना चाहिये जो किसी भी अन्य बच्चे का अधिकार है।

आज सृजनात्मक कक्षा में दो समूहों ने "साहसी गधा" नाटक किया।

बेहतर अभिनय, बेहतर संवाद। आज के नाटक में नवीन व दिव्या ने संचालक की भूमिका निभायी। अंजली किसी भी पात्र में जान डाल देने में सक्षम है, तो नवीन में धीरे-धीरे नेतृत्व करने की क्षमता विकसित हो रही है।

१३.३.१३

मध्यान्तर में आज सभी बच्चों ने बाल प्रतिनिधियों के साथ मिलकर बैठक की। जिसमें सभी बच्चों ने अपने लिए नियम तय किये और अपने प्रतिनिधियों का चयन किया।

इसके बाद कक्षा-1 और 2 के बच्चों ने कविताओं पर अभिनय किया। उनकी अन्तिम कविता 'एक बुढ़िया ने बोया दाना' पर ही मैंने आज बातचीत की।

जैसे -

1. तुम्हें क्या लगता है बुढ़िया ने जो गाजर बोयी थी वो कितनी बड़ी रही होगी?
2. बुढ़िया और उसके परिवार वालों को गाजर उखाड़ने में इतनी परेशानी क्यों हुई होगी?
3. क्या तुम्हारे साथ कभी ऐसा कुछ हुआ है, तब तुमने क्या किया?
4. उन पौधों का नाम बताओ जिनकी जड़ों से हम भोजन प्राप्त करते हैं?
5. आजकल किन-किन पौधों से हमें सब्ज़ी या फल मिल रहे हैं?
6. किन पेड़-पौधों (बेलों) को सहारे की ज़रूरत होती है? आदि।

आज 'हमारे आसपास' की कक्षा इसी तरह चली। कक्षा 3, 4, 5 के बच्चों ने इन्हीं प्रश्नों के जवाब अपनी कॉपी पर लिखे।

शुभम बहुत धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा है। उसने किसी भी विषय में अपनी कक्षा के अन्य बच्चों के बराबर दक्षता हासिल नहीं की है। जबकि उस पर कक्षा में विशेष ध्यान दिया जाता है। मैं उसे ऐसी जगह बिठाती हूँ जहाँ वो मेरे नज़दीक बैठे। फिर भी वह बहुत धीमी गति से सीख रहा है। उसकी अवलोकन क्षमता व तर्क शक्ति बहुत अच्छी है। किसी पुस्तक को पढ़ने के बाद वह उन पहलुओं पर बात रखता है जिन्हें अन्य बच्चे अनदेखा कर देते हैं पर वो लिखने व सवाल हल करने की दक्षता में धीमा है।

१४.३.१३

अकेले 50 बच्चों का विद्यालय संभालना बहुत मुश्किल काम है। मेरे पास 50 तोत्तोचान हैं। इनकी हर बात, हर गतिविधि महत्त्वपूर्ण है पर वे एक साथ मिलकर शोर बन जाती हैं। बहुत से बच्चे भोजन के लिए थाली अपने बस्ते में रखते हैं, ऐसा उनके अभिभावक चाहते हैं। हम समझ सकते हैं कि ऐसा क्यों होता है। जातीय भेद केवल विद्यालय में मध्याह्न भोजन लागू कर साथ बैठकर खाने से खत्म जाएगा, इसमें संशय है। लोगों ने दूसरे रास्ते निकाल लिये हैं और हाइजीन के नाम पर सुविधा सम्पन्न वर्ग भी तो इसी प्रकार का आकलन करता है। दिन में कई बार उनकी थाली बस्ते से गिरती है। पूरी कक्षा में झन्नाती है। कुछ बच्चे पेंसिल या पैन भी नहीं लाते। रबर कटर की बात तो दूर है। कभी कोई कुरकुरे/चुइंगम साथ ला रहा तो कोई एक या दो रुपये का सिक्का। कोई सीटी साथ लायी है तो कोई खिलौना। बच्चों के बस्ते में उनका खज़ाना होता है जो कई बार उनसे बातचीत का विषय बन जाता है। कई बार इन सब चीज़ों से कक्षा में व्यवधान हो जाता है। अगर कक्षा एक-दो के साथ ही पूरा समय देना हो तो शायद इस कक्षा में और बेहतर काम हो पाये पर यहाँ तो एक साथ कई कक्षाएँ देखनी पड़ती हैं। ऐसे में छोटे बच्चे इधर-उधर ध्यान देने लगते हैं और बड़े बच्चों की कक्षा बाधित होती है। इन सबके चलते मैं अपनी कक्षा में वह सब काम नहीं कर पाती जो मैंने सोचा होता है। मैं बच्चों के साथ नियमित व ढेर सारा काम करना चाहती हूँ पर कई वजहों से ये नहीं हो पाता है, ऐसे में खीझ का होना स्वाभाविक है।

२.४.१३

बच्चों को नयी कक्षा में जाना बहुत उत्साहित कर रहा है। आज उनमें अजब-सा उमंग-उत्साह है। आज पूरा दिन मैंने सिर्फ़ बच्चों के साथ काम किया। उन्होंने भी मन लगाकर काम किया। वे नयी कक्षा में जाने पर नया कुछ सीखने को उत्सुक थे।

अप्रैल माह में तरह-तरह के अन्य काम, जैसे- नयी मासिक और वार्षिक डाकें, नयी शिक्षा समिति का गठन, अभिभावक मीटिंग, फ़ीडबैक, एडमीशन, बालगणना, नयी कार्य योजना बनाना आदि होते हैं। ऐसे में जो ध्यान नयी कक्षा में जाने पर बच्चों को मिलना चाहिए वो नहीं मिल पाता और उनका उत्साह कम होने लगता है। बच्चे चाहते हैं अगर उन्हें कॉपी पर कोई काम कराया गया है तो उसे मैडम उसी दिन जाँचे।

आज मैंने कक्षा-1, 2, 3 और 4 का हिन्दी व गणित का फ़ीडबैक निकाला और उनके लिए कार्य योजना बनायी। पिछले 3 वर्षों से बच्चे रोज़ गाँव का समाचार ब्लैकबोर्ड पर लिखते आ रहे हैं। जिसमें गाँव में हुई घटनाओं के साथ-साथ पेड़-पौधों, फसलों, नदी, नालों, मौसम, जीव-जन्तुओं आदि के बारे में भी लिखा होता है। आजकल मैं देख रही हूँ कि बच्चे कुछ खास पेड़-पौधों के बारे में ही लिख रहे हैं। जैसे प्याज, गेहूँ, बुरांश, चीड़, अखरोट आदि। जबकि आजकल हिसर, किंगोड़, खड़िक, गुरयाल, भीमल, तुन, कुज्जु आदि कई सारे पेड़-पौधों पर फूल-फल लगने की तैयारी है। क्या प्रकृति से सम्बन्धित बहुत सारी घटनाएँ, जो बच्चों को सीधे-सीधे प्रभावित नहीं करती, उनका ध्यान नहीं खींच पाती हैं या उनका अवलोकन इतना सतही होता है? पता नहीं, देर तक हुई बातचीत में कई सारे तथ्य निकलते हैं। लेकिन यदि वे खुद कुछ लिख रहे हैं तो उनका ध्यान उन तथ्यों पर क्यों नहीं जाता?

मैंने अवलोकन करना, सूचीबद्ध करना, परिवर्तन देखना, निष्कर्ष निकालना आदि तथ्यों पर ध्यान देने हेतु कक्षा-4 और 5 के लिए एक योजना बनायी है जो पूरे शैक्षिक सत्र चलेगी।

इसमें नीचे लिखित चीज़ें शामिल होंगी:

1. प्रत्येक माह कम से कम एक बार गाँव, छान, खेतों, घराट आदि का भ्रमण करना।
2. भ्रमण के दौरान अपनी कॉपियाँ साथ रखना, जिन पर विद्यालय में निर्धारित प्रश्नों के हिसाब से अवलोकन कर जवाब लिखना।
3. वहीं कहीं बैठकर आसपास की वनस्पतियों पर बातचीत करना।

4. भोजनमाता या अन्य किसी अभिभावक की मदद लेना।
5. दूसरे दिन विद्यालय में चर्चा कर चीज़ें सूचीबद्ध करना व निष्कर्ष तक पहुँचने का प्रयास करना।
6. इन्हीं चीज़ों को यथावत या आवश्यकतानुसार फेरबदल कर अगला भ्रमण करना।

इस प्रकार हम वर्ष भर वनस्पतियों, फसलों, मौसम, नदी स्रोतों आदि में हुए बदलाव को देख पाएँगे। इसकी अलग कॉपी होगी ताकि चीज़ें व्यवस्थित रह पाएँ।

५.४.१३

आज कक्षा-4 और 5 के बच्चों से शैक्षिक भ्रमण को लेकर विस्तृत बातचीत की। उन्हें बताया कि हम किन-किन चीज़ों का अवलोकन करेंगे व किस तरह अपने अवलोकनों को नोट करेंगे। इस काम के लिए तीन-तीन बच्चों का समूह बनाया और प्रत्येक समूह के लिए अलग-अलग कॉपी बनायी। हमने पेड़-पौधों के अवलोकन हेतु नीचे लिखित बिन्दुओं को निर्धारित किया।

1. नाम व प्रकार
2. तने की जानकारी
3. पत्तियों की जानकारी
4. फूलों की जानकारी
5. फलों की जानकारी
6. अन्य जानकारियाँ - जैसे पेड़ पौधों पर रहने वाले जीव-जन्तु एवं पेड़ पौधों का उपयोग आदि।

किसी पेड़ या पौधे के बारे में हम अलग-अलग महीनों में इस जानकारी को लेंगे व उस पेड़-पौधे का वार्षिक या छमाही जीवन चक्र देखने की कोशिश करेंगे। इस प्रकार हम विभिन्न पेड़-पौधों, झाड़ियों का वर्गीकरण कर उनमें समानता या अन्तर देख पाएँगे।

आज हमने अपने स्कूल के आँगन में लगी गुलाब की झाड़ी का सूक्ष्म अवलोकन कर जानकारियाँ नोट की।

६.४.१३

आज मैंने चौथी व पाँचवीं कक्षा के बच्चों के लिए भाषा शिक्षण के लिए एक योजना बनायी है। जिसका उद्देश्य बच्चों में सही वाक्य-निर्माण करना, वाक्यों का परस्पर सम्बन्ध बनाना, कल्पना करने को प्रेरित करना, घटनाओं को जोड़कर लिखना, शब्दों का अपने अनुभवों के आधार पर प्रयोग करना है। साथ ही पिछले दिनों जो पेंटिंग, भाषा शिक्षण को ध्यान में रखकर बनायी थी उसके कार्य को भी आगे बढ़ाना है। चूँकि इन दिनों विद्यालय में विभिन्न डाक सम्बन्धी अनेक काम हैं व प्रधानाध्यापिका ज़्यादातर इन्हीं कामों को निपटाने में लगी हैं तो इस तरह की गतिविधियाँ करवाने हेतु ये उपयुक्त समय है जबकि बच्चों के पास नयी कॉपी किताबें भी नहीं हैं। ऐसे में हिन्दी व गणित को लेकर शुरुआती चीज़ों/दक्षताओं पर कार्य करना ही उचित होगा। यह सब उसी तरह का काम है जो मैं नया अकादमिक वर्ष शुरू होने के समय अकसर करती हूँ। इसमें प्रमुख तौर पर भाषा में कुछ इस तरह का काम होता है:

- शब्दों से कहानी बनाना, चित्र बनाना व प्रश्न बनाना।
- चित्र देखकर/चित्रों को देखकर कहानी व प्रश्न बनाना।
- अधूरी कहानी पूरी करना व प्रश्न बनाना।
- शब्द चित्र व क्रिया चित्रों पर कहानी व प्रश्न बनाना।
- 4-5 बच्चों के समूह में कहानी पढ़ना।
- कहानी पर बातचीत, प्रश्न-उत्तर निर्माण। बच्चे इस गतिविधि पर ही सबसे ज़्यादा और विविधतापूर्ण प्रश्न बनाते हैं। इसके लिए पुस्तकालय की पुस्तकों का प्रयोग करूँगी।
- दिये गये विषय पर कविता लिखना, चित्र बनाना।
- अपनी लिखी कविता, कहानी को सुबह की सभा में सबको सुनाना।
- अपनी लिखी कविता, कहानी को सादा कागज़ पर लिखकर चित्र बनाकर डिस्प्ले पर लगाना जिससे अन्य बच्चे भी उसे पढ़ पाएँ।

समूह में पढ़ी गयी किसी रोचक कहानी पर सृजनात्मक वादन (पीरियड) में नाटक करना। जिसमें मैं बच्चों की मदद करूँगी। ये गतिविधि बच्चों को सबसे प्रिय है।

मैंने जब-जब उपर्युक्त गतिविधियों के साथ बच्चों को काम कराया है, उनमें अपार ऊर्जा व क्रियाशीलता पायी है। यहाँ तक कि कभी-कभी मैं भी उस ऊर्जा को सँभाल नहीं पाती हूँ।

बच्चों में तो असीम क्षमता होती है, वे वहाँ तक सोच लेते हैं जहाँ तक हम बड़े नहीं सोच पाते। उनके पास ढेरों अनुभव होते हैं, जिन्हें विद्यालय में जगह पाता देख उन्हें अपने अस्तित्व का आभास होता है। मुझे बच्चों के साथ इस तरह की गतिविधियाँ कराना बहुत पसन्द है क्योंकि इसमें वे नयी रचनाओं का सर्जन कर रहे होते हैं, जो कई बार एकदम मौलिक और नये तरीके से नये विषय पर लिखी होती हैं।

१.४.१३

आज कक्षा में **'शब्दों से कहानी और प्रश्न बनाना '** गतिविधि की। शब्द- मीठा, गुनगुना, बन्दर, चिड़िया, पेड़, नदी, सूरज। बच्चों ने सभी शब्दों का उपयोग कर कहानी बनाने का प्रयास किया। गुनगुना शब्द का हर बच्चे ने अलग-अलग प्रयोग किया।

1. योगेश (कक्षा 4) की कहानी में नदी पार के आम के पेड़ से खुशबू इस पार आ रही है, जहाँ एक पेड़ पर बन्दर और चिड़िया रहती हैं। चिड़िया बन्दर से खुशबू का कारण पूछती है। बन्दर चिड़िया से कहता है, "तुम्हारे पास तो पंख हैं तुम नदी पार जाकर आम खा सकती हो।" चिड़िया कहती है, "मैं तुम्हारे लिए भी आम लाऊँगी।" चिड़िया को आम लाने में देर हो जाती है, बन्दर सो जाता है। चिड़िया दो आम लाकर बन्दर के हाथों में रख देती है। सुबह जब सूरज निकलता है, गुनगुना मौसम होता है तब बन्दर की आँख खुलती है। फिर चिड़िया और बन्दर की बातचीत के बाद धन्यवाद देना व दोस्ती पक्की होना आदि पर कहानी समाप्त होती है।
2. अनन्ता (कक्षा 5) ने अपनी कहानी में गुनगुना शब्द का प्रयोग एक मछली के नाम के लिए किया है।
3. प्रियंका (कक्षा 5) ने पानी को गुनगुना बताया है। उसने अपनी कहानी में टीवी के अनुभवों को भी जोड़ा है। जैसे नदी में नहाने के बाद चिड़िया और बन्दर घर गये उन्होंने अपने शरीर पर क्रीम लगायी। आँखों में ककड़ी काटकर रखी फिर धूप में लेट गये, आदि
4. आईशा (कक्षा 5)- की कहानी में पेड़ की पत्ती पर मधुमक्खी बैठी थी। वह गुनगुना रही थी।
5. भवानी (कक्षा 5) ने नदी को गुनगुनी बताया है। नदी के किनारे सुहाने मौसम को देख चिड़िया वहाँ अपना घोंसला बना रही है।

6. दीक्षा (कक्षा 5) ने लिखा है- चिड़िया ने कहा, "देखूँ पानी ठण्डा है या गुनगुना।" उसने अपना एक पैर नदी में डाला और कहा, "पानी गुनगुना है। मैं नहा सकती हूँ पर अभी सूरज नहीं निकला। जब सूरज निकलेगा तब नहाऊँगी।"
7. रणवीर (कक्षा 4) ने गुनगुना शब्द का प्रयोग सूरज के बाद आने वाली धूप के लिए किया है।

जब बच्चे शब्दों से कहानी या चित्रों/क्रिया-चित्रों से कहानी बनाते हैं या अधूरी कहानी पूरी कर रहे होते हैं तो उनका पूरा ध्यान कहानी लिखने पर होता है और वे सामान्य से प्रश्न बनाते हैं। जबकि पहले से लिखी कहानी पर जब उन्हें प्रश्न बनाने को दो तो वे खूब सारे व विविधता पूर्ण प्रश्न बनाते हैं।

इस तरह की गतिविधियाँ कराने में मैं अपने सीखने को देखूँ तो पाती हूँ कि अब मैं बच्चों को ज़्यादा नये विषयों और ऐसे शब्दों जिनका कई तरह से प्रयोग किया जा सकता है पर काम करा पाती हूँ। जैसे कि गुनगुना, चमकीला या सबसे ऊँची डाल, घोड़ा गया उजाड़ खाने, मछली का छाता आदि।

१६.४.१३

आज की गतिविधि थी 'अपने मनपसन्द क्रिया-चित्र पर कहानी लिखना और प्रश्न बनाना'। ये क्रिया-चित्र मैंने पिछले दिनों स्कूल की दीवार पर बनाये थे।

1. रणवीर (कक्षा 4)

दो दोस्त थे। उनके नाम, आदत, व्यवहार आदि के बारे में वर्णन। एक दिन वे पहाड़ पर चढ़ने गये। पैर फिसलना। दूसरे को थामना। घर पर दोस्तों और परिवार वालों को सारी बात बताना आदि।

2. मनीषा (कक्षा 5)

एक लड़की थी उसका नाम राखी था। उसके पास एक रस्सी थी। रस्सी लाल रंग की थी। एक दिन रस्सी टूट गयी से कहानी बनती है जिसे कई नाटकीय घटनाओं व संवाद के बाद पापा ठीक कर देते हैं। राखी खुश होकर अपने दोस्तों के साथ खेलने लगती है।

मनीषा की कहानी की विशेषता नाटकीयता व संवाद हैं। जैसे अचानक तभी पापा ने पूछा, “क्या हुआ बेटी?” आदि।

ज़्यादातर बच्चों ने एक ही रेखाचित्र का उपयोग किया है। चित्र का वर्णन भी किया है। जैसे वह बहुत तेज़ दौड़ रहा था। उसके बाल हवा में उड़ रहे थे। जिन बच्चों ने दो रेखाचित्र बनाये हैं। उन्होंने उन पात्रों को जोड़कर कहानी लिखी है। सभी बच्चों ने अपनी कहानी के पात्रों के नाम रखे हैं। ये नाम उनके आसपास के भी हैं और टीवी पर आये कार्टून किरदारों के भी।

बच्चों के काम में प्रगति है। वो इन क्रिया-चित्रों पर अपने साथ घटित अनुभवों या देखे-सुने अनुभवों के आधार पर कहानी लिखने का प्रयास कर रहे हैं। बच्चों से व्यक्तिगत तौर पर उनकी कहानियों पर बात करती हूँ तो उनके मन की गहराइयों में छिपी कई बातें, प्रश्न, जिज्ञासा, डर के बारे में भी पता चलता है। मुझे लगता है एक विश्वास व आत्मीयता भरा संवाद जीवन में आगे बढ़ने के लिए बहुत मददगार होता है। ये गुण तो एक शिक्षक में होना ही चाहिए। मैं भी धीरे-धीरे ये कर पा रही हूँ। हालाँकि बड़े बच्चों के साथ जो अब बड़ी कक्षाओं में उच्च माध्यमिक स्कूल में चले गये हैं ज़्यादा देर बात नहीं कर पाती। बहुत कुछ होता है मन में पूछने-बताने को पर न जाने कैसा संकोच होता है।

१८.४.१३

कक्षा-4 और 5 के चार-चार बच्चों के 5 समूह बनाये। जिसमें उन्हें अलग-अलग कहानी देकर कहानी पर प्रश्न बनाने की गतिविधि करवायी। मैं बारी-बारी से थोड़ी-थोड़ी देर प्रत्येक कक्षा/समूह में शामिल हुई। उनकी बातचीत को बढ़ाने का प्रयास किया।

मध्यान्तर से थोड़ा पहले ग्राम पंचायत मंत्री, प्रधान जी व प्रबन्धन समिति के अध्यक्ष जी आये। उन्हें वर्ष 2010-11 का विद्यालय अनुदान का ब्यौरा आदि दिया। थोड़ी देर उनसे बात की तो लगा हमारी संस्कृति हमें ठीक से बात करना तक नहीं सिखाती। हम इतने घबराये, बौखलाये, हर बात पर परेशान होते हैं मानो सारे संसार का भार हमारे नाजुक कन्धों पर आ पड़ा हो। फिर स्थिति को ठीक करने के लिए हम कुछ करना चाहें या नहीं, ये तो बाद की बात है। अगर हम एक-दूसरे से ठीक से संवाद करना भी सीख लें तो 20 प्रतिशत समस्याएँ तो ऐसे ही ठीक हो जाएँगी।

मध्यान्तर के बाद कक्षा 1, 2 और 3 को गणित का काम कराया और कक्षा-4 और 5 के साथ उनका समूह कार्य देखा। बच्चों की कापियों पर उनके प्रश्नों के बारे में बात की व उनका ध्यान प्रश्नों की सही संरचना की और दिलाया।

२२.४.१३

आज मैं कक्षा-4 और 5 के बच्चों को लेकर नयी सड़क से होकर (गाँव, सेरा, गाड, छान) सेरे तक शैक्षिक भ्रमण पर गयी। साथ में मदद के लिए भोजनमाता अबला भी थी।

हमने तमाम पेड़-पौधों का अवलोकन किया। पूर्व में हुई बातचीत और बिन्दुओं के आधार पर बच्चों ने अपने अवलोकन कॉपी में लिखे। आज हमने 45-50, पेड़-पौधों, झाड़ियों का अवलोकन किया व जानकारियाँ नोट कीं। उदाहरण के लिए,

नाम: किंगोड़-झाड़ी

तना: काँटेदार, मोटा, हरा-भूरा

शाखाएँ: फैली हुई ,लम्बी हरी

पत्तियाँ: हरी, काँटेदार, तीरनुमा

फल: छोटे व हरे

फूल: पीले

अन्य: चींटियों व छोटे कीटों का बसेरा है।

खेतों में आजकल गेहूँ व सरसों की फसल तैयार हो रही है। प्याज की पत्तियाँ सूख रही हैं उसमें दाने पड़ने लगे हैं। आलू और धनिया के पौधों पर भी फूल आ गये हैं।

मेरी योजना पूरे वर्ष पेड़-पौधों का समय-समय पर अवलोकन कर उनके जीवन चक्र में होने वाले तमाम बदलाव देखकर नोट करने की है।

१.५.१३

कक्षा-4 और 5 के साथ चित्र से कहानी लेखन व प्रश्न निर्माण गतिविधि के दौरान नोट की गयी बातें जिन पर प्रत्येक बच्चे के साथ अलग-अलग व समूह में काम करना होगा जैसे:

पूर्ण विराम का प्रयोग।

एक वचन को बहुवचन में बदलकर वाक्य लिखना।

एक वचन का प्रयोग।

सर्वनाम का उचित प्रयोग।

चार (अनेक) पात्रों का परिचय व नाम कैसे लिखेंगे?

मात्राओं का प्रयोग।

घटनाओं/सन्दर्भों का आपसी सम्बन्ध।

दो वाक्यों में फिर, और, तब का अनावश्यक प्रयोग न करना।

३.५.१३

आज 'अपने अनुभवों से वाक्य बनाने' की गतिविधि पर बच्चों ने इस तरह के वाक्य बनाये-

रणवीर (कक्षा-4)

भारी-हल्का: जब हम कोई भारी चीज़ उठाते हैं तो उसके बाद दूसरी चीज़ें उठाने में हल्की लगती हैं।

पास-दूर: जब हम कोई चीज़ दूर से देखते है तब वह चीज़ बहुत छोटी लगती है, हम पास जाकर देखते है तो हमें वह बड़ी लगती है।

अमीर-गरीब : अमीर दिन भर बैठते है जबकि गरीब दिन भर काम करते हैं।

भवानी (कक्षा-5)

भारी हल्का: सीमा बाज़ार गयी। वह बाज़ार से गेहूँ का कट्टा और सब्ज़ी का थैला लायी। गेहूँ का कट्टा भारी है जबकि सब्ज़ी का थैला हल्का है।

१६.५.१३

आज रूम टू रीड की बैठक में शामिल होने श्री भुवनेश्वरी महिला आश्रम के कार्यालय गयी। आज इसकी अन्तिम बैठक थी लगभग ढाई साल तक रूम टू रीड के साथ काम किया। मुझे ये कार्यक्रम बहुत अच्छा लगा। हमारे पास एक अच्छा पुस्तकालय हो गया है जिसका हमने भरपूर उपयोग किया।

पुष्पलता मैडम भी बहुत खुशी से मिलीं।

अगर शिक्षक चाहे तो अपने विद्यालय में बहुत कुछ कर सकता है। पिछले तीन सालों के अनुभवों के आधार पर मैं यह कह सकती हूँ कि मैंने बच्चों के साथ पुस्तकालय व पाठ्यक्रम को एकसाथ रखकर जो शिक्षण कार्य किया वो बहुत सार्थक व सृजनात्मक रहा।

१९.५.१३

पिछले तीन दिन एपीएफ़ के ऑफ़िस में शोध विधा पर आधारित वर्कशाप में शामिल रही।

पहले दिन 10 बजे वर्कशाप शुरू होने वाली थी। मैं सुबह लगभग 9.45 पर पहुँच गयी थी पर वर्कशाप लगभग 12 बजे शुरू हुई। हर बार ऐसा ही होता है फिर भी मेरी आदत नहीं सुधरती। मुझे हमेशा समय से जाना पसन्द है। कल भी मैं रूम-टू-रीड की वर्कशाप में सुबह 9.50 पर पहुँच गयी थी परन्तु वर्कशाप 11.30 पर शुरू हुई।

आज डीईओ एस. पी. सेमवाल जी भी आये थे। उन्होंने शिक्षा के उद्देश्य, सीखने-सिखाने आदि पर अपनी महत्त्वपूर्ण बात रखी। चूँकि मैं अपने विद्यालय में पिछले चार वर्षों से बाल शोध मेले की तैयारी व प्रस्तुतिकरण करवा रही हूँ, अतः इस कार्यशाला से मेरे अभी तक कक्षा में किये काम को और मजबूती मिली। कुछ नये विचार भी सूझे जिनको मैंने नोट कर लिया। आगे उन पर काम करूँगी।

इस कार्यशाला में यह तय किया गया था कि गर्मियों की छुट्टियों में बच्चों को जो होमवर्क दिया जाएगा वो रचनात्मक तो होगा ही, साथ ही ऐसा होगा कि बच्चे अपने आसपास व घर-परिवार से कुछ नयी बातें जानने का प्रयास करें। अपने आसपास की चीज़ों का सूक्ष्म अवलोकन कर पाएँ।

२०.५.१३

आज विद्यालय में कक्षा-4 और 5 से बातचीत की। हम पिछले चार वर्षों से बालशोध मेले में प्रतिभागिता कर रहे हैं। इसलिए शोध विधि से सीखना बच्चों के लिए नया नहीं है।

कक्षा-4 और 5 के साथ बातचीत के दौरान आम सहमति से हमने अपनी गर्मियों की छुट्टियों के लिए दो विषय चुने जिन पर हमें खोजबीन करनी है। इन्हीं विषयों पर हम विद्यालय खुलने पर आगे बात करेंगे।

1. पैटर्न
2. हमारे आसपास- अपने आसपास व जंगल में पाये जाने वाले पेड़ पौधों के बारे में विस्तारपूर्वक जानना। इसके लिए कुछ प्रश्न बनाये जिन पर बच्चे अपने आसपास के पेड़-पौधों के बारे में जानकारी एकत्र कर लिखेंगे, जैसे:

1. पेड़-पौधे का नाम
2. कहाँ-कहाँ देखा है?
3. किस मौसम में पाया जाता है?
4. इसके क्या-क्या उपयोग हैं? आदि

चूँकि विद्यालय 24 तारीख को लगभग एक माह की गर्मियों की छुट्टियों के लिए बन्द हो जाएगा इसलिए इन विषयों पर अभी 2-3 दिन ही कक्षा में काम हो पायेगा।

आज मैंने बच्चों से पैटर्न के बारे में बातचीत शुरू की। हमने अपने विद्यालय के आँगन में उगे पौधों की पत्तियों, आसपास के भवनों की खिड़कियों, जंगल, कपड़ों आदि के पैटर्न देखे-पहचाने।

कुछ पैटर्न अंकों की मदद से बनाये।

जैसे- 2, 4, 6, 8, 10

18, 16, 14, 12, 10

1, 10, 100, 1000 आदि।

मध्यान्तर के बाद कक्षा-2 और 1 के साथ बालसखा कक्ष में गुटकों व पत्थरों की मदद से गतिविधियाँ की। फिर उन्हें एक कहानी "मीनू और मगरमच्छ" सुनायी। बच्चे उन कहानियों को मज़े लेकर सुनते है जिसमें ध्वनि शब्द होते हैं।

जैसे - छपाक, धम्म, भम्म, खट्ट...आदि। वे इन शब्दों को दोहराते हुए जीवन्त अनुभव कर पाते हैं

२३.५.१३

पिछले दो दिन कक्षा-4 और 5 के साथ सुबह गणित और "हमारे आसपास" पर काम किया। जबकि कक्षा-3 को हिन्दी में चित्र देखकर वाक्य बनाने वाली गतिविधि करने को दी। सुबह की पाली में मध्यान्तर से पहले तीन कक्षाओं को एक साथ देखना बहुत चुनौतीपूर्ण है। जैसे: पहले मैंने कक्षा-4 व 5 को ब्लैकबोर्ड पर अलग-अलग स्तर के गुणा के सवाल हल करने को दिये। फिर कक्षा-3 के बच्चों के लिए ब्लैकबोर्ड पर एक खुला चित्र बनाया व उस पर बातचीत की। चित्र के बारे में बातचीत करते हुए बच्चे दो तरह के वाक्य बनाते हैं।

1.

यह सूरज है।

यह पेड़ है।

पेड़ पर चिड़िया का घोंसला है, आदि

2.

सूरज आसमान में चमक रहा है।

चिड़िया के घोंसले के पास आम लगे हैं।

यह एक बड़ा और हरा भरा पेड़ है, आदि

दूसरी तरह के वाक्य बनाने के लिए बच्चों के साथ देर तक बात करनी होती है। उन्हें प्रोत्साहित करना पड़ता है। उनका ध्यान चित्र की बारीकियों की ओर दिलाना पड़ता है। उन्हें चित्र की कल्पना करने को प्रेरित करना पड़ता है। कुल मिलाकर इस तरह का माहौल बनाना पड़ता है कि वे चित्र को पूरी तरह से महसूस कर पाएँ।

कक्षा-2 से 3 में आये बच्चों में ज़्यादातर अच्छी तरह से पढ़ लेते हैं और अपनी बात लिख लेते हैं। अगर मैं उनके कहे वाक्यों को ब्लैकबोर्ड पर लिखकर फिर उन्हें बारी-बारी से पढ़ने व कॉपी पर लिखने को कहती हूँ, तो मुझे बाद में कॉपी में जाँचने में सुविधा होती है। यदि हर बच्चे से अपने वाक्य खुद बनाने व लिखने को कहती हूँ, तो प्रत्येक बच्चे की कॉपी उसके सामने जाँचनी पड़ती है जिससे वो अपनी मात्रात्मक गलतियाँ देख पाये। आमतौर पर बच्चे शिक्षक द्वारा सही की गयी गलतियों पर ध्यान नहीं देते व उन्हें दोहराते रहते हैं। राजेश, अमिषा बहुत ज़्यादा गलतियाँ करते हैं। अमिषा तो अपनी नानी के घर जाने के कारण अकसर अनुपस्थित रहती है जिसका असर उसकी सीखने की गति पर पड़ता है।

बच्चों द्वारा बताये गये पहली तरह के वाक्यों को दूसरी तरह के वाक्यों में बदलकर ब्लैकबोर्ड पर लिखा और उन्हें बारी-बारी से पढ़ने और कॉपी पर लिखने को कहा। तब तक कक्षा पाँच और चार के बच्चे "कर दिया जी" कहकर बुलाने लगे।

बारी-बारी से सबके दो-दो सवाल देखे। शुभम, मनीषा, विशाल, मनोज (सभी कक्षा-5) के साथ गणित में रोज़ काम शुरू करना होता है। खासतौर पर शुभम आज सीख जाता है अगर अगले दिन गणित नहीं छुई तो फिर अटक जाता है।

गणित के बाद "रवि की डायरी"- कक्षा-5 में "हमारे आस-पास" पाठ्यपुस्तक का - पाठ पढ़ा और उस पर बातचीत की। फिर हमने कुछ प्रश्न बनाये जिनके जवाब बच्चों को किताब से ढूँढ़कर या घर पर पूछकर जानने हैं। यही गर्मियों की छुट्टियों का काम है।

१५.७.१३

विद्यालय 1 जुलाई से खुलने थे लेकिन 16-17 जून को आयी भयंकर वर्षा और बाढ़ के कारण नहीं खुल पाये। अभी पिछले वर्ष 3 अगस्त को संगमचट्टी की तरफ़ बादल फटने से आयी भीषण बाढ़ के कारण हुए ज़ख्मों पर मरहम भी न लगा था कि इस वर्ष फिर से पूरे

उत्तराखण्ड में बादल फटने, भारी वर्षा के कारण भयंकर तबाही का दौर शुरू हो गया। इसमें रुद्रप्रयाग, चमोली व उत्तरकाशी ज़िले सर्वाधिक प्रभावित हुए। केदारनाथ में भारी तबाही हुई। हज़ारों लोग अभी भी लापता हैं। हज़ारों लोगों की मौत हुई। हज़ारों यात्री अभी भी पूरे उत्तराखण्ड में कहीं न कहीं फँसे हुए हैं। उत्तरकाशी में भी रास्ते जगह-जगह से टूट गये हैं। पहाड़ों पर भारी भूस्खलन हुआ है और भागीरथी के कारण नदी किनारे बसे जोशियाड़ा व अन्य स्थानों पर बने भवनों व होटलों को बहुत भारी क्षति हुई है। हमारे विद्यालय के रास्ते में भी जगह-जगह पर भूस्खलन व कटाव हुआ है। चूँकि पूरे जिले का आवागमन बहुत बुरी तरह प्रभावित हुआ है और मौसम के अभी भी ठीक होने के कोई आसार नहीं दिख रहे हैं, ऐसे में जिलाधिकारी द्वारा 14 जुलाई तक विद्यालय में अवकाश घोषित किया गया था।

आज गंगोरी तक टैक्सी में आयी फिर वहाँ से पैदल गणेशपुर पहुँची। प्रधान अध्यापिका मेरे बाद वाली गाड़ी में थीं तो मैं गरम पानी इण्टर कालेज के स्टाफ़ के साथ चली आयी। गंगोरी से गरम पानी तक पहली वाली सड़क का कहीं पता नहीं चल रहा है। शुरुआती एक किलोमीटर की सड़क नदी का किनारा काटकर बनायी गयी है जो पहली वाली सड़क से बहुत नीचे नदी के ही स्तर पर है। नदी और इस रास्ते के बीच में बड़े-बड़े पत्थर और बजरी जमा है। पानी हमसे बहुत ऊपर बह रहा था।

फिर पहाड़ को 90 डिग्री पर काटकर रास्ता बनाया गया है। पूरे रास्ते पर पत्थर गिरने का डर है। कई बड़े-बड़े पत्थर व पेड़ टूट कर गिरने के कगार पर हैं। पहाड़ काटकर जो रास्ता बनाया गया है वह पहले सीधी चढ़ाई फिर मोड़ वाली तीखी ढलान का है। ऐसा लग रहा है पता नहीं कहाँ आ गये हैं। पहाड़ के ऊपर से नीचे झाँककर देखने पर भागीरथी का विकराल रूप दिखाई दे रहा है। स्यूँणागाँव के नदी तट पर मजबूत दीवार बनी है वरना उस गाँव में भी पानी भर चुका होता। आज किसी तरह डरते-डरते रास्ता पार किया।

रास्ते में कॉलेज जाते बच्चे मिले। उनसे बातचीत कर उनके हालचाल जाने। बच्चे बहुत दिनों बाद कॉलेज जा पा रहे थे, तो उत्साहित थे।

गरमपानी से गणेशपुर तक के बीच का रास्ता लगभग ठीक है। आजकल चारों ओर हरियाली है। तुन के विशाल वृक्ष अपनी पूरी शान से खड़े है। इन वृक्षों के तनों पर कई छोटे पौधों ने अपने ठिकाने बनाये हैं। ऐसा लग रहा है मानो वृक्षों के तनों पर रेशमी हरे बाल लहरा रहे हों। प्रकृति से खूबसूरत कुछ नहीं। बरसात में हर प्रकार के पेड़-पौधों को फलने-फूलने का मौका मिलता है।

सड़क के मोड़ पर थोड़ी देर रुकती हूँ तो बच्चे आकर घेर लेते हैं। आप कैसे हो? रास्ता खराब है आप कैसे आये? आपका घर ठीक है? जैसे कई सवाल पूछते हैं। मैं भी उनकी, उनके घर की गाँव की कुशलता पूछती हूँ।

रास्ता चलते हुए भागीरथी को देखती हुई चलती हूँ। भागीरथी अपनी पूरी शान से बह रही है। भागीरथी को देख-देखकर ही मैं बड़ी हुई हूँ। नदी ने मुझे हमेशा बाँधे रखा है। जितना पानी आजकल नदी में है , हमेशा बरसात के दौरान इतना ही पानी रहता है या कई बार तो इससे भी ज़्यादा। जब हम छोटे-छोटे थे तो देखते थे बहुत मटमैला पानी बहा आ रहा है। साथ में कई बार पेड़, लकड़ी, कोई मरा पशु आदि चीज़ें भी बहती दिखती थीं। ये नदी जो हमारा जीवन है क्यों कुछ वर्षों से हमारी दुश्मन बनी दिखती है। आजकल सब ओर ये 'प्राकृतिक आपदा' शब्द चर्चा में है। कुछ तथाकथित बुद्धिजीवी लोग अपनी कमियाँ छिपाने के लिए शब्दों का अपने बचाव में किस तरह उपयोग करते हैं व गलत उपयोग करते हैं, इन दिनों साफ-साफ दिख रहा है। अखबार टीवी चैनल सब इस शब्द की गूँज से भरे पड़े हैं।

ठीक है भूकम्प आना, बादल फटना अतिवृष्टि होना आदि प्राकृतिक आपदाएँ हैं। जिनके होने न होने पर हमारा कोई वश नहीं। पर पिछले कुछ वर्षों से चौमासा के दौरान नदी में तेज़ पानी आने, बादल फटने से हुए नुकसान और भूस्खलन आदि के लिए प्राकृतिक घटनाओं से ज़्यादा हम ज़िम्मेदार हैं। इसलिए पिछले दो वर्षों में जो भी नुकसान हुआ है वह मानवजनित ज़्यादा है। प्रकृति ने हमें हमारी गलतियों की सज़ा दी है। पहाड़ों ने ज़ोर से थप्पड़ मारा है। हमें चेताया है कि अगर हम अभी भी नहीं सुधरे तो कुछ नहीं बचेगा। सारा पहाड़ खत्म हो जाएगा।

मुझे अच्छी तरह याद है जब मैं छोटी थी, पापा के साथ उजेली कैलाश आश्रम या भटवाड़ी के नदी तट पर जाती थी। पापा वहाँ नदी किनारे जाले भरवाने या अन्य काम करवा रहे होते थे। मैं पूरा दिन नदी तट पर इधर-उधर घूमा करती। तब नदी के पाट खूब चौड़े थे। तब कलक्ट्रेट के नीचे और दूसरी तरफ़ तिलोथ व जोशियाड़ा की ओर खूब मजबूत तिरछी सुरक्षा दीवार बन रही थी। बरसात में जब नदी अपने पूरे वेग से बहती तो उसके लिए पर्याप्त जगह होती थी। बाद में झूला पुल बना, शायद तब मैं कक्षा 5-6 में पढ़ रही थी। आमतौर पर नदी की एक धारा उन दिनों तीन बड़ी-बड़ी धाराओं में बँट जाती थी और ज़्यादा पानी होने पर तीनों धाराएँ मिलकर एक बहुत बड़ी धारा बन जाती थी। यह धारा शहर के दोनों तटों को छूती हुई बहती थी। मुझे ये दृश्य बहुत आकर्षित करता था। स्कूल आते-जाते हुए मैं अकसर पुल से सिर टिकाये पानी में बहते जहाज़-सा अनुभव करती थी।

धीरे-धीरे लोगों ने अतिक्रमण कर सुरक्षा दीवार के बाहर घर बनाने शुरू किये। फिर बड़े-बड़े होटल बने। नदी तट छोटा होता चला गया। उत्तरकाशी से गंगोत्री के बीच तक ऐसे बहुत से घर, आश्रम, होटल बने जो सीधे नदी के अन्दर कंकरीट के बीम खड़े करके बनाये गये हैं। नयी बनी सड़कों का मलबा सीधे नदी में डाला जाता रहा। विभिन्न बाँधों के निर्माण के दौरान भी जो मलबा निकला, पेड़ कटे उनका ज़्यादातर हिस्सा भी नदी में ही डाल दिया गया। ऐसे में बारूदी विस्फोटों से पहाड़ कमज़ोर होते गये और नदी मलबे से पटती गयी। आखिर जब नदी की मलबा सहने की सीमा खत्म हो गयी तो उसने अपना रौद्र रूप दिखाया। पहाड़ कमज़ोर पड़े तो बारिश का वेग थाम न सके।

धार्मिक स्थलों पर हुए अवैध निर्माण ने वहाँ से बहने वाली जलधाराओं के लिए रास्ते ही नहीं छोड़े। इसलिए जब बादल फटने से अतिवृष्टि हुई तो पानी को वे रास्ते तो मिले ही नहीं जहाँ से वह हमेशा से बहता आया है। यही नतीजा है इस मानव जनित आपदा का। इस साल की बाढ़ में जोशियाड़ा की बस्ती बहने का कारण पिछले वर्ष आयी बाढ़ का मलबा था जिसे इतने कम समय में हटाना शायद सम्भव नहीं था। करोड़ों रुपये खर्च करने के बावजूद कई जगह इतने घटिया स्तर का काम हुआ है कि पिछली बारिश भी सहन न कर सका। कभी-कभी सोचती हूँ मैं एक शिक्षिका होने के नाते अपना काम पूरी ईमानदारी और सामर्थ्य से करती हूँ पर मैं इतनी कमज़ोर हूँ कि गलत होती चीज़ों को ठीक करने की ज़रा भी क्षमता नहीं रखती।

मैं रोज़ दो बार या कभी-कभी 4 या 6 बार ज्ञानसू से बाज़ार, सुरंग से होकर आती हूँ। जो कि हमेशा पानी, कीचड़ व गड्ढों से भरी होती है, और जिसमें अकसर अँधेरा रहता है। एक एक्सीडेण्ट में एक लड़का भी मर चुका है। आजकल सुरंग में पशु जहाँ-तहाँ सो रहे होते हैं, जिससे आते-जाते ज़रा सी भी असावधानी जानलेवा हो सकती है। मैं चाहती हूँ सुरंग साफ़ सुथरी व रोशनी से भरपूर हो। इसकी नियमित साफ़-सफ़ाई हो। लेकिन सिर्फ़ सोचने से क्या होगा? जिसका ये काम है, जिसने इसके लिए कीमत ली है या ले रहा है अगर वो अपना काम ईमानदारी से करता तो सुरंग साफ़-सुथरी व सुरक्षित होती। अगर हम सब अपना-अपना काम ठीक से करें तो ये दुनिया सच में रहने लायक हो जाए।

जब मैं विद्यालय पहुँची तो कुछ बच्चे विद्यालय आये हुए थे। हम सब बहुत खुशी और उत्साह से एक दूसरे से मिले। थोड़ी देर बाद प्रधान अध्यापिका और अन्य बच्चे भी आये।

बहुत दिनों बाद विद्यालय खुल रहा था। विद्यालय फूलों के पौधों व अन्य झाड़ियों से खूब हरा-भरा दिखाई दे रहा था। कमरों से सीलन की बदबू आ रही थी।

कक्षा-2-3 वाले कमरे में नेताला के बीएड कॉलेज का सामान रखा है। हमने मिलकर साफ़-सफ़ाई की, कमरों का सामान बाहर सुखाने रखा। अभी धूप खिली थी जबकि सुबह थोड़ी-थोड़ी बारिश हो रही थी। आज पढ़ाई-लिखाई बहुत दिनों बाद होने के कारण बच्चे उत्साहित होकर अपना काम कर रहे थे। गणेशपुर गाँव सुरक्षित था और इस गाँव के खेत, बिट्टे, जंगल आदि भी सुरक्षित थे। विद्यालय में कुछ अभिभावक बलवीर लाल जी, धर्मवीरजी व अन्य लोग मिलने आये, हमें अच्छा लगा।

12 बजे के लगभग बीईओ साहब व विमल पंवार जी विद्यालय आये। वे हमारी कुशलता व आने में हुई परेशानी आदि के बारे में जानना चाहते थे। आज 50 में से 42 बच्चे उपस्थित थे। बीईओ साहब ने कहा, "सावधानी से आना-जाना।" आज पहली बार किसी अधिकारी ने हमें इन्सान समझकर बात की थी, कर्मचारी समझकर नहीं। मुझे ये बात अच्छी लगी।

घर आकर खाना बनाया। अक्षत की छुट्टी थी जबकि अप्पू स्कूल गयी थी। वो 3.15 तक आयी। बेचारी अप्पू, आजकल उसे पैदल स्कूल आना-जाना पड़ रहा है। वो बेहद थक जाती है। बाज़ार के लगभग सभी बच्चों को आजकल अपने-अपने स्कूल आने-जाने में भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। उनके रास्ते जोखिम भरे हैं। बच्चे आने-जाने में ही बहुत थक जा रहे हैं, ऐसे में पढ़ेंगे-लिखेंगे क्या। पता नहीं कब सब ठीक होगा। आज तो मैं भी थक गयी हूँ, पर काम पर लौटने की खुशी है।

१८.७.१३

मध्यान्तर के बाद कक्षा-4 और 5 के साथ आपदा पर चर्चा की। बच्चों ने अपने अनुभव लिखे। मुझे लगता है ये प्राकृतिक आपदा शब्द ही झूठा है। इस वर्ष जो हुआ है उसके लिए प्रकृति से ज़्यादा हम ज़िम्मेदार हैं।

दीक्षा आपदा वाले दिनों भटवाड़ी में थी। भटवाड़ी गणेशपुर से गंगोत्री की दिशा में 30 किलोमीटर की दूरी पर ब्लॉक मुख्यालय है। उसने भटवाड़ी से गणेशपुर वापस आने के दौरान जो देखा-समझा उसे विस्तार से लिखा। सड़क खराब होने के कारण उसे जंगल के

रास्ते आना पड़ा। इस दौरान वह और उसका परिवार रास्ते में फँसे यात्रियों से भी मिले व उनकी यथासम्भव मदद की।

अरविन्द ने लिखा 'आपदा में पानी भी बिका, जबकि पानी तो फ्री में मिलता है।' डिडसारी में 20 रुपये में एक गिलास पानी बिक रहा था। उन्होंने गलत किया इसीलिए उनके घर बहे। अरविन्द ने यात्रियों के फँसने, उनकी समस्याओं व मदद के बारे में लिखा। उसने उनके गाँव की महिलाओं द्वारा यात्रियों की मदद करने की बात भी लिखी।

रणवीर तो बाल-बाल बचा, उसका परिवार जिस बीएड कॉलेज के भवन में रहता था वो बह गया। अगर ज़रा-सी भी देर होती या वे लोग सतर्क न होते तो न जाने क्या होता।

विशाल ने लिखा कि किसी-किसी के मकान में कोप लग गया है अब वो मकान भी गिर जाएगा। पूछने पर उसने बताया कि 'कोप लगना' मतलब मकान के नीचे से पानी बहने लगना है। बच्चों ने अपने आसपास हुए सभी परिवर्तनों को लिखने की कोशिश की है। बच्चों ने बहुत विस्तार से अपनी बात लिखी है।

बच्चे डर गये हैं। इनका गाँव सुरक्षित है पर आसपास के गाँवों की हालत देखकर और उनके बारे में खबरें सुन कर वे डर गये हैं। फिर भी देर तक बातचीत करने से सबका मन थोड़ा तो हल्का हो ही गया है।

पिछले 2 दिनों से लगातार तेज़ बारिश हो रही है। रास्ता बहुत खराब हो गया है। डर भी लगता है परन्तु विद्यालय तो आना ही होगा। गाँव में रहना सम्भव नहीं क्योंकि मेरे घर पर बच्चों की देखभाल करना भी मेरी ज़िम्मेदारी है।

३०.७.१३

आज स्कूल आते हुए तो मैं रास्ते में स्कूटी सहित दलदल में फँस गयी थी। सभी कपड़े खराब हो गये और मुश्किल से बाहर निकल पायी। मैं जितना बाहर निकलने की कोशिश करती उतना ही उस में वापिस खिंच जाती। वो तो एक दूसरी गाड़ी वहाँ पर आयी और उसके ड्राइवर ने मदद की, वरना पता नहीं कितना देर वहीं फँसी रहती। बाद में सोचा कितना बुरा है दलदल में फँसकर मरना। ये रास्ता अब सालों-साल के लिए खराब हो गया है।

खुशी की बात यह है कि बच्चे खूब मन लगाकर काम कर रहे हैं। कक्षा-4 और 5 ने अपनी हिन्दी की पाठ्य पुस्तक के सभी पाठ पढ़ लिये हैं। पुस्तकालय की किताबों के साथ पाठ्य पुस्तक के पाठों को पढ़ने की योजना प्रभावी रही है। बच्चे पाठ्य पुस्तक के अन्त में दी गयी अभ्यास माला के सवाल लिख पा रहे हैं। अर्थात परम्परागत शब्दों में 'मेरा कोर्स पूरा हो गया है।' विद्यालयों में अधिकांश शिक्षक इसी बात से तो जूझते रहते हैं। मैंने अनुभव किया है कि बच्चों को पाठ्य पुस्तकों से इतर रोचक पुस्तकें पढ़ने के अवसर देने से उनकी पढ़ने की दक्षताओं में वृद्धि होती है और इस क्रम में बच्चे अपनी पाठ्य पुस्तकों के पाठ भी स्वयं ही पढ़ लेते हैं। मध्यान्तर के बाद कक्षा-2 और 3 को "चार दोस्त" पुस्तक से कहानी सुनायी और पढ़वायी। बाद में मिथलेश, प्रेरणा, रीतिका, सिमरन ने भी कहानी सुनायी।

१६.८.१३

पिछले दो दिन 13 व 14 अगस्त को प्राथमिक विद्यालय गरमपानी में वहाँ की शिक्षिका के छुट्टी पर होने की वजह से संकुल समन्वयक के द्वारा मुझे वहाँ व्यवस्था पर भेजा गया। दो दिन वहाँ बिताने के बाद आज वापिस अपने विद्यालय आयी।

पर्यावरण की पाठ्य पुस्तक "हमारे आसपास" पर काम आगे नहीं बढ़ पाया है क्योंकि अभी तक हमारे विद्यालय में ''हमारे आसपास'' की किताबें नहीं पहुँची हैं। बिना किताब के बच्चों के साथ व्यवस्थित काम करने में थोड़ी परेशानी होती है। पाठ्य पुस्तक होने से कुछ समय बच्चों को स्वयं पढ़ने के लिए कहा जा सकता है। 14 बच्चों में से 5-6 बच्चों के पास ही पुरानी किताबें हैं। कक्षा 5 की गणित व कक्षा-4 की "हमारे आसपास" की किताबें भी अभी नहीं आयी हैं। जबकि मैं और प्रधान अध्यापिका 3-4 बार किताबों के बारे में संकुल समन्वयक से पूछ चुके हैं और किताबें लेने के लिए उत्तरकाशी के प्राथमिक विद्यालय के चक्कर भी लगा चुके हैं। किताबें खत्म हो गयी हैं और किताबें आएँगी तो मिलेंगी। साल भर बाल गणना माँगी जाती है और संसाधनों को लेकर लेट लतीफी! सवाल उठाने को अच्छा नहीं माना जाता और लिखने को तो कतई नहीं। अभिव्यक्ति के जोखिम तो उठाने ही पड़ेंगे। किताबें बच्चों के लिए कॉपियों का भी काम करती हैं क्योंकि उनमें लिखने के लिए भी खाली जगह दी होती है। हर बच्चा चाहता है उसके पास उसकी खुद की किताब हो, वो उसमें काम करे। हम हर बार पुरानी किताबें बच्चों से माँग कर जमा कर लेते हैं परन्तु

"हमारे आसपास" की किताब का बार-बार उपयोग होने व उसकी अभ्यासमाला में अभ्यास करने से ज़्यादातर किताबें फट गयी थीं। जो किताबें हैं भी उनके अभ्यास कार्य भरे हुए हैं इसलिए बच्चे किताब में पढ़कर ही सवालों के जवाब दे रहे हैं, सोच समझकर नहीं। इस कारण काम अच्छे से नहीं हो पा रहा है।

"हमारे आसपास" में शोध विधि से काम करने की ज़्यादा सम्भावना होती है। मैं भाषा और पुस्तकालय में जो काम कर रही हूँ वो भी शोध विधि जैसा ही है। 'पहली बारिश' कविता पर काम करने के बाद हमने बारिश से सम्बन्धित करीब 22-25 और कविताएँ पढ़ीं जो अलग-अलग सन्दर्भ लिये थीं। इन कविताओं पर बच्चों ने सवाल बनाये और अपनी खुद की कविताएँ भी लिखीं।

मैं इस दौरान देख रही हूँ कि ज़्यादातर बच्चे किसी विषय पर अलग-अलग तरह के प्रश्न बना पा रहे हैं। 'काश ' व 'अगर ' वाले प्रश्न बताते हैं कि वे सन्दर्भों को अपने अनुभवों से जोड़ पा रहे हैं। कुल मिलाकर वे किसी विषय को उसके सामाजिक, सांस्कृतिक व मानवीय स्वरूपों में आलोचनात्मक तरीके से देखने का प्रयास कर रहे हैं जो कि इस गतिविधि को कराने का मेरा मुख्य उद्देश्य था। साथ ही मुझे बच्चों के सवालों की प्रकृति को देखकर समझ में आ जाता है कि बच्चे सन्दर्भ समझ पाये या नहीं। आकलन का यह तरीका मुझे बताता है कि मुझे प्रत्येक बच्चे के साथ क्या काम करना है।

१८.८.१३

होम वर्क को लेकर मैं हमेशा से ये मानती रही हूँ कि वो रोचक होने के साथ-साथ इस तरह का होना चाहिए कि बच्चों में समझ बढ़ाये। वे सिर्फ़ चीज़ों को बिना समझे दोहरा न रहे हों। गृह कार्य कुछ इस तरह का होना चाहिए जिसमें बच्चे अपनी सम्पूर्ण ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग अपने आसपास की दुनिया को समझने में कर पाएँ। साथ ही वे जो समझ बनाएँ उसे एक दूसरे के साथ साझा भी कर पाएँ। वे अपने आसपास की चीज़ों व घटनाओं की प्रति उत्सुक हों। उनके मन में प्रश्न उठें। उन्हें होमवर्क बोझ न लगे बल्कि उनमें नयी चीज़ें जानने की उत्सुकता व खुशी जगे। इन सब में पढ़ना-लिखना स्वाभाविक रूप से शामिल होता है। एनसीएफ़ 2005 भी 'ज्ञान को स्कूल के बाहर के जीवन से जोड़ने' की बात करता है और 'विषयों के बीच की दीवारें कम करने' पर ज़ोर देता है।

इस बार प्राकृतिक आपदा - बाढ़, भूस्खलन - होने के कारण गर्मी की छुट्टियों के बाद विद्यालय देर से खुले हैं।

छुट्टियों में मैंने कक्षा-4 और 5 के बच्चों को दो सम्बोध गृह कार्य के लिए दिये थे। जिन पर पहले कक्षा में पर्याप्त बातचीत की गयी थी।

- पैटर्न ढूँढ़ना व नोट करना,
- पर्यावरण की पाठ्य पुस्तक "हमारे आसपास" से "रवि की डायरी" नामक पाठ पर आधारित सम्बोध - हमारे आसपास के पेड़-पौधों के बारे में विस्तृत जानकारी एकत्रित करना, उनके बारे में जानना।

छुट्टियों में कुछ ही बच्चों ने अच्छी तरह काम किया है, ज़्यादातर ने कामचलाऊ काम किया है। उन्होंने अपने काम को लिखने में बहुत लापरवाही की है। अकसर बच्चे छुट्टियों के लिए दिया गृहकार्य नहीं करते। उन्हें इस काम में बड़ों की मदद चाहिए होती है। खासतौर पर हमने जो काम करने की सोची थी उसमें तो बड़ों की भूमिका निश्चित तौर पर महत्त्वपूर्ण है। सांस्कृतिक तौर पर हमारा समाज एवं परिवेश खोजबीन करने का वातावरण उपलब्ध नहीं करा पाता। बच्चों के ज़्यादा प्रश्न पूछने को अच्छा नहीं माना जाता। अतः यदि बच्चों ने काम नहीं किया तो इसमें कोई आश्चर्य नहीं है। प्राकृतिक आपदा भी बच्चों का ध्यान कहीं और ले गयी होगी। ज़्यादातर माता पिता के लिए स्कूल के काम का मतलब है खूब सारा लिखने का काम। वे कहते भी हैं कि बच्चों को आप खूब काम करने को दिया करें जिससे कि बच्चे घर में पर्याप्त व्यस्त रहें। वहीं कई बार लड़कियाँ गृहकार्य करके नहीं आतीं, कारण पूछने पर कहती हैं घर के काम किये या छोटे भाई बहनों की देखभाल की।

मैंने होमवर्क के लिए दिये प्रश्नों पर दुबारा कक्षा में बातचीत की और फिर छोटे समूह बनाकर काम पूरा करने को कहा। इसके पश्चात बड़े समूह में चर्चा की। इस विषय पर अभी बहुत काम करने की सम्भावना है। आगे की कक्षाओं में इस पर काम करूँगी।

मैं अपने शिक्षण कार्य में किसी भी विषय को पढ़ाते हुए प्रयास करती हूँ कि कोई न कोई ऐसा सन्दर्भ या प्रश्न खोज पाऊँ जिस पर बच्चे पुस्तकालय में या अपने घर या अपने आसपास खोजबीन कर पाएँ व उनकी सम्बोध विशेष पर गहरी समझ बन पाये।

मुझे लगता है 'खोजबीन विधि' एक ऐसी शिक्षण विधि है जो कक्षा में काम करते हुए किसी शब्द विशेष का अर्थ जानने से लेकर हमारे आसपास के सन्दर्भों या किसी भी विषय को जानने-समझने पर लागू हो सकती है।

महाभारत प्रथम और द्वितीय भाग पढ़ते हुए पाठ में ढेरों ऐसे शब्द आये जिनका अर्थ जानते हुए कक्षा में देर तक बातचीत चली। जैसे स्वयंवर, धनुषधारी, न्यायप्रिय आदि।

नये शब्दों का अर्थ मिलजुल कर जानना भी तो एक तरह का शोध ही है।

हिन्दी भाषा विषय में, नये शब्दों के अर्थ मिलजुल कर जानने का प्रयास करना भी खोजबीन करने की प्रवृत्ति को बढ़ाता है। किसी परिचित कहानी या कविता से मिलती-जुलती कहानी या कविता को पुस्तकालय की किताबों से खोजकर पढ़ना व स्वयं कहानी पर प्रश्न बनाना भी खोजबीन के प्रति उत्सुकता को बढ़ाता है।

१७.८.१३

आज जब मैं विद्यालय पहुँची तो ऑफिस खोलने पर एक पीला-सा मझोले आकार का साँप दिखाई दिया। शोर होने से वह टीन की दीवार में घुस गया। सारी कक्षाओं को खाली किया गया और कमरों में धुआँ लगाया, टिन के पास धुआँ लगाया पर फिर भी साँप नहीं भागा। टिन में ही छुपा रहा, दूर से दिखाई देता रहा। आखिर हमने उसे वैसे ही रहने दिया। इतने शोर-शराबे व हरकतों से वह जान ही गया होगा कि हमें उसका यहाँ आना पसन्द नहीं, शायद वह रात में निकल भागेगा।

१५.९.१३

पेड़ पौधों से जान-पहचान का कार्य जो सत्र के आरम्भ में शुरू किया था उसे जुलाई- अगस्त में आपदा आने के कारण आगे नहीं कर पाये थे। आज हमने इसे फिर से शुरू किया।

आज मैं भोजनमाता व कक्षा चार व पाँच के बच्चों के साथ शैक्षिक भ्रमण पर गयी। हमने तक़रीबन 45-46 पेड़-पौधों व झाड़ियों का अवलोकन कर जानकारी एकत्र की। अप्रैल के महीने में अधिकांश पेड़ों और झाड़ियों, जैसे कि कुज्जू ,मंगडा, किंगोड, मंदार, श्यामसुन्दरी,

पंयाँ आदि पर फूल खिले थे। जबकि आजकल ज़्यादातर पेड़-पौधों, जैसे तुन, फेडू, टिमरू, अखरोट, मोल, तिमला आदि पर फल लगे हैं। श्यामसुन्दरी पर फूल और फल दोनों लगे हैं। पेड़-पौधों की पत्तियाँ अब मजबूत और परिपक्व दिखाई दे रही हैं। छूने पर उनमें उतनी कोमलता नहीं है जितनी कि अप्रैल में थी। खेतों में धान के पौधों की कटाई, मड़ाई का काम चल रहा है। साथ ही किसान झंगोरा, कौंडी, मकई और तिल भी निकाल रहे हैं। सब्ज़ियों में भिण्डी, कद्दू, लौकी ,तुरई ,भुजेला, करेला, ककड़ी, मीठे करेले, बारामासी छेमी, अरबी, पिण्डालू की बहार है। लहसुन, राई, मूली, पालक व मेथी बोने की तैयारी चल रही है। कुछ लोगों ने खेतों में बीज बो दिये हैं।

जून, जुलाई और अगस्त की जानकारी के लिए स्थानीय जनों से बातचीत की। हमने यह जाना कि इन महीनों में खेतों में क्या-क्या काम हुए। कौन-कौन सी फसलें तैयार हुईं या बोयी गयीं? आसपास के पेड़-पौधों में क्या-क्या परिवर्तन हुए? इन जानकारियों को अपनी शोध कॉपी में लिखा।

इस विषय पर बच्चे अपने घर में भी बातचीत करेंगे। अकसर हम शिक्षक साथी अपने आसपास बिखरी प्रकृति को संसाधन के तौर पर नहीं देख पाते। हमारी पुस्तकों और परीक्षा की संस्कृति ने हमें इस तरह जकड़ा हुआ है कि हम अपने आसपास मौजूद प्रकृति रूपी किताब का इस्तेमाल कभी कर ही नहीं पाते।

इस वर्ष कक्षा-5 में एक नया बच्चा आया है, जिसका नाम सागर है। वह बहुत बड़ा है, 15-16 वर्ष का लगता है। जब शुरू में आया था तो बात करने में शर्माता था। मैंने उसे विद्यालय का मानीटर बना दिया। परसों जब हम कहानी से नाटक बनाते हुए अभिनय कर रहे थे तो उसने खुद हाथ उठाया, “मैडम जी मैं भी कुछ बनूँगा।” बच्चों पर विश्वास करो, तो वे आगे बढ़ते हैं।

५.१०.१३

29.9.13 को इनफॉर्मल ग्रुप की मीटिंग में जगमोहन चोपता जी ने पूछा, “आपके विद्यालय में इनफॉर्मल ग्रुप का विज़िट रखवाना चाहते हैं, कब रखें?” पास ही एबीआरसी रामप्रकाश रावत जी भी खड़े थे। दोनों ने कहा, “3 अक्तूबर को रख लेते हैं।” मैं इतनी जल्दी बिना दीदी से पूछे निर्णय नहीं ले सकती थी, तो मैंने कहा “दीदी से पूछकर बताऊँगी।”

30 सितम्बर और 1 अक्तूबर को राजकीय शिक्षक संघ के त्रिवार्षिक अधिवेशन में शामिल होने के कारण स्कूल नहीं खुला। 2अक्तूबर को महात्मा गाँधी व लाल बहादुर शास्त्री जी की जयन्ती मनायी।

जब मैंने स्कूल में प्रधानाध्यापिका दीदी से इनफॉर्मल ग्रुप के विज़िट के बारे में बात की तो उन्होंने ज़्यादा उत्साह नहीं दिखाया। इसकी वजह यह है कि दीदी का ट्रांसफ़र हो गया है। वे नये विद्यालय जाने की तैयारी में है। दूसरे, कुछ महीनों पहले भी बार-बार हमारे विद्यालय में भ्रमण के कई प्रोग्राम बने हैं, एक बार तो तिथि भी तय हो गयी थी और हमने काफ़ी सारी तैयारी भी की थी, पर फिर कार्यक्रम रद्द हो गया। इस वजह से भी दीदी व मैं इस भ्रमण को लेकर ज़्यादा उत्साही नहीं थे। किन्तु जब जगमोहन चोपता जी का दुबारा फ़ोन आया तो हमने तय करके 8 अक्तूबर के लिए हामी भरी।

इन दिनों मैं कक्षा-4 और 5 के साथ “हमारे आसपास” में पेड़-पौधों पर शोध कार्य में व्यस्त रही हूँ।

अब जब हमारे विद्यालय में इनफ़ॉर्मल ग्रुप के साथी भ्रमण पर आ रहे हैं तो इस काम को बीच में ही रोककर कुछ तैयारियाँ करनी होंगी। इसके लिए मेरे पास चार दिन हैं।

हमारा विद्यालय भी अन्य विद्यालयों जैसा ही है। यहाँ के बच्चे भी अन्य विद्यालय के बच्चों जैसे ही हैं, पर हर विद्यालय की अपनी कुछ विशेषताएँ भी होती हैं। हम अपने साथियों को अपने विद्यालय की विशेषता के बारे में बताना चाहेंगे। मैंने यह तय किया कि मैं अपने शैक्षिक कार्यक्रम को प्रतिदिन की तरह ही रहने दूँगी। अर्थात सहज रूप से जो चल रहा है वही चलेगा। क्योंकि मैं आजकल हिन्दी पाठ्य पुस्तक के साथ पुस्तकालय को जोड़कर काम करवा रही हूँ और मेरे शिक्षण की विशेषता बच्चों को सार्थक रूप से पढ़ने-लिखने की ओर बढ़ाना व उनमें मौलिक लेखन को बढ़ावा देना है। साथ ही मेरा प्रयास बच्चों की रचनाओं को बाल पत्रिका के माध्यम से विद्यालय के लिए एक पठन सामग्री बनाना भी है। मैं अपने आने वाले साथियों से इसी विषय पर बातचीत करूँगी।

मैंने सभी बच्चों को यह बता दिया कि 8 तारीख को हमारे विद्यालय में कुछ शिक्षक-शिक्षिकाएँ उनसे मिलने व बातचीत करने आ रहे हैं। वे उन्हें सुनाने के लिए अपनी लिखी

कविता या कहानियों में से किसी एक कविता या कहानी को चुन लें। हर बच्चा अपनी लिखी कविता या कहानी का उल्लेख करने लगा। मैंने उनसे कहा, "ठीक है उस दिन जिसकी बारी आयेगी वो सुनाएगा।"

मैं बच्चों से, सिवाय साफ़-सुथरा रहने के, कोई तैयारी पठन-पाठन में नहीं करवाना चाहती हूँ वरना उस दिन सब बनावटी-सा लगेगा। बच्चे विद्यालय में होने वाली सभी गतिविधियों से परिचित हैं व उनमें लगातार शामिल होते ही हैं।

आज कक्षा-4 और 5 के साथ उनकी पाठ्य पुस्तक की दो नयी कविताओं पर काम शुरू किया। दोनों कक्षाओं ने अपने समूह में कविताओं को पढ़ा और उस पर बातचीत की। मैंने ये तय किया उस दिन भी दोनों कक्षाओं के साथ कविता पर ही काम करूँगी।

कक्षा 3 के बच्चे क्रियात्मक रेखाचित्रों (ऐसे चित्र जिसमें कोई काम होता दिख रहा हो जैसे कि हल लगाता आदमी या ईंट उठाती महिला) की मदद से काम करेंगे। कक्षा-1 के साथ दीदी काम करेंगी जबकि कक्षा 2 के बच्चे शब्दों से वाक्य लिखने का काम दीवार श्यामपट पर करेंगे। मैं इन्हीं सब के सन्दर्भों पर अपने शिक्षक साथियों के सामने बात रखना चाहूँगी।

सुबह अतिथियों का स्वागत हम फूलों से करेंगे। हर दिन की तरह सुबह की सभा होगी जिसमें प्रत्येक कक्षा के बच्चों में से जिनकी बारी होगी वे ही समाचार, अपनी मनपसन्द या स्वयं लिखी कविता या कहानी सुनाएँगे। फिर दो नाटकों का प्रस्तुतिकरण होगा जिसमें कक्षा 3, 4 व 5 के बच्चे "जादुई आम" व 1, 2 के बच्चे "लालू व पीलू" नाटक प्रस्तुत करेंगे। फिर कक्षा में शिक्षण कार्य होगा।

मध्यान्तर के बाद दीदी और मैं शिक्षक साथियों के सवालों के साथ संवाद करेंगे और अपने अनुभवों को आगन्तुक शिक्षकों के साथ साझा करेंगे।

आज शाम को जगमोहन जी ने बताया 8 तारीख का कार्यक्रम पक्का हो गया है। सोमवार को सबको निमन्त्रण मिल जाएँगे।

८.१०.१३

एक शानदार दिन

आज सुबह 8.40 पर स्कूटी से घर से स्कूल के लिये निकली। स्कूल जाकर मेहमानों को देने के लिए गुलदस्ते भी बनाने हैं। गंगोरी पार किया तो सोचा कि स्कूटी ला कर गलती हो गयी क्योंकि आजकल सड़क का काम हो रहा है। सारी सड़क पर मिट्टी व छोटे-छोटे पत्थर बिखरे थे। पहाड़ की ऊँचाई व उतराई भी ज़्यादा खतरनाक हो गयी थी। किसी तरह सड़क पार की। लगभग 9 बजे स्कूल पहुँची। सारे बच्चे आ गये थे, वे फूल भी लाये थे और अति उत्साह से वे इधर-उधर दौड़ रहे थे। मैंने उन्हें इकट्ठा किया तो पता चला तमन्ना को किसी का धक्का लगने से चोट लग गयी थी। उसे चुप कराया। सबको बिठाया और खुद गुलदस्ते बनाने लगी। मैंने 16 गुलदस्ते बनाये। थोड़ी देर में दीदी भी आ गयीं। सब बच्चों को उनकी रोज़ की सुबह की गतिविधियाँ करने को कहा, जैसे गाँव के समाचार लिखना, आज का विचार लिखना, फिल्टर में पानी डालना, आदि।

लगभग 10 बजे एबीआरसी रावत जी व जगमोहन चोपता जी विद्यालय आये। उनके पश्चात सरिता पश्चिमी दीदी विद्यालय आयीं, वह सुपार्गा विद्यालय की प्रधानाध्यापिका हैं। उनकी सौम्यता और शालीनता हम अधिकांश शिक्षकों को आकर्षित करती है।

धीरे-धीरे और शिक्षक भी आये। कुल 13 लोग थे। मैंने व दीदी ने इनका स्वागत किया। सब लोग खूब प्यार से मिले। हमने बाहर ही कुर्सियाँ लगाकर सभी के बैठने की व्यवस्था की हुई थी। जब सब लोग बैठ गये तो हमने सुबह की सभा आरम्भ की।

'पूरब से निकला सूरज ' गीत, प्रार्थना, प्रतिज्ञा, राष्ट्रगान के बाद थोड़ी देर विराम लिया। इस समय बच्चों ने सारे मेहमानों का स्वागत गुलदस्ते देकर किया।

स्वागत करने के बाद आगे का कार्यक्रम शुरू किया। गजेन्द्री ने गाँव के समाचार सुनाये, अरविन्द ने अपनी लिखी कविता, दीक्षा व योगेश ने अपनी लिखी कहानी सुनायी। सिमरन, सलोनी, अमित, रितु, अनिता, रीतिका आदि बच्चों ने भी कविताएँ व बाल गीत सुनाये। फिर कक्षा-4 और 5 के बच्चों ने "जादुई आम" नाटक किया व कक्षा 2 और 3 ने "लालू और पीलू" नाटक किया। बच्चे आरम्भ में थोड़े से शरमा भी रहे थे फिर धीरे-धीरे सब सहज हो गये। उपस्थिति देकर बच्चे कक्षा में चले गये। कक्षा-4 और 5 ने बिना मेरे कुछ कहे

अपनी किताबें निकाली व अपना काम करने लगे। मैंने कक्षा 3 के लिए बाहर आँगन में एक अनुच्छेद ब्लैकबोर्ड पर लिखा व उसे उन्हें बारी-बारी पढ़ने को कहा।

सभी आगन्तुक शिक्षकों के हाथों में डायरियाँ थी। वे विद्यालय की हर दीवार, कोना, कमरे, खिड़की, ब्लैकबोर्ड, शब्दचित्र, गतिविधियाँ, चित्र सूक्तियाँ आदि हर चीज के बारे में जानना चाह रहे थे। उसे नोट करना चाह रहे थे। दीदी व मैंने उनसे थोड़ी देर बातचीत की और कहा इन चीज़ों पर बाद में विस्तार से बातचीत करते हैं। पहले कक्षा में चलते हैं। कुछ लोग कक्षा-1 और 2 वाले कमरे में चले गये। कुछ कक्षा- 4 और 5 वाले कमरे में मेरे साथ आये।

कक्षा 5 ने "बाँकी-बाँकी धूप" कविता को पुस्तकालय की कविताओं के साथ मिलकर पढ़ने-लिखने वाली गतिविधि शुरू कीं।

कक्षा-4 ने "हम भी होते काश कबूतर" से मिलते-जुलते शीर्षकों, जैसे- हम भी होते काश बादल, मछली, पेड़, बन्दर, तितली आदि पर कविताएँ लिखनी आरम्भ कीं।

मैंने, बच्चे क्या कर रहे हैं? इस पर संक्षिप्त में अपनी बात शिक्षकों के बीच रखी। बच्चे अपना काम करते रहे तथा शिक्षक साथी इन्हीं के बीच बैठ गये।

इसी बीच, मैं कक्षा 3 में वापस आयी। तब तक बच्चों ने एक अनुच्छेद पढ़ लिया था। मैंने उनसे कहा कि, "वे बाहर दीवार कुर्सी पर बैठकर अपने मनपसन्द गतिविधि, चित्र या शब्द चित्रों पर कहानियाँ बनाएँ व अपनी कॉपी पर भी लिखें।"

बच्चों ने अपना काम शुरू किया और मैं कक्षा 4, 5 वाले कमरे में चली गयी।

दीदी कक्षा-1 और 2 के साथ काम कर रही थीं। कक्षा-2 वाले बच्चे बाहर आ गये और दीवार ब्लैकबोर्ड पर शब्द चित्रों पर वाक्य बनाने लगे।

मैंने अपने शिक्षक साथियों से बातचीत कर कक्षा 5 की अगली गतिविधि शुरू की। अभी तक बच्चे दो-दो के समूह में "धूप व सूरज" से सम्बन्धित नयी कविता पर दिये गये कुछ सवालों के माध्यम से अपनी समझ बना चुके थे। प्रश्न ये थे:

- इस कविता में क्या बताया गया है?
- इसमें क्या-क्या हो रहा है?

- इसमें धूप और सूरज किस तरह आये हैं?
- "बाँकी-बाँकी धूप" और तुम्हारी इस कविता के सूरज या धूप में क्या-क्या चीज़ें एक जैसी हैं व क्या-क्या अलग हैं?

मैंने बच्चों से इन सवालों के इर्द गिर्द बात की और उन्हें अपने जवाब लिखने के लिए कहा।

कक्षा-4 के बच्चों ने कविताएँ लिखने वाली गतिविधि में दो-दो कविताएँ लिख दी थीं। मेरी मेहमान शिक्षिकाएँ एवं शिक्षक इन कविताओं को पढ़ सुनकर आश्चर्यचकित थीं कि ये बच्चे इतने कम समय में इतनी बड़ी-बड़ी व अच्छी-अच्छी कविताएँ कैसे लिख पा रहे हैं। उन्होंने उन्हें कविताओं को लिखने के लिए अपने-अपने विषय दिये। अब बच्चे नये विषय पर कविताएँ लिखने लगे। शिक्षिकाएँ उन्हीं के साथ बैठी रहीं।

कक्षा-5 के बच्चे कविता पर प्रश्न बनाकर अपने जवाब लिख रहे थे। बीच-बीच में मैं और शिक्षिकाएँ बातचीत भी कर रहे थे। हमने उन्हें कविता "पहली बारिश" पर बनी अपनी फ़ाइल दिखायी। उन्हें यकीन ही नहीं हुआ कि ये कविताएँ बच्चों ने लिखी हैं। उनसे कहा, "आप अभी इन्हें कोई नया विषय दीजिए।" उन्होंने बच्चों को नये-नये विषय दिये। बच्चों ने फटाफट कविताएँ लिख दीं, वो भी 8-10 पंक्तियों की।

कक्षा-4 के बच्चों को एक शिक्षिका ने शब्दों से कहानी लिखने को दी। बच्चे कहानी लिखने लगे। फिर मैं अपनी मेहमान शिक्षिकाओं को वहाँ लायी जहाँ कक्षा-3 के बच्चे शब्द चित्रों पर कहानी लिख रहे थे और कक्षा-2 के बच्चे वाक्य लिख रहे थे। सब लोग इन बच्चों का काम देखकर खुश थे। वे बच्चों को नये-नये विषयों पर वाक्य या कहानी लिखने को देने लगे।

इन्हीं सब पर मैं और दीदी मेहमानों से बातचीत भी कर रहे थे। हर तरफ़ सीखने-सिखाने का माहौल था। सब कुछ बहुत ही प्यार व गरिमा से हो रहा था।

मध्यान्तर में सबने अपनी मर्ज़ी के हिसाब से दाल-चावल, रोटी सब्ज़ी या फल खाये। भोजन के बाद कक्षा-1 से 4 तक के बच्चों की छुट्टी कर दी गयी। इस के पश्चात सभी शिक्षक साथी बातचीत के लिए कक्षा में इकट्ठे हुए। दीदी ने विद्यालय के बारे में बात की और हम अपने शिक्षण में जो गतिविधियाँ करवाते हैं उनके बारे में शिक्षकों को बताया। मैंने भी सबके साथ पुस्तकालय व पाठ्य पुस्तक के समन्वय पर बात रखी।

सारे शिक्षक साथियों के पास प्रश्न थे। उन्होंने नीचे लिखित सवाल पूछे:

- कक्षा-1 व 2 के बच्चे किताब कैसे पढ़ लेते हैं?
- मैं पाठ्य पुस्तकों के साथ अन्य पुस्तकों का उपयोग कैसे करती हूँ?
- गणित में कैसे काम करती हूँ?
- बाहर दीवारों पर जो चित्र बनाये हैं उनका क्या-क्या उपयोग करते हैं?
- इतनी सारी गतिविधियों के साथ बाकी विषयों का पाठ्यक्रम कैसे पूरा होता है?
- हम अपना विद्यालय व कक्षाएँ कैसे संचालित करते हैं?
- अलग-अलग स्तर के बच्चों के साथ कक्षा में काम करने के लिए क्या योजना होती है? उनके साथ किस तरह काम करते हैं?
- विद्यालय की समस्त गतिविधियों के लिए क्या कोई योजना बनायी जाती है यदि हाँ, तो उसका उपयोग कैसे करते हैं?
- इतने सारे काम करने के लिए तो तैयारी भी करनी होती होगी उसके लिए कहाँ से समय मिल पाता है? कैसे मैनेज करते हैं?
- पुस्तकालय की अन्य गतिविधियाँ किस तरह संचालित होती हैं?
- बच्चों के इतने आत्मविश्वासी होने के पीछे, इनकी सृजनात्मकता बढ़ाने के पीछे क्या योजना होती है?
- बच्चे जो जानते हैं वह पाठ्यक्रम में अपेक्षित स्तर से ऊपर है। बच्चे यहाँ तक कैसे पहुँच पाये?
- मैं इतनी ऊर्जा कहाँ से पाती हूँ ? आदि।

मैंने सवालों के जवाब देने की कोशिश की। सच बात तो यह है मुझे बच्चों के साथ मिलकर सीखना-सिखाना पसन्द है। उनके साथ अच्छा लगता है। हम एक-दूसरे से प्यार करते हैं तभी ये सब हो पाता है। यह बातचीत शाम 4 बजे तक चलती रही। आज समय का पता ही नहीं चला, सबने खूब प्रतिक्रियाएँ दीं।

खरोला जी व रावत जी ने कहा, “उन्होंने अलग-अलग राज्यों के बहुत से विद्यालय देखे हैं पर ऐसा विद्यालय वे पहली बार देख रहे है जिसमें सीखने-सिखाने के इतने मौके हैं।” सब बहुत खुश थे। कक्षा-4 और 5 के बच्चे भी ये बातचीत सुन रहे थे। उन्हें भी अच्छा लग रहा था।

खरोला जी ने कहा, “अगर कोई अपरिचित व्यक्ति यहाँ आ जाए तो यहाँ बड़े आराम से एक घण्टा घूम जाएगा और कुछ न कुछ सीखकर जाएगा।”

सीआरसी मैडम हेमलता जोशी जी ने कहा, “सबसे अच्छी बात यह है कि रजनी व रेखा ने अपना काम एक स्तर पर आकर खत्म नहीं किया बल्कि उसमें निरन्तर सुधार किया व अपना काम आगे बढ़ाया।” रजनी प्रधानाध्यापिका हैं जिन्हें मैं दीदी के सम्बोधन से ही बुलाती हूँ। संगीता जोशी व मंजूलता दीदी बच्चों की स्वयं की बनायी कविताओं से बहुत खुश थीं।

आज हमारे मेहमान शिक्षक थे:

1. रामप्रकाश रावत, एबीआरसी, भटवाडी
2. हेमलता जोशी सीआरसी, गंगोरी
3. संगीता जोशी सीआरसी, लाटा
4. शूरवीर सिंह खरौला
5. ऊषा किरन बिष्ट
6. मनीषा पंवार
7. सरिता पश्चिमी
8. मंजूलता पंवार
9. राजेन्द्री शाह
10. मधुलिका
11. राजेश्वरी लिंगवाल
12 कृष्ण कुमार
13. जगमोहन चोपता

हमारे लिए आज का दिन एक यादगार दिन था। जिसमें सीखना-सिखाना तो था ही साथ ही हमारी मेहनत के लिए स्वीकार्यता और सराहना भी थी।

कुछ घण्टों में किसी विद्यालय की समूची प्रगति जाँचना सम्भव नहीं है न ही हमारे मेहमान इसलिए आये थे। परन्तु हमने उन्हें अपने विद्यालय की कुछ विशेषताओं से परिचित करवाना चाहा था जिसमें हम कुछ हद तक सफल रहे।

९.१०.१३

आज पाठ्य पुस्तक समीक्षा की एक दिवसीय कार्यशाला में उपस्थित रही। इसमें कुछ शिक्षक साथियों ने अपनी-अपनी लिखी समीक्षाओं के बारे में बताया। इसमें एपीएफ़ के साथी व डीईओ सेमवाल जी भी उपस्थित थे। मैंने कक्षा-4 की गणित की किताब की अपनी समीक्षा के बारे में बताया।

१०.१०.१३

आज प्रधानाध्यापिका दीदी मासिक बैठक में गाँधी विद्या मन्दिर स्कूल गयी हैं। सुबह 9:30 पर विद्यालय पहुँचीं। सुबह की सभा में सभी बच्चों के साथ स्कूल में आये शिक्षकों के भ्रमण पर बातचीत की। बच्चों को बधाई दी कि सब कुछ बहुत अच्छा रहा। बच्चे भी खुश थे। उन्हें भी शिक्षकों का आना अच्छा लगा था।

अब दीदी स्थानान्तरित होकर दूसरे स्कूल जाने वाली हैं, तो मुझे सारी कक्षाएँ देखनी होंगी। स्कूल में अलग-अलग स्तर के 52 बच्चे हैं। ये सब बिना योजना बनाये नहीं होगा। आज कक्षा 2 व 3 को एक साथ बिठाया। उनके साथ बातचीत कर यह निश्चित किया कि जब तक बाहर बैठना शुरू नहीं होता, ऐसे ही बैठना है। इसका उद्देश्य है, हिन्दी में कक्षा 3 वाला बच्चा अपने साथ बैठे कक्षा 2 वाले बच्चे की पढ़ने-लिखने में मदद करेगा। जब अलग-अलग पढ़ना होगा तब बाहर आकर पढ़ेंगे। पहला वादन यानी पीरियड ऐसे ही चलेगा। कक्षा-4 और 5 एक साथ बैठेंगे जबकि कक्षा-1 वाले अलग बैठेंगे। कक्षा-2 के बच्चे ब्लैकबोर्ड पर लिखे वाक्य पढ़ लेते हैं। कॉपी पर भी उतार लेते है पर स्वयं छोटे-छोटे वाक्य ही बना पाते हैं। कक्षा-3 में कुछ बच्चे पढ़ने एवं लिखने के मामले में उच्च स्तर पर हैं। वे किताब पढ़ पाते हैं और अपनी बात लिख भी पाते हैं। वहीं कुछ बच्चे विचार करने, अभिव्यक्ति करने में तो ठीक हैं पर लिखने में कमज़ोर हैं। ऐसे में मेरी योजना हर दिन कक्षा-2 और 3 के बच्चों को किसी पुस्तक से एक अनुच्छेद पढ़वाना व लिखवाना है।

इसके लिए सबसे पहले किसी चित्र पर या विषय पर कक्षा में बातचीत करवानी है फिर बच्चों की बातचीत पर आधारित अनुच्छेद ही ब्लैकबोर्ड पर लिखना है। जिसे वे एक-एक कर पढ़ेंगे और फिर अपनी कॉपी पर लिखेंगे। दिक्कत यह है कक्षा-3 के जिन बच्चों को

अच्छी तरह पढ़ना आता है वे ज़्यादा देर इस प्रक्रिया में शामिल नहीं रह पाते। इसके लिए मुझे इसी अनुच्छेद पर आधारित प्रश्न बनाने होंगे जिनका उत्तर वे स्वयं लिखेंगे। साथ ही पुस्तकालय की पुस्तकों का अधिकाधिक प्रयोग करना होगा।

यदि बच्चे अपनी कॉपी पर ज़्यादा काम करेंगे तो उनकी कापियाँ जाँचने की भी परेशानी होगी। इसके लिए भी अतिरिक्त समय निकालना होगा।

२१.१०.१३

15.10.13 को दीदी इस विद्यालय से कार्यभार मुक्त हो गयी थीं। उन्हें उसी दिन प्राथमिक विद्यालय भवान में ज्वाइन करना था। इसलिए वे फटाफट चार्ज देकर चली गयी थीं। आज वे अपने विद्यालय से सीएल लेकर विद्यालय आयीं। दिन भर दीदी से उनके नये स्कूल व अपने साथ बिताये दिनों के बारे में बातचीत की। हालाँकि मैं आज तक विद्यालय के सारे काम दीदी के साथ मिलकर करती थी, पर अब सारी ज़िम्मेदारी मेरे ऊपर आ गयी है। पता नहीं दूसरा अध्यापक/अध्यापिका कब विद्यालय में आये। सूचना के अनुसार नये सत्र में ही नये अध्यापक के आने की सम्भावना है। ऐसे में 5-6 महीने विद्यालय में एकल अध्यापिका के तौर पर काम करूँगी। 52 बच्चे, अकेली मैडम बहुत बड़ी चुनौती है। ऊपर से अन्य कार्य बैंक/प्रेरक/ मध्याह्न भोजन/डाकें वगैरह भी देखनी होंगी।

दीदी का स्थानान्तरण होना, मुझे व बच्चों को बहुत बुरा लगा। छुट्टी होते-होते तो हम रोने ही लगे। दीदी एक सरल हृदय व समझदार महिला हैं। उन्होंने मुझे हमेशा विद्यालय में नवाचार करने की स्वतन्त्रता दी। हमेशा मेरे विचारों व निर्णयों का सम्मान किया। हमारी आपसी समझदारी व सामंजस्य धीरे-धीरे विकसित हुआ था। आज हम एक दूसरे को अच्छी तरह जान-समझ चुके थे व अपने विद्यालय का संचालन अच्छी तरह कर रहे थे। ऐसे में दीदी का ट्रांसफ़र बहुत खला, खैर...।

अच्छे लोग जितनी ज़्यादा जगह जाएँ उतना ही अच्छा है।

रजनी दीदी 30 अगस्त 2010 में विद्यालय आयी थीं। हम 3 साल 2 माह एक साथ रहे। शुरू-शुरू में दीदी को कई बार मेरे नवाचारों से उलझन होती। वो कहती कुछ नहीं पर उनके हावभाव से पता चल जाता। धीरे-धीरे जब उन्होंने इन नवाचारों का सकारात्मक प्रभाव बच्चों के सीखने-सिखाने की गति पर पड़ते देखा तो वे सन्तुष्ट हो गयीं।

किसी भी विद्यालय में शैक्षिक माहौल बनाने में प्रधानाध्यापक की भूमिका काफ़ी महत्त्वपूर्ण होती है। एक शान्तचित्त और अपने पेशे के प्रति ईमानदार प्रधानाध्यापक के साथ ही नये तरीके से शिक्षण सम्भव हो पाता है। एक सहायक शिक्षिका के तौर पर काम करते हुए मुझे अपनी हर शिक्षण गतिविधि को अपने प्रधानाध्यापक के साथ साझा करना ज़रूरी लगता था। इसके मुझे दो फ़ायदे लगते हैं, एक तो प्रधानाध्यापक का सहयोग ज़रूरी होता है, दूसरा, यदि विद्यालय में दो शिक्षक अलग-अलग दिशा में सोचते हों तो यह थोड़ा मुश्किल हो जाता है कि हम अपने शिक्षण के प्रभावों को देख पाएँ। प्रधानाध्यापक का सहयोग उसके सहयोगी शिक्षकों में ऊर्जा का संचार कर सकता है वहीं दूसरी ओर यदि प्रधानाध्यापक अपने सहयोगी शिक्षक के नवाचारों से ईर्ष्या करने लगे तो फिर विद्यालय का सारा माहौल नकारात्मक हो जाता है। इससे कोई भी व्यवस्थित काम करना मुश्किल हो जाता है। एक लचीले स्वभाव व दूसरे के काम को प्रोत्साहन देने वाला प्रधानाध्यापक विद्यालय के माहौल को खुशगवार बनाता है। यह मेरा सौभाग्य है कि मेरी सभी प्रधानाध्यापिकाओं व साथी शिक्षिकाओं ने मुझ पर विश्वास जताया और मेरी छोटी-छोटी खुशियों के साथी बने।

२२.१०.१३

आज 9.30 पर मैं जब विद्यालय पहुँची तो कक्षा-एक व दो की शिवानी, श्वेता व सलोनी शब्द चित्रों के पास खड़ी उन्हें पढ़ रही थीं। इन्हें देख कक्षा-1 और 2 के बाकी बच्चे भी पास आकर चित्रों को पढ़ने लगे। उन्होंने पूरे विद्यालय की दीवारों पर जा जाकर समूहों में चित्र पढ़े तब तक बाकी बच्चे सफ़ाई व पानी भरने आदि का काम करते रहे।

हमने 9.50 पर सुबह की सभा प्रारम्भ की। दीक्षा ने अब तक गाँव के समाचार लिख लिये थे।

उसने लिखा,

आज गाँव में बहुत सी महिलाओं ने करवा चौथ का व्रत रखा है। आजकल खेतों में हल लगा रहे हैं और डिक्के भी फोड़ रहे है। कुछ लोग अपनी क्यारियों में सब्ज़ियों के बीज बो रहे हैं। आजकल कुछ फूल सूख रहे हैं, कुछ पेड़ों में पत्तियाँ भी सूख रही हैं। खेतों में गोबर डाला जा रहा है। आज आसमान साफ़ है और धूप भी अच्छी खिली है। 2 और 3 नवम्बर को दीपावली भी है।

दीक्षा ने करवा चौथ व्रत व गोबर की वर्तनी ठीक नहीं लिखी थी। उसे इन शब्दों की वर्तनी ठीक करने में मदद की।

सुबह की सभा में गजेन्द्री ने समाचार बोले, अनीता व शुभम ने अपनी लिखी कविता सुनायी। सिमरन सलोनी व अनीता ने भी कविता सुनायी।

मैंने बच्चों से बातचीत की कि अब हम आगे कैसे काम करेंगे? सारे बच्चे मैडम की मदद करना चाहते हैं, वे कक्षाओं को पढ़ाना चाहते हैं पर इस तरह सारे बच्चे नहीं सीख पाते। मुझे बहुत ही सतर्कता से एक योजना बनानी होगी जिससे हमारा सीखना-सिखाना जारी रह सके।

कक्षा-4 और 5 को पुस्तकालय की कॉपी में शब्द चित्रों व क्रिया शब्द चित्रों की मदद से एक-एक कहानी लिखने को दी। कक्षा-एक के साथ कबूतर पर एक छोटी बातचीत के बाद चार पंक्तियों की सरल कहानी श्यामपट पर लिखी और उसे बच्चों को पढ़वाया। बच्चों को कहानी याद हो गयी। वे अन्दाजे से पढ़ रहे थे। फिर भी कबूतर, खाया, फुर व आसमान जैसे चार शब्दों पर सही जगह पर उँगली रख रहे थे। मैंने उन्हें कॉपी पर कुछ शब्द लिखने को दिये।

कक्षा-4 और 5 के बच्चे बाहर ही अलग-अलग बैठे कहानी लिख रहे थे। मैं कक्षा 2 व 3 में गयी। ब्लैक बोर्ड पर एक कहानी लिखी और बच्चों को उसे पढ़ने के लिए कहा। जब बच्चों ने उसे पढ़ लिया तो मैंने कक्षा-2 से कहा, "वे इसे अपनी कॉपी पर लिखें।" कक्षा-3 के बच्चों को ब्लैकबोर्ड से विपरीत दिशा में मुँह करके उसी कहानी का श्रुतलेख लिखवाया और फिर बच्चों को ब्लैकबोर्ड से अपना-अपना लेख चैक करने के लिए कहा। अपने लेख में दीपिका की एक भी गलती नहीं थी। बच्चे अपनी गलतियाँ सुधारकर लिखने लगे। इतने में कक्षा 4 और 5 के कुछ-कुछ बच्चे अपनी कॉपी लेकर आने लगे थे।

कक्षा-1 के बच्चे दूर से ही अपनी कॉपी दिखाकर पूछने लगे, "मैडम जी ऐसे लिखना है जी। " जिनका काम हो गया था उनकी तरफ़ से पानी पीने, टॉयलेट जाने, एक दूसरे की चीज़ें छिपाने जैसी शिकायतें करने की बातें होने लगीं।

अब क्या करूँ?

मैंने कक्षा-एक को कहा वे अपने ग्रीनबोर्ड पर शब्दचित्र बनाएँ व उनके नाम लिखें।

कक्षा-4 और 5 को क्रमशः "दो मेंढकों की यात्रा" और "फूलों वाले बाबा" पाठ पढ़ने को दिये। इसके लिए कक्षा 5 को अन्दर गोले में बिठाया व 4 के बच्चों को बाहर छाया में।

थोड़ी देर में कक्षा-2 और 3 के बच्चों ने भी अपना काम कर लिया था। कक्षा-3 के लिए अभी लिखी कहानी पर 5 प्रश्न श्यामपट पर लिखे व उनसे स्वयं उनके उत्तर लिखकर दिखाने को कहा। कक्षा 2 को कॉपी पर शब्द चित्र बनाने को दिये।

अब कक्षा-1 के बच्चे श्यामपट पर काम कर रहे थे। कक्षा-2 वाले कॉपी पर शब्द चित्र बना रहे थे। 3, 4 व 5 के बच्चे अपने-अपने समूहों में पढ़ रहे थे। मैं इधर-उधर घूमते हुए देख रही थी। जब कक्षा-4 ने अपना पाठ पढ़ लिया तो उन्हें श्रुतलेख बोला फिर अनुच्छेद पर बातचीत कर इसी पर प्रश्नोत्तर बनाने को दिये। ऐसा ही कक्षा 5 के साथ किया।

मध्यान्तर से पहले हर बच्चा अपना-अपना काम कर रहा था, लेकिन मैं थक गयी थी। मैंने एक मिनट भी आराम नहीं किया था। मध्यान्तर के बाद हमने कक्षावार कविता और गीत सुनाने वाला खेल खेला। आज प्रत्येक कक्षा को 4-4 मिनट का समय दिया। कक्षा 3 ने 4 मिनट में 32 गीत – कविताएँ हावभाव के साथ सुनायीं।

फिर गणित की कक्षा चली। जिसमें कक्षा-4 और 5 ने पुनरावृत्ति के सवाल किये। कक्षा-2 और 3 ने दहाई के जोड़ व घटाने के सवाल हल किये।

कक्षा-1 को पत्थरों से 1 से 10 तक संख्याओं के खेल खिलाये।

वास्तव में यदि एकल अध्यापक को 52 बच्चों के साथ काम करना है तो उसे ढेर सारी तैयारी की ज़रूरत है। साथ ही निरन्तर सोचना होता है कि बच्चों की तरफ़ से आने वाली विभिन्न अकादमिक माँगों को कैसे पूरा करे। मुझे लगता है कि यदि मैं अपने एकल अध्यापक होने को एक समस्या मान लूँ, तो फिर शायद मैं काम नहीं कर सकती और इस का मेरे स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। क्योंकि बच्चों की असीम ऊर्जा बिना लक्ष्य के मेरे लिए शोर हो सकती है और इससे झुँझलाहट होना स्वाभाविक है। हालाँकि शिक्षा विभाग को देखना चाहिए कि वे विद्यालय में पर्याप्त शिक्षक उपलब्ध करवाएँ। वरना शिक्षा के अधिकार अधिनियम का क्या मतलब हुआ? चूँकि संविधान की रखवाली करने वाली सर्वोच्च संस्था में कोई आवाज़ नहीं उठाएगा तो चलने दो जो चलता है। आज खोजें व जाने पत्रिका भी मिली। इसमें मेरा भाषा व पुस्तकालय वाला लेख छपा है। पढ़कर अच्छा लगा। बच्चों को भी दिखाया वे भी खुश हुए।

२३.१०.१३

आज कक्षा-4 और 5 ने मध्यान्तर से पहले कविता पर काम किया।

कक्षा-5 ने "बाँकी-बाँकी धूप" और अन्य कविताओं के साथ अपने काम को फ़ेयर कर, 'धूप और सूरज' पर अपनी नयी कविता लिखी। आज सूरज खिला-खिला था। बादलों के छोटे-छोटे गुच्छे जो दक्षिण की तरफ़ लम्बी लाइनों में फैले थे, वे हवा के साथ उत्तर की ओर रेस लगा रहे महसूस हो रहे थे। बच्चों ने इसी दृश्य पर अपनी कविता लिखी व चित्र बनाये।

अरविन्द ने लिखा-

आज धूप सुहानी है

कर रही मनमानी है

बादलों के टुकड़ों को

छोटा करने की इसने ठानी है।

भवानी -

बादलों के बच्चे दौड़ लगा रहे हैं

सूरज के बच्चे उनको चमका रहे हैं।

"शायद वो धूप व किरणों को सूरज के बच्चे कहना चाह रही थी।"

शुभम -

सूरज चमका रहा है

बादलों पर धूप

बादल अपनी थालियों से

धूप को सूरज की ओर ही चमका रहे हैं

जिससे बन रही है

नयी-नयी किरणें।

कितनी सुन्दर कल्पनाएँ हैं। बच्चे कितने सारे दृश्य देख पा रहे हैं। वे आनन्दित हैं। उजली धूप उनकी कल्पनाओं से होकर मेरे मन की गहराइयों तक पहुँच रही है, उसे गरमाहट और रोशनी से भर रही है।

सभी बच्चों ने 10 से 12 पंक्तियाँ लिखीं।

कक्षा-4 ने 'हम भी होते काश कबूतर' की तरह लिखी अपनी अन्य कविताओं को फ़ेयर किया। उन्होंने अपनी नयी कविता को ए-4 साइज़ के कागज़ पर लिखकर उस पर चित्र बनाकर उसे डिस्प्ले बोर्ड पर लगाया, जिससे अन्य बच्चे भी उसे पढ़ पाएँ।

सब अपना-अपना काम कर रहे थे। मैं कक्षा-1, 2 और 3 के साथ रही।

मध्यान्तर के बाद कक्षा-2 और 3 ने भाषा में काम किया जबकि कक्षा-1 ने पत्थरों से गिनती व जोड़-घटाना किया।

कक्षा-4 और 5 के बच्चे अपना काम फ़ेयर करते रहे। उन्होंने अलग-अलग और दो-दो के समूहों में काम किया।

हिन्दी भाषा में विशाल व मनोज ने अच्छी प्रगति की है। शुभम विचार के स्तर पर सबसे आगे है।

सागर भी बढ़िया काम कर रहा है पर मात्राओं की गलतियाँ अधिक करता है।

जब तक कक्षा-1 में बच्चों को काम देकर कक्षा-5 वालों के पास आयी वैष्णवी व शर्मीली में झगड़ा हो गया। वैष्णवी रोने लगी। छोटे बच्चे तब तक चुप नहीं होते हैं जब तक कि उनकी पूरी बात न सुन ली जाए व उनकी समस्या हल न हो जाए। दोनों में सुलह करायी, उनका हाथ मिलवाया उन्हें प्यार किया तब जाकर दुबारा काम शुरू हुआ।

आज अपने लिए नयी कार्य योजना बनायी। इसके अनुसार मध्यान्तर से पहले कक्षा-4 और 5 के साथ गणित और हिन्दी पर काम करना निर्धारित किया। कक्षा-2 और 3 के लिए अनुच्छेद/कहानी लिखना, पढ़ना, बातचीत करना और प्रश्न-उत्तर लिखने की बात सोची।

कक्षा-1 और 2 के साथ कहानी सुनाने, कविता, गीत गाने और उन में आये शब्दों को पढ़ने-लिखने का काम करूँगी। कहानी को ब्लैक बोर्ड पर लिखूँगी और बच्चों को उसे पढ़ने के लिए प्रेरित करूँगी।

मध्यान्तर के बाद कक्षा-2 और 3 वालों के साथ भाषा में जो काम किया है उन्हीं अवधारणाओं को बच्चों के परिवेश से जोड़ते हुए पर्यावरण अध्ययन का कार्य करूँगी।

कक्षा-4 और 5 के प्रत्येक पाठ को पुस्तकालय की पुस्तकों से जोड़ते हुए या उनकी पुस्तकालय में पढ़ी पुस्तकों को पाठ्य पुस्तकों से जोड़ते हुए काम करना है।

जबकि गणित व "हमारे आसपास" के सम्बोध पर 'शोध विधि' से काम करना है।

मैंने नयी कार्य योजना को चार्ट पर लिखकर कक्षा में चिपका दिया।

कल जो होमवर्क 4 और 5 को गणित में दिया था उस पर आज बात हुई। बच्चों ने यह जानने की कोशिश की कि उन्हें गणित कहाँ-कहाँ दिखाई देता है।

८.१.१४

स्वागत है नववर्ष तुम्हारा 2014

गुमसुम उदास चेहरों पर, खुशियाँ हास-परिहास भर दे।
नये क्षितिज नये आकाश, पंखों में नव उल्लास भर दे।
नयी उमंगें नयी तरंगें, शुभ संकल्पों में दृढ़ विश्वास भर दे।
नयी सुबह का नया सूर्य, नव ऊर्जा नव प्रकाश भर दे।

सुबह कक्षा-4 और 5 के बच्चों के साथ बातचीत की। बच्चों ने इस वर्ष में कुछ नया करने की ठानी, जिसमें उन्होंने यह तय किया कि इस नव वर्ष में वे अपनी किन आदतों को बदलना या छोड़ना चाहेंगे और नया क्या करना चाहेंगे। इस पर विचार करेंगे व अच्छी तरह सोच-विचार कर तय की बातों को अपनी कॉपी पर भी लिखेंगे ताकि ज़रूरत पढ़ने पर देख सकें।

बच्चों ने अपनी बात अपनी कॉपी पर लिखी फिर हमने एक-दूसरे की बातें जानी व उन्हें सफ़ेद कागज़ पर लिखकर एक कोलाज़ तैयार किया जिसे मैंने ऑफ़िस में टाँग दिया है।

मैं समय-समय पर बच्चों से इस पर बात करती रहूँगी और कुछ समय बाद देखूँगी क्या उन्होंने अपनी लिखी बातों पर ध्यान दिया है?

जैसे: रणवीर (कक्षा-4) ने लिखा है कि वो इस वर्ष अपना लेख सुधारेगा।

अरविन्द (कक्षा-5) - वो माँ-पापा से अपनी कोई बात नहीं छिपायेगा।

अनन्ता (कक्षा-5) - मैं अपनी दोस्त से स्कूल में झगड़ा नहीं करूँगी।

भवानी (कक्षा-5) - मैं खूब पढ़ाई करूँगी ताकि बड़े होकर अपने माता-पिता का सपना पूरा कर पाऊँ, आदि।

कक्षा-एक की वैष्णवी बहुत तेज़ बच्ची है, हर समय वह कुछ न कुछ करती रहती है। कक्षा के पठन-पाठन से ज़्यादा देर तक जुड़ नहीं पाती। हालाँकि इसकी ज़िम्मेदारी मेरी है कि कैसे मैं अपनी गतिविधियों में विविधता लाऊँ जिससे बच्चों को पठन-पाठन बोझिल न लगे। श्यामपट पर लिखे वाक्यों को बार-बार दोहराने की गतिविधि का उद्देश्य शब्दों की आकृति की पहचान को पुख्ता करना होता है। परन्तु वैष्णवी को इसमें अधिक मज़ा नहीं आता या फिर उसके लिए दोहराव जैसा होता है।

जब बाकी बच्चे बारी-बारी से वाक्य पढ़ रहे थे तब उसने अपने बैग से काले चश्मे का एक टूटा हुआ टुकड़ा निकाला। पहले उससे सूरज को देखा फिर अपने साथियों को दिखाया। थोड़ी ही देर में हर बच्चे का ध्यान वैष्णवी के चश्मे की तरफ़ हो गया। अब हर बच्चा उससे चीज़ें देखना चाहता था। मुझे कक्षा का काम रोकना पड़ा, जब तक कि सबने उस चश्मे से सूरज व अन्य चीज़ों को न देख लिया।

थोड़ी देर बाद जब वैष्णवी कॉपी पर कुछ लिखने की कोशिश कर रही थी तो हवा से उसका पेज बार-बार उड़ रहा था। वह मेरे पास ही बैठी थी। उसने अपने बगल में बैठे अमित को कहा, “ओ.. अमित! मेरे पेज के ऊपर हाथ रख।” अमित अपना काम कर रहा था। उसने मना कर दिया।

वह फिर बोली, “रख ना रे ! मैं काम कैसे करूँगी?”

मैंने अपना हाथ उसके पेज के ऊपर रख दिया। उसने सिर उठाकर मुझे देखा और अपना काम करने लगी।

बच्चों को जब रोको-टोको नहीं तो वे ज़्यादा बेहतर काम करते हैं। कक्षा-1 की वैष्णवी और अदिति, हर काम में आगे रहती हैं। हर बात, हर काम के लिए हम जी, हम जी कहकर आगे

आती हैं। जैसे श्यामपट पर जो लिखा है उसे पढ़ने के लिए वैष्णवी सबसे पहले हाथ उठाती है और पढ़ना न आने पर अपने साथियों की मदद से सारा पढ़ जाती है।

५.२.१४

सुबह स्कूल आते ही मन खराब हो गया। परसों की तरह आज भी किसी ने विद्यालय में शराब पी थी, बोतलें व अन्य गन्दगी बिखरायी थी और रसोई के दरवाज़े पर पॉटी भी कर दी थी। किसी तरह बच्चों के साथ मिलकर आज भी ये गन्दगी साफ़ की। आज गन्दगी परसों से ज़्यादा थी तो मन अजीब-सा हो गया। दिन भर उलटी करने जैसा लगा व सिर दर्द रहा जबकि बच्चे शायद कुछ देर में ही भूल गये। ऐसी किसी भी स्थिति में मुझे बच्चों की मदद लेने में झिझक होती है पर अकेले साफ़ करने की हिम्मत भी नहीं होती। तब मुझे बहुत बुरा लगता है, गुस्सा आता है।

ये सोचकर और भी बुरा लगता है कि समुदाय के कुछ लोग हमारे बारे में कितना बुरा सोचते हैं। जब ये लोग स्कूल में गन्दा करते होंगे तो क्या ये नहीं सोच पाते होंगे कि सुबह हम यह सब कैसे साफ़ करेंगे या ये जानबूझकर कर ऐसा करते हैं? स्कूल के रास्ते में अपने घरों या दुकानों का कूड़ा डालने या शराब की खाली बोतलों को रास्ते में तोड़ देने में कई लोग एक पल के लिए भी नहीं झिझकते। दरअसल साफ़-सफ़ाई हमारी संस्कृति का हिस्सा कम ही रही है। हम कहीं भी थूक देते हैं, कचरा फेंक देते हैं, पेशाब आदि गन्दगी कहीं भी कर देते हैं। हमने अपने जल स्रोत, पेड़-पौधे, रास्ते, खेत आदि सब कुछ प्रदूषित कर दिये हैं और इसके लिए हमारे मन में ज़रा भी आत्मग्लानि नहीं है। हम एक आत्महन्ता संस्कृति हैं।

अपने व्यक्तिगत अनुभवों से मुझे यह कहने में ज़रा भी संकोच नहीं है कि पुरुषों में यह असंवेदनशीलता महिलाओं के मुकाबले ज़्यादा है। साफ़-सफ़ाई हमेशा से महिलाओं व कमज़ोरों की ज़िम्मेदारी मानी जाती रही है। अभी इस सोच को लाने में बहुत समय लग सकता है जब हम साफ़-सफ़ाई को अपनी व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी समझने लगें। स्कूल बच्चों में साफ़-सफ़ाई की आदतों का विकास करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। साथ ही माता-पिता और परिवार अपने व्यक्तिगत प्रयास कर सकते हैं। अगर मैं अपने दो बच्चों की बात करूँ तो उनसे बहुत छोटे में व समय-समय पर हुई बातों का प्रभाव मैं उनके व्यवहार में देख पाती हूँ। उनकी पेंट व बस्ते की जेबें उनकी खायी चीज़ों के खाली रैपरों से भरी होती हैं।

कभी-कभी तो वे अपने दोस्तों का कचरा भी अपने पास रख लेते हैं, जिसका कई बार उनके दोस्त मज़ाक भी बनाते हैं। मेरी बिटिया कहती है ,"दुनिया में बहुत गन्दगी है पर इसमें मेरी हिस्सेदारी कम है।" मुझे लगता है लोग इसलिए भी जाने-अनजाने गन्दगी फैलाते हैं कि वे इसके दुष्प्रभावों के प्रति सोच नहीं पाते हैं। कभी लगता है वे कुण्ठित और असंवेदनशील हैं और अपने गुस्से में दुनिया को खराब कर रहे हैं।

६.२.१४

आज सुबह एक रोमांचक घटना घटी। सुबह जब मैं स्कूटी से विद्यालय आ रही थी तो गंगोरी के बाद जहाँ पर पहाड़ टूटा है, वहाँ बहुत ऊँचाई से सड़क निकाली गयी है। नदी तट पर बार्डर रोड आर्गेनाइजेशन (बीआरओ) द्वारा निर्माण का काम चल रहा है। जिसके लिए नदी के बीच से ट्रक के दूसरी ओर जाने लायक रास्ता नदी के बीचों-बीच बनाया गया है। इस रास्ते से मज़दूर ट्रक में बैठकर नदी पार जाते हैं। वहाँ वे पत्थर तोड़ते हैं, उन्हें ट्रक में भरते हैं फिर ट्रक उन पत्थरों को इस पार लाता है। सारे मज़दूर ट्रक में नहीं जा पाते, कुछ नदी के पानी में भीग कर दूसरी ओर पहुँचते हैं।

इसी रास्ते स्यूंणागाँव के बच्चे भी राजकीय इण्टर कॉलेज में पढ़ने आते हैं जिन्हें अकसर सुबह नदी तट पर अपने जूते-जुराब खोलते-पहनते देखती हूँ। नदी में पानी ज़्यादा होने के कारण आजकल बच्चे थोड़ी दूर बने ऐसे ही दूसरे रास्ते से जहाँ इससे ज़्यादा पत्थर हैं, आ-जा रहे हैं।

सुबह जब मैं स्कूल आ रही थी तो मैंने देखा कुछ बच्चे अचानक सड़क छोड़ नीचे नदी की ओर भाग रहे हैं। मैंने स्कूटी रोकी और नीचे देखा तो डर के मारे रोंगटे खड़े हो गये। नीचे नदी में एक महिला बह रही थी। मेरे देखते-देखते वह काफ़ी दूर तक बही फिर एक बड़े पत्थर पर अटक गयी। वह किसी तरह पत्थर के ऊपर चढ़ने में कामयाब रही। उसकी शाल जूते आदि बह गये थे। उसकी चीख सुन उसके साथी मज़दूर, महिलाएँ व बच्चे उसकी ओर दौड़ते आ रहे थे पर वे सब बहुत दूर थे। वो महिला बहाव तेज होने के कारण पत्थर से फिसल रही थी। तीन बच्चे, जो शायद कक्षा-11-12 में पढ़ते होंगे, उसके पास नदी तट पर पहुँचे। मैं यह देख कर घबरा गयी कि वे नदी में जाना चाह रहे थे। मैं उन्हें आवाजें देने लगी कि वे ऐसे ही नदी में न जाएँ। लेकिन वे मेरी आवाज़ इतनी दूर से कैसे सुनते!

इतने में एक लड़के ने जल्दी से अपनी यूनीफ़ार्म खोली और छपाक से नदी में कूदा और उस महिला तक पहुँचा, फिर उतनी ही जल्दी उसे वापस तट पर ले आया। शाबाश बच्चे!

इतने तेज़ बहाव में भागीरथी के ठण्डे पानी में इस तरह अपनी जान पर खेलकर उस महिला को बचा लाया वो साहसी बच्चा!

मैंने वहाँ खड़ी कुछ लड़कियों से उसका नाम जानना चाहा तो वे नहीं बता पायीं। ये छोटी कक्षा में पढ़ने वाली लड़कियाँ थीं। मैंने उनसे कहा, "ये बात वे अपने शिक्षकों को ज़रूर बताएँ।" मैं भी वहाँ के शिक्षकों से बात करूँगी और उस बच्चे से भी मिलूँगी। इस बच्चे की जितनी तारीफ़ की जाए कम है। इसका नाम तो साहसी बच्चों के पुरस्कार के लिए जाना चाहिए। एक बार पिछले साल भी जब अचानक तेज़ बारिश से नदी में पानी बढ़ा था तो कुछ बच्चों ने नदी में डूब रहे एक लड़के को बचाया था।

आज दुनिया पर, दुनिया की अच्छाई पर और मानवीयता पर विश्वास और पक्का हुआ। स्कूल आकर बच्चों को भी यह बात बतायी।

७.२.१४

कल शाम घर जाते हुए बारिश शुरू हो गयी थी। छुट्टी के समय पता चला ऑफ़िस की चाभी नहीं मिल रही है। बारिश तेज़ न हो जाए इसलिए बच्चों को निकलने को कह दिया था। चाभी खोजते हुए 15 मिनट हो गये। इतने में बारिश तेज़ हो गयी। स्कूटी में भीगते-भीगते ही सफ़र हुआ। रास्ते में इण्टर कालेज के बच्चे भी भीगते हुए ही जा रहे थे। उनसे उस बच्चे के बारे में पूछा, वो पीछे आ रहा था। थोड़ी देर उससे बात की, मैं और बातें करती पर उसके साथी शोर करने लगे। मैंने उस बच्चे के साहस की प्रशंसा की, वह मुस्कराया।

थोड़ा आगे चलकर उनके एक गुरुजी मिले। जब मैंने उनसे इस घटना के बारे में पूछा तो उन्होंने कहा, "हाँ मैंने भी सुना है।" मानो नदी में कूदकर किसी की जान बचाना बहुत ही सामान्य बात हो। जल्दबाज़ी में, मैं उस बच्चे का नाम नहीं पूछ पायी।

८.२.१४

आज सुबह से ही तेज़ बारिश हो रही थी। खूब ठण्ड भी हो रही थी। गाड़ी में इण्टर कॉलेज के शिक्षक मिले। कल की घटना पर बात करने पर वे उपेक्षा से बोले हाँ, "वो बच्चे सब आवारा हैं। कक्षा से भाग जाते हैं और नदी में मछली पकड़ते हैं। इन्हें नदी में तैरना खूब आता है।"

मैंने कहा, "गुरुजी नदी में तैरना, मछली पकड़ना अलग बात है और तेज़ बहाव में किसी की जान बचाना अलग, चाहे वो बच्चा कितनी भी कक्षाएं बंक क्यों ना करता हो, वो साहसी तो है ही।" पता चला उसका नाम अजय है और वो चीवां का रहने वाला है, 12 वीं में पढ़ता है।

मन में एक और बात आयी। बच्चे कक्षा से क्यों भागते हैं? कहीं विद्यालयों का वातावरण और शिक्षकों का व्यवहार भी तो इसके लिए ज़िम्मेदार नहीं?

बच्चे बेहद साहसी होते हैं। यदि शिक्षक और उनके चारों और मौजूद समाज उन के साहस को पहचान कर उसे सही दिशा दें और उनमें विचार करने को बढ़ावा दें तो सम्भवतः बच्चे दुनिया को बेहतर बनाने में मदद करेंगे। परन्तु हमारा लक्ष्य सम्भवतः यह नहीं है, भले ही किताबें और सिद्धान्त इस बात की पैरवी करते हों। असल में आज भी हमारा अधिकांश समाज बच्चों को उसी सामन्ती ढाँचे में ढालना चाहता है जिसमें वो जी रहा होता है। निश्चित तौर पर अध्यापक की भूमिका महत्त्वपूर्ण हो सकती है परन्तु हम अध्यापक भी तो समाज के ही हिस्से है। खैर, दुनिया बदलती है तो फिर वर्तमान सामन्ती मानसिकता भी बदलेगी।

बारिश के बावजूद बच्चे आये थे। लाइट नहीं थी। हम सब एक ही कमरे में बैठे। कल का काम आगे बढ़ाया।

पिछले कुछ दिनों से बड़ी भोजनमाता के पति ने परेशान कर रखा है, वो विद्यालय में आ जाता है और मेरे कामों में अनावश्यक दखलन्दाज़ी करता है। मना करने पर खूब बहसबाज़ी करता है। खराब-खराब बातें करता है। वो लगभग दिनभर विद्यालय में रहता है। इस कारण दोनों भोजनमाताएँ भी जल्दी घर नहीं जा पातीं। वे भी छुट्टी होने पर मेरे साथ घर जाती हैं। हम सब डरे से रहते हैं कि कुछ अनहोनी बात न हो जाए। इससे मेरा समय तो खराब होता ही है मन भी दुखी हो जाता है। अगर प्रबन्धन समिति के अध्यक्ष या अन्य अभिभावक उससे बात करें तो उनके साथ भी गाली-गलौज़ करता है। उसके पूर्व व्यवहार को देखकर कोई भी

इस लफड़े में नहीं पड़ना चाहता। भोजनमाता चाहती हैं कि मैं पुलिस में इसकी रिपोर्ट करूँ। पर मुझे लगता है इसका इलाज़ पुलिस नहीं अस्पताल है। इसे मनोवैज्ञानिक काउंसिलिंग की ज़रूरत है।

१३.२.१४

बच्चे शब्दों का अलग-अलग प्रयोग करने के बजाए वाक्यों में प्रयोग करने से ज़्यादा जल्दी सीखते हैं। सुबह कक्षा-1 में तुकान्त शब्दों पर अभ्यास करा रही थी। मैंने कुछ शब्द श्यामपट पर लिखकर पढ़वाये। बच्चों ने इन शब्दों को धीरे-धीरे पहचानते हुए पढ़ा। परन्तु जब मैंने इन्हीं शब्दों की मदद से कुछ वाक्य और फिर एक छोटी-सी कहानी लिखकर पढ़वायी तो उनके पढ़ने की गति तेज़ हुई। वे जल्दी-जल्दी शब्द पहचान पाये। आज मेरी ये धारणा और पुख्ता हुई कि भाषा सार्थक सन्दर्भों से जल्दी सीखी जाती है। खासतौर पर जब बच्चे सीखने के शुरुआती स्तर पर हों। ऐसे में बच्चों के दिमाग में किसी शब्द की छवि किसी बात या अनुभव के साथ बनती है, अकेले नहीं। शायद यही कारण है कि सदस्यों की दृष्टि से बड़े परिवार में पलने वाले बच्चे के पास ज़्यादा समृद्ध भाषा होती है और उनके पास एक से अधिक भाषा के शब्द होते हैं और वह उन शब्दों के मायने अच्छी तरह समझते हैं। अपने जीवन में उनका सही-सही उपयोग करते हैं।

मैंने शुरुआत में शब्द लिखे,

भालू, टालू, आलू, आदि।

फिर इन्हीं शब्दों की मदद से वाक्य बनाये,

भालू ने खाया आलू। टालू ने खाया आलू आदि।

फिर एक छोटी कहानी लिखी-

एक भालू था। उसने देखा एक खेत में आलू लगे है। वह खेत कालू का था। कालू के भाई का नाम टालू था। भालू ने कालू से आलू माँगे आदि।

गणित में कक्षा-2 को साधारण जोड़ के और कक्षा 3 को रुपये-पैसे वाले जोड़ के इबारती प्रश्न बनाने सिखाये। बच्चों ने स्वयं भी सवाल बनाये।

कक्षा-4 और 5 में भिन्न के गुणा वाले सवाल हल करवाना सिखाया। जो शत प्रतिशत बच्चों को आ गया। उन्होंने खूब सवाल बनाये व हल किये।

२०.२.१४

आज हम शैक्षिक भ्रमण के लिए गाँव में गये थे। हमने पहले उन पेड़, पौधों व झाड़ियों के अवलोकन नोट किये जो हमने पिछली बार नोट किये थे। हमने इस बीच उनमें आये अन्तरों को नोट किया। साथ ही कुछ नये पौधों के बारे में भी जाना। बसन्त के आने की आहट साफ़-साफ़ नज़र आ रही है। प्रकृति में कुछ नये होने की सुगबुगाहट है। ज़्यादातर पेड़-पौधों में नयी पत्तियाँ आ रही हैं, जैसे कि फेडू, पयां, तुन, चीड़, फ्यौंली, मटर, मोलू आदि में। जबकि गोखरू, कण्डाली, खडक, भण्डर, किंगोड, टेमरू, तिमला आदि की पत्तियाँ अभी सूख ही रही हैं। श्याम सुन्दरी व तिमला पर फल भी लगे हैं। श्याम सुन्दरी की फलियाँ पक कर काली हो गयी हैं। फयौली में सुन्दर पीले फूल खिले हैं। खेतों में सरसों की पीली चादर फैली है और गेहूँ की पौध बढ़ रही है।

२.४.१४

पिछले दिनों डायरी न लिख पाने के दो मुख्य कारण थे।

1. एकल अध्यापिका होने के कारण हुई व्यस्तता और थकान।
2. भोजनमाता के पति का अनावश्यक रूप से विद्यालय की गतिविधियों में हस्तक्षेप व तोड़फोड़ करना, जिसके कारण मुझे बहुत मानसिक थकान हुई व मन खराब हुआ। बड़ी मुश्किल से उसे इलाज़ के लिए देहरादून भिजवा पाये। इस प्रकरण में पुलिस व अपने विभाग में शिकायत करने के बाद ही मामला सुलझा। जिसमें ग्राम प्रधान पुष्पा चौहान जी व प्रबन्धन समिति के अध्यक्ष बलवीर लाल जी ने बहुत सहयोग दिया।

नया सत्र शुरू हो गया है। बहुत दिनों के बाद आज स्कूल आना अच्छा लग रहा है। बच्चों को अभी सुबह के स्कूल की आदत नहीं है इसलिए वे देर से स्कूल आये।

अभी बहुत काम है। कक्षा 5 के बच्चों का पढ़ाई पूरी करके यहाँ से जाना हर बार की तरह बुरा लग रहा है। अभी 35 बच्चे ही हैं। फ़िलहाल कुछ दिनों तक पुनरावृत्ति कार्य ही चलेगा। अभी अपना सारा ध्यान कक्षा-1 के बच्चों पर दूँगी जो अभी-अभी कक्षा-2 में गये हैं। आज मैंने सारे बच्चों को किताब पढ़ाकर व शब्द लिखवाकर जाँचा कि कौन बच्चा किस स्तर पर है।

कक्षा-4 और 5 के सभी बच्चों को पढ़ना आ रहा है।

कक्षा-3 में सन्तोषी के अलावा सब बच्चे अच्छी तरह पुस्तकालय में उपलब्ध किताबें पढ़ पा रहे हैं।

कक्षा-2 के बच्चों के साथ पढ़ने पर काफ़ी काम करना है।

कक्षा-1 में अभी तक 2 ही नयी बच्चियाँ आयी हैं।

आज ये निर्णय लिया कि चाहे कुछ भी काम क्यों न हो मध्य अवकाश से पहले बच्चों को पढ़ाने के अलावा कुछ नहीं करूँगी। कोई विद्यालय में आयेगा तो उसे कहूँगी जल्दी से बात करे और जाए।

अपने काम के दौरान अब तक मिले मूल्यवान अनुभव और अतीत की यादों को एक जगह संकलित करना कई बार उपयोगी होता है। यह प्रक्रिया अपने काम का आकलन करने और आगे के काम की योजना बनाने में सहायक होती है।

पिछले 5 वर्षों से मैं कक्षा-1 के पढ़ने की शुरूआत शब्द-चित्रों से कर रही हूँ। मैंने उन्हें शुरुआत में कभी अ, आ करके नहीं पढ़ाया। उन्हें वर्णमाला के बारे में शब्दों व वाक्यों की मदद से ही बताया। अगर आज अपने इस तरीके से काम करने का मूल्यांकन करूँ तो पाती हूँ मैं न सिर्फ़ इस तरीके में पूरी तरह सफल हुई हूँ बल्कि मैंने इस तरीके को अपनाकर उन तमाम गतिविधियों को भी किया है जो परम्परागत तरीके में सम्भव ही नहीं हैं। आज मेरे विद्यालय के जो 13 बच्चे कक्षा-5 पास करके चले गये हैं, वे तब कक्षा-1 में थे जब मैं इस विद्यालय में आयी थी। मैंने इनके साथ 5 साल समग्र भाषा शिक्षण पद्धति के माध्यम से ही काम किया। इस दौरान भाषा शिक्षण पर मेरी समझ और पुख्ता हुई, जिसका उपयोग मैं अपनी कक्षाओं में करती रही हूँ।

मुझे बहुत अच्छी तरह याद है, इस स्कूल में अपना पहला दिन जब मैं कक्षा-एक में पढ़ाने गयी थी। मैंने श्यामपट पर एक छोटी-सी कविता लिखी थी और बच्चों से उस कविता पर बातचीत करने के बाद उन्हें एक-एक कर उस कविता को पढ़ने श्यामपट पर बुलाया था, तो प्रधान अध्यापिका ने कहा था, "अरे इन्हें तो अभी अ, आ भी ठीक से नहीं आता, ये बच्चे ये सब नहीं पढ़ पाएँगे।" तब मैंने उन्हें प्यार से जवाब दिया था, "कोई बात नहीं आ जाएगा।" मैंने उन्हें कहा कि, "मुझे बाकी जो भी कक्षाएँ व विषय पढ़ाने की ज़िम्मेदारी सौंपे पर कक्षा-1 में भाषा मैं ही पढ़ाना चाहूँगी।" वे खुशी से मान गयीं। आमतौर पर कोई भी कक्षा-1 के साथ काम नहीं करना चाहता क्योंकि वे नये-नये बच्चे होते हैं। इनके साथ काम करने के लिए बहुत ऊर्जा व धैर्य चाहिए होता है। खैर, मैंने अपना काम शुरू किया था बच्चों को ढेर सारी कविताएँ व कहानियाँ सुनाकर। मैं उनका एक गोला बनाती, खुद भी उनके बीच बैठती। वे पहले-पहल आश्चर्य व्यक्त करते हुए कहतीं "अरे मैडम तो बच्चों के बीच दिख ही नहीं रही हैं।" फिर मैंने शब्द चित्रों पर काम शुरू किया। जल्दी ही प्रधान अध्यापिका को विश्वास हो गया कि बच्चे सीख रहे हैं तो वे निश्चिन्त हो गयीं। अरविन्द, आईशा, दीक्षा, गजेन्द्री, प्रियंका, शुभम, विशाल, मनोज, भवानी ,प्रीति, अनंता ,शिवानी और विपिना सब कितने छोटे और प्यारे बच्चे थे। मैंने शब्द चित्रों से काम शुरू किया और किताब का भरपूर उपयोग किया। मैं हर दिन एक शब्द चित्र पर काम करती जैसे 'आम का चित्र बनाया' व 'आम लिखा'। फिर हर बच्चे से पढ़वाया व कॉपी पर लिखवाया। साथ ही बच्चों का ध्यान 'आ' और 'म' की आकृति व ध्वनि की तरफ़ भी दिलाया।

धीरे-धीरे शब्द चित्रों की संख्या बढ़ती गयी। जब बच्चे शब्द-चित्रों को पढ़ने-लिखने में अभ्यस्त हो गये तो हम शब्दों से वाक्य लिखने की ओर बढ़े। अब कक्षा में ये काम होने लगा।

मैंने शब्द चित्र लिखा 'सूरज'। शब्द-चित्र लिखने से मेरा तात्पर्य है 'चित्र बनाना' व 'उसका नाम लिखना'। फिर कक्षा में सूरज पर बातचीत शुरू करवायी फिर बच्चों के द्वारा की गयी बातचीत के आधार पर चार-पाँच वाक्य श्यामपट पर लिखे और बारी-बारी से उन्हें बच्चों को पढ़ाया।

जैसे: यह सूरज है। सूरज आसमान में चमकता है। सूरज हमें गरमी देता है। शुरू में बच्चे अनुमान लगाकर पढ़ते। फिर धीरे-धीरे मैंने उनका ध्यान शब्दों की विशिष्ट बनावट की ओर दिलाना शुरू किया। जैसे: जिस अक्षर के साथ 'ई' की मात्रा है उसकी आवाज़ में भी ई की

आवाज़ आयेगी आदि। ये गतिविधि कक्षा-2 तक चलती रहती। साथ ही किताब पर काम करना भी खूब रोमांचक रहा। दरअसल अभी तक मैं भी यही मानती रही थी कि कक्षा-1 में किताब का कोई खास महत्त्व नहीं होता। लेकिन जब मैंने कक्षा-1 के साथ पिछले स्कूल से ही किताब पर काम करना शुरू किया था, वह आश्चर्यजनक रूप से प्रभावी और सृजनात्मक माहौल बनाने वाला था। पिछले 2-3 सालों में विभिन्न किताबें पढ़ने व लोगों से बातचीत के आधार पर जो समझ भाषा शिक्षण के लिए बनी थी मैं उसका भरपूर उपयोग अपने विद्यालय में करना चाहती थी। जब मैंने कक्षा-1 के बच्चों के लिए रखी किताबें निकालीं तो वे खूब रोमांचित हुए। अभी तक उन्हें सिर्फ़ किताबें फाड़ने वाला ही समझा जाता था।

मैंने देखा प्रत्येक बच्चा अपनी किताब को लेकर उत्साहित है क्योंकि इससे पहले उसके पास उसकी कोई अपनी किताब नहीं थी। पहले दिन मैंने उनके साथ पहले पाठ "घर" पर बातचीत की। बच्चों ने बेहद खुश होकर बातें कीं। वे अपने घर, खेत, जानवरों, नदी, गधेरे आदि के बारे में बताने को बहुत उत्सुक थे। प्रत्येक बच्चा अपनी बात कहना चाहता था। बच्चे आज ही अपनी पूरी किताब देखना चाहते थे। मैंने उनको उनकी किताब का एक-एक पेज पलटकर दिखाया परन्तु दूसरे किसी चित्र या पाठ पर कोई बात नहीं की। मैं चाहती थी उनमें अपनी किताब को लेकर उत्सुकता बनी रहे। जब अगले दिन विद्यालय लगा तो उन्होंने एक साथ कहा, "वे किताब पढ़ेंगे।" मैं यह सुनकर इतनी खुश हुई कि मेरा वश चलता तो मैं आज ही उन्हें पूरी किताब पढ़ा देती। दूसरे दिन हमने कुछ और चित्रों व शब्दों पर बातचीत की। पहले के पाठ चित्रों पर आधारित हैं। वे बच्चों की कल्पनाशीलता को पर्याप्त अवसर देते हैं साथ ही उन चित्रों के साथ उनके अनुभवों को जोड़ने में मदद करते हैं। दो कविताएँ है जो बच्चों को खूब मज़ा दिलाती हैं व उनके अपने खेल और जीवन से बहुत बढ़िया ढंग से जोड़ती हैं। पढ़ने का असली मज़ा तो तब शुरू हुआ जब हम एक छोटी-सी कहानी पर पहुँचे। पाठ-7 "दो बैल", यह लगभग 100 शब्दों की कहानी है। मैंने बच्चों को गोले में बिठाया। उनके सामने उनकी किताबें खोली, जिसमें वे दो चित्र देख पा रहे थे। अब मैंने उन्हें 'दो बैलों' की कहानी हावभाव व अपनी तरफ़ से कुछ वाक्य जोड़कर खूब मज़े से सुनायी। फिर शुरू हुआ पढ़ना। पहले पढ़ी दो कविताएँ उन्होंने इस तरह नहीं पढ़ी थीं, वे श्यामपट की मदद से ज़्यादा पढ़ी थीं। मैंने किताब में उँगली लगाकर पढ़ाना शुरू किया। बच्चों से भी ऐसा करने को कहा। शुरू में उन्हें अन्दाज़ नहीं आया। कभी उँगली ज़्यादा आगे बढ़ जाती, कभी वहीं रह जाती पर मैंने किसी बच्चे से कुछ नहीं कहा और कहानी पढ़ती गयी। दूसरे दिन भी यही सब चला। आखिर तीसरे दिन हुआ चमत्कार। ज़्यादातर बच्चे समझ गये, वे जिस तरह

श्यामपट पर एक-एक शब्द पर स्केल रखकर पढ़ते है उसी तरह किताब में भी शब्दों पर उँगली रखनी है। मेरी खुशी का ठिकाना न रहा। फिर मैंने बच्चों से कहा इस कहानी में 'बैल' शब्द जहाँ-जहाँ पर आया है उस पर गोला बना दें। सभी बच्चों ने पाठ में आये बैल शब्द पर गोला बनाया। मैंने पूछा, "बताओ 'बैल' शब्द कितनी बार आया है'' तो उन्होंने गिनकर बताया, 12 बार। इसी तरह अन्य शब्दों की पहचान करवाकर उन पर गोला बनवाया फिर बच्चों से पूछा, "क्या वे इन शब्दों को श्यामपट पर लिख सकते हैं?" सभी ने कहा,"हाँ जी"। मैंने बारी-बारी से हर बच्चे को श्यामपट पर भेजा व उन्हें कहा, "देखो अपना शब्द किताब से मिलाओ क्या तुमने सही लिखा है?" जिन बच्चों ने शब्द गलत लिखा था उन्होंने उसे अपनी किताब से देखकर ठीक कर दिया। इस तरह से मैंने उन्हें 10-12 शब्द लिखवाये। यही गतिविधि अगले 2-3 दिन चलती थी।

इस पाठ में एक शब्द आता है, 'धमकाता'। बच्चों के लिए 'धमकाता' एक नया शब्द है। आज से पहले उन्होंने 'धमकाता' शब्द शायद ही सुना हो।

मैंने बच्चों को इस शब्द का अर्थ न बताकर इस शब्द पर कुछ वाक्य उन्हें सुनाये जैसे - "आज सुबह मेरी माँ ने मुझे धमकाया कि स्कूल के बाद तुरन्त घर आना वरना खूब मार पड़ेगी।" फिर उनसे पूछा, "क्या उन्हें कभी किसी ने धमकाया है?'' उन्होंने बताना शुरू किया, "हाँ जी, मेरे भइया ने मुझे धमकाया जब मैंने उसका काम नहीं किया या मेरी दादी ने, मेरे दोस्त ने मुझे धमकाया जब...आदि।"

"क्या तुमने भी कभी किसी को धमकाया है?" वे पहले शर्माये पर बाद में अपने अनुभवों के आधार पर बताया, जैसे: अरविन्द - "मैं अपने कुत्ते को धमकाता हूँ जब वो मेरे पीछे-पीछे आता है।" आदि।

मैंने उन्हें 'धमकाया' शब्द का अर्थ नहीं बताया पर मैं जान गयी थी कि वे धमकाया शब्द समझ गये हैं और आगे इससे मिलते-जुलते शब्द भी जान जाएँगे। आखिर भाषा सार्थक सन्दर्भों से ही तो सीखी जाती है। इसी पाठ के आधार पर तुकान्त शब्दों की भी प्रैक्टिस करवायी। इसी पाठ के आधार पर जब बच्चों से कुछ पतली व कुछ मोटी चीज़ों के नाम बताने को कहा तो उन्होंने बताया -

पतली चीज़ें - बकरी, अखबार, डण्डी, पेंसिल।

मोटी चीज़ें - भैंस, किताब, दरवाज़ा, डिब्बा, साइकिल, पत्थर, लौकी, ट्रक, फूल और कद्दू। साथ ही उन्होंने ये भी बता दिया कि इनमें कौन हल्का होता है कौन भारी।

इसी तरह के अभ्यास मैंने अन्य पाठों पर भी करवाये। साथ ही पाठ में आये अन्य सन्दर्भों या शैक्षिक दक्षताओं पर भी ध्यान दिया, जैसे संवाद बोलना, किसने-किससे क्या कहा? पाठ के अभ्यास कार्य हल करवाना, आदि।

इसी के साथ शुरू हुआ नाटक का पहला सफ़र जिसकी पहली शुरूआत "नन्हे बादल" पाठ से हुई और "पाँच पूँछ का चूहा" आते-आते मेरा दृढ़ विश्वास हो गया कि ये बच्चे इन छोटी-छोटी कहानियों पर नाटक कर सकते हैं।

मैं कहानी में आये पात्रों के आधार पर बच्चों को पात्र बनाती व किसने क्या कहा, क्या किया? पर बातचीत कर बच्चों से आपस में संवाद कहलवाती। शुरुआती झिझक के बाद बच्चे सहज ही संवाद बोलने लगे।

शब्दों से वाक्य बनाना: इस गतिविधि का मूल उद्देश्य था किसी भी शब्द को विस्तृत सन्दर्भों के साथ देख पाना। जब बच्चे एक ही शब्द पर अलग-अलग बातें सुन रहे थे तो वो वे उन बातों को देख या महसूस भी कर पा रहे थे। जैसे, 'उड़ना' शब्द।

मैंने एक वाक्य बनाया - 'चिड़िया आसमान में उड़ती है।' अब बच्चों ने वाक्य बनाने शुरू किये तो पक्षियों के नाम से शुरू वाक्य हवाई जहाज़, गुब्बारा, पतंग, कागज़, कपड़े, धूल-मिट्टी, कबाड़ा आदि चीज़ों पर खत्म हुए। ज़ाहिर-सी बात है जब बच्चों ने "कपड़े उड़ते हैं" कहा होगा तो कारण भी बताया होगा कि तेज़ हवा आने पर कपड़े आसमान में उड़ जाते हैं।

मैं कक्षा-1 के साथ जो काम उनकी किताब के साथ करती हूँ उसे बच्चों के कक्षा-2 में जाने पर भी जारी रखती हूँ। हर बार मैं ऐसा ही करती हूँ। दरअसल कक्षा-1 की किताब की जो गतिविधियाँ और अभ्यास-प्रश्न हैं, वे कक्षा-1 में ही ठीक तरह से पूरे नहीं हो पाते। जबकि वे इतने महत्त्वपूर्ण हैं कि उन पर काम करना बेहद ज़रूरी हो जाता है। इसलिए मैं कक्षा-1 की किताब को कक्षा-2 में भी कुछ महीने काम में लाती हूँ या बीच-बीच में इस्तेमाल करती हूँ।

पिछले पाँच वर्षों में मैंने हर बार कक्षा-1 में भाषा की किताब या समेकित किताब (भाषा, गणित, पर्यावरण) पर इसी तरह थोड़ा फेरबदल के साथ काम किया है व बेहतर परिणाम पाये हैं। मैं हर बार शब्द-चित्रों व बातचीत से अपना काम शुरू करती हुई फिर वाक्य पर जाकर

बच्चों से किताब पढ़वाती हूँ। कक्षा-1 के अन्त में बच्चों को वर्णमाला क्रमानुसार पढ़नी व लिखनी सिखायी ताकि वे वर्णमाला के उन अक्षरों को भी जान पाएँ जिनका हमारी बोलचाल व पढ़ने-लिखने में कम उपयोग होता है।

आज मेरे कक्षा-5 पास होने वाले बच्चे अपनी बात बिना किसी झिझक के कह पाते हैं। अपनी खुद की कविताएँ, कहानियाँ लिखते हैं। किसी भी कहानी पर पाँच मिनट में नाटक कर सकते हैं। अपनी ओर से नये संवाद जोड़ पाते हैं। और ये सारी गतिविधियाँ कभी-कभार नहीं बल्कि नियमित रूप से कर पा रहे हैं। तो मैं यह मानती हूँ कि इसकी वजह यह है कि उन्होंने भाषा सार्थक सन्दर्भों से सीखी है। वे शुरू में ही अक्षरों की बनावट में नहीं उलझे बल्कि अक्षरों से उनका सामना उनके देखे किसी चित्र या अनुभव से जुड़ा था। आज मैं दावे से कह सकती हूँ कि चित्रों, शब्दों व वाक्यों से भाषा शिक्षण की शुरूआत बहुत-बहुत प्रभावी है। परम्परागत भाषा शिक्षण की जगह इसमें बच्चा पहले ही दिन से नयी-नयी चीज़ें सीखने लगता है। अपनी बात कहना सीखता है। खुद को अपनी किताब व विद्यालय से जोड़कर देखने लगता है।

अलग-अलग बैठे एक दूसरे से अपनी कॉपी-पेंसिल छिपाते, एक दूसरे को पहले ही दिन से अपना प्रतिद्वन्द्वी समझने की जगह बच्चे जब अपनी बातें आपस में साझा करते हैं, गोले में शिक्षिका के पास बैठते हैं, एक दूसरे से मिलकर सीखते हैं, एक दूसरे की उँगली सही शब्द पर रखकर मुस्कराते हैं तो वे सीखने का सही अर्थ जी रहे होते हैं।

भाषा प्रत्येक विषय की नींव होती है, तो जो बच्चा भाषा में अच्छी समझ रखता है वो गणित की भाषा भी सही-सही समझ पाता है। अन्य विषयों में भी अपनी बात सही तार्किकता से रख पाता है।

कक्षा-1 में आये बच्चे अपने आसपास के बारे में अपनी एक समझ रखते हैं। ज़रूरत होती है उस समझ का पढ़ने-लिखने में उपयोग करने की। कक्षा-1 की समेकित किताब में जो चित्र या चित्र-आधारित पाठ हैं उनमें पर्यावरण के बारे में बात करने की तमाम गुंजाइश है। पहले ही पाठ में घर, खेत, पेड़, नदी, पहाड़ आदि बहुत-सी चीज़ें हैं जिन पर बच्चों से बातचीत की जा सकती है। इसी तरह इसमें बड़ा-छोटा, दूर-पास, लम्बा-ठिगना आदि सम्बोध भी हैं, जिन्हें हम गणितीय सम्बोध मानते हैं।

चूँकि कक्षा-1 की यह किताब समेकित किताब है, तो मैं जब बच्चों से बातचीत करती हूँ तो अपने प्रश्न इस तरह से बनाने की कोशिश करती हूँ कि बच्चे किसी चित्र को न सिर्फ़ उसके

नाम के साथ जानें बल्कि उसके आकार, उसके पाये जाने वाली जगह, उपयोग, देखा या नहीं देखा, अगर ऐसा न होता तो क्या होता, आदि सवालों के इर्दगिर्द भी बात कर पाएँ।

उदाहरण के लिए, साइकिल के चित्र में, मैं जानना चाहती हूँ कि इसके पहिये किस आकार के हैं? गोल उत्तर आने पर कुछ और गोलाकार चीज़ों के नाम जानने की कोशिश करती हूँ। पहिये कितने हैं? गाड़ी के कितने पहिये होते है? गाड़ी और साइकिल में क्या फ़र्क है? आदि। दरअसल मैं जिस स्कूल में पढ़ाती हूँ वह सड़क के पास का स्कूल है तो बच्चों ने ये सब चीज़ें देखी हैं। उनसे बातचीत कर पता चलता कि उन्होंने अपने लिए खुद गाड़ियाँ बनायी भी हैं। जैसे तार से, किसी पुराने पहिये से या पाइप मोड़ कर उसमें डण्डी फँसाकर आदि।

इस दौरान बच्चों का जो होमवर्क होता वो भी किसी न किसी पाठ पर आधारित होता। जैसे, ये बच्चे घर पर माँ की घर के कामों में मदद करते हैं। माँ के साथ छानी, खेतों आदि में भी जाते हैं। जब खेतों में गोबर डाला जाता है या रोपाई व अन्य कार्य होते हैं तो भी ये बच्चे यथासम्भव मदद करते हैं। तो इन्हें होम वर्क दिया- "सब बच्चे माँ से पूछकर आएँगे कि हम खेतों में गोबर क्यों डालते हैं।"

दूसरे दिन जब इस प्रश्न पर बात होती तो उससे पहले दिन हुई बातचीत और समृद्ध हो जाती। इसी प्रकार "देखकर आना तुम्हारी क्यारी में इन दिनों कौन-कौन सी सब्जियाँ लगी हैं। तुम्हारे घर के पास क्या कोई पेड़ है उसका नाम पता करके आना। तुम्हारे घर में पानी कहाँ से आता है?" आदि छोटे-छोटे प्रश्न जो बच्चों को अपने आसपास की चीज़ों और गतिविधियों का अवलोकन करने को प्रेरित करते। बच्चों की अवलोकन क्षमता हम बड़ों से बहुत सूक्ष्म व विस्तृत होती है। पहले-पहल मुझे बच्चों से इस तरह के प्रश्न घर पर पूछकर आने को कहने में संकोच हुआ। कुछ अभिभावकों ने हँसकर कहा भी "आप बच्चों से क्या-क्या पुछवाती रहती हैं?" पर धीरे- धीरे ये संकोच खत्म हो गया और अभिभावक भी सहज हो गये।

मैंने स्कूल में बहुत सारे कंकड़-पत्थर इकट्ठे कर लिये। इसके लिए एक दिन मैं, भोजनमाता व कुछ बड़े बच्चे नदी किनारे गये जो कि हमारे विद्यालय से लगभग 200 मीटर दूर है और कंकड़ पत्थर इकट्ठे कर लाये। इनका बच्चों ने खूब उपयोग किया। शुरूआत फ़र्श पर आकृति बनाने से हुई फिर पत्थरों के आकार पर बात, बड़ा पत्थर, छोटा पत्थर, एक जैसे पत्थर आदि। फिर 1 से गिनना शुरू हुआ, 5-5 पत्थरों की पंक्तियाँ बनवाना, फिर संख्या बढ़ाते जाना। अपने बनाये चित्र पर लगे कंकड़-पत्थरों को गिनना। पत्थरों की लम्बी कतार

बनाकर 7 वें, 9 वें या 15 वें पत्थर पर कागज़ की चिड़िया बिठाना आदि गतिविधियों से बच्चे संख्याओं में कम-ज़्यादा और जोड़-घटाना सीखने लगे। बच्चे खेलते-खेलते इन पत्थरों को इधर उधर फेंककर कम कर देते हैं तो हम फिर से नये साफ़ पत्थर इकट्ठे कर लाते हैं।

हम किसी एक कक्षा की गतिविधि या सीखने की दक्षता को उसी कक्षा तक सीमित नहीं कर सकते। ये दक्षताएँ तो एक-दूसरे से उत्तरोत्तर जुड़ी हुई हैं। तो जैसे-जैसे कक्षा-1 के बच्चे अगली कक्षाओं में बढ़ते गये, इनकी सीखने की क्षमता में वृद्धि होती गयी।

पिछले 5 वर्षों में हमने बहुत सारे छोटे-छोटे प्रोजैक्ट किये हैं। इनमें अपने गाँव के बारे में वहाँ हुई घटनाओं के बारे में, वहाँ की फसलें, पेड़-पौधे, खेत, गाँव के लोगों का रोज़गार का साधन, विभिन्न प्रकार के बल का घर-गाँव में प्रयोग होते देखना आदि शामिल हैं। मेरे विद्यालय के बच्चे प्रतिवर्ष अपनी खुद की पत्रिका बनाते हैं। खुद उस पत्रिका का सम्पादन करते हैं और इसमें प्रत्येक बच्चा शामिल होता है। इसी प्रकार ये बच्चे अपनी रचनाएँ बच्चों की पत्रिकाओं के लिए भी भिजवाते हैं। मेरा ये दृढ़ विश्वास है कि ये बच्चे चीज़ों व स्थितियों का अच्छी तरह अवलोकन कर पाते हैं क्योंकि इन्हें इस तरह की आदत हो गयी है। हम अपने विद्यालय की छोटी-सी क्यारी में लगे पौधों को एक साथ लगाते हैं, इन्हें बढ़ता हुआ देखते हैं, उनमें फूल खिलते देखते हैं। मुझे याद नहीं कभी किसी बच्चे ने किसी पौधे को नुकसान पहुँचाया हो या फूल तोड़ा हो। और इसका ये मतलब नहीं कि मैंने इसके लिए उन्हें डाँटा-डराया है। मुझे लगता है ये सारा मामला एक दूसरे से प्यार करने से, एक दूसरे पर विश्वास करने से जुड़ा है।

जब भी विद्यालय की बड़ी कक्षा में किसी दूसरे विद्यालय से कोई नयी बच्ची आती है तो 2-3 महीने उसके साथ काम करने के बावजूद मैं उसमें और पुराने बच्चों में साफ़ अन्तर देख पाती हूँ। फिर धीरे-धीरे उसमें भी सीखने की क्षमता में हुए परिवर्तन को महसूस करती हूँ। मेरे विद्यालय में आज तक कोई भी नयी बच्ची स्कूल आने पर रोती या डरती नहीं है। विद्यालय की उपस्थिति हमेशा 90 प्रतिशत से अधिक रहती है। व ज़्यादातर 100 प्रतिशत रहती है।

इन तमाम बातों के बावजूद मुझे लगता है कि मैं उतना समय हर कक्षा को नहीं दे पाती जितनी उनको ज़रूरत होती है। कई बार एक साथ सारी कक्षाएँ देखनी पड़ती हैं, तब प्रत्येक बच्चे पर ध्यान नहीं जाता, कई चीज़ें कम रह जाती हैं। कई बार मैं बच्चों से बातचीत को सही दिशा नहीं दे पाती, बाद में याद आता है अरे! ये बात तो रह ही गयी। मेरा सीखना भी

बच्चों के साथ-साथ हो रहा है। हम रोज़ ही कुछ नया सीख रहे होते हैं। बच्चे पाँचवीं पास होकर नये स्कूल चले जाते हैं और जैसे ही उन्हें मौका मिलता है मुझसे मिलने, किताबें लेने आ जाते हैं। स्कूल में घूमते हुए अपनी बनायी किताबें पलटते हैं, पूछताछ करते हैं। बच्चों को शरारत करते हुए देखते है तो मुझसे कहते हैं, "आप इन्हें कुछ कहती क्यूँ नहीं?" ये सब मानीटर किसी काम के नहीं हैं। कई बार इनसे कहना पड़ता है "जाओ, अपनी पढ़ाई करो।" जब इनके पेपर हो रहे होते हैं और इनकी छुट्टी जल्दी हो जाती है तो ये अपना पेपर दिखाने आ जाते हैं। पता नहीं क्यों मुझे लगता है, ये सब एक समृद्ध बातचीत का ही परिणाम है।

सीखने में शब्द-चित्रों के महत्त्व को देखते हुए मैंने अपने विद्यालय की दीवारों पर खूब सारे शब्द-चित्र व क्रिया-चित्र बनाये जिनका उपयोग बच्चे खेलते समय भी करते हैं। आज यूँ ही ये सब पुरानी बातें याद आ गयीं। बच्चों को बढ़ते-सीखते देखना सुखदायी है।

३.४.१४

आज सुबह विद्यालय पहुँची तो देखा कल से ज़्यादा बच्चे आये हैं। कक्षा-5 के बच्चों को, जो पास हो गये हैं उन्हें विद्यालय आने से मना किया था फिर भी वे विद्यालय आये थे। उनसे कारण पूछा तो उन्होंने कहा, "घर रहना अच्छा नहीं लग रहा था।" पिछले सालों की अपेक्षा इस साल कक्षा-1 के साथ उतना बेहतर काम नहीं हो पाया है जितना होना चाहिए क्योंकि पिछले अक्तूबर से तो मैं विद्यालय में अकेली हूँ। मेरा कक्षा-1 की किताबें विद्यालय में रखने का आइडिया बढ़िया काम कर रहा है क्योंकि इससे कोई भी किताब फटी नहीं है। सभी बच्चों के पास किताबें हैं।

आज पिछली बातों को याद करते हुए फिर से अपना काम शुरू किया। इन बच्चों के साथ अभी चार-छह महीने पूरा ध्यान देकर काम करूँगी ताकि कक्षा-2 का सत्र पूरा होते-होते इन्हें अच्छी तरह किताब पढ़ना आ जाए।

१२.४.१४

आज हमने तय किया सुबह पहले हिन्दी पढ़ेंगे फिर इंग्लिश और बाद में गणित।

चार समूहों में काम शुरू किया। कक्षा-5 के बच्चों ने कहा उन्होंने पिछले हफ़्ते पुस्तकालय में काम नहीं किया है, तो उन्हें आधा घण्टे के लिए पुस्तकालय में भेजा। वहाँ उन्होंने अपनी मनपसन्द किताबें पढ़ीं फिर वापस आकर 'गतिविधि चित्रों' पर कहानी लिखी। कक्षा-4 ने "कागज़ की नाव" पाठ पढ़ा और कक्षा-3 ने "सर्दी आयी" कविता। मैंने कक्षा-2 के साथ किताब पर काम किया, आज हमने "गुबरैले की जुराबें" नामक पाठ पढ़ा और उस पर बातचीत की।

बच्चों ने खुद से देखे खूब सारे कीड़े-मकोड़ों के बारे में बताया।

बाद में कक्षा-4 और 5 ने समूह बनाकर गणित में एक-दूसरे को सवाल हल करने को दिये जबकि कक्षा-2 और 3 ने श्यामपट पर दिये सवाल हल किये और बारी-बारी से मुझे कॉपी दिखाते रहे। कक्षा-1 की बच्चियाँ पत्थरों से खेलती रहीं। जो बच्चे कक्षा-1 से अभी-अभी कक्षा-2 में गये हैं, मुझे लगता है उनका ठीक से किताब न पढ़ पाना कोई समस्या नहीं है क्योंकि वे तो अभी पढ़ने-लिखने के शुरुआती दौर में हैं। पढ़ना-लिखना न आना कक्षा-3, 4 और 5 में समस्या है। कल कक्षा-3 में गये बच्चों का मूल्यांकन करूँगी कि वे कितना लिख पा रहे हैं और कहाँ-कहाँ पर गलतियाँ कर रहे हैं। ये काम तो कक्षा-4 व 5 के साथ भी करना है। समय और साधन कम हैं, काम ज़्यादा। देखती हूँ कल क्या-क्या हो पाता है। सुबह कक्षा-2 के साथ कक्षा-3 को भी जोड़ती हूँ। सब बच्चों तक मेरी पहुँच नहीं हो पाती है। उन्हें अलग से गोला बनाकर पढ़ने बिठाती हूँ तो वे इतने ज़ोर-ज़ोर से पढ़ते हैं कि बाकी बच्चे काम नहीं कर पाते हैं। प्रत्येक कक्षा को उनकी आवश्यकतानुसार काम कराना हर बार सम्भव नहीं हो पाता है। कभी-कभी ये बात मुझे बहुत परेशान कर देती है।

१५.४.१४

दो दिन की छुट्टी के बाद जब आज सुबह 7.15 पर जब विद्यालय पहुँची तब तक ज़्यादातर बच्चे आ गये थे। पता चला कि आज गाँव में थौलू यानि मेला है तो बाकी बच्चे नहीं आ रहे हैं। आज पापड़ी संग्राद है। गाँव में आज पूजा होती है। देवता भागीरथी नदी में नहाने जाते हैं। घर में मेहमान मिलने आते हैं। बड़ी रौनक रहती है। हालाँकि मेला शाम 3-4 बजे से शुरू होता है पर आइसक्रीम वाले, बुढ़िया के बाल वाले सुबह से ही गाँव में पहुँच जाते हैं जो बच्चों को घर में रोके रखने के लिए काफ़ी है।

कक्षा-5 के बच्चों के जाते ही 'नयी बाल संसद' का गठन कक्षा-3, 4 व 5 में गये बच्चों ने बैठक बुलाकर सर्वसम्मति से कर लिया था। सभी बच्चे अपनी ज़िम्मेदारी बखूबी निभा रहे हैं। सुबह की सभा में भी पहले वाली रौनक लौट रही है। गाँव के समाचार बोलना व लिखना अच्छी गतिविधि बन पड़ी है। आज नीरज ने समाचार लिखे और अर्पिता ने बोले। मैं एक नज़र श्यामपट पर देखने गयी तो देखा एक भी मात्रात्मक गलती नहीं थी। जब नीरज समाचार लिख रही थी तो रणवीर भी वहीं खड़ा था। अगर कोई अशुद्धता रही भी होगी तो दोनों ने मिलकर ठीक कर दी होगी। तमन्ना कक्षा-2 ने 'नन्हा बादल' कहानी सुनायी, बड़ा अच्छा लगा। बहुत दिनों के बाद आज वैष्णवी स्कूल आयी। उसके आते ही हलचल शुरू हो गयी, वो अपनी दादी के साथ ऋषिकेश गयी थी। वो आते ही मुझसे चिपक गयी। मुझे बहुत अच्छा लगा। मैंने उसे खूब प्यार किया।

आज 28 बच्चे ही उपस्थित थे। कक्षा-3 में कुल 4 बच्चे आये थे। आज दो समूहों में काम शुरू किया कक्षा-1, 2 और 3 का एक समूह बनाया और कक्षा-4 और 5 का दूसरा। 4 और 5 के समूह को बड़े समूह में 'राजा चाँद पर' कहानी पढ़ने को दी। इस समूह में 15-16 बच्चे थे।

किसी भी विषय में विषयवस्तु की अवधारणात्मक समझ बनाने के लिए बच्चों से पुस्तक में आये सन्दर्भों पर बातचीत ज़रूरी होती है। इस प्रक्रिया में एक से अधिक स्तर के बच्चों को शामिल किया जा सकता है और एकल अध्यापक कुछ अच्छे से शिक्षण कर सकता है। मैंने निर्धारित किया है कि आने वाले कुछ दिनों में बच्चों के साथ हुई बातचीत को विस्तार से दर्ज़ करूँगी। आज कक्षा-1, 2 और 3 के साथ बातचीत की शुरूआत "पाँच पूँछ वाला चूहा" नामक कहानी की विषयवस्तु से हुई। आज तीनों कक्षाओं में कुल 13 बच्चे उपस्थित थे।

मैं - "क्या तुमने चूहा देखा है?"

बच्चे - "हाँ जी, देखा है।"

मैं - "कहाँ देखा है?"

बच्चे - "घर में, रसोई में, खेत में, कोठार में आदि।"

सिमरन (कक्षा-2) - "मैडम जी, एक दिन हमारे बिस्तर में चूहा आया, मेरी दीदी उससे डरी फिर पापा ने उसे भगाया।"

राजकुमार (कक्षा-2) -"मेरे बिस्तर पर भी एक रात चूहा आया था।"

मैं - "तुम्हें चूहा कैसा लगता है?"

बच्चे - "गंदा लगता है जी।"

मैं - "क्यों?"

बच्चे - "क्योंकि वह कपड़े काटता है। धान खाता है, रोटी खाता है, हमको डराता है।"

तमन्ना ने बताया, "चूहे को चूहेदानी में पकड़ कर गरम पानी में डाल कर मार देना चाहिए।" परन्तु रितिका ने कहा, "नहीं चूहे को नहीं मारना चाहिए क्योंकि वो गणेश जी का चूहा होता है।"

अमित - "मैडम जी, चूहा बिल्ली से डरता है। जब घर में बिल्ली पालते हैं, तब चूहा नहीं आता है।"

मैं - "चूहा बिल्ली से क्यूँ डरता होगा?"

बच्चे - "क्योंकि बिल्ली चूहे को खा जाती है।"

मैं - "तुमने देखा है, बिल्ली को चूहा खाते हुए?"

बच्चे - "हाँ जी, टीवी में देखा, बिल्ली चूहे के पीछे भागती रहती है।"

मैं - "अच्छा बताओ बिल्ली चूहे को क्यों खाती होगी।"

बच्चे - "क्योंकि उसे भूख लगी होगी। किसी ने उसे रोटी नहीं दी होगी। उसे खाना नहीं मिला होगा। उसे चूहा खाना अच्छा लगता है।"

मैं - "हाँ, बिल्ली छोटे-छोटे जानवरों, पक्षियों को खाती है जैसे - चूहा, चिड़िया।

अच्छा आज हम एक कहानी पढ़ेंगे। उस कहानी का नाम है , "पाँच पूँछ का चूहा"

बच्चे- "पाँच पूँछ का चूहा। हा... हा.. हा..."

बच्चों ने इस कहानी को नाटक में देखा है इसलिए हा...हा...हा...खूब मज़े से बोला।

मैं - "तुमने जो चूहा देखा है उसकी कितनी पूँछ होती हैं?"

बच्चे - "एक पूँछ।"

मैं - "लेकिन इस चूहे की तो पाँच पूँछें हैं, ऐसा कैसे हुआ होगा?"

थोड़ी चुप्पी फिर **तमन्ना (कक्षा-2)** - "ऐसा नाटक दिखाने के लिए किया होगा।"

सागर (कक्षा-2) - "चूहे की नकली पूँछ लगायी होगी।"

मैं - "अच्छा तुम्हें पता है, बन्दर की भी पूँछ होती है।"

बच्चे - "हाँ जी, हाँ जी। बैल, हाथी, कुत्ते, बिल्ली, लोमड़ी, बाघ, जिराफ़, खच्चर आदि की भी होती है।"

मैं - "पता है पूँछ बड़े काम की होती है। जानवर अपनी पूँछ से क्या करते होंगे?"

शिवानी (कक्षा-3) - "जब कोई उनको परेशान करता है तो अपनी पूँछ से उसे मारते हैं।"

रितिका (कक्षा-3) - "पूँछ से गाय के बच्चे होते हैं।"

अमित (कक्षा-2) - "जब भैंस के ऊपर मक्खियाँ बैठती हैं, तब वो अपनी पूँछ से उन्हें भगाती है।"

सलोनी राणा (कक्षा-3) - "जब गाय को गरम लगता है वो अपनी पूँछ से अपने को हवा लगाती है।"

सलोनी नौटियाल (कक्षा-3) - "जब मैं घर जाती हूँ तो मेरा कुत्ता अपनी पूँछ हिलाता है।"

मैं - "तुमने बताया गाय, बैल, भैंस की पीठ पर मक्खियाँ बैठती हैं। और कौन-कौन बैठते हैं?"

बच्चे - "चिड़िया, कौवे, मच्छर, जोंक, कट्टण (पिस्सू)।"

शिवानी - "मैडम जी, चिड़िया गाय की पीठ से कट्टण खाती है।"

बच्चे - "हाँ जी, आराम से पीठ पर बैठ जाती है और खाती है।"

मैं- "इससे क्या होता होगा?"

बच्चे - "चिड़िया की भूख मिट जाती होगी वो खुश होती होगी।"

मैं - "हूँ, और गाय-बैल को कैसा लगता होगा?"

बच्चे - "वो भी खुश होती होगी।"

मैं - "क्यों?"

बच्चे - "वो सोचती होगी कितना अच्छा हुआ मेरी खुजली कम हो गयी है।"

"दोनों खुश हो जाते हैं।"

मैं - "दोनों एक दूसरे के काम आते हैं। अच्छा तुम्हें पता है जब एक जानवर दूसरे की मदद करता है और बदले में उसे भी अच्छा लगता है, मतलब दोनों एक दूसरे की मदद करते हैं तो इसको क्या कहते है?"

बच्चे - "नहीं जी।"

मैं - "इसको कहते है 'सह जीवन'

बच्चे- दो-तीन बार दोहराते हुए "सह जीवन"।

थोड़ी देर और बातचीत के बाद मैंने ''पाँच पूँछ का चूहा" पाठ पढ़ा और बच्चों ने उँगली रखकर दोहराया, फिर मैंने कक्षा-3 के बच्चों से कहा, "वे पढ़ने में कक्षा-2 के बच्चों की मदद करें, तब तक मैं 4, 5 को काम देकर आती हूँ।"

मैं देख रही थी कक्षा-5 के कुछ बच्चे पढ़ रहे थे, कुछ शरारत कर रहे थे।

मैंने कक्षा-4 और 5 को इसी कहानी से एक अनुच्छेद का श्रुतलेख बोला फिर उन्हें अपनी गलतियाँ छाँटकर लिखने को कहा और इसी कहानी से कुछ शब्द देकर उस पर कहानी लिखने को कहा। वापस आकर मैंने कक्षा-3 के बच्चों को शब्द-चित्रों से अपना मनपसन्द चित्र छाँटकर उस पर 10 वाक्य लिखने को कहा फिर कक्षा-1 को पाठ पढ़ाने लगी। अमित अभी भी सही शब्दों पर उँगली नहीं रख पा रहा है। उसे अपने सबसे पास बिठाया। आज 2 ही पेज पढ़ पाये। जब सबने पढ़ लिया तो कुछ शब्दों को ढूँढ़ कर गोला बनाने व श्यामपट पर लिखने की गतिविधि करवायी। बच्चों ने अपनी किताब में कुछ शब्द ढूँढ़ कर उन पर

गोला लगाया। उन्हें अपनी कॉपी पर और श्यामपट पर लिखा। तमन्ना व अमित पढ़ रहे हैं पर शब्द लिख नहीं पा रहे। 7-8 शब्दों की ही प्रैक्टिस हो पायी। हमें रोज़ाना इस तरह के प्रयास करने होंगे। तभी बात बनेगी। बीच-बीच में कक्षा 3 के बच्चों के लिखे वाक्य देखे कि वे कहाँ गलतियाँ कर रहे हैं।

कुछ बच्चों ने फटाफट कहानी लिख दी थी। लगता है इनके साथ पुस्तकालय में फिर से गतिविधियाँ करवानी पड़ेंगी क्योंकि जो बच्चे अभी-अभी कक्षा-4 में गये हैं उन्हें कहानी में वाक्यों को क्रम में लगाना या वाक्यों के बीच सही सम्बन्ध बनाना नहीं आ रहा है।

दुर्गेश इसी वर्ष कक्षा-4 में आया है उसने कहानी लिखने का प्रयास किया है पर वाक्यों में आपसी सम्बन्ध नहीं है। सभी वाक्य एक दूसरे से भिन्न हैं।

भोजन अवकाश का समय हो गया था, सबने खाना खाया।

इण्टरवल में जब सब बच्चे खेल रहे थे, वैष्णवी मेरे पास आकर बोली, "मैडम जी मुझे ऋषिकेश में आपकी बहुत खुद लगी" (यानी याद आयी)। उसने खूब सारी बातें कीं। उसको बातें करता देख और बच्चे भी पास आ गये। अदिति कक्षा-2 ने अपनी नयी पेंसिल, पर्स व टैटू दिखाये। वैष्णवी अदिति से बोली, "एक टैटू मैडम के हाथ में भी लगा ना।" मैंने देखा पाँच बच्चों ने अपने हाथ में टैटू लगाया था। अदिति ने मेरे हाथ में भी टैटू चिपका दिया। उसकी बुआ उसके लिए बहुत से टैटू लायी थी।

मध्यान्तर के बाद कक्षा-1, 2 को बाहर छाया में 5-5 पत्थरों की 4-4 पंक्तियाँ लगाने को कहा। कक्षा-3, 4 और 5 को गुणा के इबारती प्रश्न कराये।

छुट्टी के बाद अबला के साथ गाँव में थौलू में शामिल होने गयी। गाँव में महिलाओं ने दो-तीन छोटे-छोटे समूह बनाये हैं। जूस बनाना, सिलाई केन्द्र, मसाला पीसना, स्वेटर बुनना आदि काम इन केन्द्रों में शुरू किया है। पुष्पा दीदी भी मिलीं। वे भी इन केन्द्रों के आयोजकों में से हैं। समूह की महिलाओं से बातचीत की और इनके काम में सहायता करने की बात भी हुई।

वहाँ पर गाँव की बहुत-सी महिलाएँ थीं जिनके बच्चे हमारे विद्यालय में पढ़ते हैं। वे सभी अपने-अपने घर चलने और खाना खाने का आग्रह करने लगीं। बड़ी मुश्किल से उन्हें दूसरे दिन आऊँगी कहकर मनाया। फिर भी आईशा और दिव्या दो बच्चों के घर खाना, खाना ही

पड़ा। वापसी में मिले पापड़ी (अरबी) और प्याज के हरे पत्ते। आज कई दिनों के बाद नवीन भी मिला। शायद उसने मेले में अपना स्टॉल लगाया था। मुझे देखकर उसने अपने हाथ का सामान पीठ पीछे छिपा दिया। उसके हाथ में गुटके आदि के पाउच थे। मुझे बुरा लगा पर कुछ कह नहीं पायी। कुछ और बड़े बच्चे भी मिले। मैं 3 बजे के लगभग घर वापस आ गयी।

१६.४.१४

आज की सुबह एक सुहानी सुबह थी। मौसम में ठण्डक थी इसलिए हम सब बाहर बैठे। आज चार समूह बनाये। कक्षा-5 ने "पहली बारिश" कविता पढ़ी। कक्षा-4 ने "राजा चाँद पर" कहानी पढ़ी। कक्षा-3 को श्यामपट पर 'रिक्त स्थान भरो' में विशेषण शब्द भरने को दिये, उन्हें एक-दो उदाहरण समझाकर बाकी वाक्य खुद पूरा करने को कहा। कक्षा-1 और 2 में कल वाली कहानी "पांच पूँछ का चूहा" में काम आगे बढ़ाया। हम सब गोलाई में बैठे। पिछले दिनों अमित और सिमरन अपनी किताब घर ले गये थे और काफ़ी दिनों से कह रहे थे उनकी किताब खो गयी है। आज दोनों अपनी किताब ले आये। ठीक ही है जब किताब का ज़्यादा उपयोग नहीं हो रहा था, तो किताब भी आराम कर रही थी। आजकल रोज़ किताब पढ़ रहे हैं। किताब में काम भी कर रहे है, तो किताबें ढूँढ़ कर पढ़ी जा रही हैं। सबको बारी-बारी से एक अनुच्छेद पढ़ाया। अमित और सिमरन अन्दाजे से शब्दों पर उँगली रख रहे हैं जबकि शब्द ढूँढ़ कर गोला बनाने की गतिविधि में दोनों सही शब्द ढूँढ़ कर गोला बनाते हैं। अदिति सही शब्द पहचान रही है पर लिख नहीं पा रही है। राजकुमार बढ़िया किताब पढ़ता है। जब सभी ने एक अनुच्छेद पढ़ लिया तो मैंने श्यामपट पर एक कविता लिखी -

चूहा गया नाई के पास

उसका मन था बड़ा उदास

बच्चे उसे चिढ़ाते थे

मिलकर गाना गाते थे।

जब मैंने बच्चों से इस कविता में शब्दों की पहचान करवायी तो बच्चे 'उसका' व 'गया' शब्दों में थोड़े अटके, बाकी शब्द आसानी से पहचान गये। इन्हें बारी-बारी आकर श्यामपट पर पढ़ने को और फिर अपनी कॉपी पर लिखने को कहा। खुद कक्षा-4, 5 का काम देखने

गयी। कक्षा 5 ने कविता पढ़ ली थी और कक्षा-4 वाले बच्चे अभी बारी-बारी से पाठ पढ़ रहे थे। मैंने कक्षा-5 से उनकी पढ़ी कविता पर थोड़ी देर बातचीत की और उन्हें कविता के बारे में कुछ वाक्य लिखने को कहा। इसके बाद कक्षा-4 के साथ बैठकर पढ़ने में मदद की। कक्षा-3 ने अपने वाक्य पूरे कर लिये थे। उन्हें भी कक्षा-4 के साथ शामिल किया। फिर उन्हें एक अनुच्छेद का श्रुतलेख बोलकर अपनी गलतियाँ सुधारकर लिखने को कहा। मैं आज इस पाठ पर बच्चों से बातचीत करना चाहती थी लेकिन तब तक कक्षा-1 वाले शोर करने लगे थे। जिस बच्चे ने अपने आप एक बार श्यामपट से पढ़ लिया था वह दूसरों के साथ शरारत करने लगा था। अनीता श्यामपट के पास खड़ी चिल्ला रही थी, "मैडम जी, कोई नहीं पढ़ रहा है जी।" मुझे वापस कक्षा-1, 2 में जाना पड़ा, उन्हें बारी-बारी बुलाकर पढ़वाना पड़ा।

आज किसी भी कक्षा में बातचीत नहीं हो पायी। इतने में एक अभिभावक कक्षा-5 में एक बच्ची का एडमीशन कराने आये। एक और अभिभावक ने अपने बच्चे का कक्षा-1 में एडमीशन करवाया। वैष्णवी अपनी दादी के साथ ऋषिकेश जा रही है। उसका जाना खराब लग रहा है। वह बहुत तेज़ बच्ची है हर समय कुछ न कुछ करती रहती है।

मध्यान्तर में कक्षा-3, 4 और 5 की कॉपियाँ देखकर यह बात नोट करने की कोशिश की कि वे लिखने में कहाँ-कहाँ गलतियाँ कर रहे हैं। इस तरह मैं कक्षा में उन मात्राओं का अभ्यास करा पाऊँगी जिनमें बच्चे ज़्यादा गलतियाँ कर रहे हैं।

मध्यान्तर के बाद कक्षा-4 और 5 को गुणा के इबारती प्रश्न हल करने को दिये। हमारे विद्यालय का पुराना विद्यार्थी अवतार मुझसे मिलने आया। मैंने उससे कहा वह थोड़ी देर बच्चों को गुणा के सवालों को हल करने में मदद करे। वो कक्षा-4 और 5 में काम करने लगा। मैंने कक्षा 3 को साधारण गुणा के सवाल हल करने को दिये और खुद कक्षा-1, 2 में पत्थरों से जोड़-घटाना सिखाने लगी।

आज देखा कि जब मैं एक समूह में काम कर रही होती हूँ बाकी बच्चे शरारत करने लगते हैं। कल से बातचीत करते हुए बड़ा समूह बनाऊँगी ताकि ज़्यादा बच्चे बातचीत में शामिल हों। फिर इसी बातचीत के आधार पर बड़े बच्चों को कुछ लिखने का काम दूँगी। काश जल्दी से दूसरी शिक्षिका आ जाती। पढ़ाई कुछ और अच्छी हो पाती।

बच्चे कल गाँव में मुझे देखकर उत्साहित थे। छोटे बच्चों ने इस बारे में बातचीत की और अपनी खरीदी चूड़ी, हेयर बैण्ड, घड़ी आदि चीज़ें भी दिखायीं।

१७.४.१४

आज सुबह कक्षा-4 की सिमरन ने कहानी सुनायी। वो अपनी लिखी कहानी भूल गयी थी, फिर याद कर करके उसने पूरी कहानी सुनायी। शुरू में बच्चे अपनी लिखी कहानी को ठीक वैसा ही सुनाना चाहते हैं जैसी उन्होंने लिखी थी। बाद में धीरे-धीरे अभ्यास से अपने शब्दों में सुनाने लगते हैं। नागेश ने समाचार सुनाये और बाकी बच्चों ने कविताएँ। कक्षा 2 से अनीता ने "पाँच पूँछ का चूहा" कहानी सुनानी चाही पर वो पूरी कहानी नहीं सुना पायी। तो मैंने बच्चों को यह कहानी फिर से सुनायी। सबने खूब मज़े से कहानी सुनी। बच्चों ने "नटखट चूहा" कहानी सुननी चाही, तो उन्हें वो भी सुनायी - चूहा जो सबको डरा धमकाकर अपने लिए टोपी बनवाता है। इस तरह की कहानी में जब बार-बार दोहराने वाले वाक्य आते हैं, तो बच्चे खूब मज़े ले लेकर उन वाक्यों को दोहराते हैं। वो कहानी में उन वाक्यों का इन्तज़ार करते हैं। जैसे इस कहानी में चूहा बार-बार कहता है, "रातों रात मैं आऊँगा, अपनी सेना लाऊँगा।"

आज कक्षा-1, 2 और 3 का एक समूह बनाया, कक्षा-4 और 5 का दूसरा। कक्षा-4को कुछ शब्दों के अर्थ पढ़ने-लिखने को दिये। कक्षा 3 के बच्चों से भी अँग्रेज़ी में पाठ पढ़ने को और जहाँ जो शब्द पढ़ना नहीं आ रहा उसे मुझसे आकर पूछने को कहा। बाद में आईशा (कक्षा-5 उत्तीर्ण बच्ची) आ गयी तो मैंने उसे कक्षा-5 की मदद करने को कहा।

कक्षा-1, 2 और 3 को अपने साथ गोला बनाकर बिठाया। आज की कविता थी "हाथी दादा"। बच्चों ने यह कविता पढ़ी है। उन्हें यह कविता याद है। पहले हम सबने ये कविता दो बार पहले मज़े लेकर पढ़ी फिर इस पर बातचीत शुरू की, "सभी बच्चों ने टीवी पर हाथी देखा है। वह देखने में कैसा होता है?" पूछने पर बच्चों ने बताया, "हाथी बहुत बड़ा होता है। उसके चार पैर, दो बड़े कान एक लम्बी सूँड़ होती है। उसकी पीठ पर बैठ भी सकते हैं।"

मैं - ''हाथी अपनी सूँड़ से क्या करता होगा?''

बच्चे - "हाथी अपनी सूँड़ से, जो उसे तंग करता है, उसे पीटता है, नहाता है, अपने ऊपर पानी डालता है, खाना उठाकर खाता है, आदमी को उठाकर अपनी पीठ पर बिठाता है, खाना ढूँढ़ता है, किसी-किसी हाथी की सूँड़ के पास दो लम्बे दाँत भी होते हैं।''

मैं - "अच्छा, लम्बे दाँत खाना खाने के लिए?"

रितिका - "नहीं जी, हाथी के खाना खाने वाले दाँत दूसरे होते हैं ये तो सजाने वाले दाँत होते हैं।'' सभी बच्चे सहमत।

मैं - "हाथी क्या खाता होगा?"

तमन्ना - "कीड़े-मकोड़े खाता है जी।"

बच्चे - "नहीं जी, नहीं। हाथी घास खाता है, पत्ते खाता है। आम, केला (तमाम फलों के नाम) खाता है।"

तमन्ना - अजीब-सी नज़रों से सबको देखती हुई अपने बगल में बैठे राजकुमार से पूछकर "हाथी हरी घास खाता है जी?"

मैं - "हाँ, हाथी घास-पत्ते खाता है। हाथी शाकाहारी होता है। पता है शाकाहारी किसे कहते है।"

बच्चे - "नहीं जी।"

मैं - "जो जानवर सिर्फ़ घास पत्ते, फल खाते हैं उन्हें शाकाहारी जानवर कहते हैं।"

मैं - "कुछ जानवर घास नहीं खाते, वे क्या खाते होंगे?"

अमित - "शेर हिरन को खाता है। आदमी को भी खाता है।"

सिमरन - "भालू भी खाता है आदमी को।"

राजकुमार - "बाज मछली पकड़ता है, चूहे खाता है। चुपके-चुपके देखता रहता है फिर पकड़ता है।"

अनीता - "कुत्ता चिड़िया पकड़कर लाता है। रोटी खाता है। बिल्ली को भी खाता है।"

बच्चों ने तमाम जानवरों व उनका खाना बताया।

कीट-पतंगों के खाने की बात पर,

अदिति - "तितली फूलों का रस पीती हैं।"

साक्षी - "मक्खी खाना खाती है। मक्खी गन्दी होती है, वो पॉटी भी खाती है।"

अमित - " चिमैड़ा टोकता (काटता) है, वो फूलों का रस चूसता है।"

अदिति - “चिड़िया छोटे-छोटे कीड़े खाती है, चावल भी खाती है।”

बच्चों ने जिन-जिन पशु-पक्षी, कीड़े-मकोड़ों को कुछ खाते देखा या सुना था उन्होंने सबके बारे में बताया, सब अपनी बात बताने को उत्सुक थे।

मैं - “अच्छा तुमने बताया कुछ जानवर दूसरे जानवरों को मारकर खा जाते है, बताया ना?”

बच्चे - “हाँ जी, बाघ गाय को मारकर खा जाता है।”

मैं -“हाँ, जो जानवर दूसरे जानवर को मारकर खा जाता है उसे क्या कहते हैं?”

बच्चे - चुप्पी, “नहीं जी।”

मैं -“उसे ‘मांसाहारी‘ जानवर कहते हैं। क्या कहते हैं?’’

बच्चे - “मांसाहारी, जानवर।”

मैं - “हाथी कैसा जानवर है?”

बच्चे - चुप्पी तभी बगल की कक्षा से आवाज आयी, “शाकाहारी”।

बच्चे - “शाकाहारी जानवर।”

इन दिनों देख रही हूँ, जब मैं इन बच्चों से बातचीत कर रही होती हूँ, बगल वाले बच्चे भी सुन रहे होते हैं और मौका मिलते ही अपनी बात कहना चाहते हैं।

कविता की पहली पंक्ति में एक शब्द है ‘लबादा’ ‘हाथी दादा पहन लबादा’।

मैंने बच्चों से जानना चाहा, ये ‘लबादा’ क्या होता है?

उन्होंने बताया - “पैण्ट, शर्ट, हाफ़पैण्ट, टोपी बैल्ट आदि।” चित्र में जो हाथी दिखाया गया है उसने पैण्ट-शर्ट पहनी है।

जहाँ तक मुझे पता है लबादा शायद एक बड़ा-सा कोट होता है। एक और शब्द ‘बाज़ार’ के बारे में भी ढेर सारी बाते हुईं। बच्चों ने बताया ‘बाज़ार’ वह जगह होती है जहाँ बहुत सारी दुकानें होती हैं। उनमें सामान होता है। जहाँ से हम सामान खरीदते हैं।

चित्र में दुकान पर नाम लिखा है, ‘भालू दादा की दुकान’।

मैंने बच्चों से पूछा, “क्या उन्होंने किसी दुकान पर नाम लिखा देखा है?”

उन्होंने कहा, “हाँ, देखा है।” पर वे किसी दुकान का नाम नहीं बता पाये। मैंने उन्हें कहा, “वे घर जाते हुए दुकानों के नाम भी देखकर पढ़ें।”

“दुकानों पर नाम क्यों लिखे होते होंगे?” के जवाब में उन्होंने बताया,

रितिका -“ताकि दुकान बदल न जाए।”

शिवानी - “जिससे लोगों को पता लग जाए, यहाँ पर दुकान है। वे वहाँ सामान लेने आ जाएँ।”

सलोनी - “लोगों को पता चल जाए इस दुकान में क्या मिलता है, भालू की दुकान पर लिखा है ,यहाँ जूते मिलते हैं।”

दुकान बदल न जाए से बच्चों का मतलब था कि “ये पता चल सके कि यह दुकान किसकी है और यहाँ क्या-क्या सामान मिलता है।” अगर दुकान पर नाम नहीं लिखा होगा तो हम गलत दुकान में भी जा सकते हैं। रितिका ने जोड़ा “जैसे जब दो पैण्ट एक जैसी होती हैं तो उन पर नाम लिखते हैं कि ये किसकी पैण्ट है। (यूनिफ़ार्म से सन्दर्भ लिया)

इस बातचीत के बाद हमने दो-तीन बार कविता पढ़ी। मैंने कक्षा-3 के बच्चों से कहा, “वे इस कविता को बिना देखे लिखें।” खुद कक्षा-1, 2 को कविता पढ़वायी ,शब्दों पर गोले बनवाये और उन्हें श्यामपट पर लिखवाया। जब कक्षा-3 ने कविता लिख दी तो मैंने उन्हें एक किताब दी और उससे अपनी कविता जाँचने को कहा।

कक्षा-2 से कहा वे इस कविता को अपनी कॉपी पर लिखें।

कक्षा-4 के बच्चों ने अंग्रेज़ी में वर्ड-मीनिंग लिख दिये थे, वे उसे याद कर एक दूसरे को सुना रहे थे। कक्षा-5 के बच्चों को आईशा कुछ शब्द लिखा रही थी। मैंने कक्षा-4 को बारी-बारी से श्यामपट पर पढ़ाया।

राजेश आइ और एल में गलती कर रहा है।

अमिषा और नयी बच्ची आशना भी कुछ लैटर सही नहीं पहचान पा रही हैं।

बाद में कक्षा-3 और 5 वाले भी इसमें शामिल हो गये।

मध्यान्तर में कुछ बच्चे दूर जंगल में दिख रहे चीड़ के एक बड़े पेड़ के बारे में चर्चा कर रहे थे।

योगेश - "पेड़ के ऊपर बाघ बैठा है।" शुरू में सभी बच्चों ने यह मान लिया पर बाद में धीरे-धीरे नये विचार आने लगे। किसी ने कहा, "घास है, होतर है" (सूखी घास) किसी ने कहा, "बन्दर है।" किसी ने कहा, "अगर वह बाघ या बन्दर होता तो उतने ऊपर बैठकर गिर जाता। "रणवीर ने सबका ध्यान आकर्षित करते हुए कहा, "जंगल के कुछ और पेड़ों की ऊपरी शाखाएँ भी सूख कर ऐसी ही हो रही हैं।" मैंने भी देखा सच में ऐसा लग रहा था कि चीड़ की ऊपरी शाखा पर एक बड़ा सा बाघ ऐसे बैठा है, मानो अब शिकार पर टूट पड़ेगा। पर मैंने बच्चों से कुछ नहीं कहा। उन्हें अनुमान लगाने दिये।

शगुन व साक्षी मुझे खेलने के लिए बुलाने आये क्योंकि कोई भी उनके साथ दस-बीस खेल नहीं खेल रहा था। सब बच्चे लूडो या कैरम खेल रहे थे। खेल के मामले में प्रत्येक उम्र के बच्चे की अपनी पसन्द होती है। मुझे बहुत बार मौका मिलता है कि मैं दुबारा बचपन के खेलों को जी पाऊँ। छोटे बच्चे मुझे अपने खेलों में शामिल करना चाहते हैं। मुझे लगता है कि प्राथमिक विद्यालयों में काम कर रहे शिक्षक को बचपन से प्रेम होना चाहिए। जब भी मैं बच्चों के साथ होती हूँ तो मैं अपने इतिहास को देख पा रही होती हूँ। शायद आगे कभी बचपन पर कुछ लिख पाऊँ।

१९.४.१४

आज सुबह से ही बारिश हो रही थी। जब मैं स्कूल पहुँची तो देखा कि एक भी बच्चा स्कूल नहीं आया था। आजकल शादी के दिन हैं। इसलिए कुछ बच्चे छुट्टी लेकर शादी में गये हैं। आज कम बच्चे आये थे।

आज कक्षा-1 और 2 के लिए दो दिन पहले पढ़ी गयी कविता से मिलती-जुलती पर एक नयी कविता श्यामपट पर लिखी व कक्षा-1 से कविता में शब्द पहचान करवाये और बारी-बारी से कविता पढ़वायी।

मैंने श्यामपट पर लिखा,

हाथी दादा गये बाज़ार

बाज़ार में थी जूते की दुकान

दुकान में बहुत सारे जूते

रंग-बिरंगे प्यारे जूते

हाथी दादा के पाँव बहुत बड़े

जूते उनके पाँव में अड़े।

सिमरन और तमन्ना ने कुछ शब्द देर से पहचाने जबकि बाकी बच्चों ने पहले वाली कविता में आये शब्द तुरन्त पहचान लिये।

नये शब्द पहचान कराने के दौरान मैंने देखा जब बच्चे एक साथ समूह में शब्द पहचान करते हैं तो जल्दी व सही शब्द पहचानते हैं। जबकि बारी-बारी श्यामपट पर आकर पढ़ने में नये शब्द पहचानने में गलती करते हैं।

जब मैं कक्षा-1, 2 के साथ यह गतिविधि करवा रही थी तो मैंने कक्षा-4 और 5 के बच्चों से सिर्फ़ देखने व सुनने के लिए कहा था। ऐसा कहने के पीछे मकसद बच्चों को शब्द जोड़कर किसी एक कविता को आधार बना कर अपनी-अपनी कविता लिखने के लिए प्रेरित करना था, साथ ही यह भी कि वे कविता की संरचना की ओर आकर्षित हों। चूँकि सभी बच्चे एक ही कमरे में बैठे थे इसलिए जब मैंने कक्षा 3, 4, 5 से बातचीत शुरू की तब 1, 2वालों को भी शान्त रहकर श्यामपट पर देखने को कहा।

मैंने श्यामपट पर पानी शब्द लिखा और इसके इर्द गिर्द बातचीत शुरू की। बच्चे जो बातें बोलते रहे, उन्हें मैंने शब्दों के रूप में बोर्ड पर लिखा।

कीचड़ नहाना

भीगना पानी सिंचाई

बारिश नदी बादल

जब इन शब्दों से पूरा श्यामपट भर गया तो मैंने कक्षा-4 और 5 के बच्चों को इन शब्दों के आधार पर पानी की कहानी लिखने को कहा। जबकि कक्षा-3 के बच्चों से पुस्तकालय में जाकर पढ़ने को कहा।

इस तरह सभी बच्चे अपना-अपना काम कर रहे थे। मैं बीच-बीच में उनके बीच जाकर उनका काम देख रही थी।

जब कक्षा-1, 2 ने श्यामपट से कविता पढ़कर अपनी कॉपी में लिख ली तो उन्हें अँग्रेज़ी के कुछ शब्द श्यामपट में पढ़वाये और लिखवाये।

मध्यान्तर के बाद कक्षा-4 और 5 को भाग के इबारती प्रश्न हल करवाये और नये प्रश्न खुद बनाने व समूह में आपस में जाँचने को कहा। कक्षा-3 से गुणा के सवाल हल करवाये और उन्हें ढेर सारे सवाल श्यामपट पर करने को दिये।

इसके बाद कक्षा-1, 2 के साथ उनकी किताब पर बातचीत की। हम सब गोले में बैठे। दो-तीन दिन से लगातार बारिश हो रही है। इसलिए हमने बातचीत के लिए बरसात के चित्र का चयन किया।

मैंने बातचीत नीचे अंकित सवालों से शुरू की।

मैं - "चित्र में क्या हो रहा है? कौन-कौन भीग रहा है? कौन-कौन नहीं भीग रहा है? आदि।

बच्चों को बारिश, बारिश में भीगना, पानी में दौड़ना, खेलना बहुत अच्छा लगता है।

बच्चे एक बात से दूसरी बात जोड़ लेते हैं। किसी से बात करते हुए उन्हें जो-जो बातें याद आती जाती हैं, वे उस बात को तुरन्त बताना चाहते हैं। इससे एक अनुभव या बात से दूसरे अनुभव या बातें निकलती जुड़ती रहती हैं।

इसी चित्र में एक पेड़ की ओर चार चिड़ियाँ उड़ती हुई दिखाई दे रही हैं। ये चिड़ियाँ कहाँ जा रही होंगी के जवाब में प्रतिक्रियाएँ इस प्रकार आयीं:

अदिति - "चिड़िया अपने घोंसले में जा रही हैं।"

साक्षी - "चिड़िया का घोंसला पेड़ पर है जी।"

अमित - "घोंसले में चिड़िया के अण्डे होते हैं।"

सिमरन - "मैडम जी, मुर्गा भी अण्डे देता है।"

अमित - "मुर्गा नहीं मुर्गी अण्डे देती है।"

सिमरन - "मुर्गी तो छोटी-सी होती है।"

अमित - "छोटी नहीं होती। बड़ी होती है (हाथ से बताकर) इतनी बड़ी होती है।''

“ये बच्चा कैसे फिसला होगा?” के जवाब में,

“दौड़-दौड़ कर आ रहा होगा तब फिसला होगा।”

“इसकी चप्पल फिसल गयी होगी।”

“इसका पैर कीचड़ में पड़ा होगा।”

साक्षी - “मैडम जी, एक दिन सिमरन (दीदी) ने सैण्डल पहनी थी, वो दौड़कर आ रही थी तब फिसल गयी।”

पूनम - “मैडम जी, जब हम सुबह स्कूल आ रहे थे राजकुमार सीढ़ियों में फिसल गया था।”

“सबसे नज़दीक का घर कौन-सा है और सबसे दूर का घर कौन-सा है?”

बच्चों ने सबसे बड़े घर को सबसे नज़दीक का घर और दूर दिख रहे सबसे छोटे घर को सबसे दूर का घर बताया।

“इस चित्र में गोल चीज़ें कितनी है?”

बच्चों ने मकान की रेलिंग में बने गोले और कद्दू गिनकर बताये।

चित्र में दो बच्चे तालाब के किनारे बैठे और बच्चों को पानी में खेलते नाव चलाते देख रहे हैं।

“ये बच्चे यहाँ क्यों बैठे होंगे?”

अनिता - “क्योंकि इन्हें नाव बनानी नहीं आती होगी।”

अदिति - “इनकी नाव पानी में बह गयी होगी।”

राजकुमार - “इनको ठण्ड लग रही होगी।”

तमन्ना - “इनका मन पानी में खेलने का नहीं कर रहा होगा।”

“अगर बारिश हो रही हो और हमारे पास छाता न हो तो हम क्या करेंगे?”

बच्चे -“रेनकोट ओढेंगे।”

“जैकेट पहनेंगे।”

"स्वेटर पहनेंगे, शाल ओढ़ेंगे।"

"बोरी ओढ़ेंगे।"

"बोरी ओढ़ेंगे? कैसे।"

बच्चों ने विस्तार से बताया कि कैसे बोरी को मोड़ेंगे फिर कैसे सिर पर ओढ़ेंगे।

"नदी का पानी कैसा हो रहा है?" इस सवाल पर बच्चों ने बताया, "नदी में बहुत सारा पानी आ रहा है।"

मैं - "बहुत सारा पानी कहाँ से आ रहा होगा?"

"बारिश से।"

बच्चे - "जब बहुत सारी बारिश होती है तब पानी इकट्ठा होता है। खेत से, रास्ते से, सड़क से। इनका पानी नदी में जाता है तब नदी का पानी बढ़ जाता है।"

साक्षी - विस्तार से बताते हुए, "पहले एक बूँद गिरती है तब दूसरी बूँद तब बहुत सारी बूँदें, तब वो पास-पास होती हैं, तब वहाँ गीला हो जाता है तब खूब सारा पानी इकट्ठा हो जाता है।"

शगुन - "नदी में ज़्यादा पानी आने से बाढ़ आ जाती है।"

अमित- "तब रास्ते टूट जाते हैं।"

सिमरन - "जब नदी में बाढ़ आयी तब गंगोरी में रास्ता टूटा।"

अनिता -"मैडम जी, मेरी नानी की छान भी दब गयी बाढ़ से।"

सिमरन - "मेरी नानी के घर जाने का पुल बाढ़ में हिलता है, उसमें मुझे डर लगता है।"

"तुम्हारे घर में पानी कहाँ-कहाँ से आता है" के जवाब में बच्चों ने नल, पनियारा, नदी, हैण्ड पम्प आदि बताया।

साक्षी ने बताया, "जब बारिश होती है तब हम रींगते (गोल-गोल घूमते) हैं, तब मज़ा आता है। तब रींग (सर घूमना) भी होती है।"

तमन्ना ने बताया, "जब पानी में ज़्यादा देर रहते है तब पाँव जम जाते हैं।"

साक्षी ने बताया, "आज सुबह जब ज़ोर से बिजली चमकी तब झम हुआ (बादलों की गड़गड़ाहट की आवाज़ से हुआ कम्पन)। दरवाज़े पर खट हुआ तब ज़ोर से बारिश लगी तभी तो आयी मैं देर से।" मेरी मम्मी ने कहा, "जब बारिश रुकेगी तब जाना।"

हमने इस चित्र में पास-दूर, छोटे-बड़े, कितने लड़के, कितनी लड़कियाँ आदि पर भी बातचीत की। मैं बच्चों से थोड़ी-सी बात करके उनसे कोई प्रश्न करती हूँ और इन्तज़ार करती हूँ कि वे उस प्रश्न के इर्द गिर्द अपनी बात रखें। बच्चे अपनी बात बताना चाहते हैं पर अभी उन्हें दूसरे की बात धैर्य से सुनना नहीं आया है। उन्हें बारी-बारी से बोलने को कहो तो वे थोड़ी देर बात मानते हैं, फिर एक साथ बोलने लगते हैं।

किताब में चित्र बहुत फीके व अस्पष्ट हैं। अगर ये चित्र साफ़, सुन्दर होते तो प्रत्येक चीज़ अच्छे से दिखती। बच्चे हर वस्तु को स्पष्ट देख पाते जबकि यह चित्र सुन्दर बना है।

भाषा शिक्षण में बातचीत एक महत्त्वपूर्ण विधा है। सुनने और बोलने की दक्षता में इसका भरपूर उपयोग किया जाना चाहिए। बातचीत का अर्थ सिर्फ़ समय बिताने के लिए की जाने वाली गप्प नहीं बल्कि कक्षा में बातचीत का अर्थ है शिक्षिका द्वारा पूर्व तैयारी के साथ कुछ विशेष सन्दर्भों पर बातचीत कराना, जिससे बच्चों में सोच-विचार करने एवं पुस्तक पढ़ने के प्रति रुचि का विकास हो, साथ ही वे समूह में अपनी बात कहना और दूसरे की बात सुनना सीखें। बच्चों के साथ सार्थक बातचीत करना अभ्यास से ही आता है। बच्चों के पास ढेरों अनुभव व आसपास घटित हो रही घटनाओं की जानकारी होती है जो शिक्षिका द्वारा सहज बातचीत के माहौल में स्वयं ही साझा होती है। मुझे भी बच्चों से ठीक से बातचीत करना अभी नहीं आया है, शायद धीरे-धीरे आ जाए।

बच्चे बड़ों की तरह नहीं होते कि सोच-समझकर लाभ-हानि देखकर बात कहें। उनके लिए तो हर बात महत्त्वपूर्ण होती है। गिजुभाई ने सही ही कहा है, बच्चे वहाँ भी चमत्कार देख पाते हैं जहाँ बड़ों की नज़र भी नहीं जाती।

२०.४.१४

आज का दिन पूरी तरह से पुस्तकालय से पुस्तक पढ़ने का दिन था। जब मैंने बच्चों से पूछा, “आज क्या काम करें?” तो कक्षा-5 ने पुस्तकालय से किताबें पढ़ने की बात कही।

कक्षा-4, 5 को दो अधूरी कहानियाँ पढ़ने को दीं और उन्हें किसी एक कहानी को पूरा लिखने को कहा। कक्षा-3 को एक खुला चित्र दिया जिस पर उन्हें वाक्य लिखने थे। कक्षा-1 और 2 से गोले में बैठने व मेरे आने तक कविताएँ गाने को कहा।

पुस्तकालय से 30 किताबें छाँटी व बाहर दरी में फैला दीं। आज मौसम में ठण्डक थी तो सुबह हम बाहर ही बैठे। मैंने कक्षा 3, 4, 5 के बच्चों से कहा, “जो अपना काम पूरा कर लें वो आकर किताब ले जाएँ और एक किताब को पढ़ने के बाद दूसरी ले लें।” मैं कक्षा-1 और 2 के साथ गोल घेरे में बैठ गयी। साक्षी और अदिति के बीच में इस बात को लेकर लड़ाई हो गयी कि मेरे पास कौन बैठेगा। मैं जहाँ बैठी थी, वहाँ मेरे एक ओर शगुन तो दूसरी तरफ़ अदिति बैठी थी। अदिति की बगल में साक्षी बैठी थी। मैंने कहा, “सब बारी-बारी से मेरे पास बैठेंगे।” फिर भी साक्षी नहीं मानी, वो कुछ न कुछ करती रही। बाद में जब शगुन पानी पीने गयी तो वो जल्दी से मेरे बगल में आ गयी और मेरा हाथ पकड़कर मेरी गोद में झुक कर बैठ गयी, मैं चुप रही। शगुन आयी तो उसकी बगल में बैठ गयी। वास्तव में जो बच्चे कक्षा-1 में दाखिला लेते हैं वे शिक्षिका का स्पर्श चाहते हैं। ठीक उसी तरह जैसे वे अपनी माँ के स्पर्श को महसूस करते हैं। मुझे लगता है कि शिक्षक को बच्चों के इस भावनात्मक पक्ष की समझ होनी चाहिए।

आज हमने कविता ‘मकड़ी ककड़ी लकड़ी’ पर बातचीत की। कविता को दो-तीन बार हावभाव से गाने के बाद जब मैंने बच्चों से पूछा, “क्या उन्होंने मकड़ी देखी है? कैसी दिखती है वह?” तो जवाब आये:

- “देखी है जी।”
- “छोटी-सी होती है, कोई-कोई मकड़ी इतनी बड़ी (हाथ से बनाकर) भी होती है।”
- “मकड़ी बिछौने पर आ जाती है। तब हम बिछौना झाड़ते हैं। मकड़ी अपना जाला बनाती है तब उसमें मक्खी पकड़ती है।”

- "हमारे घर में जब मकड़ी आती है तब हम उसे झाड़ू से हटाते हैं।"
- "जब मकड़ी हमारे शरीर पर आती है तब मकड़ा (एक प्रकार का त्वचा रोग) होता है।" ककड़ी के बारे में पूछने पर,
- "ककड़ी को हम खाते हैं।"
- "ककड़ी खेत में उगती है।"
- "ककड़ी बाज़ार से भी लाते हैं।"
- "ककड़ी को नमक मिलाकर खाते हैं।"
- "ककड़ी को दाल-भात के साथ खाते हैं।"
- "जब खेत में बीज बोते हैं तब ककड़ी की बेल लगती है तब उस पर फांगे (एक प्रकार का सहारा) लगाते हैं। डंगेठे (लकड़ी का सहारा) लगाते हैं तब उस पर छोटी-छोटी ककड़ी लगती है तब उन्हें खाते हैं।"
- "बड़ी-बड़ी ककड़ियाँ भी खाते हैं।"
- "ककड़ी बन्दर भी खाता है।"

"लकड़ी क्या होती है? कहाँ से मिलती है ?" के जवाब में बच्चे कहाँ तक पहुँच गये।

- "लकड़ी जंगल से मिलती है लकड़ी को हम जलाते हैं।"
- "लकड़ी पेड़ से मिलती है।"
- "लकड़ी पेड़ को काटने से मिलती है।"
- "कल हम लकड़ी लेने जंगल गये थे हमारे नाना की चिरांत हो रही है। हम तख्ते और कड़ियाँ बना रहे हैं। हमने कल कड़ियाँ, बल्लियाँ , मोटे तख्ते भी हारीं (घर लाए)।"
- "पेड़ हवा से ढलते (गिरते) हैं तब हम उन्हें घर लिगाते (ले जाते) हैं।"
- "हाँ लकड़ी हमारे बहुत काम आती है। पता है ये मेज़ भी लकड़ी से बना है।"
- "लकड़ी से और क्या-क्या बनता है? अपने आस-पास देखकर बताओ तो।"
- बच्चों के ढेरों जवाब आये।

पेड़ की एक कविता भी तो है।

खड़े-खड़े मुस्काते पेड़, कहीं न आते-जाते पेड़।

“एक और कविता है जी।”

बच्चों ने ‘पेड़ हैं जीवन, पेड़ हैं साँसें पेड़ों की रखवाली हो ‘ गीत सुनाया।

“पेड़ हमारा दोस्त है। मैडम जी, हमें पेड़ों की रखवाली करनी चाहिए।”

“क्यों?”

रवि, “क्योंकि पेड़ हमारा जीवन है।”

“हाँ, जीवन तो है ही। साथ में पेड़ हमारा मित्र/दोस्त भी है। पेड़ हमारे लिए बहुत उपयोगी है।”

मतलब पेड़ हमारे काम आता है।

“तुम बताओगे पेड़ हमारे क्या-क्या काम आता है?”

बच्चे - “पेड़ हमें फल देता है।” (सभी फलों के नाम लेकर, जितने नाम उन्हें आते हैं)।

“घास देता है, लकड़ी देता है, छाया/हवा देता है।”

घर की बात - चिड़ियों का घोंसला, बन्दर, चींटी, कीड़े-मकोड़े पेड़ पर होते हैं/रहते हैं।

पेड़ हमें शुद्ध साफ़ हवा भी देते हैं।

बच्चे - “हाँ जी, जिससे हम साँस लेते है।” (साँस लेने का अभिनय करते हुए)

कविता में एक शब्द आया है ‘हरियाली’।

- “हरियाली क्या होती है?”
- “हरियाली पेड़ होती है”, पेड़ों के नाम लेकर।
- “अपने पीछे देखो क्या है?”
- “बहुत सारे पेड़ हैं जी।”
- “कैसे लग रहे हैं ये पेड़?”

- "हरे भरे पेड़। सुन्दर/अच्छे।"
- "कैसे रंग के दिख रहे है?"
- "हरे रंग के।"
- "हाँ, जब खूब सारे हरे रंग के पेड़, पौधे, घास दिखाई देती है ना तो उसे हरियाली कहते है।"
- "अच्छा।"

इतने में विशाल व मनीषा की माँ उनकी टीसी लेने आयीं तो मैं उठकर ऑफ़िस में आयी। जब मैं वापस आयी तब तक ये बच्चे अपनी किताब छोड़ बाहर फैली पुस्तकालय की किताबें उठा लाये और उन चित्रों पर बातें करने लगे।"

- "मैडम जी कितनी सुन्दर किताबें हैं ये।"
- "मैडम जी हम इनको पढ़ेंगे।"
- "इन किताबों को पढ़ाओ ना।"

मैंने बच्चों का आग्रह देख एक बड़ी चित्रों वाली किताब 'गजपति कुलपति' उठायी। उसके चित्र दिखाकर उन्हें उसकी कहानी सुनायी। कहानी में हाथी को बारिश में भीगने से जुकाम हो जाता है। गाँव वाले हाथी के लिए एक झोंपड़ी जैसा बड़ा घर बनाते हैं।

"अच्छा बताओ हाथी का घर कितना बड़ा होगा?"

- हाथ फैलाकर - "इतना बड़ा, घर के बराबर, स्कूल के बराबर।"

''और अगर गाँव वाले गाय के लिए घर बनाते तो?"

- "इतना बड़ा" (थोड़ा छोटा आकार दिखाते हुए)।

''अगर हम इस मेज़ (मेज दिखाते हुए) के नीचे घर बनाएँगे तो उसमें कौन-कौन रह सकता है ?"

(मेज़ के नीचे देखकर) "बन्दर, कुत्ता, बिल्ली, हाथी का बच्चा, गाय का बछड़ा।"

''अगर हम कुर्सी के नीचे घर बनाएँगे तो उनमें कौन-कौन रह सकता है?"

- "सिर्फ़ एक जानवर ही रह सकता है।"
- "छोटा कुत्ता, बिल्ली, खरगोश, चूहा, चींटी।"
- "वह उसमें हिल-डुल नहीं सकेगा।"

मैंने बच्चों को छोटे-बड़े जीव जन्तुओं के घरों के बारे में पूछा तो उन्होंने बताया कि किस जीव को कितना बड़ा घर चाहिए होगा।

इस बातचीत के बाद हम वापस अपनी पाठ्य पुस्तक की कविता पर आये। उसका एक अनुच्छेद बारी-बारी पढ़ा और कुछ शब्द पहचाने, श्यामपट पर लिखे।

बच्चों को ढेर सारी बातचीत और पढ़ने के मौके देना उनकी पढ़ने में रुचि जगाने के लिए है।

मध्यावकाश में राजकुमार और अमित आये। बोले "हमें भी लाइब्रेरी की किताब पढ़नी है।"

पढ़ने के शुरुआती दौर में आवश्यक है कि बच्चों के पढ़ने की सामग्री उनके स्तर की हो। उसके सन्दर्भ उनके अनुभवों से मिलते-जुलते हों। वे किताब के चित्रों और सामग्री से पहचान बना पाएँ। अगर शुरुआती दौर में ही बच्चों को उनके स्तर से कठिन किताबें पढ़ने को दी जाएँ तो यह उनकी किताबों में अरुचि भी पैदा कर सकता है। मैं ऐसा बिल्कुल नहीं चाहती। इसलिए कक्षा-1 और 2 के बच्चों को खुद किताबें छाँट कर देती हूँ। उनमें से वे अपनी पसन्द की किताबें ले लेते हैं। अपने लिए किताबें छाँटने के दौरान वे सारी किताबें भी अस्तव्यस्त कर देते हैं, इसलिए भी ऐसा करना ज़रूरी लगता है। जबकि ठीक से पढ़ना आने पर बच्चे अपनी पसन्द की किताबें खुद ही ढूँढ़ लेते हैं।

मैं इन दोनों को किताबें देने लगी तो बाकी सब भी आ गये।

सभी को उनके स्तर के अनुसार एक-एक किताब दी और कहा, "खुद पढ़ो।" खुद भी वहीं बैठकर पढ़ने लगी। कुछ ने अन्दाज़ लगाये, कुछ ने चित्र देखे व खेलने चले गये। अदिति अपनी किताब बाहर ले गयी, अपनी दीदी से उसे पढ़वाया फिर किताब अन्दर रख दी और पूछा, "क्या हम कल भी लाइब्रेरी की किताब पढ़ेंगे?"

"हाँ" मैंने कहा।

२२.४.१४

आज स्कूल से सुबह 11.30 पर ही निकल गयी थी। गाँधी विद्या मन्दिर से बच्चों की पाठ्य पुस्तकें ली। ज़्यादातर किताबें आ गयी हैं, इन किताबों को वहीं रखा, सुबह यहीं से स्कूल ले जाऊँगी।

२३.४.१४

आज सुबह किताबें लेने और स्कूल पहुँचने में 15 मिनट ही देरी हुई। मैंने बच्चों को बताया हुआ था कि सम्भवतः मुझे आने में देरी होगी। जब मैं स्कूल पहुँची तो सारे बच्चे अपना-अपना काम कर रहे थे। देखकर अच्छा लगा। आज आधी किताबें ही ला पायी हूँ। आधी कल लाऊँगी। राजकीय विद्यालयों में शिक्षकों को सभी काम करने पड़ते हैं। सरकार के पास संसाधन है, संकुल समन्वयक से ले कर ब्लॉक समन्वयक तक हैं, ये सभी विद्यालयों को मदद करने के लिए हैं परन्तु अधिकांश बातों को कागज़ से धरातल पर उतारना अभी बाकी है। हमारी सार्वजनिक सेवाएँ आखिर समाप्त क्यों हुई? के उत्तर तलाशने के लिए विशेष अकादमिक कौशल की आवश्यकता नहीं है।

२७.४.१४

कक्षा-1 और 2 के साथ गोला बनाकर बैठकर किताब पढ़ना बहुत कारगर सिद्ध हो रहा है। चूँकि कक्षा 2 में गये बच्चे पहले एक बार ये पूरी किताब पढ़ चुके हैं, इस पर काम कर चुके हैं। इस समय वे दूसरी बार अपनी किताब बड़े समूह में पढ़ रहे हैं तो इस बार काम पहली बार हुई प्रक्रिया से ज़्यादा समझदारी से हो रहा है। इस बार के नतीजे भी पिछली बार से बेहतर मिल पा रहे हैं।

२८.४.१४

हम हर वर्ष बाल पत्रिका बनाते हैं। इस वर्ष नयी पत्रिका बनाने से पहले मैंने सोचा क्यों न प्रत्येक माह एक दीवार-पत्रिका बनायी जाए फिर आगे चलकर इसी सामग्री से या नयी सामग्री से बाल पत्रिका बनवायी जाए। पिछले दिनों शिक्षा में गहरी समझ रखने वाले शिक्षक साथी महेश चन्द्र पुनेठा जी से इस विषय में बात हुई। उन्होंने भी सुझाया कि आपकी भाषा की कक्षा में इतना कुछ रचनात्मक होता है, आप दीवार-पत्रिका के माध्यम से अपनी कक्षा को और ज़्यादा सीखने-सिखाने वाली बनाइए। मुझे उनका सुझाव पसन्द आया। वैसे भी हम इस तरह के काम को डिस्प्ले बोर्ड के माध्यम से करते रहते हैं। इसे पत्रिका का रूप देने से यह और समृद्ध होगा। इसमें नियमितता आयेगी और इसकी रोचकता बढ़ेगी। दीवार पत्रिका बच्चों में एक नये कौशल को विकसित करेगी। ऐसा करते हुए बच्चे अपनी लिखी सामग्री को क्रमबद्ध तरीके से प्रस्तुत करना, सम्पादकीय लिखना, शीर्षक चुनना और प्रस्तुतिकरण करना अधिक बेहतर तरीके से सीखेंगे। मैं इस पत्रिका का उपयोग सभी स्तर के बच्चों के साथ पढ़ने के लिए करूँगी।

आज हमने दोनों डिस्प्ले बोर्ड बाहर निकाले और इन पर लगी सामग्री को आलोचनात्मक तरीके से देखा। हर चित्र, कविता और कहानी पर बात की फिर बच्चों से दीवार पत्रिका की बात की। इसके लिए सामग्री तैयार करने की बात हुई। तय हुआ कि अगले तीन दिन ये कार्य मध्यान्तर के बाद होगा। इसमें चित्र, कहानी, कविता शामिल होंगे। रणवीर को अप्रैल माह के समाचार लिखने की ज़िम्मेदारी दी, योगेश व नीरज को रचनाओं के संकलन और चयन की, हालाँकि मैं तो साथ रहूँगी ही। पहली दीवार-पत्रिका में अभी कक्षा-1 और 2 के बच्चे शामिल नहीं हैं पर अगली बार से ये भी साथ रहेंगे।

आजकल धूप बहुत तेज़ हो गयी है। इसलिए मध्यान्तर के बाद होने वाली ‘नाटक गतिविधि’ अच्छी तरह नहीं हो पा रही है। अन्दर कमरे में सब बच्चों के लिए जगह नहीं हो पाती है। इसलिए इन दिनों रचनात्मक कार्यों में चित्र बनाना व पुस्तकालय से किताबें पढ़ना ज़्यादा हो रहा है। इस काम में भी बच्चों की रुचि है।

१.५.१४

आज हमने अपनी दीवार-पत्रिका बनायी। उसे डिस्प्ले बोर्ड पर लगाया और सभी बच्चों ने उसमें अपनी रचनाएँ पढ़ीं ताकि कक्षा-1, 2 वाले बच्चे भी समझ पाएँ। लेकिन इसमें सारे बच्चों की रचनाएँ शामिल नहीं हो पायीं, जिसका लाभ यह हुआ कि स्तरीय रचनाओं को स्थान मिला पर बड़ा नुकसान यह हुआ कि इसमें हर बच्चा शामिल नहीं हो पाया। अगली बार इस पर ध्यान देना पड़ेगा कि किसी न किसी तरह हर बच्चा इसमें शामिल हो।

२.५.१४

नयी प्रबन्धन समिति के गठन के लिए बैठक हुई। अभिभावकों से बातचीत हुई। प्रबन्धन समिति का गठन एक अच्छा विचार है परन्तु अधिकांश अभिभावक दिहाड़ी मज़दूरी करते हैं। उन्हें प्रत्येक दिन अपने लिए काम तलाशना पड़ता है जिससे कि उनका और उनके परिवार का भरण पोषण हो पाये। ऐसे में विद्यालय सम्बन्धित मामला उनकी प्राथमिकता में पीछे छूट जाता है। सभी अभिभावक बोलते हैं, "मैडम जी आप जो करती हैं अच्छा करती हैं और उन्हें विद्यालय से कोई परेशानी नहीं है"। मुझे मालूम है कि यदि मुझे अभिभावकों से अधिक सार्थक संवाद कायम करना है तो फिर इसके लिए मुझे उनकी सुविधा अनुसार समय देना होगा।

५.५.१४

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी पहाड़ी मैना के दो जोड़ों ने स्कूल की दीवार में अपने घोंसले बनाने शुरू कर दिये हैं। यह चिड़ियाँ हमसे बिल्कुल नहीं डरती हैं। शायद इन्हें पता चल गया है कि हम इन्हें कुछ नुकसान नहीं पहुँचाएँगे। इन्हें देखना भी बच्चों का एक खेल हो गया है। इस बार हमने यह तय किया कि हम प्रतिदिन इनका अवलोकन कर इनकी गतिविधियाँ नोट करेंगे।

बच्चों की कॉपियाँ हमेशा ही एक ज़रूरी पर अपर्याप्त संसाधन है। आज बच्चों के लिए कुछ कॉपियाँ खरीद कर लायी।

१९.५.१४

आज दिन भर भीड़-भाड़ ही रही। अभिभावक आते-जाते रहे। अनुसूचित जाति के बच्चों की छात्रवृत्ति के लिए बैंक ऑफ़ बड़ौदा में खाते खोलने हैं। पहले ये खाते पोस्ट ऑफ़िस में थे जो कि सुविधाजनक व आसान था।

आज विद्यालय में नयी मैडम श्रीमती मंजू राणा जी ने कार्यभार ग्रहण किया।

मध्यान्तर में स्वास्थ्य विभाग से दो डॉक्टर आये। उन्होंने बच्चों का स्वास्थ्य परीक्षण किया।

२०.५.१४

बच्चों से बातचीत करने पर नये आयाम खुलते हैं। जिस विषय पर बात शुरू होती है उसे बच्चे बदल भी सकते हैं। दरअसल कक्षा-1 और 2 के बच्चे अवसर मिलने पर अपनी हर बात को कहना चाहते हैं। हर बच्चा चाहता है कि मैडम उस पर ज़्यादा से ज़्यादा ध्यान दें। ऐसे में शिक्षक का सजग होकर काम करना बहुत ज़रूरी है। उसे अपनी बात को इस तरह से कहने का कौशल आना चाहिए कि वह बिना बच्चों को नाराज़ किये व गुस्सा हुए विषय को सही दिशा की ओर बढ़ा पाये। मैं अपनी बातचीत में ऐसा करने का प्रयास करती हूँ। कई बार ऐसा होता है कि किसी बच्चे को उसकी बात कहने से रोकना पड़ता है और किसी दूसरे बच्चे की बात का सिरा पकड़कर विषय को आगे बढ़ाना होता है। और उस बच्चे को बाद में मौका देना होता है।

२४.५.१४

आज डीईओ यादव जी विद्यालय में आये। मैं बच्चों के साथ इस माह की दीवार-पत्रिका तैयार कर रही थी। उन्हें ये देखकर अच्छा लगा। उन्होंने बच्चों से पहाड़े व सामान्य ज्ञान के प्रश्न पूछे। हमारा सृजनात्मक कक्ष देखकर भी वे खुश हुए। उन्होंने हमारे साथ भोजन भी किया। इस बार की पत्रिका में कक्षा-4 और 5 के सभी बच्चों की रचनाओं को स्थान मिला है ताकि सभी बच्चों की रुचि पत्रिका बनाने में और उसे पढ़ने में जगे। मैंने सोचा है हर बार किसी थीम पर पत्रिका बनायी जाए। इस बार की थीम थी 'अधूरी कहानी पूरी करनी'। साथ ही माह के समाचार और कविताएँ भी पत्रिका में शामिल की गयी थीं।

कल से गर्मियों की छुट्टियाँ होने वाली हैं। आज रजिस्टर के काम व डाक आदि तैयार करने में 2 बज गये। घर पहुँचते-पहुँचते पता चला, चुनाव में ड्यूटी लगी है। सुनकर खास अच्छा नहीं लगा। सोचा था छुट्टियों में नेट की परीक्षा की अच्छे से तैयारी करूँगी

१.७.१४

छुट्टियों के बाद स्कूल का पहला दिन। बहुत दिनों बाद बच्चों से मिलना अच्छा लगा। बच्चों ने अपनी छुट्टियों के बारे में बताया।

आज सुबह 6.45 पर ही विद्यालय पहुँच गयी थी। पिछले माह 24 तारीख को पंचायत चुनाव के दिन देर होने के कारण विद्यालय वैसे ही अस्तव्यस्त बन्द कर दिया था। इसलिए सुबह जल्दी आकर बच्चों की मदद से विद्यालय ठीक किया ताकि समय पर सारे काम हो सकें।

इस बार अभी तक बारिश शुरू नहीं हुई है। इसलिए स्कूल में फूलों के पौधे झाड़ियों में नहीं बदले हैं। पिछले साल तक तो स्कूल खुलने पर घनी झाड़ियाँ मिलती थीं।

स्कूल में पहाड़ी मैना का जो घोंसला है वो भी खाली है शायद उनके बच्चे बड़े हो गये हैं और उड़ गये हैं। बच्चों के बड़े होने होकर उड़ जाने पर उनके माता-पिता भी घोंसले बदल देते हैं या वे सिर्फ़ तभी घोंसला बनाते हैं जब उन्हें अण्डे देने होते हैं, पता नहीं।

नयी मैडम श्रीमती मंजू राणा जी ने भी कार्यभार ग्रहण कर लिया है। ये भी खुशी की बात है। अब विद्यालय में हम दो शिक्षिकाएँ हो गयी हैं। अब पठन-पाठन और अच्छी तरह चलेगा।

दीदी को विद्यालय का चार्ज देना है इसलिए इससे सम्बन्धित कागज़ तैयार करने में काफ़ी समय गुज़रा।

४.७.१४

एससी बच्चों की छात्रवृत्ति के लिए खाते खुलवाने मैं स्वयं उनके अभिभावकों के साथ मई माह में बैंक गयी थी पर अभी तक इन्होंने अपनी खाता संख्या नहीं दी है। हर बात बार-बार दोहराने पर ही अभिभावक सुनते हैं। कुछ तो उसके बाद दुबारा बैंक गये भी नहीं। हो सकता है बाज़ार में कोई काम ही नहीं पड़ा होगा।

आज प्रधान अध्यापिका दीदी के साथ मिलकर तय किया कि हम किस कक्षा में कौन-कौन से विषय पढ़ाएँगे। हमने निर्धारित किया कि कक्षा 3, 4 और 5 में गणित और अंग्रेज़ी विषय का शिक्षण मैं करूँगी जबकि कक्षा-1, 2 और 3 में मैं हिन्दी पढ़ाऊँगी। भाषा और पर्यावरण अध्ययन विषयों में शिक्षण को लेकर मैंने कुछ-कुछ समझ बनाने की कोशिश की है परन्तु गणित विषय में मुझे लगता है कि मुझे थोड़ा और गहराई में सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं को देखना होगा।

१४.७.१४

कक्षा 4, 5 में गणित की कक्षा में गुणा के सवाल हल करते हुए पता चला कि राजेश, अमिषा व रितु (कक्षा 4) सवाल सही नहीं कर पा रहे हैं। या इतनी धीमी गति से सवाल हल कर रहे हैं कि पूरा समय एक ही सवाल को हल करने में चला जा रहा है। जबकि बाकी बच्चे 3 अंकों से गुणा वाले सवाल हल कर रहे हैं। कारण जानने की कोशिश की तो पता चला, रितु अंक पहचान में गलती कर रही है। जैसे 56 को 76 या 66 लिखना। जबकि राजेश और अमिषा दोनों एक-सी गलती कर रहे हैं। जैसे, इकाई-दहाई की उलटी पहचान करना। जैसे: 423 गुणा 12 में 12 गुणा3=36 में इकाई 6 को नीचे लिखने की बजाए हासिल ले लेना और हासिल या दहाई का अंक नीचे उतार लेना। ये तीनों बच्चे इन गलतियों को बार-बार करते हैं। अपने पास बिठाकर समझाकर सवाल हल करवाओ तो सवाल ठीक करेंगे पर दो-तीन सवाल हल करने पर फिर-फिर वही गलती दोहराएँगे। जबकि मैं हमेशा अंकों पर बात करते हुए उसके स्थानीय मान पर भी बात करती हूँ।

रितु को अपने पास बिठाकर संख्या चार्ट से संख्या पहचान करवायी और राजेश व अमिषा को सवाल समझाये।

अब तक के मेरे तरीके से ये तीनों स्थानीय मान की और गुणा की अवधारणा की स्थायी समझ नहीं बना पा रहे हैं। जबकि बाकी कक्षा गुणा के सवाल बहुत अच्छी तरह व जल्दी कर ले रही है।

कक्षा-1 में साक्षी व पूनम मुखर हैं। खूब बातचीत करती हैं। कक्षा 2 को पढ़ाते समय 1 के बच्चे भी साथ ही रहते हैं। कक्षा-1 में 4 बच्चे हैं - 3 बालिकाएँ 1 बालक। पूनम कॉपी में कुछ नहीं करना चाहती। चित्र बनाना हो तो दीवार-श्यामपट पर बना लेती है। आयुश अभी खाली हाथ ही आता है। कुछ देर चित्र बनाता है। कंकड़, गुटकों से खेलता है। कहानी सुनाओ तो पास बैठता है, बाकी घूमता रहता है।

कक्षा 2 में जसमिला के अलावा सारे बच्चे थोड़ा बहुत पढ़ रहे हैं। जसमिला बहुत समय लगाकर शब्द पहचानती है। पूर्व परिचित व बार-बार आये शब्दों से इनकी पहचान पुख्ता हो गयी है। खासतौर पर वे शब्द जो शब्द-चित्र से सिखाये हैं। आज जब मैंने इन्हें 15-20 शब्दों का श्रुतलेख करवाया तो ज़्यादातर बच्चों ने सारे शब्द सही लिखे। ये बच्चे सभी अक्षरों को पहचान पा रहे हैं। अब इन्हें मात्राओं की अलग पहचान के साथ कुछ दिन अभ्यास कराऊँगी ताकि ये ज़्यादा बड़े व अलग-अलग शब्द आसानी से पहचान सकें और उन्हें लिख भी सकें।

जैसे: क + ई = की = सबकी

री, मी, टी पी, खी, गी आदि।

आज कक्षा 2 और 3 के साथ एक छोटी कहानी "चुनमुन चूहा" पर काम किया।

मुझे चार-पाँच मुख्य अवधारणाओं पर काम करना है।

भाषा- पढ़ना, लिखना, अपनी बात कह पाना।

गणित- स्तर के अनुसार बहुत-सी चीज़ें है पर मुख्य हैं - अंक पहचान व जोड़, घटाना, गुणा, भाग।

इंग्लिश- पढ़ना, लिखना।

पुस्तकालय - बहुत सारी किताबें पढ़ना, चर्चा, बातचीत, किताबों का पाठ्य पुस्तक के साथ उपयोग।

१५.७.१४

मध्यान्तर के बाद कक्षा-1, 2 और 3 के साथ हिन्दी में काम किया। सारे बच्चों को एक बड़े गोले में बिठाया और पुस्तकालय से फ़्लिप चार्ट वाली बड़ी पुस्तिका के चित्रों से बातचीत शुरू कर श्यामपट पर शब्द और वाक्यों को लिखवाया। आज का विषय 'पानी' था। बच्चों के मन में पिछली बरसातों का डर बना हुआ है। उन्हें बारिश से जो पहला शब्द याद आता है वह है बाढ़। चित्रों के माध्यम से बच्चों में समझ का स्थायी विकास होता है। खासतौर से वे चित्र जो उनकी दैनिक दिनचर्या से जुड़े होते हैं। जैसे एक चित्र को देखते ही साक्षी (कक्षा-1) ने बताया, पीने का पानी निकालते समय डण्डी वाला गिलास प्रयोग करना चाहिए। मैंने पूछा, "तुम्हारे घर में डण्डी वाला गिलास है?"

"नहीं।"

"तो तुम पानी कैसे निकालती हो?"

वो बोली, "सिमरन दीदी या माँ या पापा गागर टेढ़ा करके पानी निकालते हैं। गागर में गिलास नहीं डुबाते। जब सलोनी गागर में गिलास डुबाती है तो मैं उसे बताती हूँ ऐसा नहीं करते। पानी गन्दा हो जाता है।" साक्षी ने साफ़-साफ़ सफ़ाई से जुड़ी और भी बहुत-सी सैद्धान्तिक बातें बतायीं। जैसे नाखून काटना, खाना ढककर रखना, रोज़ नहाना, बाल बनाना, खाना खाने से पहले हाथ साबुन से धोना आदि। इस समूह में बातचीत का एक और सुखद परिणाम है। पिछले दिनों जब मैं अकेली थी तो सभी बच्चों को एक साथ बिठाकर विभिन्न विषयों पर बातचीत करती थी। जिसमें पानी, स्वच्छता, भोजन आदि विषय शामिल होते थे, जिस बातचीत को छोटे बच्चे सिर्फ़ सुनते थे। प्रधानाध्यापिका ने पूरी मेहनत से अपना काम शुरू कर दिया है पर उनका तरीका बच्चों को सब कुछ बता देने वाला है। बच्चे खुद पढ़ नहीं रहे केवल सुन रहे हैं। थोड़ा समय गुज़र जाने के बाद मैं प्रधानाध्यापिका से बात करूँगी। पुस्तकालय से जो पुस्तकें कल बच्चों को घर के लिए दी थीं उन्हें रितिका के अलावा सबने खुद पढ़ा है या अपने भाई-बहन की मदद से पढ़ा है। रितिका ने बताया, उसकी किताब फट गयी थी इसलिए उसने उसे बन्द कर दिया और वापस ले आयी ताकि मैं उसे चिपका दूँ। मैंने उससे ऑफ़िस से फेवीकोल मँगाया व खुद जल्दी से किताब चिपकायी और वापस दे दी ताकि वो घर पर उसे पढ़ सके।

७.८.१४

कक्षा-4 और 5 के साथ दीवार पत्रिका पर काम किया।

इस बार बच्चे पिछली बार से ज़्यादा सक्रिय दिखे। उन्होंने सम्पादकीय लिखा और सम्पादन का काम करते हुए एक-दूसरे की रचनाओं में सुधार भी किया। मैंने देखा बच्चे अपनी पिछली रचनाओं के स्तर में आगे बढ़े हैं। इस बार की पत्रिका में कक्षा-4 और 5 के प्रत्येक बच्चे की रचना को स्थान मिला है। इसलिए इस बार पत्रिका तीन चार्ट पेपर में बनी है। योगेश, अंशिका, सिमरन, अर्पिता, नीरज, दीपिका ने बहुत ही सुन्दर व एकदम नयी रचनाएँ लिखी हैं।

जब हमने दीवार-पत्रिका तैयार कर ली तो इसे कक्षा-1, 2, 3 के बच्चों के साथ साझा किया। कक्षा-4 और 5 के सभी बच्चों ने बारी-बारी अपनी रचनाएँ पढ़कर सुनायीं। इसके बाद मैंने इसे बाहर दीवार पर लगा लिया जिससे छोटे बच्चे भी पास जाकर पढ़ पाएँ। इन बच्चों में पढ़ने को लेकर खूब उत्सुकता है। ये व्यवस्थित तरीके से पढ़ें इसके लिए इनके आसपास बने रहना पड़ता है वरना छीना झपटी होने का डर रहता है।

पिछले दिनों नयी ग्राम प्रधान जी का पत्र विद्यालय में आया था। उनका विचार था कि इस बार 15 अगस्त को ग्राम सभा के सभी विद्यालयों के बच्चे, शिक्षिका एवं ग्रामवासी एक साथ मिलकर स्वतन्त्रता दिवस मनाएँगे। विचार अच्छा था, उन्होंने बताया बहुत पहले भी उनके गाँव में ऐसा होता था।

हमारे विद्यालय के बच्चे पहली बार ग्राम सभा में स्कूल की ओर से किसी कार्यक्रम में भागीदारी कर रहे थे। वैसे भी बच्चे रामलीला या किसी संस्था द्वारा आयोजित कार्यक्रमों में भाग लेते रहते हैं और स्कूल में किये गये नृत्यों व गीतों को गाते-दिखाते रहते हैं। इसलिए मैंने बच्चों के साथ मिलकर तय किया कि हमें क्या-क्या करना चाहिए। मैं चाहती हूँ हमारे सभी बच्चे किसी न किसी गतिविधि में भाग लें। हमने मुख्य चार गतिविधियाँ चुनी और जिम्मेदारियाँ तय कीं।

- भाषण - कु. नीरज, योगेश, विकास
- गढ़वाली नृत्य - कक्षा 3

- समूह गीत - कक्षा-4 और 5
- बाल कविताओं को अभिनय के साथ गाना - कक्षा-1 और 2

आज से ही बच्चों की तैयारी शुरू करवायी। तय हुआ कि रोज़ 1 घण्टा तैयारी होगी। मेरे सभी बच्चों में अपनी बात को आत्मविश्वास से कहने का साहस है इसलिए मैं आश्वस्त हूँ कि वे अच्छी तरह परफ़ॉर्म करेंगे। कार्यक्रम का संचालन भी वे खुद करेंगे।

नीरज, योगेश और विकास स्वेच्छा से भाषण सुनाने को तैयार हुए। मैंने उनसे कहा, "वे घर से भाषण लिखकर लाएँ। कल यहाँ सुनाएँ।" मैं चाहती हूँ कि बच्चे पहले खुद कुछ पंक्तियाँ लिख लें फिर उनमें और बातें जोड़ूँगी।

९.८.१४

आज सुबह की सभा में हमने समूह गीत का अभिनय सहित अभ्यास किया।

मध्यान्तर के बाद सभी समूहों ने अलग-अलग तैयारी की। तीनों बच्चों के लिखे भाषण देखे। तीनों बच्चों ने 7-8 पंक्तियाँ लिखी थीं जबकि बोलते हुए वे खूब सारी बातें कह रहे थे। खैर, चूँकि इस बार श्रोता बाहरी लोग भी थे इसलिए भाषण में स्वतन्त्र अभिव्यक्ति, रचनात्मकता के साथ-साथ कुछ मानक तरीके से और जानकारियों, तथ्यों पर भी बोलना ज़रूरी लगा। इसलिए मैंने पहले सभी बच्चों के साथ स्वतन्त्रता संग्राम व आज़ादी पर बातचीत की, फिर तीनों भाषणों को लिखा साथ ही यह भी बताया कि हमें भाषण पढ़कर नहीं सुनाना है। इसलिए इन्हें पढ़कर समझ लें फिर अपने मन से बोलें।

हम जिन कार्यक्रमों को करने वाले हैं वे रोज़ ही हमारे विद्यालय में किसी न किसी रूप में होते रहते हैं, इसलिए बच्चों के लिए यह नयी बात नहीं है।

१५.८.१४

कितने आज़ाद हैं हम?

कितने होने बाकी हैं?

आज रात खूब तेज़ बारिश हुई थी इसलिए रास्ता बहुत खराब था। अब तक का सबसे खराब रास्ता। गंगोरी से पैदल आना हुआ। किसी तरह गिरते-पड़ते स्कूल पहुँचे। अभी भी बारिश हो रही थी। सभी बच्चे पहुँचे हुए थे। जब बारिश थोड़ी कम हुई, हमने प्रभात फेरी निकाली। स्कूल पहुंचते-पहुँचते बारिश फिर से तेज़ हो गयी इसलिए बच्चों को अन्दर ही बिठाया। झण्डा-रोहण के बाद गाँव में जाना था। थोड़ी देर बारिश रुकने का इन्तज़ार किया फिर बारिश में ही चल दिये। गाँव पहुँचे तो पता चला गाँव वाले हमारा इन्तज़ार ही कर रहे हैं। गाँव के थाती खल्याड (सामूहिक पूजा चौक) के चारों ओर लोगों के घर हैं इसलिए इन घरों के बरामदों, छज्जों में लोग बैठे थे। थोड़ी देर बाद सरस्वती शिशु मन्दिर के बच्चे भी आ गये। बारिश के कारण या अन्य कारणों से दूसरे स्कूलों के बच्चे नहीं आये।

हमारे बच्चों ने अपने कार्यक्रम प्रस्तुत किये। खूब तालियाँ बजी। बच्चों ने पूरे आत्मविश्वास और जोश से अपने कार्यक्रम पेश किये। मैंने भी अपनी बात रखी। प्रधान जी व अन्य वक्ताओं ने भी अपनी-अपनी बात कही। मिष्ठान वितरण के बाद कुछ लोग अपने घर चले गये जबकि कुछ ने सामूहिक पारंपरिक नृत्य रासौ में भाग लिया। मैंने भी नृत्य में भाग लिया। अब तक बारिश रुक गयी थी। दोपहर 1 बजे के लगभग हम नाश्ता करके गाँव से चले। गाड़ी थी नहीं तो आज तेखला तक लगभग 4 किमी पैदल ही आना हुआ।

१६.८.१४

दोनों भोजन माताओं और बच्चों ने कल गाँव में हुई बातचीत के बारे में बताया। सुनकर मन खूब खुश हुआ। सभी लोग हमारे बच्चों की तारीफ़ कर रहे थे।

5 सितम्बर को शिक्षक दिवस के अवसर पर स्कूल में 'बाल शोध मेला' है और प्रबन्धन समिति की महासभा भी है।

मैंने पिछले दिनों बच्चों से 'बाल शोध मेला' पर बात की थी। 'हमारे आस-पास' की पुस्तक में इन दिनों जो पाठ चल रहा है उसे आधार बनाते हुए विषय का चुनाव किया।

पिछले एक साल हमने अलग अलग-अलग ऋतुओं में गाँव और उसके आस-पास भ्रमण करके लगभग 45-46 पौधों, झाड़ियों, पेड़ों, फसलों का अवलोकन कर इनके बारे में विस्तृत जानकारी एकत्र की है, जिसमें कक्षा-4 और 5 के बच्चे शामिल थे। कक्षा 5 के बच्चे दूसरे स्कूल चले गये और कक्षा-4 के बच्चे कक्षा 5 में आ गये हैं। ये अच्छा मौका है कि वे अपने इस शोध कार्य को अपने अन्य साथियों व अपने अभिभावकों के सामने रखें। पिछले 3 सालों से मैं निरन्तर अपने बच्चों को शैक्षिक भ्रमण पर ले जाती रही हूँ जिसके लिए विद्यालय विकास योजना बनाते समय ही अभिभावकों और प्रबन्धन समिति से भी अनुमति ले ली जाती है। अभिभावक मुझे और बच्चों को समय-समय पर खेतों या अन्य स्थानों पर किसी पेड़-पौधे का अवलोकन करते व कॉपी पर नोट्स लेते देखते रहते हैं। इसलिए ये एक महत्त्वपूर्ण अवसर है कि हम अपनी बात उन तक पहुँचा सकें। ये ही सब सोचकर मैंने अपने बाल शोध मेले का विषय पेड़-पौधे, भोजन और पेड़ पौधे व जीव जन्तुओं का आपसी सम्बन्ध, खाद्य श्रृंखला से लेकर गाँव में पाये जाने वाले पशुओं के बारे में सर्वे करना आदि के आसपास रखा।

हर बार की तरह शुरू में सब खिचड़ी लग रहा है। शुरुआत करने के लिए बच्चों से बातचीत की। वे पेड़-पौधे के बारे में क्या-क्या जानते हैं?

बच्चों ने अपने पूर्व ज्ञान और अनुभवों के आधार पर ढेरों जानकारियाँ दीं।

जैसे - पेड़-पौधे हमें शुद्ध हवा आक्सीजन देते हैं। पेड़ पौधों से हमें भोजन मिलता है। ज़्यादातर जवाब या बातचीत पेड़-पौधे के उपयोग के बारे में थी।

इसी को आधार बनाकर मैंने कुछ नये प्रश्न बनाये और उन्हें घर से करके लाने को कहा। मेरा मकसद उन्हें विषय के लिए उत्सुक करना था। जैसे:

1. अगर हमारे आस-पास पेड़-पौधे न हों तो क्या होगा?
2. अपने घर के आस-पास उगे पेड़ पौधों की सूची तैयार करना।

बातचीत का अगला विषय 'हमारा भोजन' था। हम क्या खाते हैं? के जवाब में जो नाम आये मैं उन्हें श्यामपट पर लिखती गयी।

मैंने वे सारे नाम दो अलग-अलग वर्गों में लिखे।

जब खूब सारे नामों से श्यामपट भर गया तो मैंने पहले लिखे नामों पर बातचीत की।

हमें भात (चावल) किससे मिलता है?

बच्चे - खेतों से, पौधे से, दुकान से।

मैंने खेत और दुकान शब्द पर ध्यान नहीं दिया व पौधा शब्द लिखा। बच्चे समझ गये मैं क्या जानना चाहती हूँ। उन्होंने फटाफट कहा हमें अपने खाने की कुछ चीज़ें पेड़-पौधों से मिलती हैं। कुछ पशुओं (जीव-जन्तुओं) से।

इस प्रकार हमारे पास हमारे भोजन के दो स्रोत मौजूद थे। हम पहले पेड़-पौधों पर बातचीत कर चुके थे। इसलिए जीव-जन्तुओं पर बातचीत आगे बढ़ायी। ऐसे जीव-जन्तु जिन्हें हम अपने भोजन के लिए पालते हैं।

बहुत से बच्चों के घरों में पालतू पशु हैं, इन पर बातचीत करते हुए कई सवाल आये।

1. हम अपने पशुओं को गोशाला में क्यों रखते हैं?
2. हम अपने पशुओं को छानियों में क्यों ले जाते हैं?

पहले प्रश्न पर कक्षा में चर्चा हुई जिसके जवाब इस प्रकार आये:

- हम अपने पशुओं को गोशाला में इसलिए रखते हैं ताकि घर में गन्दगी न हो।
- मक्खी, मच्छर न हों।
- गोशाला में उनके घास-पराल रखने के लिए जगह होती है, घर में इतनी जगह नहीं होती।
- पशुओं का गोबर गोशाला में जमा करते हैं, जिसे बाद में खेतों में डालते हैं। गोशाला से खेत नजदीक पड़ते हैं इसलिए गाय-भैंस, बैलों को वहाँ रखते हैं।
- गोशाला में ही डॉक्टर आता है। (लोन द्वारा ली गयी गायों को देखने)
- सबके पशु एक साथ रहते हैं। इसलिए पशु हिलमिल कर रहते हैं। लोग एक-दूसरे के पशुओं के बारे में जानते हैं।
- दूध निकालने के बहाने लोग सुबह-सुबह घूम आते हैं। जंगल से घास लाते समय गोशाला नज़दीक पड़ती है।

- खेतों से पराल भी गोशाला में पहुँचाना सरल होता है। आपस में मुलाकात होती है। आदि
- इस गाँव में ज़्यादातर लोग अपने पशुओं को गणेश गंगा (छोटी नदी) के पार बनी गोशालाओं में रखते हैं। जो गाँव के बाहर एक साथ बनी हैं।

मुझे अपने बचपन की याद आयी, जब मैं गर्मी की छुट्टियों में नानी के घर जाती थी तो शाम को नानी के साथ दूध लेने गोशाला जाती थी। मेरी नानी की गोशाला भी घर से काफ़ी दूर थी। यह दुमंज़िला थी। नीचे की मंज़िल में पशु रहते थे ऊपर उनके लिए घास रखा रहता था।

वहाँ ज़्यादातर लोगों की गोशालाएँ दो मंज़िला ही थीं। जबकि मेरी दादी के गाँव में जिस मकान में खुद रहते थे उसी के पास गोशालाएँ होती थीं। कई बार लोग नीचे की मंज़िल में गाय, भैंस रखते थे। ऊपर की मंज़िल में खुद रहते थे। ऐसा अकसर ठण्डे इलाकों में किया जाता है क्योंकि नीचे की मंजिल में पशुओं के रहने से वहाँ गर्मी बनी रहती है पर इससे गन्दगी तो होती ही है।

१९.८.१४

प्रार्थना सभा के बाद बच्चों को काम दिया और दीदी से बाल शोध मेले पर बात की। मैंने उनसे कहा, “हम सारे बच्चों को दो-तीन समूहों में बाँट देते हैं।”

पहला समूह कक्षा-4 और 5 का बनाया जिस पर मैं पहले ही काम शुरू कर चुकी थी। दूसरा समूह कक्षा 3 और 2 का।

तीसरा समूह कक्षा-1 का बनाया।

कक्षा 2 और 3 के लिए बातचीत के बाद विषय तय हुआ ‘घर व मेरा परिवार’ और ‘सजीव व निर्जीव’।

जबकि कक्षा-1 उस दिन पत्थर, कंकड़ और गुटकों से विभिन्न आकृतियाँ बनाएगा और चित्र बनाएगा। मैंने दीदी से कहा, “वे कक्षा-3 के साथ ‘घर व मेरा परिवार’ पाठ पर काम शुरू करें फिर आगे की योजना बनाते हैं।

आज जैसे ही मैं कक्षा-4 और 5 में पहुँची सभी बच्चों ने एक सुर में कहा, "वे अपने प्रश्नों के उत्तर घर से पूछकर लाये हैं।" मैंने बच्चों से कहा हम अपने काम को दो भागों में बाँटकर करेंगे। गणित, अँग्रेज़ी में काम और बाल शोध मेले की तैयारी। सुबह गणित और अँग्रेज़ी में काम करेंगे और मध्यान्तर के बाद शोध कार्य। बच्चे तैयार हो गये। दरअसल मैं नहीं चाहती एक भी दिन बच्चों का गणित का काम रुके। आजकल बच्चे अच्छा काम कर रहे हैं। अगर किसी कारण इस में बाधा हुई तो हम फिर से पीछे हो जाएँगे।

गणित में काम करते हुए पता चला नियमित प्रयास किस प्रकार सफल होते है। मैंने मान लिया है कुछ बच्चे धीरे-धीरे सीखेंगे इसलिए मैं उनको अपने पास बिठाकर काम कराती हूँ पर जब कोई नया सम्बोध शुरू करती हूँ तो सभी को साथ में बताती हूँ।

बच्चों को भी पता चल रहा होता है कि उन्हें वह सम्बोध आ रहा है। वे नया सीख रहे हैं जिसकी उन्हें खुशी होती हैं। वे लगातार काम करना चाहते हैं। कक्षा-4 के बच्चे गुणा, भाग अच्छी तरह सीख गये हैं और कक्षा 5 भी 2, 3, 4, 5 आदि संख्याओं से विभाज्यता के नियम जानने के साथ-साथ गुणा और भाग के बड़े-बड़े इबारती प्रश्न भी हल कर रहे हैं। इसलिए आज मैंने 'अपवर्तक' सम्बोध शुरू किया। एक बार समझाने पर ही बच्चे समझ गये। उन्होंने बहुत-सी संख्याओं के अपवर्तक ज्ञात किये।

राजेश ने पूरे अपवर्तक नहीं निकाले। अमिषा को भी समझने में परेशानी हो रही है। इसलिए दोनों को पास बिठाकर पहाड़े पढ़वाकर अपवर्तक लिखाये। जबकि रितु धीरे-धीरे लेकिन समझ-समझ कर काम कर रही है।

मध्यान्तर के बाद कुछ देर कक्षा-1, 2, 3 में रही। दीदी के साथ 'घर' सम्बोध पर बातचीत की। उन बिन्दुओं को सूचीबद्ध किया जिन पर बच्चे घर में बातचीत कर सकते हैं और जिनके बारे में दूसरों को बता सकते हैं।

कक्षा-4 और 5 ने घर पर बातचीत कर जिन सवालों के उत्तर लिखे थे उन पर कक्षा में चर्चा की। बच्चों की बातचीत से पता चला, गाँव वाले बरसात के दिनों में अपने पशुओं को गाँव से दूर छानियों में ले जाते हैं क्योंकि वहाँ पर्याप्त चारा रहता है। वहाँ पशुओं का गोबर उस जगह से नज़दीक खेतों में डालने के काम आता है। बरसात के दिनों में बहू-बेटियों को रास्ता खराब होने के कारण घर तक घास पहुँचाने में दिक्कत होती है। इसलिए भी पशुओं को छानियों में रखा जाता है।

बच्चों ने अपने घर के आस-पास के पेड़-पौधों के भी बहुत सारे नाम लिखे थे। मैंने उनसे कहा, "क्या वे इन्हें पौधों व पेड़ों में अलग-अलग बाँट सकते हैं?"

उन्होंने 5 मिनट में अपनी-अपनी कॉपी में उनका वर्गीकरण कर दिया। दरअसल शोध कार्य कक्षा शिक्षण से इतर गतिविधि नहीं है। किसी सम्बोध को भलीभाँति जानना, उसके बारे में विभिन्न स्रोतों से जानकारियाँ एकत्र करना ही शोध होता है।

आज मैंने बच्चों के साथ कक्षा-4 के 'खाना खज़ाना' पाठ पर बातचीत की और यह जानने की कोशिश की कि बच्चे अपने भोजन के बारे में क्या-क्या बातें जानते हैं। ये भोजन किन चीज़ों से बनता है? साथ ही पशु-पक्षियों के भोजन के बारे में जानते हुए इस प्रश्न तक पहुँची कि हम पेड़-पौधों के कौन-कौन से भागों को अपने भोजन के रूप में लेते हैं? जैसे, उन पौधों का नाम जिनकी हम पत्तियाँ खाते हैं? आदि।

आज मैंने उन्हें घर से पूछकर लाने के लिए कुछ इसी तरह के ही प्रश्न दिये।

२०.८.१४

आज समाचार बोलते हुए प्रेरणा ने बताया कि, "कल गाँव की महिलाएँ बाड़ तोड़ने गयी थीं जिससे कि उनको घास मिल सके।" एक-दो दिन से बच्चे समाचार लिखते हुए इस बात को लिख रहे हैं, तो आज सुबह की सभा में बातचीत का ये ही विषय रहा।

दरअसल गाँव के जंगल में कुछ लोग जंगल का कुछ हिस्सा घेरकर बाड़ लगाकर अपने व्यक्तिगत बगीचे या घास लगाते हैं। अन्य लोग इसमें नहीं जा सकते। इस कारण गाँव की बहू-बेटियों को घास लाने में परेशानी होती है। धीरे-धीरे एक दूसरे की देखा-देखी अन्य लोग भी ऐसा करने लगते हैं। इसलिए आजकल गाँव की महिलाएँ, प्रधान और वन विभाग के कर्मचारी के साथ जंगल जा रही हैं और इस तरह के अतिक्रमण को हटा रही हैं।

आज बच्चों के साथ 'अतिक्रमण' शब्द पर बातचीत की। बच्चों ने यह शब्द सुना है पर इसका सही अर्थ पूरी बातचीत के सन्दर्भ में ही समझ सके।

कहाँ तो मैं चाहती थी प्रार्थना सभा जल्दी पूरी हो और कहाँ ये और ज़्यादा लम्बी खिंच गयी क्योंकि इसी बीच भोजनमाता भी विद्यालय पहुँच गयी और हमारी बातचीत का हिस्सा बनकर अपने जंगल जाने व बाड़ तोड़ने आदि की बातें बताने लगी।

अन्त में सभी बच्चे इस बात से सहमत थे कि जंगल सबका है। सबको इससे घास-लकड़ी लेने का अधिकार है और जंगल की सुरक्षा भी सबकी ज़िम्मेदारी है ताकि जंगल में घास और लकड़ी बनी रहे, खत्म न हो।

इसी बातचीत से यह प्रश्न भी उभरा कि हमें जंगल से क्या-क्या चीज़ें मिलती हैं? आखिर जंगल का एक मुख्य हिस्सा पेड़-पौधे ही तो हैं।

बच्चे बताने लगे कि उन्हें जंगल से क्या-क्या चीज़ें मिलती हैं।

इन्हीं सब बातों में 8 बज गये। दीदी ने हाज़िरी ली और हम अपनी-अपनी कक्षाओं में चले गये।

मध्यान्तर से पहले कक्षा-4 और 5 को अपवर्तक, समापवर्तक व महत्तम समापवर्तक के सवाल सामान्य विधि से करके सिखाये, जिसे लगभग सभी बच्चों ने एक ही बार में सीख लिया और खूब सवाल हल किये। रितु बीच-बीच में मुझसे पूछने आ रही थी और सही तरीके से धीरे-धीरे सवाल हल कर रही थी जबकि अमिषा व राजेश बीच-बीच में छलाँग लगाते हुए सवाल हल कर रहे थे। मैंने उन्हें पास बिठाकर ज़ोर-ज़ोर से पहाड़े बोलते हुए सवाल हल करने को कहा जिससे उनका ध्यान जल्दी संख्याओं की ओर आकर्षित हो। सारे बच्चों ने फटाफट सवाल दिखाये। सुबोध काफ़ी देर बाद आया और वो सवाल हल नहीं कर पाया था। अपने पास बैठाकर जब उससे सवाल हल करवाया तो पता चला वो मेरे बताये तरीके से एकदम उलट चल रहा था। फिर श्यामपट पर हल किये मेरे सवाल से अपना सवाल मिलाते हुए अपने और मेरे किये सवाल में अन्तर देखते हुए अपना हल मेरे हल से मिलान करने की कोशिश में लगा था।

सुबोध ने जब अपवर्तक निकाले तो ऐसे लिखे,

8 के अपवर्तक: 8, 4, 2, 1

जबकि सामान्यतः पहले छोटी संख्या लिखते हैं।

बच्चों को अपने पास बिठाकर सवाल हल कराने से जल्दी से पता लग जाता है कि वह कहाँ गलती कर रहे हैं, जिससे तुरन्त ही सुधार हो जाता है।

हमने 9:20 तक गणित में सवाल हल किये फिर अँग्रेज़ी का एक अनुच्छेद पढ़ा और कुछ और नये शब्द जाने। इस पाठ में हिन्दी भाषा के शब्द भी हैं जिन्हें बच्चे ज़्यादा आत्मविश्वास से पढ़ रहे है। जैसे पोटली, पति आदि। अपनी भाषा के शब्दों का गहरा असर तो होता ही है।

जब बच्चे अपनी बोलचाल के शब्द अपनी अँग्रेज़ी की किताब में देखते हैं तो उन्हें अपनापन लगता है।

मध्यान्तर के बाद 'हमारे आसपास' में काम किया। आज बच्चों को समूहों में बाँटा और सबके साथ चर्चा कर हर समूह को अलग-अलग उप विषय दिये। हालाँकि कक्षा में प्रत्येक प्रश्न पर चर्चा करते हुए हर बच्चा चर्चा में शामिल रहेगा।

आज यह भी तय किया कि प्रत्येक समूह अपने घरों के आसपास के घरों में जाकर यह पता लगाएगा कि उनके घर में कितने पालतू पशु हैं। इसका शोध विषय से अपना एक सम्बन्ध है। हम जानना चाहते हैं कि हम जिन पशुओं को अपने घरों में पालते हैं वे हमारे भोजन से किस प्रकार सम्बन्धित हैं? क्योंकि जिन 5 पाठों को मिलाकर हम इस बार अपना शोध कार्य प्रस्तुत करने वाले हैं वो 'बीज की यात्रा' से शुरू होता हुआ 'जीव जन्तुओं के भोजन और खाद्य श्रृंखला' तक फैला हुआ है।

हालाँकि बच्चे इन पाठों को एक बार पढ़ चुके हैं, पर इस कार्य को करते हुए हम इन पाठों को और गहराई से देखने-परखने की कोशिश कर रहे हैं।

विषय को उप विषयों में बाँटने का मेरा उद्देश्य भी यही है कि प्रत्येक बच्चे के पास उस दिन कुछ न कुछ नया और अलग बताने को हो। इस तरह हर बच्चे को प्रतिभागिता करने का मौका मिलेगा।

बच्चा किसी पाठ को पढ़ते हुए कक्षा में क्या-क्या सीख रहा है? शिक्षक के लिए ये पता लगाना ज़्यादा कठिन नहीं है। पर इसे दूसरे लोगों के साथ साझा करना एक दुरूह प्रक्रिया है, जब तक वह सीधे-सीधे गणित का कोई सवाल न हो या किसी अनुच्छेद को पढ़ना या किताब में दिये किसी प्रश्न का उत्तर न हो।

शोध कार्य का मेरा मकसद स्कूल में पढ़ाई जा रही विषयवस्तु की समझ को पुख्ता बनाने के लिए उनके व्यक्तिगत अनुभवों पर आधारित ज्ञान और उनके आस-पास बिखरे ज्ञान से जोड़ कर देखने में उन्हें मदद करना है। मैं हमेशा ही अपने शिक्षण में बातचीत और आपसी चर्चा

को पर्याप्त स्थान देती हूँ क्योंकि मुझे लगता है, बच्चे आपसी अनुभवों को सुनकर भी काफ़ी कुछ जान जाते हैं साथ ही उनमें किसी विषय को विस्तार से जानने की उत्सुकता जागती है। इससे बच्चों की चिन्तन, तर्क और अवलोकन क्षमता भी बढ़ती है।

२३.८.१४

पिछले तीन दिनों में बच्चों ने 159 परिवारों का सर्वे किया। आज हमने सर्वे से प्राप्त तथ्यों पर बातचीत की और अपने अनुभवों को कक्षा में सबके साथ साझा किया। कुछ बच्चों ने बताया कि लोगों ने उनसे पूछा, “तुम यह सब क्यों पूछ रहे हो? क्या तुम्हारे स्कूल में पशुओं के लिए चारा आ रहा है?” अब हमारे पास विभिन्न परिवारों से सम्बन्धित पशुधन आँकड़े हैं। इस विषय पर बातचीत के लिए इतने आँकड़े पर्याप्त हैं। इस गतिविधि या सर्वे को कराने का एक और महत्त्वपूर्ण पक्ष इस ओर ध्यान दिलाना है कि हम अपने पालतू पशुओं से मिलने वाले लाभों के लिए कैसे धीरे-धीरे बाज़ार पर निर्भर होते जा रहे हैं।

कक्षा में बातचीत जारी है। आज हमने एक और महत्त्वपूर्ण गतिविधि प्रारम्भ की जिसको मैं शैक्षिक भ्रमण का एक ज़रूरी हिस्सा समझती हूँ। लेकिन इस बार ये ज़्यादा विस्तृत है। यह गतिविधि है पर्यावरण के किसी प्राकृतिक या सामाजिक घटक का गहराई से अवलोकन करना और उसके बारे में जानकारी एकत्र करके लिखना।

आज हमने किसी पेड़ या पौधे या झाड़ी आदि के बारे में 20-21 प्रश्नों की सहायता से जानने की गतिविधि की। हमारे स्कूल में गुलाब की झाड़ियाँ हैं। उनमें फूल भी खिले हैं और फल के रूप में लाल-पीले दाने भी लगे हैं। मैं बच्चों को बाहर ले आयी और हमने इस झाड़ी को नज़दीक से छूकर देखा और अपने अवलोकनों को कॉपी में नोट किया। इस दौरान यह भी बातचीत हुई कि गुलाब किस प्रकार उगाया जाता है।

हमने अपनी क्यारी में जब गुलाब की कलमें रोपी थीं, मैंने बच्चों को उस समय हुई बातचीत को याद दिलाने की कोशिश की, पर तब ये बच्चे पिछली कक्षा में थे और इनका ध्यान इस ओर नहीं गया था।

हमने बीज, कलम, फल, फूल, तना, पत्ती, काँटे आदि के बारे में बातचीत की।

पिछले वर्ष किये अवलोकनों के आधार पर हमने याद करने की कोशिश की कि किन-किन पेड़ पौधों के तनों पर काँटे होते है या किसकी पत्तियाँ कँटीली होती हैं।

बातचीत के आधार पर हमने बहुत सारे पौधों-पेड़ों-झाड़ियों के नामों पर चर्चा की जिनके बारे में हम विस्तृत जानकारी एकत्र कर सकते थे। इसके लिए स्थानीय लोगों से बातचीत भी कर सकते थे। चर्चा से ये तय हुआ हर बच्चा कम से कम 5 पेड़-पौधों के बारे में जानकारी एकत्र करेगा।

हम अपने काम को किस प्रकार प्रदर्शित करेंगे इस पर भी चर्चा हुई। हम उस दिन क्या-क्या कर सकते हैं इस पर चर्चा करते हुए सिमरन ने सुझाया, हम 'जादुई आम' नाटक को भी कर सकते है क्योंकि इसमें भी अंकुरण, बढ़ना, फल लगाना आदि के बारे में बताया गया है। सभी को ये सुझाव पसन्द आया।

मैंने बच्चों को सुझाया, "वे कुछ खेल भी बना सकते हैं और अभिभावकों को खिला सकते हैं।"

जैसे- कोई एक सूची देकर इनमें जो चीज़ अलग है उसे छाँटो और कारण भी बताओ।

गाय, बैल, बाघ, हिरन।

बच्चों को ये अच्छा लगा। तय हुआ कि सभी बच्चे इस तरह के खेल बनाएँगे जिनके विषय हमारे शोध कार्य के पाठों के अलावा गणित और अँग्रेज़ी या अन्य विषय भी हो सकते हैं। बाद में इनका संग्रह करेंगे।

हमारे पास उप विषय हैं:

- पेड़-पौधे कैसे उगते हैं?
- पेड़-पौधों के हमारे लिए क्या-क्या उपयोग हैं?
- पेड़, पौधों के विषय में सूक्ष्म अवलोकन।
- हमारे गाँव में पाये जाने वाले पालतू पशुओं की पड़ताल।
- पेड़, पौधों व जीव-जन्तुओं का सह-सम्बन्ध।
- पिछले 1 वर्ष में किये विस्तृत अवलोकन के बारे में बताना।
- खेल

- हमारे दादा दादी और आज के समय में पेड़-पौधों की देखरेख, खेती करने के तरीकों और पशु पालन के तरीकों में क्या अन्तर आये हैं?

जैसे-जैसे बच्चों से बातचीत बढ़ रही है वैसे-वैसे उप विषयों कि संख्या बढ़ रही है। परन्तु हमने बातचीत करके विषयों की संख्या तय की।

२५.८.१४

पिछले दो दिनों में बच्चों ने पेड़-पौधों के बारे में काफ़ी जानकारी एकत्रित की है। इसे जाँचना भी एक मुश्किल काम हो रहा है। आज पूरी कक्षा में 6 ही पेड़-पौधों पर बात हो पायी।

आज हमने कक्षा में उन व्यक्तियों के बारे में बात की जो हमारी इसमें मदद कर सकते हैं। श्री छोटे लाल जी (वैद्य), श्री पोखरियाल जी (किसान), माताएँ और भोजनमाताएँ। ये चारों मुख्य सन्दर्भदाता हमारे अनुरोध पर विद्यालय भी आ सकते हैं। भोजनमाताएँ तो विद्यालय में ही हैं। इसलिए सबसे पहले इन्हीं से बातचीत शुरू की। बच्चों ने कहा, "वे शाम को श्री छोटे लाल जी के घर जाएँगे।" ये कई बच्चों के दादा भी हैं और हम इनसे पहले भी मदद ले चुके हैं। वे बहुत ही संवेदनशील व सहयोगी व्यक्ति हैं। ठीक ऐसे ही पोखरियाल जी (अवतार के पिता) भी हैं। विद्यालय में समुदाय सहभागिता के मायने समुदाय के लोगों की सीखने-सिखाने में मदद लेने से भी है। मुझे लगता है कि मैं इस पक्ष पर कुछ काम कर पायी हूँ और इस वजह से कम से कम समुदाय की राय विद्यालय व शिक्षक को ले कर नकारात्मक तो नहीं है। इस पूरी प्रक्रिया में, मैं समुदाय में कुछ लोगों को विद्यालय का निस्वार्थ हितैषी बना पायी हूँ।

आज गणित की कक्षा नहीं हो पायी। हम पूरे दिन अलग-अलग समूहों में काम करते रहे। मध्यान्तर में साक्षी ने ढेर सारी चाक का चूरा शगुन की आँख में डाल दिया जिस पर मुझे गुस्सा आ गया। मैंने उसको डाँटा तो वो बुरा मान गयी और बाद में मेरे पास नहीं आयी। मुझे भी बुरा लगा पर आज चुप ही रही।

२८.८.१४

अभी तक हुए कामों को हम फ़ेयर करने की ओर बढ़ रहे हैं। काम को समेटते हुए नये-नये सवाल आ रहे हैं।

जैसे: आलू (खाने योग्य भाग) को तना क्यों कह रहे हैं जबकि मूली या गाजर को जड़ कह रहे हैं?

गुलाब में फूल और बीज होते हुए भी वो कलम से क्यों उगता है, बीज से क्यों नहीं? मूँगफली का कौन सा भाग खाने योग्य है?

अरबी, अदरक, हल्दी, तना क्यों हैं, जड़ क्यों नहीं जबकि मिट्टी के नीचे तो पौधे की जड़ होती है?

बच्चों ने ढेर सारा काम कर लिया है। अब मेरे सामने समस्या यह है कि इस सारे काम को कैसे जाँचूँ और फ़ेयर करवाऊँ।

आज नीरज और अर्पिता समूह ने अपने-अपने समूह में बातचीत की और उन स्थूल चीज़ों की सूची बनायी जिन्हें वे प्रदर्शित कर सकते हैं।

विकास समूह ने गाँव में किये सर्वे का जोड़ किया। पालतू पशुओं की उपयोगिता और खाद्य श्रृंखला पर चर्चा कर खाद्य श्रृंखलाएँ बनायीं।

दुर्गेश और अंशिका ने सबसे खेल इकट्ठे किये फिर मुझसे बात कर उन्हें चार्ट की सफ़ेद पट्टियों पर तैयार किया। कुल 160 खेल तैयार हुए।

आज बड़े समूह में पिछले वर्ष हुए अवलोकन पर चर्चा हुई। मुख्यतः तीन प्रमुख ऋतुओं में पेड़ पौधों की उपलब्धता और परिवर्तन को हमने रेखांकित करने का प्रयास किया।

फरवरी-मार्च जुलाई-अगस्त अक्तूबर-नवम्बर

बच्चे चार्ट पर काम करते हुए बहुत गलतियाँ करते हैं। हालाँकि इससे झुँझलाहट होती है परन्तु बच्चे तो गलतियाँ करके ही सीखेंगे। ये विषय ऐसा है जो निरन्तर बढ़ता जा रहा है। रोज़ इसमें नये सवाल जुड़ रहे हैं जो कि अच्छी बात है।

पेड़-पौधों के बारे में बच्चों ने काफ़ी जानकारी एकत्रित कर ली हैं पर बहुत-सी बातें अभी भी संशय पैदा कर रही हैं इसलिए आज अपने पुराने दस्तावेज़ों को टटोला। वर्ष 2011 में हमारे बाल शोध मेले का विषय भी इससे मिलता-जुलता था, जिसमें हमने अपने गाँव में पाये जाने वाले लगभग सभी महत्त्वपूर्ण पेड़-पौधों, उनकी उपलब्धता, उपयोगिता के बारे में विस्तृत जानकारी एकत्रित की थी। मैंने इस सारी प्रक्रिया को नोट किया था और सम्बन्धित चार्ट फ़ाइलें भी सँभाली हुई थीं। हालाँकि बहुत सी चीज़ें खराब भी हो गयी थीं।

आज इस सब सामान को भी निकाला, बच्चों को दिखाया और यह जानने की कोशिश की कि कहीं हमसे कुछ छूट तो नहीं गया है या फिर हम क्या-क्या नया कर पाये हैं।

पेड़ पौधों से जान-पहचान के बारे में भी अपनी एकत्रित जानकारी को इससे जाँचा।

आज शाम को अपने मित्र राजीव शर्मा जी से बात की जिसमें अपने सवालों को भी साझा किया। उन्होंने सुझाव दिया कि मुझे एकलव्य की कक्षा 6, 7, 8 की विज्ञान की किताबें पढ़नी चाहिए। उनसे मदद मिल सकती है। आज इण्टरनेट भी काम नहीं कर रहा है। कल देखती हूँ क्या हो सकता है। अपनी बिटिया गौरांशी से भी इस विषय पर बात की। अक्षत सो गया था वरना वो ज़रूर नयी बातें बताता। मैं भी बच्चों के साथ आगे बढ़ रही हूँ। अपने विद्यालय के पुस्तकालय में भी किताबें खोजूँगी।

कक्षा-1, 2, 3 में बच्चों से बातचीत की। घर, परिवार, हमारा घर, जीव-जन्तुओं का घर, हमारे और उनके घर में अन्तर, घर की आवश्यकता आदि पर चर्चा की।

कक्षा 2 और 3 में सभी बच्चों को अपने घर और घर के सदस्यों के बारे में लिखने को कहा जिसमें घर पर माँ-पापा की मदद भी लेनी है। सजीव और निर्जीव पर भी थोड़ी चर्चा की पर अभी काफी बात और करनी होगी।

२९.८.१४

आज गाँव में उपप्रधान का चुनाव था। सुबह 9.30 पर ग्राम पंचायत के ऑफ़िस पहुँच गयी थी। थोड़ी देर में सभी वार्ड सदस्य आ गये। काफ़ी देर हुई गहमागहमी के बाद निर्विरोध उपप्रधान का चुनाव सम्पन्न हो गया। आज गाँव की कई सारी महिलाओं से मिलना हुआ।

कुछ दिनों पहले गाँव में प्रेरक का चुनाव हुआ था। इसमें जिन महिलाओं का चुनाव नहीं हो पाया था वे मुझसे बेहद नाराज़ थीं। उन्होंने गाँव में मुझे भला-बुरा कहा और गाली-गलौज़ भी की। ये सब सुनकर बहुत बुरा लगा। जैसे मैंने कोई अपराध कर दिया हो। एक महिला जब मुझे मिली तो मैंने उसे समझाकर कहा, "अगर तुम्हें किसी प्रकार की शंका है तो तुम स्कूल आकर अपने और अन्य उम्मीदवारों के अंक देख सकती हो।" बाद में मैंने अन्य लोगों से भी यही बात कही।

आजकल गाँव में पिछले दिनों हुए ग्राम प्रधान के और अन्य चुनाव होने से खूब गुटबाज़ी हुई है, जिसके चलते गाँव अलग-अलग समूहों में बँट गया है। इसी के चलते इन्होंने मई में हुए चुनावों में भी हंगामा करना चाहा था, तो मैंने खूब फटकार लगायी थी। आज भी उपप्रधान के चुनाव के दौरान खूब गाली-गलौज़ व आरोप-प्रत्यारोप लग रहे थे। हर प्रत्याशी चाहता था कि वह उपप्रधान बने।

दरअसल इसमें इनकी कोई गलती नहीं है। आज बेरोज़गारी इस तरह फैल गयी है कि किसी एक पद के लिए गाँव में कई लोग उम्मीदवार हो जाते हैं, फिर चाहे उनमें उस पद के लिए योग्यता हो या नहीं। हर कोई बिना काम किये पैसा कमाना चाहता है। ऐसे में किसी योग्य का चुनाव हो तो इन्हें खूब परेशानी होती है। प्रेरक का चुनाव एक ऐसा प्रकरण है जिसमें बहुत से लोग शिक्षक को अपना दुश्मन समझ रहे हैं क्योंकि उसने उनके कहे व्यक्ति का चुनाव नहीं किया। ज़्यादातर गाँव वालों को इस बात से मतलब नहीं कि प्रेरक की नियुक्ति गाँव में क्यों हुई है। उसका क्या काम है? वह अपना काम कर रहे हैं या नहीं? उन्हें मतलब है सिर्फ़ इस बात से कि प्रेरक को हर माह 2000.00 रुपये मिलते हैं और स्कूल की प्रधानाध्यापिका इनकी उपस्थिति भेजती हैं या नियुक्ति में वे एक साक्षात्कारकर्ता के रूप में चयन समिति की सदस्य होती हैं। ग्राम प्रधान भी चयन समिति में होता है पर उन्हें कोई कुछ नहीं कहेगा क्योंकि वे उनके गाँव की हैं। मैडम बाहर की हैं तो सारे लोग गाली दे सकते हैं। इस प्रकरण से कई लोग मुझसे नाराज़ हो गये हैं। जैसे मैंने उनके हाईस्कूल/इण्टर के अंक कम कर दिये हों।

इस तरह के प्रकरण अनावश्यक तनाव दे देते हैं।

३०.८.१४

कल गाँव में हुई बातें आज भोजनमाता स्कूल में बताने लगीं। उसने कहा कि कल जो महिलाएँ भला-बुरा कह रही थीं बाद में वो महिलाएँ शर्मिन्दा हो रही थीं। मैंने भोजनमाता से कहा, "मैंने अपना काम ईमानदारी से किया है जिसे जो कहना हो वो कहता रहे और अगर कुछ जानना हो तो स्कूल में आये।"

आज भी बाल शोध कार्य की समूह में तैयारी करवाई। इस बात पर चर्चा हुई कि हम अपने काम को लोगों को कैसे दिखाएँगे। हमारे पास वो कौन-कौन सी चीज़ें होंगी जिनसे हमारी बात पता चले कि इस दौरान हमने क्या-क्या सीखा है। हम अपने सीखने में कहाँ तक आगे बढ़े, ये लोगों को कैसे पता चलेगा? हमने अपने शैक्षिक भ्रमण के तीनों अवलोकनों के चार्ट जोड़कर बड़ा-सा चार्ट बनाकर एक साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया। इस प्रकार हम किसी पेड़ या पौधे के तीन अवलोकनों को एक साथ दिखा पा रहे हैं। हम कई पेड़-पौधों की एक वर्ष की यात्रा के बारे में जान रहे हैं। हमारे द्वारा अवलोकित पेड़ व झाड़ियों में हमने पूरे वर्ष में हुए परिवर्तनों को जाना। जैसे कि तुन, खडिक, अखरोट, कुज्जू, गुलाब, हिंसर आदि। जबकि छोटे पौधों में से कई ऐसे थे जो हमें दो ही अवलोकनों में दिखे। जिनका जीवनचक्र छह माह या इससे कम था। उनकी जगह नयी घास और पौधे दिखे, खासतौर पर खेतों में उगायी जाने वाली फसलों या दाल सब्ज़ी के पौधे जैसे कि गेहूँ, मटर, धनियाँ, आदि।

ये चार्ट कक्षा 5 के बच्चों के लिए ज़्यादा मायने रखता है क्योंकि वे तीनों अवलोकन में शामिल थे। इनकी बातें सुनकर कक्षा-4 वाले बच्चे भी शैक्षिक भ्रमण पर जाना चाहते हैं।

उदाहरण के लिए तुन के पेड़ के अवलोकन को इस प्रकार लिखा है:

तुन का पेड़ अप्रैल में:

तना: मोटा, मजबूत, लम्बा जिस पर बेल लगी है। लाइकेन भी लगी है।

शाखाएँ: बड़ी-बड़ी व खूब फैली हुईं।

पत्तियाँ: हरी व ताजी, चमकीली, मुलायम।

खाल: काली-भूरी, मोटी, सख्त, खुरदरी, टूटी-फूटी-सी।

फूल: छोटे , सफ़ेद-से।

फल: बहुत छोटे से हरे।

अन्य: बन्दरों, चिड़ियों व छोटे जीवों का बसेरा।

तुन का पेड़ सितंबर में:

तना: मोटा, मजबूत, लम्बा जिस पर बेल लगी है। लाइकेन भी लगी है।

शाखाएँ: बड़ी-बड़ी और खूब फैली हुई।

पत्तियाँ: हरी, पीली व दाग धब्बे वाली।

खाल: काली -भूरी, मोटी, सख्त, खुरदरी, टूटी-फूटी-सी।

फूल: नहीं।

फल: नहीं।

अन्य: बन्दरों, चिड़ियों व छोटे जीवों का बसेरा।

तुन का पेड़ फरवरी में:

तना: मोटा, मजबूत, लम्बा जिस पर बेल लगी है। लाइकेन भी लगी है।

शाखाएँ: बड़ी-बड़ी और खूब फैली हुई।

पत्तियाँ: छोटी-छोटी लाल व हरी-सी, गाँठनुमा।

खाल: काली -भूरी, मोटी, सख्त, खुरदरी, टूटी-फूटी-सी।

फूल: नहीं।

फल: नहीं।

अन्य: बन्दरों, चिड़ियों व छोटे जीवों का बसेरा।

बच्चों ने कुछ पौधों की जीवनयात्रा को इस तरह से लिखा:

धान की यात्रा:

मई: खेतों में हल लगाकर बिजाड़ डाला।

जून: बिजाड़ की गुड़ाई की व खेतों की सफ़ाई की।

जून: जून अन्त व जुलाई के प्रथम सप्ताह में धान रोपाई की।

जुलाई: हथमया लगाया (पानी भरे खेतों में हाथ से खरपतवार निकाला)।

अगस्त: धान के पौधे बड़े हुए, उन में बालियाँ आनी शुरू हुईं। अगस्त अन्त तक फसल पकना शुरू हुई।

सितम्बर: धान काटा, मड़ाई की, धान सुखाया, कोठार में सँभाला, पराल पेड़ पर लगाया।

इसके साथ ही हमने उन जानकारियों का भी चार्ट बनाया जो बच्चों ने प्रति माह अपने घरों, खेतों में उगायी जाने वाली फसलों और फल, सब्ज़ियों के बारे में एकत्रित की थीं। जैसे कि अगस्त में, खेतों में धान बड़े हुए। उनमें बालियाँ आयीं। लोग बीच-बीच में अपने खेतों की देखभाल करने जा रहे हैं। फसल पकनी शुरू हुई। लौकी, कद्दू, बारहमासी छेमी, करेला, ककड़ी , आदि की बेलें बड़ी हो गयीं। उनमें फूल लगने लगे। मिर्च, बैंगन ,टमाटर, भिण्डी की सब्ज़ियों में फूल लगे।

फल - अखरोट, अमरूद ,नीबू, आँवला, सेब आदि लगे हैं।

इस प्रकार हम अपने शोध कार्य में पूरे वर्ष के अपने कार्य को प्रस्तुत कर रहे होंगे। जिसमें हमने आसपास के पेड़-पौधों, झाड़ियों, फसलों, सब्ज़ियों एवं फलों आदि के बारे में विस्तारपूर्वक जाना-समझा है।

आज हम पुस्तकालय में गये और वहाँ ऐसी किताबें ढूँढी जो हमारे विषय से सम्बन्धित थीं जैसे ”एक पत्ता”। इस किताब में एक पत्ते की जीवन यात्रा और कार्य बड़े ही रोचक ढंग से बताया गया है। इस किताब को पढ़कर आइडिया आया कि इसी तरह हम फूल, फल, तना और बीज आदि के बारे में भी लिख सकते हैं।

विजय गुप्त की कविता “बीज बनेंगे पेड़” बड़ी रोचक कविता है। हमने करीब 40 ऐसी किताबें छाँटी जो पेड़-पौधों से सम्बन्धित थीं। जैसे “बीज” “पेड़”, “पत्ता हूँ मैं”, “सजीव”, “भारत के वृक्ष”, “पेड़ पौधों की आश्चर्यजनक बातें”, “राक्षस घास”, “पत्ते”, “एक पत्ते की बात”, “वनस्पति जगत की आश्चर्य जनक बातें” आदि।

हमने इन सब किताबों को बारी-बारी पढ़ा। जब बच्चे किताबें पढ़ रहे थे मैंने 'बीज बनेंगे पेड़' कविता का चार्ट बनाया। बाद में बच्चों के साथ इस कविता को समझने की कोशिश की।

३.९.१४

आज हमने अपने पूरे शोध कार्य को वर्गीकृत किया और प्रत्येक चार्ट और सामग्री को समूह में बाँटा। बच्चे समूह में पहले से ही काम कर रहे हैं। मैंने बच्चों से कहा, "वे बताएँ, कौन-सा चार्ट या वस्तु किस समूह द्वारा प्रस्तुत होगी और हम किस समूह का कार्य सबसे पहले प्रस्तुत कर रहे होंगे?" कुछ बच्चों ने कहा, "खेल समूह को सबसे पहले रखना चाहिए क्योंकि लोगों को खेल खेलना अच्छा लगता है उन्हें मज़ा आयेगा।"

लेकिन जल्दी ही अन्य बच्चों के मत आये। हमने खेल अपने शोध कार्य पर बनाये है तो पहले उन्हें हमारा शोध कार्य देखना चाहिए तब खेल खिलाना चाहिए क्योंकि तभी वे अलग की गयी चीज/वस्तु के बारे में सही बात बता पाएँगे।

योगेश ने कहा, "एक जैसी चीज़ों में से अलग चीज़ को ढूँढ़ना ज़्यादा कठिन बात नहीं है। खेल को चाहे कही भी रखें, लोगों को ठीक लगेगा।" इस पर दीपिका ने कहा, "लोग समूह में से अलग क्या है ये तो जान जाएँगे पर उसके लिए सही उत्तर (शब्द) बताने में उन्हें कठिनाई होगी।"

जब मैंने उस से कारण जानना चाहा तो उसने बताया जब उसने घर में अपनी माँ से ये सवाल हल करवाये तो उसकी माँ ने ये तो बता दिया कि शेर, बाघ, सियार और हिरन में से हिरन अलग है और इसलिए अलग है क्योंकि हिरन घास खाता है बाकी जानवर मांस खाते हैं, लेकिन वो ये नहीं बता पायी कि हिरन शाकाहारी है बाकी जानवर मांसाहारी हैं।

दीपिका की बात सुन सब बच्चे थोड़ी देर के लिए चुप हो गये।

खैर, आज हमने समूह में चीज़ों को व्यवस्थित किया और अपने-अपने समूह में बातचीत की, सवाल पूछे।

अभी तक हम चार बाल शोध मेलों की तैयारी कर चुके हैं और तीन का प्रस्तुतिकरण भी किया है। इस दौरान हमने बहुत सारी चीज़ें सीखीं। बाल शोध मेले में बहुत सारे स्कूल एक

साथ एक ही परिसर में एकत्रित होने से काफ़ी भीड़-भाड़ होती थी। अलग-अलग विषयों पर प्रस्तुतीकरण होता था। अब जब ये मेला अपने ही विद्यालय में होगा तो हम क्या-क्या चीज़ें प्रस्तुत करेंगे जिससे अभिभावकों को हमारा काम समझ में आये, इससे मैं थोड़ा चिन्तित हूँ।

सारे बच्चे खासे उत्साहित हैं। खासतौर पर छोटे बच्चे। वे बार-बार मुझे बुलाने आते हैं कि मैं उनकी भी तैयारी करवाऊँ।

मध्यान्तर के बाद घर, परिवार, वंश-वृक्ष व सजीव-निर्जीव पर बच्चों से बातचीत की। उनके किये काम के चार्ट बनाये और बताया कि वे उस दिन क्या-क्या गतिविधियाँ करेंगे। शाम 3.30 पर बालिका विद्यालय उत्तरकाशी में गयी। वहाँ 5 सितम्बर को होने वाले कार्यक्रम पर मीटिंग थी जिसे एबीआरसी रामप्रकाश रावत जी ने संचालित किया।

४.९.१४

आज सुबह मौसम में हल्की ठण्ड थी क्योंकि कल रात बारिश हुई थी। मैं सुबह 9.20 पर स्कूल पहुँची। लगभग सभी बच्चे आये थे। दीदी भी आ गयी थी। सुबह की सभा में सभी बच्चों ने अपनी बारी आने पर प्रस्तुति दी। सिमरन ने फिर याद दिलाया कि हमने नाटक की तैयारी नहीं की है। मुझे नहीं लगता हम नाटक प्रस्तुत कर पाएँगे इसलिए मैंने फ़िलहाल ये बात टाल दी।

बरसात के कारण विद्यालय के चारों तरफ़ उगे फूलों की झाड़ियाँ बहुत घनी और बड़ी हो गयी हैं। आज हमने अपना विद्यालय साफ़ किया। मैंने, चौथी-पाँचवीं के कुछ बच्चों और बड़ी भोजनमाता ने विद्यालय की सफ़ाई की, जबकि दीदी, पाँचवीं के बच्चों और छोटी भोजनमाता को नदी किनारे छोटे कंकड़ लेने भेजा। विद्यालय में मैं हमेशा ढेर सारे पत्थर-कंकड़ रखती हूँ जिनका प्रयोग कक्षा-1 वाले आकृतियाँ बनाने और गिनने आदि में करते हैं। खेल-खेल में बच्चे कंकड़ों को इधर-उधर डाल देते हैं जिससे साल में एक बार फिर से कंकड़ इकट्ठे करने होते हैं।

मैंने बाद में बच्चों की मदद से विद्यालय फिर से व्यवस्थित किया और चार्ट लगाये। कल के प्रस्तुतिकरण की तैयारी की।

अब हम अपने मेहमानों के स्वागत के लिए तैयार हैं।

५.९.१४

सुबह समय पर विद्यालय पहुँची। सभी बच्चे, प्रधान अध्यापिका महोदया और दोनों भोजनमाताएँ आ चुकी थीं। बच्चों ने सुबह की सभा आयोजित की फिर हमने शिक्षक दिवस मनाया। डॉ.राधाकृष्णन की फोटो पर फूलमाला चढ़ायी। दीदी ने सबको सम्बोधित किया। मैंने भी बच्चों को डॉ. राधाकृष्णन के बारे में कुछ बातें बतायीं। बच्चों ने मुझे और दीदी को पैन उपहार में दिये।

आज बच्चों के लिए खास खाना बना है। दाल-चावल और हलवा-पूरी। हमने अभिभावकों को 12 बजे बुलाया है। इसीलिए भोजन का समय 11 बजे रखा है ताकि सारे बच्चे आराम से खाना खा लें, तब अपना काम शुरू करें।

मैंने कक्षा 1 और 2 के लिए आँगन में चाक से ढेर सारे चित्र बनाए। कक्षा 1 और 2 को इन पर कंकड़ गिनकर लगाने हैं। दीवार हरित पट पर हर बच्चे के लिए जगह तय की है नयी आकृतियाँ बनानी हैं उन पर कंकड़ गिनकर लगाने हैं। दीवार-हरितपट यानी श्यामपट पर चित्र बनाने हैं। बाद में कक्षा-3 के बच्चों में शामिल होकर कागज़ पर सजीव-निर्जीव के चित्र बनाने हैं। फिर अपने घर-परिवार और अन्य जीव-जन्तुओं के घर-परिवार के बारे में आगन्तुकों से बातचीत करनी है।

सबसे पहले एपीएफ़ से संजीव शर्मा जी और अनानास जी आये। उन्होंने बच्चों से बातचीत की और हमारे शोध कार्य के बारे में जाना।

फिर ग्राम प्रधान जी और विद्यालय प्रबन्धन समिति के अध्यक्ष आये। धीरे-धीरे अन्य अभिभावकों का आना शुरू हुआ। आज इण्टर कालेज में भी अभिभावकों के लिए कार्यक्रम हैं इसलिए अभिभावकों की उपस्थिति उतनी नहीं रही जितनी हमें आशा थी। फिर भी काफ़ी लोग आये जिनमें माताएँ ज़्यादा थीं। बच्चों के छोटे भाई-बहन भी आये। उन्होंने छोटे बच्चों के साथ खेला भी।

अभिभावकों ने बच्चों के कार्य को सराहा। बच्चों ने भी सबसे खूब आत्मविश्वास से बातें कीं। उन्हें खेल भी खिलाया। बाद में एबीआरसी रावत जी और एपीएफ़ से जगमोहन कठैत जी विद्यालय आये। उन्होंने बच्चों से काफ़ी बातचीत की। बच्चों को भी इनसे बात करने में मज़ा आया।

जगमोहन जी ने छोटे बच्चों से बातचीत करते हुए जब पूछा, "गाड़ी सजीव है या निर्जीव ?" "निर्जीव" क्यों का जबाव देते हुए बच्चों ने बताया, "सजीव चीज़ें चलती हैं, बोलती हैं, बड़ी होती हैं। गाड़ी ऐसा कुछ नहीं करती इसलिए निर्जीव है।"

जगमोहन जी ने कहा, "गाड़ी भी तो चलती है, पीं-पीं बोलती है, तो गाड़ी भी तो सजीव है।" इस पर अदिति तपाक से बोली, "लेकिन गाड़ी में खून नहीं होता इसलिए वो निर्जीव होती है।" बच्चों ने अपने बनाये चित्रों के बारे में भी बात की।

कक्षा-4 और 5 का शोध कार्य देखकर दोनों आगन्तुकों ने कहा, "ये काम बाल शोध की अवधारणा को आगे बढ़ा रहा है।" अभी तक इस पर जितना काम हो चुका है हमने उस काम को आगे बढ़ाया है। ये सच बात है। दरअसल हमारा शोध कार्य सिर्फ़ विशेष समय अवधि के लिए नहीं है बल्कि हमने अपनी शैक्षिक विधा ही - खासतौर पर भाषा और हमारे आसपास को पढ़ाने की - शोध-आधारित बना ली है। इसी कारण हम अपनी कक्षा में भी अवधारणाओं को समझने में इस विधि का उपयोग करते हैं। इसी कारण हम साल भर अपने आसपास के पेड़-पौधों का सूक्ष्म अवलोकन कर उसका दस्तावेज़ीकरण कर पाये।

एपीएफ़ समूह के साथियों ने ही हमारे विद्यालय में बाल शोध मेले की शुरूआत की थी। अगर उनके साथियों को ये काम हमारे विद्यालय में बढ़ा हुआ दिखता है तो ये खुशी की बात है। कुल मिलाकर आज का दिन अच्छा रहा। प्रधान अध्यापिका भी खुश थीं।

आज मुझे याद आया, जब पहला बाल शोध मेला हुआ था और एपीएफ़ से राजीव शर्मा जी बातचीत के लिए विद्यालय आये थे, तो उनसे शोध विधि द्वारा सीखने पर विस्तृत चर्चा हुई थी। राजीव जी ने ही मेरा ध्यान दस्तावेज़ीकरण की ओर भी दिलाया था। हमने अपना पहला बाल शोध कार्य 'गणेशपुर भूकम्प से पहले व बाद में' विषय पर किया था, जिसमें हमने काफ़ी कुछ सीखा। हमारे काम को भी काफ़ी सराहा गया था। मैंने इस दौरान खोजबीन विधि को अपने शिक्षण का हिस्सा बनाया है।

६.९.१४

आज कक्षा में कल हुए ‘बाल शोध मेले‘ के बारे में बच्चों से चर्चा की।

बच्चों ने बताया, उन्हें लोगों से बात करना अच्छा लगा।

हमने लोगों की राय जानने के लिए ‘अपनी बात‘ नाम से चार्ट रखा था जिसमें लोगों ने अपनी राय लिखी थी। मुझे ध्यान ही नहीं रहा कि वहाँ पर एक बच्चे को ज़िम्मेदारी सौंपूँ जो मेहमानों को अपनी बात लिखने के लिए प्रेरित करे, इसलिए सिर्फ़ वे ही लोग अपनी राय लिख पाये जिनसे मैंने कहा।

‘शब्द समूह’ खेल के बारे में चर्चा करते हुए बच्चों ने कहा, “जब विकास के पापा ने लौकी, तुरई, गन्ना और कद्दू में से गन्ना को अलग बताया, तो कारण पूछने पर उन्होंने जो बात बतायी वो हमारी सोची बात से अलग थी।

यह पूछने पर कि, “जैसे”, दुर्गेश ने कहा, “उन्होंने बताया कि गन्ना इसलिए अलग है क्योंकि एक तो ये हमारे यहाँ नहीं होता है या बहुत कम होता है, दूसरे, ये मीठा होता है बाकी सब मीठे नहीं होते और तीसरा ये कि, गन्ना अलग प्रजाति का है जबकि लौकी, कद्दू व तुरई एक ही प्रजाति के हैं। यहाँ पर सब्ज़ियों को एक प्रजाति का बताना बच्चों के लिए नयी बात थी।

इसी प्रकार माताओं ने भी, जिनको पढ़ना नहीं आता था बच्चों से पढ़वाकर खेल का मज़ा लिया।

चार्ट में भी ‘पत्तियों वाले चार्ट‘ के बारे में खूब प्रश्न पूछे व बीजों के इतने बड़े संग्रह को देखकर आश्चर्य व्यक्त किया। चारा पत्तियों के बारे में सारी माँएँ भली-भाँति जानकारी रखती हैं। इसलिए उन्होंने बच्चों की खूब क्लास ली।

अलग-अलग तरह के पेड़-पौधों के बारे में बताते हुए जब बच्चों ने आलू या अदरक को तना कहा तो ज़्यादातर अभिभावकों ने आश्चर्य व्यक्त किया और कहा “अरे यह तो जड़ है!”

बीज का अंकुरण देखने में छोटे बच्चों को खूब मज़ा आया। उन्हें प्रांकुर और मूलांकुर को देखने में और बड़े बच्चों को इनके बारे में बताने में सबसे ज़्यादा मजा आया।

एक सूखे बीज को अंकुरित होकर नन्हे पौधे में बदलते हुए देखना बच्चों को रोमांचित कर गया। बच्चों ने यह महसूस किया कि एक नन्हा बीज कैसे अपने अन्दर जीवन छिपाये रखता है और अनुकूल परिस्थितियाँ पाते ही अंकुरित हो जाता है।

इसी रोमांच को महसूस करते हुए मेरे बेटे अक्षत ने जब वो कक्षा 3 में था एक कविता लिखी थी जो चकमक के जून-जुलाई 12 के अंक में भी छपी थी।

ओ नन्हे बीज

तुझमें छिपी हैं

ढेर सारी पत्तियाँ

रंग-बिरंगे फूल

मीठे फल

एक बड़ा वृक्ष

आ मैं तुझे वो दूँ

कुछ इस तरह पंक्तियाँ थी उसकी।

छोटे बच्चों के कमरे में अभिभावकों ने इस बात में भी रुचि दिखाई कि उनके बच्चों की लिखी या बनायी चीज़ चार्ट में कहाँ पर लगी है और उनका बच्चा उसके बारे में क्या-क्या बातें बता पा रहा है।

मैंने बच्चों से कहा कि वे बाल शोध मेले के बारे में अपने अनुभव मुझे लिखकर दें। कक्षा 3, 4, 5 के सारे बच्चों ने अपने अनुभव लिखे। कक्षा-3 के बच्चों ने ज़्यादातर यह लिखा कि उन्हें बाल शोध मेले में मज़ा आया। उन्हें अपने परिवार के बारे में लोगों को बताना, सजीव-निर्जीव के बारे में बताना, अपने चित्र दिखाना और सवालों के जवाब देना अच्छा लगा। कक्षा-4 और 5 ने विस्तार से अपनी बात लिखी। योगेश ने पूरी प्रक्रिया को लिखने के बाद यह भी लिखा कि 'सबसे ज़्यादा खुशी की बात यह है कि आज हमारे बाल शोध मेले के साथ-साथ शिक्षक दिवस भी था। आज हमने मैडम को शिक्षक दिवस की बधाई दी और पैन भी दिया।'

अर्पिता ने एक जगह पर लिखा 'जब हम लोगों को खेल खिला रहे थे तो वे थोड़ी देर के लिए उलझन में पड़ जाते थे पर फिर सवाल को सोचकर जवाब देते थे। उनकी उलझन खत्म हो जाती।'

१३.९.१४

बच्चों में सवाल करने और सोच-विचार करने की असीम सम्भावनाएँ होती हैं। जब बच्चों को कल्पना करने के लिए प्रेरित किया जाता है तो वे अपने परिवेश के विषय में कई रोचक तथ्य उजागर करते हैं। ऐसा करते हुए यह समझ में आता है कि बच्चों के सोचने का तरीका बड़ों से भिन्न होता है और कहीं भी गुणवत्ता में कम नहीं होता है। अगले कुछ दिन मैं इसी पक्ष को समझने के लिए बच्चों से बात करूँगी। कक्षा 4, 5 के साथ आज भाषा की कक्षा में 'अगर ऐसा होता तो' के बारे में इन तीन प्रश्नों पर बात हुई।

प्रश्न 1 : अगर तुम्हें जुगनू की तरह चमकना आता तो क्या होता?

इसके जवाब में बच्चों ने बताया:

- अगर लाइट चली जाती तो हम उजाला करते।
- हम आसमान में चमककर सब जगह उजाला कर देते।
- जब सुबह होती तो हमारी लाइट/चमकना दिखाई नहीं देती क्योंकि तब सूरज की तेज रोशनी होती।
- हम रात में इधर-उधर जा पाते।
- हम अपने घरों में, गोशाला में, रास्तों में, पेड़ों पर चमकते। हम झाड़ियों में भी चमकते।
- हम दिन में आते और रात में चले जाते।
- हम सुबह दिखाई नहीं देते।
- जब हम अँधेरे में जाते तो अपनी लाइट जलाते।
- रात में हम सबको दिखाई देते।

- हम अकेले सो नहीं पाते क्योंकि हम चमकते और कोई हमें परेशान करता।
- तब हम जुगनू की तरह उड़ भी पाते।
- जहाँ कहीं हमारी ज़रूरत होती वहाँ पहुँच जाते।
- जब हम गुफा में जाते वहाँ भी उजाला करते।
- तब लोग हमें पकड़कर मार देते हमारा उजाला ले लेते।
- हमें कहीं जाने के लिए टॉर्च की ज़रूरत नहीं होती।
- हम लोगों के घरों में अपनी लाइट देते।
- तब हमें बिजली की ज़्यादा ज़रूरत न होती।
- हम जिस कमरे में होते उसका बल्ब नहीं जलाते।
- हम रात में इधर-उधर जाते तो रास्ते में पत्थर काँटे भी देख पाते।
- हमें गिरने का डर नहीं होता।
- हम रात में बाहर भी जा पाते, आदि।

प्रश्न 2: अगर तुम्हें चिड़ियों की बोली समझ में आती तो क्या होता?

बच्चों ने इस तरह के जवाब दिये:

- अगर चिड़िया मुश्किल में होती तो वह हमें बताती तब हम उसकी मदद कर पाते।
- हम अपने दोस्त तक अपनी बात चिड़िया से पहुँचाते।
- चिड़िया हमसे खाना खाने के लिए बोलती तब हम उसे दाना देते।
- जब हमें कोई फल खाना होता तो हम चिड़िया से माँगते। चिड़िया अपनी माँ से कहकर हमें वह फल दिला देती।
- हम चिड़िया के साथ रोज़ बातें कर पाते।
- हम उनसे दोस्ती करके उनका घोंसला देखते, उनके बच्चे भी देख पाते, उनसे दोस्ती करते।
- हम चिड़िया को पाल लेते।

- तब हम उनसे पेड़-पौधों के बारे में जानकारी लेते।
- ऐसा पूछते, "क्या तुम्हें मेरा दोस्त दिखाई पड़ रहा है?"
- हम चिड़ियों के साथ खूब मज़ेदार बातें करते।
- हम चिड़ियों से बातें करके बाकी चिड़ियों के बारे में बहुत-सी बातें जान पाते।
- हम उनसे दूर-दूर की बातें जान पाते (यात्राओं की बात) उनकी बातें लोगों को भी बताते।
- जब वो आपस में बातें करती हम ध्यान से उनकी बातें सुनते।

प्रश्न 3: अगर पहाड़ एक जगह से दूसरी जगह जा पाते तो क्या होता?

- जब लोग एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर जाते तो रास्ता भटक जाते।
- तब हमें बहुत परेशानी होती। हमारी माँ को घास-लकड़ी लाने में परेशानी होती। अगर हमारी माँ घास लेने किसी एक पहाड़ पर जाती तो पहाड़ चलकर दूर चला जाता तो उसे घर वापस आने में बहुत देर हो जाती, उसे बहुत थकान भी लगती। हमें उसे ढूँढ़ने जाना पड़ता।
- पहाड़ के हिलने से पहाड़ पर बने घर टूट जाते। भूकम्प भी आता। लोग भी मर सकते थे।
- महिलाएँ घास, लकड़ी लेने नहीं जातीं।
- हमारे गाय-बैलों को तब घास नहीं मिल पाती।
- हमारी गोशाला टूट जाती और गाय-भैंस घायल हो जाते।
- हमें रोज़ नयी गोशाला बनानी पड़ती।
- पेड़ों से चिड़ियों के घोंसले और बन्दर नीचे गिर जाते।
- पहाड़ के इधर-उधर जाने से उसके नौलों, धारों, गधेरों का पानी इधर-उधर गिरता तब गाँव टूट जाता, बाढ़ भी आ जाती।
- पहाड़ जब एक जगह रहकर बोर हो जाते तो वो दूसरी जगह चले जाते।
- पहाड़ के साथ चलते-चलते हम दूर चले जाते। अगर हमें ये पता चला कि ये पहाड़ कौन-सी जगह जा रहा है, तो अगर किसी को वहाँ जाना होता, तो वो वहाँ चला जाता।

- तब कोई-कोई पहाड़ आलसी भी बन सकते हैं, वो कहीं नहीं जाते। हो सकता है ये पहाड़ अपनी घास, लकड़ी न लेने दें, हमें भगा दें और अपनी मरज़ी चलाएँ।
- पहाड़ के बार-बार हिलने से मिट्टी कच्ची हो जाती।
- पहाड़ की जहाँ मरज़ी होती वो वहाँ जा पाता।
- पेड़ टूट जाते।
- उनको चलने के लिए बहुत जगह चाहिए होती।
- पहाड़ को चल चलकर थकान लग जाती क्योंकि वो बहुत भारी होता है।
- पहाड़ के चलने से घोंसले से अण्डे नीचे गिर जाते।
- अगर पहाड़ एक जगह से दूसरी जगह जाएगा तो उसके पीछे अटके पत्थर नीचे गिर जाएँगे।

यदि मैं इन जवाबों का विश्लेषण करने की कोशिश करूँ तो पाती हूँ कि बच्चे अपने परिवेश को समग्रता में देखते हैं। उनके देखने का नज़रिया उनके अनुभवों से प्रभावित होता है। साथ ही उनके अवलोकन करने का कौशल काफ़ी सूक्ष्म होता है। इससे मुझे यह भी समझ में आता है कि यदि मुझे बच्चों में विचार करने की दक्षताओं को गहरे स्तर तक ले जाना है तो मुझे उनके साथ संवाद करने के लिए स्वयं को तैयार करना होगा।

मैंने जो सीखा

बच्चों के जीवन को करीब से देखना और उनके साथ सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में शामिल रहना एक रोमांचक अनुभव है। एक प्राथमिक विद्यालय की शिक्षिका के लिए यह एक तरह से अपने बचपन में लौटने जैसा अनुभव है। एक शिक्षिका के तौर पर मेरे लिए यह जानना बेहद ज़रूरी लगता है कि बच्चे प्रारम्भिक भाषाई और गणितीय कौशल कैसे विकसित करते हैं। बच्चे विद्यालय में अपने ढेर सारे अनुभव लेकर आते हैं, उनकी सीखने के प्रति असीम ऊर्जा को मैंने अपने13 वर्षों के शिक्षण के दौरान प्रतिदिन विद्यालय में अनुभव किया है। बच्चों के जीवन्त अनुभवों को उनके सीखने का आधार कैसे बनाया जाए यह हमेशा से ही शिक्षिका के तौर पर मेरी रुचि का विषय रहा है।

सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में आमतौर पर अभावग्रस्त परिवारों के बच्चे आते हैं। इन बच्चों को अपने दैनिक जीवन में ढेर सारी भावनात्मक और शैक्षिक चुनौतियों से गुज़रना पड़ता है। विद्यालय में सीमित संसाधन और अध्यापकों की कमी एक शिक्षक के उत्साह और सीखने सिखाने के तरीकों को निरन्तर चुनौती देती है। ये परिस्थितियाँ उससे माँग करती हैं कि वह अपने शिक्षण को आलोचनात्मक तरीके से देखे। बच्चों की उपलब्धियों और सीखने में आ रही कठिनाइयों को निरन्तर दर्ज़ करे और शिक्षण के ऐसे तरीके अपनाये जो बच्चों को विद्यालय आने के लिए प्रेरित करें साथ ही उनमें यह विश्वास जगा पाएँ कि वे विद्यालय में पढ़ना-लिखना सीख पा रहे हैं। बच्चों के अभिभावकों में भी यह विश्वास जागे कि उनका स्कूल उनके बच्चों को सही दिशा में ले जा रहा है। वास्तव में अभिभावक चाहते हैं कि शिक्षक और विद्यालय उनके सामने उनके बच्चों के सकारात्मक पक्षों पर बातचीत करें। उन्हें उनके बच्चों की उपलब्धियों के बारे में सही-सही जानकारी दें। उनके साथ सम्मान और बराबरी का व्यवहार करें। एक शिक्षिका के तौर पर मैंने अनुभव किया है कि बहुत बार व्यवस्था की कमज़ोरियों को नज़रअन्दाज़ करके एक शिक्षक को अपनी समस्याओं के हल निकालने होते हैं। उसे सीखने-सिखाने को लेकर बन चुकी मान्यताओं को चुनौती देते हुए निरन्तर नये तरीकों की खोज करनी होती है। ऐसे तरीके जो बच्चों में समझकर पढ़ने की क्षमताओं का विकास करें। उनके अनुभवों को आधार बना कर उन्हें पढ़ने-लिखने की दिशा में ले जाएँ। मैंने अपने अनुभव में पाया है कि जब कक्षा-1 के बच्चे पहला साल पूरा होते-होते किताब पढ़ना शुरू कर देते हैं तो उनमें सीखने के प्रति विश्वास बहुत ज़्यादा बढ़ जाता है। वे अपने अभिभावकों और शिक्षकों से शाबाशी पा रहे होते हैं और यह सब उनके आगे बढ़ने के लिए बेहद ज़रूरी है।

मुझे याद आता है, जब मैंने तेरह साल पहले शिक्षिका का पेशा अपनाया था तो मुझे बच्चों को भाषा और गणित सिखाने में ढेरों मुश्किलें आयी थीं। मेरी जी-तोड़ मेहनत के बाद भी सभी बच्चे कक्षा-2 तक आते-आते पढ़ना-लिखना नहीं सीख पा रहे थे। ढेरों अभ्यास भी मेरी मदद नहीं कर पा रहे थे। आमतौर पर ऐसी परिस्थितियों में शिक्षक हार मान बैठता है और बच्चों के न सीख पाने के लिए या तो विद्यालय की परिस्थितियों को या फिर अभिभावकों और बच्चों को ज़िम्मेदार मान कर सन्तोष अनुभव करता है। मैं भी शायद ऐसा ही करती परन्तु वर्ष 2006 में राज्य सरकार द्वारा लिखी जा रही पाठ्य पुस्तक निर्माण कार्यशाला में मेरा परिचय कुछ ऐसे शिक्षकों से हुआ जो कि सीखने-सिखाने की परम्परागत विधियों से इतर कुछ अन्य तरीके इस्तेमाल कर रहे थे। इसी दौरान मुझे राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 को भी पढ़ने का अवसर मिला। मैंने एनसीएफ़ 2005 को आधार बना कर लिखी गयी पाठ्य पुस्तकों को पढ़ा। इस कार्यशाला ने मुझे मेरे सवालों को खोजने के लिए आधार दिया। शिक्षक महेश चन्द्र पुनेठा जी के साथ मैंने अपने सीखने-सिखाने के तरीकों पर ढेर सारी बातचीत की। इस बातचीत का आधार आगे भी निरन्तर बना रहा। मैंने अपने शिक्षण कार्य की तमाम गतिविधियों को महेश जी के साथ साझा किया व उनके बहुमूल्य सुझावों को सदैव अपनी प्रेरणा माना। अब मेरे सामने वैकल्पिक तरीके मौजूद थे।

पढ़ने-लिखने की शुरुआत से पहले बच्चों के साथ कहानियों और कविताओं पर ढेर सारी बातचीत व बच्चों के सामाजिक सांस्कृतिक परिवेश पर चर्चा मुझे बच्चों के संसार को समझने की दिशा में ले गयी। जब मैंने बच्चों की बातों को ही कागज़ और श्यामपट पर लिखकर उनके साथ पढ़ा तो बच्चे पढ़ने में रुचि लेते दिखाई दिये। जबकि अपने शिक्षण के शुरुआती दिनों की बात करूँ तो मुझे बच्चों को पढ़ने के लिए प्रेरित करने में खासी कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। मैंने किताबों एवं शिक्षक-प्रशिक्षणों में समग्र भाषा पद्धति के बारे में पढ़ा एवं सुना। वर्ष 2006 में भाषा की कक्षा-1 की पाठ्य पुस्तक के लेखन का आधार भी समग्र भाषा-पद्धति ही रहा था। आरम्भ में तो यह समझने में कठिनाई आयी कि बच्चे बिना स्वर और व्यंजन सीखे-पढ़ने की शुरूआत कैसे कर सकते हैं परन्तु जब मैंने बच्चों के साथ बैठ कर छोटी-छोटी चित्रात्मक किताबें पढ़नी शुरू कीं तो पाया कि बच्चे पढ़ने की शुरूआत करने लगे हैं। इतना ही नहीं, बच्चों के साथ किताब के सन्दर्भ पर बातचीत उन्हें अपनी बात कहने के अवसर देती है और उनमें किताबों के प्रति आकर्षण पैदा होता है। हालाँकि यह सब करने के लिए मुझे अपने आप से तरह-तरह के संवाद करने पड़ेक्योंकि जब मैंने बच्चों को अपनी बात कहने के अवसर दिये और उनकी ज़िन्दगी में

शामिल हुई तो उनकी ऊर्जा के सामने मेरे प्रयास कम पड़ने लगे। कई बार बच्चों का अत्यधिक सक्रिय होना शोर लगने लगा। एकल अध्यापिका होने के कारण थकान भी अनुभव होती थी परन्तु ऐसे समय में शिक्षा पर पढ़ी किताबों और कुछ शिक्षक साथियों के साथ बातचीत ने अपने काम में मेरा विश्वास बनाये रखा। अपने अनुभव के आधार पर मैं कह सकती हूँ कि यदि हम बच्चों को अर्थ के साथ पढ़ने में मदद करें तो वे प्रभावी तरीके से पढ़ना सीखते हैं और किताबों में उनकी स्वाभाविक रुचि जन्म लेती है। हाँ, यह बात ज़रूरी है कि किताबें बच्चों के जीवन से मेल खाती हुई होनी चाहिए। इन प्रयासों को सफल बनाने के लिए बाल साहित्य की समझ ज़रूरी है। मैं यह नहीं कह रही कि मैंने कोई बड़ा काम किया है या कुछ अतिरिक्त काम करे हैं परन्तु मैं यह ज़रूर कहना चाहती हूँ कि मैंने शिक्षक प्रशिक्षणों में हुई बातों को अपने शिक्षण में उतारने की कोशिश की और अपने अनुभवों को लिख कर उन्हें ही अपने सीखने का आधार बनाया है। आज मुझे लगता है कि हमारे विभाग को विद्यालय में बाल साहित्य की बहुत सारी किताबें उपलब्ध करवानी चाहिए। इस ओर कुछ प्रयासों की शुरूआत विभाग द्वारा हुई भी है। जिस प्रकार सामान्य ज्ञान और प्रातः कालीन सभा पर ज़ोर दिया जाता है और उसके बारे में पूछा जाता है, उसी तरह इस पर भी बात हो कि क्या दिन भर में आधा-एक घण्टा बच्चों को स्वतन्त्र रूप से पढ़ने यानी कि स्वाध्याय के लिए दिये जा सकते हैं? हम अध्यापक साथियों के साथ भी बार-बार पढ़ने-लिखने के नवीन तरीकों पर बातचीत हो। शिक्षक साथी बातचीत के लिए स्वैच्छिक शिक्षक समूह बनाएँ। उत्तरकाशी में शिक्षक साथियों व एपीएफ़ के साथियों की भागीदारी से बने अनौपचारिक शिक्षक समूह में विभिन्न विषयों पर हुई बातचीत से मेरा इस तरह के समूहों पर विश्वास बढ़ा है। इन्हीं सबके बीच मैं जगमोहन चोपता से भी अपने स्कूल में कर रहे कामों पर बातचीत करती रही थी जिसके परिणामस्वरूप मुझे अपने काम को आलोचनात्मक तरीके से देखने में मदद मिली और खुद पर विश्वास बढ़ा।

खोजबीन विधि पर काम करते हुए मुझे यह जानने का मौका मिला कि मैं बच्चों के परिवेश के बारे में बहुत कम जानती हूँ। आरम्भ में तो मैंने इसे एक उत्सव के तौर पर लिया जिसका मकसद कुछ गतिविधियाँ करना था। परन्तु काम करते हुए मुझे लगा कि यदि हमें बच्चों में अवलोकन करना, विचार करना, संवेदनशीलता व आपसी सहयोग जैसे गुण विकसित करने हैं तो इसके लिए बाल शोध मेले की पूरी प्रक्रिया एक उपयोगी शिक्षण विधा हो सकती है। मैंने इस पूरी प्रक्रिया में पाया कि हम लोग किसी एक थीम पर सवाल बना रहे थे, बातचीत के जरिए अपने बनाये सवालों की पड़ताल कर रहे थे, सवालों के अपेक्षित जवाबों के बारे

में परिकल्पनाएँ बना रहे थे, समुदाय के सदस्यों के साथ बातचीत करके तथ्य एकत्र कर रहे थे। बच्चे छोटे-छोटे समूहों में अपने अभिभावकों और बड़ों से बातचीत कर रहे थे। विद्यालय में बड़ों से मिले जवाब पर बातचीत करते हुए कुछ पूरक प्रश्न बना रहे थे। इस प्रक्रिया में वर्गीकरण और विश्लेषण साथ-साथ चल रहा था। बच्चे अपनी बात लिख रहे थे और उनके अभिभावक उनके इस काम में भागीदार बन रहे थे। हम लोग अपनी समझ को दूसरे विद्यालय के बच्चों के साथ साझा करने के लिए प्रस्तुतीकरण की तैयारी कर रहे थे। ऐसा करते हुए बच्चे, बड़े लोगों और अपने सहपाठियों के सवालों का जवाब दे रहे थे। हालाँकि अभिभावक आरम्भ में इस विधा के प्रति आशंकित थे क्योंकि उनकी नज़र में सीखने का मतलब शायद विद्यालय की चहारदीवारी के भीतर किताबों को पढ़ने और लिखने से था। उन्हें इस बात को समझने में समय लगा कि विद्यालय के बाहर की दुनिया को सवाल-जवाब के माध्यम से खोजना भी पढ़ने-लिखने के दायरे में आता है। परन्तु जब उन्होंने बाल शोध मेलों में निःसंकोच बच्चों को बड़ों से सवाल-जवाब करते सुना तो उन्हें लगने लगा कि शायद अध्यापिका और बच्चे ठीक कर रहे हैं। इसी दौरान जब मैंने शिक्षा शोध से सम्बन्धित कुछ साहित्य पढ़ा तो सन्तोष हुआ कि मैं कोई विचित्र काम नहीं कर रही हूँ। मुझ जैसे कई साथी इसी तरह शिक्षण कर रहे हैं और सम्भवतः अपने अनुभव भी लिख रहे हों। इस दौरान मेरी यह मान्यता बनी कि मुझे समन्वित शिक्षण के बारे में अधिक प्रयास करने चाहिए। असल में विषय अलग-अलग होते हुए भी आपस में जुड़े हुए हैं। पर्यावरण अध्ययन का शिक्षण करते हुए भाषाई कौशलों और गणित के कौशलों पर भी काम हो रहा होता है।

मुझे लगता है कि अपने शिक्षण के अनुभवों को लिखते हुए मेरा ध्यान समुदाय के साथ सार्थक संवाद की ज़रूरत पर भी गया। शिक्षक के साथ जिन लोगों का प्रभाव बच्चों पर सब से अधिक होता है, वह हैं बच्चों के अभिभावक। यदि बच्चों के जीवन को बेहतर तरीके से समझना है तो फिर शिक्षक और अभिभावक के मध्य निरन्तर संवाद ज़रूरी है। मेरे विद्यालय में आने वाले बच्चों के अभिभावकों का सामाजिक-आर्थिक जीवन जटिल है। उन्हें अपने भरण-पोषण के लिए कठिन परिश्रम करना पड़ता है। अधिकांश अभिभावक दैनिक मज़दूरी से अपना जीवन-निर्वाह करते हैं। उनके पास विद्यालय आकर अपने बच्चों के बारे में पूछने का समय कम ही होता है। ऐसे में उनकी परिस्थितियों का सम्मान ज़रूरी है। मैंने महसूस किया है कि जब भी मैंने अभिभावकों से उनके बच्चों की उपलब्धियों के बारे में बातचीत की है, उनके चेहरों पर खुशी पायी है। आमतौर पर सुनने को मिलता है कि सरकारी स्कूलों

के अभिभावक और समुदाय सहयोग नहीं करते परन्तु मैंने अपने अनुभवों में पाया है कि यदि अभिभावकों के साथ समानता के स्तर पर बातचीत करें तो अभिभावक, शिक्षक को ढेर सारा सम्मान और प्रेम देते हैं। वे स्कूल के लिए विभिन्न विषयों पर सन्दर्भ व्यक्ति हो सकते हैं। स्कूल उनकी जानकारी व कार्यकुशलता का लाभ बच्चों की मदद के लिए ले सकता है। स्कूल प्रबन्धन कमेटी में अभिभावकों को खुल कर बोलने के अवसर देने होते है, उनके गुस्से और नाराज़गी को सहन करना पड़ता है। संयम से अपनी बात कहना सीखना पड़ता है और अगर हमें उनसे उनके बच्चों के बारे में कोई बात कहनी हो या किसी तरह की मदद चाहिए हो तो हमें स्वयं समय निकालना पड़ता है।

वर्ष 2008 से जब मैंने अपने शैक्षिक अनुभव लिखने शुरू किये और बीच-बीच में उन्हें पढ़ा तो अहसास हुआ कि बच्चों के जीवन के भावनात्मक पक्षों को समझना, उन्हें महत्त्व देना बच्चों को सीखने-सिखाने में मदद करता है। प्रत्येक बच्चा अपने आप में अलग है, उसके जीवन में दिन भर में बहुत कुछ घटित होता है, जिसकी अभिव्यक्ति वह विद्यालय में भी करता है। अपने शिक्षण के दौरान मैंने अनुभव किया है कि बच्चे अपने जीवन से जुड़ी छोटी बड़ी बात अध्यापक को बताना चाहते हैं। जब तक यह न समझा जाए कि बच्चे के मन में क्या चल रहा है, उसे पढ़ने-लिखने के लिए सच्चे अर्थों में तैयार नहीं किया जा सकता। सच्चे अर्थ से मेरा आशय बिना किसी डर और भय के शिक्षण से है। मैंने सीखा है कि बच्चों के पास अध्यापक से नाराज़ होने के अवसर भी होने चाहिए, मैंने समझने की कोशिश की है कि बच्चों को अक्सर क्या अच्छा नहीं लगता। सभी बच्चे बराबर की तारीफ़ पाना चाहते हैं, अध्यापक का ध्यान अपनी तरफ़ खींचना चाहते हैं। ऐसे में यदि कहीं भी उन्हें लगता है कि अध्यापक किसी विशेष बच्चे को प्राथमिकता दे रहा है तो वे अध्यापक से दूरी बनाने लगते हैं। ये दूरी उनके सीखने में बाधक हो सकती है। इसलिए आवश्यक है कि अध्यापक कक्षा में अपने व्यवहार के प्रति सजग रहे।

अपने काम के बाद मुझे सबसे ज़्यादा उलझन का सामना बच्चों के सीखे हुए का आकलन करने में होता था। मुझे खीझ होती थी जब पर्याप्त मेहनत से काम करने पर भी सभी बच्चे सीख नहीं पा रहे होते थे। धीरे-धीरे मुझे अहसास हुआ कि किसी एक कक्षा में अलग-अलग अधिगम स्तर के बच्चे होते हैं। उनके काम करने, सीखने और खुद को व्यक्त करने के अपने तरीके होते हैं। कई बार अध्यापक उनसे एक समान परिणाम की उम्मीद करने लगते हैं। ऐसे में वे अपने व बच्चों के लिए उलझनें ही उत्पन्न करते हैं। हमें बच्चों को उनकी विविधताओं

और खासियतों के साथ स्वीकारना व उनके साथ काम करना आना चाहिए। निःसंदेह इसमें कई बार संसाधनों की कमी आड़े आ जाती है। हमें बच्चों के आकलन के लिए ज़्यादा सटीक व निष्पक्ष तरीके खोजने होंगे, जिससे हम बच्चों की विशेषताओं के आधार पर उनका आकलन कर उन्हें आगे बढ़ने में मदद कर पाएँ। मुझे यह भी लगता है कि बच्चों के साथ काम के रिजल्ट अध्यापक की मेहनत के साथ-साथ उसके अपने काम और बच्चों के प्रति नज़रिए पर भी निर्भर होते हैं।

जब मैंने अपनी हिन्दी की कक्षा में कक्षा-4 और 5 की पाठ्य पुस्तकों के साथ पुस्तकालय की किताबों का उपयोग विभिन्न गतिविधियों के साथ करवाया तो पता चला कि किसी सन्दर्भ पर बहुत-सी किताबें पढ़ना और बच्चों को उन पर चर्चा करने के मौके देना बच्चों को नवीन सन्दर्भ बनाने में मदद करते हैं। वे इस दुनिया को जानने-समझने के लिए ढेर सारी किताबें पढ़ना चाहते हैं। ज़रूरत है तो उनमें पढ़ने की ललक जगाने की, उन्हें अपनी बात कहने के मौके देने की। 'गाँव के समाचार' गतिविधि में बच्चों को उनके आसपास घटित हो रही घटनाओं का अवलोकन करने को प्रेरित करने, उस अवलोकन के बारे में अपनी बात कहने और लिखने के मौके देने से यह पता चला कि प्रत्येक बच्चे के पास कुछ न कुछ खास बात बताने को है। प्रत्येक बच्चा अपनी बात कहना चाहता है और श्यामपट पर लिखने को उत्सुक है। इस बात से कोई फ़र्क नहीं पड़ता कि उसका लेख दूसरे बच्चे से जरा-सा कम अच्छा है या उसके लिखे वाक्य में कोई मात्रात्मक त्रुटि हो गयी है। क्योंकि वह जानता है उसे बेवजह कोई रोकेगा-टोकेगा नहीं। उसका कोई साथी या शिक्षिका उसे बताकर उसकी त्रुटि ठीक कर देगी। ऐसी स्थिति में बच्चा अपनी बात कहने-लिखने से झिझकता नहीं है। वह जान जाता है उसके स्कूल में उसकी एक खास जगह है। उसे अपनी कमज़ोरी या ताकत का आभास होता है। तब वह किसी काम को सीखने में झिझकता नहीं है। जब बच्चों पर विश्वास करो तो वे आगे बढ़ते हैं और यही एक स्कूल की सार्थकता है।

मुझे यह भी महसूस होता है कि अध्यापक को अपने पूर्वाग्रहों से भली भाँति अवगत होना चाहिए। यह अहसास कक्षा में बच्चों के साथ बातचीत करने में मदद करता है। साथ ही मैंने कोशिश की है कि बच्चों के सामाजिक सन्दर्भों को समझूँ। उनके चेहरों को पढ़कर उनके मन की बात समझने का प्रयास करूँ और इस आधार पर उनसे संवाद करूँ कि वे किस प्रकार की परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं। इस दौरान मैं इस बात को भी सोचती रही हूँ कि बच्चों के उत्साह और उमंग को कैसे बनाए रखूँ।

किसी भी शिक्षक की अपनी सीमित समझ होती है, शायद कोई भी शिक्षक सभी विषयों को एक समान कुशलता से नहीं पढ़ा सकता, ऐसे में मैं भी बच्चों के साथ बहुत से सन्दर्भों पर काम नहीं कर पायी। मुझे बार-बार लगता है, काश स्कूल में सभी विषयों के लिये शिक्षक होते तो बच्चों को पर्याप्त समय और विशेषज्ञ मिल पाते साथ ही मैं भी अपनी कक्षा को और बेहतर बना पाती। हमारे पहाड़ी गाँव में छात्र संख्या कम होने के कारण टीचर स्टुडेंट अनुपात ठीक-ठाक दिखता है, पर विषयों और बच्चों के अलग शैक्षिक स्तरों के कारण यह बहुत ज़रूरी है हर स्कूल में पर्याप्त शिक्षक हों ताकि शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।

विद्यालय में अपने शिक्षक साथियों के साथ मिल कर काम करने का अपना मज़ा है। इस के लिए ज़रूरी है कि हमारा एक दूसरे के काम के प्रति सम्मान हो। साथ में काम करने वाली प्रधानाध्यापिका के प्रेम और सहयोग के बिना शिक्षण के प्रति उत्साह और उमंग बनाये रखना मुश्किल होता है। ऐसे में एक सहायक शिक्षिका के मन में प्रधानाध्यापिका के प्रति आदर होना ज़रूरी है। साथ ही इस बात में भी गहरी आस्था ज़रूरी है कि हम अपने साथ काम करने वाले शिक्षकों से बहुत कुछ सीख सकते हैं।

एक शिक्षक होने की यात्रा सुखद अहसास है। मैंने यह डायरी अपने शिक्षण को बेहतर बनाने और अपने सीखने के नये रास्ते तलाशने के लिए लिखी है। डायरी के रूप में इस का प्रकाशन एक संयोग है।

समाप्त

रेखा चमोली

रेखा का जन्म 8 नवम्बर 1979 में कर्णप्रयाग उत्तराखंड में हुआ था। उनकी स्कूली शिक्षा से लेकर विज्ञान विषय में स्नातक और शिक्षा में परास्नातक तक की सम्पूर्ण शिक्षा उत्तरकाशी में हुई। वे उत्तरकाशी के भटवाड़ी ब्लॉक के राजकीय प्राथमिक विद्यालय गणेशपुर में सहायक अध्यापिका है और विगत 15 वर्षों से प्राथमिक स्तर पर बच्चों के साथ सीखने- सिखाने कि प्रक्रियाओं में शामिल है। शिक्षण कार्य में गहन रुचि के साथ-साथ रेखा एक संवेदनशील कवयित्री हैं। महिलाओं से जुडी और मानवीय संवेदनाओं से ओतप्रोत उनकी कविताएं हिंदी भाषा कि तमाम संजीदा साहित्यिक पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं।वे उत्तराखंड के कुछ नवाचारी शिक्षकों के द्वारा निकाली जा रही शेक्षिक पत्रिका "शेक्षिक दखल" कि सह सम्पादक हैं | उन्हें उनके कविता संग्रह"पेड़ बनी स्त्री" के लिए सूत्र सम्मान से पुरस्कृत किया गया है। बच्चों के साथ शिक्षण करते हुए उन्होंने अपने अनुभव लेखबद्ध किये हैं जो कि कुछ शैक्षिक पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित हुए हैं। यह पुस्तक रेखा के वर्ष 2011 से 2014 के बीच के शिक्षण अनुभवों कि तस्वीर प्रस्तुत करती है। साथ ही एक चिंतनशील टीचर बनने के सूत्र भी पाठकों के सामने रखती है।

प्राथमिक कक्षाओं में शिक्षण विभिन्न प्रकार की दक्षताओं और कौशलों की माँग करता है। किसी भी सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश से विद्यालय में आने वाले बच्चे अपने साथ कुछ समझ और ज्ञान का लेकर आते हैं। कोई भी व्यक्ति एक अध्यापक होने के मायनों को सही अर्थों में तभी समझ पाता है जब वह सीखने की अपार क्षमताओं के साथ विद्यालय में आ रहे बच्चों के साथ शिक्षण कर्म में शामिल होता है। यहाँ उसका सामना इस बात से होता है कि बच्चे पाठ्यक्रम में दिये गये ज्ञान की संकल्पनाओं से कैसे पारस्परिक क्रिया करते हैं अर्थात बच्चे उन अवधारणाओं से कैसे सीखते हैं जिनका उल्लेख पाठ्यचर्या करती है। "मेरी स्कूल डायरी" एक अध्यापिका का सीखने-सिखाने की प्रक्रियाओं पर खुद से चलने वाला एक निरंतर संवाद है जो हमें एक चिंतनशील शिक्षक बनने कि यात्रा पर ले जाती है। "मेरी स्कूल डायरी" में एक सरकारी प्राथमिक विद्यालय में एक शिक्षिका के शिक्षण कर्म कि यात्रा दिखाई देती है और यह समझ में आता है कि अभावग्रस्त परिवेश में शैक्षिक सिद्धान्त किस प्रकार शिक्षण कर्म में आकार पाते हैं। सन्दर्भ के साथ भाषा सीखना और स्थानीय ज्ञान का विद्यालयी पाठ्यक्रम के साथ सम्बन्ध शिक्षण में कैसे आकार लेता है ? जैसे कई विषयों को इस पुस्तक में समझा जा सकता है। यह पुस्तक भारतीय सन्दर्भ में प्राथमिक शालाओं में शिक्षण कर रहे लाखों शिक्षकों को एक चिंतनशील शिक्षक बनने के कुछ प्रभावी रास्ते सुझाती है।

Azim Premji University